

॥ श्रीः ॥

विद्याभवन सप्तभाषा ग्रन्थमाला

३२

॥ श्रीः ॥

प्राकृत-व्याकरण

लेखक :-

आचार्य श्री मधुसूदनप्रसाद मिश्र

अध्यक्ष, अनुसन्धान विभाग, अरेराज

तथा

सादस्य, बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना ।

चौखम्बा विद्याभवन, चौक, वाराणसी-१



(पुनर्मुद्रणादिकाः सर्वेऽधिकाराः प्रकाशकाधीनाः)
The Chowkhamba Vidya Bhawan,
Chowk, Varanasi.
(INDIA)
1960

Phone Branch. 3076
H. Office. 3146

भूमिका

(श्री ध्रुवनारायण त्रिपाठी शास्त्री

सभापति, जिला कांग्रेस समिति, मोतिहारी

तथा श्री सोमेश्वरनाथसञ्जालक मण्डल, अरेराज)

संस्कृत भाषा की अपेक्षा प्राकृत भाषा अधिक कोमल तथा मधुर होती है। 'परुसा सक्कअ-बंधा पाउअ-बंधो वि होइ सुउमारो । पुरिसमहिल्लणं जेस्सिअ मिहन्तरं तेस्सिअमिमाणं' अर्थात् संस्कृत भाषा परुष (कठोर) तथा प्राकृत भाषा सुकुमार होती है। और इन दोनों भाषाओं में परस्पर उतना ही भेद है जितना एक पुरुष और स्त्री में।

भाषा के अनुसार आज तक के समय को तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं—संस्कृत, प्राकृत और आजकल की भाषायें; यथा—हिन्दी, मराठी, गुजराती और बँगला आदि। संस्कृत भाषा में हिन्दुओं के प्राचीनतम ग्रन्थ वेदों से लेकर काव्यों तक के ग्रन्थ सम्मिलित हैं। प्राकृत भाषा में बौद्धों तथा जैनियों के धार्मिक ग्रन्थ एवं कुछ काव्य ग्रन्थ भी हैं। इस भाषा का विकास ईसा से ६०० वर्ष पहले हो चुका था।

प्राकृत भाषा की उत्पत्ति के निर्णय के पूर्व यह विचारना आवश्यक है कि 'किसी भी नई भाषा के जन्म की क्यों आवश्यकता पड़ती है?' यदि हम लोग इस प्रश्न पर गौर से विचार करें तो यह स्पष्ट मालूम हो जायगा कि मनुष्य कष्टसाध्य प्रयत्न करना नहीं चाहता। वह जिह्वा, कण्ठ, तालु आदि स्थानों से अधिक प्रयत्न द्वारा शब्दों का उच्चारण करना पसंद नहीं करता। यही कारण है कि धीरे-धीरे भाषा में कुछ विकृतियाँ उत्पन्न होती जाती हैं। कुछ दिनों के बाद उसी का एक स्वरूप बन जाता है, वही प्रधान बोलचाल की भाषा बन बैठती है और उसी में काव्य आदि की रचना प्रारम्भ हो जाती है। वैदिक

काल से लेकर आज तक की परिवर्तित भाषाओं पर ध्यान देने से इस बात की पूर्ण पुष्टि हो जाती है। नीचे कुछ दृष्टान्त दिये जाते हैं—

संस्कृत के 'ग्राम' तथा 'मध्य' दो शब्दों के मिलने से 'ग्राममध्य' एक शब्द बना। अब इसी शब्द का उच्चारण करते समय एक अशिक्षित आदमी, जिसे उच्चारण का ज्ञान नहीं है और जो स्वभाव से ही कष्टसाध्य उच्चारण करना नहीं चाहता, जीभ को कष्ट से बचाने के लिए एक विलक्षण ही शब्द-स्वरूप का जनक हो जायगा। वह उक्त शब्द के मध्य के स्थान में 'मज्झ', 'माझ', 'माध', 'माह', 'मह', 'मा' और 'मे' तथा ग्राम शब्द के स्थान में 'गाम' और 'गांव' कहेगा। इस प्रकार ग्राममध्य के स्थान में 'गाम में' और 'गांव में' बन गया। इसी प्रकार 'कुम्भकार' के स्थान में 'कुम्भार', 'कुंहार' और 'कोंहार' शब्द बन गये। इनके अतिरिक्त मुख्य = मुह, अर्प = अप्प (हि०-आप); यष्टि = लट्टी, लाठी; द्वादश = बारह आदि अनेक शब्द हैं। कभी-कभी तो शब्दों का परिवर्तन इतना हो जाता है कि उनका पता लगाने में बड़े-बड़े शब्दशास्त्रियों को भी चक्कर खाना पड़ता है। जैसे अंग्रेजों के समय में राजकीय कोषागार के प्रहरी 'हु कम्म देअर' (Who comes there) के स्थान में 'हुकुम दर' कहने लगे। तत्पर्य यह कि किसी किसी शब्द के शुद्ध रूप का पता लगाना असम्भव सा हो जाता है। अस्तु।

प्राकृत भाषा की उत्पत्ति के विषय में भारतीय वैशाकरणों तथा आलङ्कारिकों का कथन है कि इस भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है। संस्कृत ही इसकी जननी है। प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति 'प्रकृति' से की जाती है। प्रकृति शब्द का अर्थ यौज अथवा मूल लक्ष्य है। इस शब्द का निर्वचन है—'प्रक्रियते यथा सा प्रकृतिः' अर्थात् जिससे दूसरे पदार्थों की उत्पत्ति हो। 'मूलप्रकृतिरविकृतिः' (साङ्ख्य) अर्थात् मूल प्रकृति अविकृत रहती है। सारांश यह हुआ कि 'प्रकृति' उसे कहते हैं जो दूसरे पदार्थों का उत्पादक तथा स्वयं अविकृत हो। यहाँ

आचार्यों के मत में संस्कृत ही प्रकृति है। प्राकृत के प्रसिद्ध वैयाकरण हेमचन्द्र अपने प्राकृत व्याकरण के आठवें अध्याय के प्रथम सूत्र में कहते हैं कि—‘प्रकृतिः संस्कृतम् । तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम् ।’ अर्थात् मूल संस्कृत है और संस्कृत में जिसका उद्भव है अथवा जिसका प्रादुर्भाव संस्कृत से हुआ है उसे ‘प्राकृत’ कहते हैं। वररुचि ने प्राकृत का व्याकरण लिखते हुए प्राकृत-प्रकाश में लिखा है कि ‘शेषः संस्कृतात्’ (वर० ९।१८) अर्थात् बताये हुए नियमों के अतिरिक्त शेष संस्कृत से आये हुए हैं। इसी प्रकार मार्कण्डेय ‘प्राकृतसर्वस्व’ के प्रथम पाद के प्रथम सूत्र में लिखते हैं—‘प्रकृतिः संस्कृतं, तत्र भवं प्राकृतमुच्यते ।’ अर्थात् संस्कृत मूल भाषा है और उससे जन्म लेनेवाली भाषा को प्राकृत कहते हैं। दशरूपक के टीकाकार धनिक परिच्छेद २, श्लोक ६० की व्याख्या करते हुए लिखते हैं—‘प्रकृतेः आगतं प्राकृतम् । प्रकृतिः संस्कृतम् ।’ यही मत ‘कर्पूरमञ्जरी’ के टीकाकार वामुदेव, ‘प्राकृतप्रकाश’ के रचयिता चण्ड और ‘पद्भाषाचन्द्रिका’ के लेखक लक्ष्मीधर को भी अभिमत है। ‘प्रकृतेः संस्कृतायास्तु विकृतिः प्राकृती मता ।’ (लक्ष्मीधर पृ० ४, श्लोक २५) अर्थात् मूल भाषा संस्कृत से प्राकृत की उत्पत्ति हुई है। इस प्रकार सब भारतीय विद्वानों ने भिन्न-भिन्न शब्दों में इन्हीं मतों की पुष्टि की है। आधुनिक विद्वानों में डा० रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर तथा चिन्तामणि विनायक वैद्य जी को भी यह मत अभिप्रेत है।

परन्तु इसके विपरीत पश्चिमी विद्वान् पिशल आदि का विचार भी विचारणीय है। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् पिशल का, जिन्होंने प्राकृत के क्षेत्र में बड़े ही परिश्रम और पाण्डित्य से काम करके हम लोगों का बड़ा ही उपकार किया है, कथन है कि—संस्कृत शिष्ट समाज की भाषा थी और प्राकृत अशिक्षित जनों की। प्राकृत भाषा वह थी जिसे साधारण जन बोला करते थे और उसी का संस्कार से सम्पन्न रूप ‘संस्कृत’ कहलाया। जैसे किसी लकड़ी का एक टुकड़ा पहले अपनी प्राकृतिक अवस्था

में पड़ा हुआ रहता है, किन्तु जब उसे संस्कारों द्वारा काट, छूँट एवं खराद कर मेज, कुर्मी आदि बनाते हैं तो वही अपना संस्कृत रूप धारण कर लेता है। इसी प्रकार जो अपरिष्कृत भाषा अपनी प्राकृतिक अवस्था में पड़ी हुई जन-साधारण द्वारा उच्चरित होती थी, वही प्राकृत थी और उसी की शुद्ध एवं परिष्कृत आकृति संस्कृत भाषा कही जाने लगी। इसके प्रमाण में इनका कहना है कि यदि प्राकृत संस्कृत से निकली हुई होती तो उसके कुल शब्द संस्कृत से सिद्ध हो जाते, किन्तु अनुसन्धान द्वारा विदित होता है कि सिद्ध होते नहीं हैं। इसलिए प्राकृत की उत्पत्ति केवल संस्कृत से मानना युक्तिमय नहीं। पिशाल के इसी मत का समर्थन सभी पश्चिमी विद्वान् करते हैं।

पाली भी प्राकृत के अन्दर ही मानी जाती है। इसे 'प्राचीन प्राकृत' कहते हैं। भगवान् बुद्ध ने इसी भाषा में अपने धर्म का प्रचार किया था। आजकल बौद्धों के धार्मिक ग्रन्थ तथा अनेक शिला-लेख आदि भी इसी भाषा में पाये जाते हैं। पाली और प्राकृत में कुछ अन्तर पड़ गया है, इसलिए अब पाली को अन्य भाषा मानते हैं और प्राकृत कहने से पाली को अलग समझते हैं। प्राकृत के वैयाकरणों तथा अलङ्कार-शास्त्रज्ञों ने पाली को पृथक् मान कर प्राकृत-व्याकरण आदि लिखते समय इसका कुछ भी उल्लेख नहीं किया है।

प्राकृत के भेदों में 'महाराष्ट्री' उत्तम तथा प्रधान प्राकृत के रूप में समझी जाती है। दण्डी ने 'काव्यादर्श' के प्रथम परिच्छेद के चौतीसवें श्लोक में लिखा है—'महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्रकृतं प्राकृतं विदुः।' अर्थात् महाराष्ट्री भाषा श्रेष्ठ प्राकृत समझी जाती है। कतिपय भारतीय विद्वानों ने प्राकृत शब्द का प्रयोग केवल महाराष्ट्री ही के लिए किया है। जैसे हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत के व्याकरण में महाराष्ट्री के लिए प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है। 'शेषं प्राकृतवत्' (हिम० ४-२८६)। प्राकृत के व्याकरण ग्रन्थों में महाराष्ट्री को ही प्रधानता दी गई है। वररुचि ने नव परिच्छेदों

में चार सौ चौबीस सूत्रों द्वारा महाराष्ट्री का विचार किया है। अन्य तीन प्राकृतों का विचार एक-एक परिच्छेद में क्रम से १४, १७ और ३२ सूत्रों द्वारा किया है। इसी प्रकार सब वैयाकरणों ने पहले महाराष्ट्री का उल्लेख किया है। महाराष्ट्री में प्रवरसेन-विरचित सेतुबन्ध नामक ग्रन्थ प्रसिद्ध है। इस पुस्तक के संबन्ध में वाण ने हर्षचरित में लिखा है—

‘कीर्तिः प्रवरसेनस्य प्रयाता कुमुदोज्ज्वला ।

सागरस्य परं पारं कपिसेनेव सेतुना ॥’

अर्थात् कुमुद के समान उज्ज्वल प्रवरसेन का यश सेतुबन्ध के द्वारा समुद्र के पार तक विख्यात हो गया जैसे वानरों की सेना सेतु (पुल) के द्वारा समुद्र पार कर विख्यात हो गई थी। सेतुबन्ध संस्कृत नाम है। प्राकृत में इसे रावणवहो या दहमुहवहो कहते हैं। इसके अतिरिक्त महाराष्ट्री में हाल की सतसई तथा वज्जालता और गउडवहो आदि काव्य-ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं।

प्राकृत के कितने भेद और उपभेद हैं, इस संबन्ध में भी एक मत नहीं है। वररुचि के अनुसार प्राकृत के चार भेद हैं। महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी और पैशाची। इन्हीं चारों का उल्लेख प्राकृत-प्रकाश में हुआ है। हेमचन्द्र ने इन चारों के अतिरिक्त आर्ष, चूलिकापैशाची और अपभ्रंश को भी प्राकृत ही के अन्तर्गत माना है। अर्थात् महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, आर्ष, चूलिकापैशाची और अपभ्रंश ये सात भेद उन्हें अभिप्रेत हैं। त्रिविक्रम हेमचन्द्र की तरह उपर्युक्त भेदों में से आर्ष के अतिरिक्त छ को मानते और उन्हीं का उल्लेख करते हैं। इन वैयाकरणों के अतिरिक्त मार्कण्डेय, जो वररुचि के अनुयायी हैं, प्राकृत के प्रधानतः चार विभाग करते हैं—भाषा, विभाषा, अपभ्रंश और पैशाच। अब इनके उपभेदों के साथ प्राकृत को सोलह भागों में विभक्त करते हैं। वे सोलह भेद इस प्रकार हैं—भाषा के पाँच भेद—महाराष्ट्री, शौरसेनी, प्राच्या, आवन्ती और मागधी (मार्क० १-५); विभाषा के पाँच भेद—शाकारी, चाण्डाली, श्रावरी, आभीरिका और टक्की; अपभ्रंश

के तीन भेद—नागर, ब्राह्मण और उपनागर; पैशाच के तीन भेद—केकेय, शौरसेन और पाञ्चाल। इस तरह प्राकृत के सोलह भेद हुए।

मार्कण्डेय (१-४) की वृत्ति लिखते हुए किर्मी ने भाषा के आठ, विभाषा के छ, अपभ्रंश के सत्ताईस और पैशाच के ग्यारह भेद माने हैं। इनके मत से प्राकृत के यावन भेद हुए। परन्तु मार्कण्डेय स्वयं इतने भेदों को नहीं मानते। वे अर्द्धभाषाओं को भाषाओं के तथा ब्राह्मणिकी को आवन्ती के अन्तर्गत मानते हैं। द्राक्षिणात्य का कोई लक्षण नहीं मिलने से उसे भाषा के भीतर नहीं मानते। इस प्रकार उक्त वृत्तिकार द्वारा बतलाये आठ प्रकारों वाली भाषा का खण्डन कर छ प्रकार की विभाषा में औड़ी को शाबरी में अन्तर्भावित मानते तथा द्राविडी की जगह ढक्की भाषा का प्रतिपादन करते हैं क्योंकि द्राविडी ढक्क देश की भाषा के भीतर आ जाती है।

‘ढक्कदेशीयभाषायां दृश्यन्ते द्राविडी तथा।

अत्रैवायं विशेषोऽस्ति द्रविडेनाहता परम् ॥’ (मार्क० १. ६.)

एवं प्रकारेण मार्कण्डेय ने सत्ताईस प्रकार के अपभ्रंश तथा ग्यारह प्रकार के पैशाच का एक का दूसरे में अन्तर्भाव मानकर क्रम से तीन-तीन भेद माने हैं। इस तरह यावन प्रकार के बदले उसके केवल सोलह ही भेद स्थिर किये हैं। दण्डी ने ‘काव्यादर्श’ में चार प्रकार की भाषा बतलाई है—संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और मिश्र।

‘तदेतद् वाङ्मयं भूयः संस्कृतं प्राकृतं तथा।

अपभ्रंशश्च मिश्रश्चेत्याहुराचार्यश्रुतविधम ॥’ (काव्या० १. ३६)

इनके अनुसार संस्कृत से देवनागरी की भाषा, प्राकृत से तम्रव, तत्सम और देशी भाषा, अपभ्रंश से आभीर आदि जातिविशेष की भाषा और मिश्र से मिली हुई भाषाओं का बोध होता है। शास्त्र में संस्कृत से इतर सब भाषायें अपभ्रंश कहलाती हैं। इनके अनुसार प्राकृत के महाराष्ट्री, शौरसेनी, गौडी, लाटी और भूतभाषा (पैशाची) ये पाँच भेद हैं। प्राकृत के ये और भी अन्य भेद मानते हैं। दूसरे कई आचार्यों

ने प्राकृत के अन्य भी कई भेद बतलाये हैं, परन्तु सब ने महाराष्ट्री, शौरसेनी और मागधी को बिना किसी दलील के स्वीकार किया है। वास्तव में ये ही तीनों प्रधान हैं और काव्य-नाटकों में इन्हीं तीनों का समावेश है। अतः ये ही तीन प्रधान प्राकृत हैं।

संस्कृत साहित्य में ऐसा कोई भी नाटक नहीं है जो केवल संस्कृत ही में हो और उसमें प्राकृत न हो। नाटकों में कुलीन, श्रेष्ठ तथा शिक्षित पुरुष संस्कृत भाषा का व्यवहार करते हैं तथा कुलीन और शिक्षिता स्त्री शौरसेनी में गद्य तथा महाराष्ट्री में पद्य का व्यवहार करती हैं। मतलब यह कि साधारण बात-चीत तो शौरसेनी में और कुछ गान आदि महाराष्ट्री में करती हैं। शौरसेनी गद्य की तथा महाराष्ट्री पद्य की भाषा है। किसी भी नाटक अथवा प्राकृत के काव्यग्रन्थ में गद्य महाराष्ट्री में और पद्य शौरसेनी में दृष्टिगोचर नहीं होते। नाटकों में निम्न लोगों की तथा नीच वर्णों की बोली मागधी भाषा में पाई जाती है। नाटकों में प्रयुक्त प्राकृत के महाराष्ट्री, शौरसेनी और मागधी ये तीन प्रकार ही प्रधान हैं और इन्हीं का व्यवहार अधिकता से पाया जाता है। इनके अतिरिक्त और भी आवन्ती, ढक्क, शाबरी, प्राच्या और चाण्डाली भाषायें देखने में आती हैं, परन्तु कई आचार्यों के मत से आवन्ती और प्राच्या शौरसेनी के तथा ढक्क, शाबरी और चाण्डाली मागधी के अन्तर्गत हैं। केवल विक्रमोर्वशीय में कुछ पद्य अपभ्रंश के भी आये हैं। इसके विषय में कुछ लोगों का कहना है कि अपभ्रंश के वे पद्य पीछे से जोड़े गये हैं।

महाराष्ट्री भाषा का नाम महाराष्ट्र के नाम पर पड़ा। महाराष्ट्र की भाषा महाराष्ट्री कहलाई। इसमें अक्षरों का लोप बहुत होता है, इसलिए इसका व्यवहार पद्य के लिए उत्तम माना गया। इसमें अक्षरों का इतना लोप होता है कि भाषा की जटिलता बढ़ जाती है इसलिए इसका गद्य समझना बड़ा कठिन होता है। इस भाषा के विषय में ऊपर लिखा जा चुका है।

शौरसेनी भाषा का नाटकों में प्रयुक्त गद्यभाषाओं में प्रथम स्थान है। शूरसेनों की भाषा का नाम शौरसेनी पड़ा। शूरसेनों की राजधानी मथुरा थी और मथुरा के आस-पास बोली जाने वाली भाषा शौरसेनी कहलाती थी।

मागधी से वररुचि के अनुसार मगध देश की भाषा समझी जाती है। 'मागधानां भाषा मागधी' (वर० ११. १. वृत्ति)। पटने के समीप-वर्ती स्थलों को मगध कहते थे। आज भी बिहार राज्य में बोली जाने-वाली भोजपुरी आदि भाषाओं का मागधी से बहुत कुछ सामीप्य है। मार्कण्डेय का कथन है कि राक्षस, भिक्षु, क्षपणक और चेटी आदि की भाषा का नाम मागधी है—'राक्षसभिक्षुक्षपणकचेटाद्या मागधीं प्राहुः' (मा० १२. १. वृ०)। भरत के अनुसार अन्तःपुर में रहने वालों की भाषा मागधी है। इनके अनुसार नपुंसक, स्नातक और कञ्चुकी अन्तःपुर में नियुक्त होते थे। दशरूपक के अनुसार पिशाच और अत्यन्त नीच लोग पैशाची और मागधी बोलते हैं—'पिशाचात्यन्तनीचादी पैशाचं मानधं तथा।'

अवन्ति देश की भाषा आवन्ती कहलाती है। अत्यन्त देश में चेदि, मालव, उज्जयिनी आदि देश सम्मिलित थे—'चेदिमालवा-ज्जयिन्यादिरवन्तीदेशः' तद्वर्षा आयन्ती दाण्डिकादि भाषा' (मार्क० १११ की वृत्ति)। आवन्ती महाराष्ट्री और शौरसेनी के सांकर्य से सिद्ध होती है। 'भरत' के अनुसार नाटकों में यह सदा मध्यम पात्रों द्वारा प्रयुक्त होती है। मार्कण्डेय के अनुसार यह भाषा का एक भेद है।

प्राच्या मार्कण्डेय के अनुसार विदूषक और चिट आदि हंसोब पात्रों की भाषा है। भरत नाट्यशास्त्र के अनुसार विदूषक आदि की भाषा प्राच्या है—'प्राच्या विदूषकादीनाम्।' पृथ्वीधर ने मृच्छकटिक की टीका में इसी मत का समर्थन करते हुए लिखा है कि—'प्राच्यभाषापाठको विदूषकः' अर्थात् विदूषक प्राच्य भाषा का पाठक होता है।

ढक्क भाषा पृथ्वीधर के अनुसार मृच्छकटिक में माथुर और द्यूतकर की बोली है। ढक्क शब्द से जान पड़ता है कि यह ढाका के आस-पास की भाषा थी।

चाण्डालों की भाषा चाण्डाली तथा शबरो की भाषा शावरी कहलानी थी। अस्तु।

शूद्रक के मृच्छकटिक में प्राकृत के नाना प्रकार देखने में आते हैं। अन्य नाटकों में महाराष्ट्री, शौरसेनी और मागधी ये तीन ही भाषायें पाई जाती हैं। किसी-किसी नाटक में एक पात्र चाण्डाल भी है जो चाण्डाली बोलता है। मृच्छकटिक में अन्य प्राकृत के अतिरिक्त ढक्क और आवन्ती भी आती हैं। माथुर तथा द्यूतकर ढक्क और वीरक तथा चन्दनक आवन्ती भाषा बोलते हैं। विदूषक की भाषा किसी-किसी के विचार से प्राच्या है। कर्णपूरक और वीरक के पद्य महाराष्ट्री में हैं। नटी, मैत्रेय, वसन्तसेना, चेटी, रदनिका, मदनिका, कर्णपूरक आदि के गद्य की भाषा शौरसेनी है। शकार, चेट, चारुदत्त का लड़का और भिन्न की बोली, मागधी में है।

प्राकृत भाषा में कर्पूरमञ्जरी नामक एक ही सट्टक है। इसमें महाराष्ट्री और शौरसेनी दो ही भाषायें हैं। जितने पद्य हैं, वे सब महाराष्ट्री में और जितने गद्य हैं सब शौरसेनी में लिखे गये हैं। कहीं-कहीं इन दोनों की खिचड़ी भी दिखाई पड़ती है। जैसे—'गेण्हिअ के' स्थान पर 'वेत्तूण' का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार अनेक स्थलों पर ऐसे उदाहरण मिलते हैं। मालूम नहीं, यह कवि का प्रमाद है या छापेखानों की भूल। कर्पूरमञ्जरी के अनेक संस्करण निकल चुके हैं परन्तु प्राकृत भाषा की दृष्टि से 'हारवार्ड ओरिण्टल सीरीज' द्वारा संपादित तथा चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी से प्रकाशित संस्करण सर्वोत्तम है।

संस्कृत नाटकों में प्राकृत की दृष्टि से मृच्छकटिक के अतिरिक्त विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञानशाकुन्तल, वेणीसंहार, मुद्राराक्षस, उत्तरराम-चरित आदि प्रसिद्ध नाटक हैं।

नाटकों में सूत्रधार का पाठ सबसे पहले आता है। सूत्रधार की भाषा संस्कृत है, परन्तु महाकवि भास-प्रणीत 'चारुदत्त' में यह शौरसेनी में बोलता है। 'मृच्छकटिक' में भी नटी के साथ बातचीत करने समय सूत्रधार ने शौरसेनी का ही व्यवहार किया है।

नटी की भाषा सब नाटकों में शौरसेनी ही है। पर यह स्मरण रहे कि शौरसेनी गद्य की भाषा है। इसलिए नटी को जहाँ गाने की आवश्यकता पड़ी है, वहाँ गान महाराष्ट्री भाषा में है। यथा शाकुन्तल में—'नटी गायति—

ईसीसि जुग्विआइं भमरेहिं सुउमारकेसरसिहाइं ।

ओदंसअन्ति दअमाणा पमदाओ सिरीसकुसुमाणि ॥'

पारिपार्श्वक की भाषा संस्कृत में ही पाई जाती है। इसका पाठ विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र, वेणीसंहार तथा माधवभट्ट-रचित सुभद्राहरण आदि नाटकों में आया है।

विदूषक की बोली सब नाटकों में एक सी ही है। इसकी भाषा हेमचन्द्र और त्रिविक्रम के अनुसार शौरसेनी तथा मार्कण्डेय के अनुसार प्राच्या है। इसका पाठ मृच्छकटिक, अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र आदि नाटकों में आया है। मालविकाग्निमित्र में इसका पाठ प्रधान रूप से आया है और प्रत्येक अङ्क में है।

सूत की बोली संस्कृत में पाई जाती है। जहाँ-जहाँ सूत का पाठ है, वहाँ वह संस्कृत ही बोलता पाया जाता है। अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, प्रतिमा, वेणीसंहार तथा कंसवध आदि नाटकों में सूत का पाठ पाया जाता है।

राजा की भाषा अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, प्रतिमा, सुद्रा-राक्षस, मालविकाग्निमित्र, वेणीसंहार, कर्णसुन्दरी तथा कंसवध आदि नाटकों में संस्कृत ही पाई जाती है। केवल विक्रमोर्वशीय के चौथे अङ्क में पुरुरवा नामक राजा ने उर्वशी के लिए विध्वंस हो कर हंस, भौरे तथा

चक्रवाक आदि ने वातचीत करते हुए महाराष्ट्री और अपभ्रंश का भी प्रयोग किया है। चौथे अङ्क के ६, ११, १४, १९, २०, २४, २८, २९, ३५, ३६, ४१, ५३, ५४, ५९, ६३, ६८, ७१ और ७५ संख्यावाले श्लोकों को महाराष्ट्री तथा १२, ४३, ४५, ४८ और ५० संख्यावाले श्लोकों को अपभ्रंश भाषा में कहते हैं। यथा—

राजा—‘मम्मररणिमणोहरणु; कुसुमिअतरुवरपल्लविणु ।

दइआविरहुम्माइअओ; काणणं भमइ गइंदओ ॥’

[मम्मररणितमनोहरे कुसुमिततरुवरपल्लविते ।

दयिताविरहोन्मादितः कानने भ्रमति गजेन्द्रः ॥]

(विक्र० ४।३.५)

‘हउं पइं पुळ्ळिमि अख्खहि गअवरु; लल्लिअपहारे णासिअतरुवरु ।

दूरविणिज्जिअ-ससहरुकन्ती, दिट्ठी पिअ पइं संसुह-जन्ती ॥’

[अहं त्वां पृच्छामि आचक्ष्व गजवर; ललितप्रहारेण नाशिततरुवर ।

दूरविनिज्जित-शशधर-कान्तिर्दृष्टा प्रिया त्वया संसुखं यान्ती ॥]

पिळ्ळले पृष्ट के वर्णित दोनों श्लोक क्रमशः महाराष्ट्री और अपभ्रंश भाषा के हैं।

कञ्चुकी की बोली संस्कृत भाषा में पाई जाती है। इसका पाठ अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, • उत्तररामचरित, प्रतिमा, सुद्वाराक्षस, मालविकाग्निमित्र तथा वेणी-संहार आदि नाटकों में आया है।

प्रतीहारी, चेटी, तापसी आदि की बोली शौरसेनी में है। ये पात्र प्रायः सभी नाटकों में आये हैं। दौवारिक की भाषा भी शौरसेनी ही पाई जाती है। परन्तु कंसवध में हेमाङ्गद नाम के एक दौवारिक ने एक स्थान पर एक श्लोक संस्कृत में भी कहा है। सुभद्राहरण, अभिज्ञानशाकुन्तल आदि अनेक नाटकों में दौवारिक का पाठ है।

अभिज्ञानशाकुन्तल में रक्षियों (सिपाहियों), धीवर और शकुन्तला के पुत्र की; चारुदत्त में शकार की; मृच्छकटिक में शकार, चैट, चारुदत्त के पुत्र, संवाहक और भिष्णु की; वेणीसंहार में राक्षस

और राक्षसी की तथा कम्बोध में कुब्जक और रजक की बोली मागधी भाषा में है। मागधी गद्य और पद्य दोनों की ही भाषा है। यद्यपि उच्च कुल की एवं शिक्षित नारियाँ गद्य-पद्य में क्रमशः शौरसेनी, महाराष्ट्री का ही व्यवहार करती हैं, तो भी कई नाटकों में नारी का पाठ संस्कृत भाषा में भी मिलता है। जैसे उत्तररामचरित में तापसी, आत्रेयी, वासन्ती, तमसा, मुरला, अरुन्धती, पृथिवी, भागीरथी और गङ्गा की; कर्णसुन्दरी में सखी और नायिका के पद्य की; कंसवध में दूती विलासवती, देवकी और केवल कुछ स्थलों पर कुब्जा की बोली संस्कृत भाषा में पाई जाती है। प्रतिमा में भट एक स्थान पर शौरसेनी तथा दूसरे पर संस्कृत का प्रयोग करता है। किसी-किसी नाटक में ऐसा भी देखा जाता है कि जब कोई पात्र किसी दूसरे का अनुकरण करता है, तो वह अपनी भाषा छोड़कर अनुकार्य व्यक्ति की ही भाषा बोलता है। जैसे मुद्राराक्षस में संस्कृत का बोलने वाला विराध आहिनुण्डिक का अनुकरण करने पर शौरसेनी भी बोलता है। घेणी-संहार में मुनिवेषधारी राक्षस संस्कृत भाषा का भी व्यवहार करता है।

मृच्छकटिक में स्थावरक और रोहसेन नामक चाण्डालों तथा मुद्राराक्षस में आये चाण्डालों की बोली चाण्डाली कहलाती है। इन मय के अतिरिक्त जिन पात्रों की चर्चा नहीं की गई है, उनके साथ वे ही साधारण नियम लागू हैं।

साहित्यदर्पण में श्रेष्ठ चेट और राजपुत्रों की भाषा अर्द्धमागधी बतलाई गई है। परन्तु किसी नाटककार ने किसी भी पात्र के लिए इस भाषा का व्यवहार नहीं किया है। चेट का पाठ मृच्छकटिक में आया है, जो मागधी में है। इसी प्रकार राजपुत्रों की भाषा भी अर्द्धमागधी में नहीं है—'चेटानां राजपुत्राणां श्रेष्ठानाम्मागधी' (साहि० ६, १६०)।

तथा मध्यम और उत्तम वर्ग की स्त्रियों की भाषा शौरसेनी है। योद्धा और नागरिकों की भाषा दाक्षिणात्या है। परन्तु यह भाषा भी प्रयुक्त हुई दृष्टिगोचर नहीं होती। विश्वनाथ ने बालकों की बोली का विधान करते हुए लिखा है कि बालक कभी-कभी संस्कृत भी बोलते हैं। परन्तु किसी भी नाटक में कोई बालक संस्कृत बोलता नहीं पाया जाता। कवियों ने उपर्युक्त नियम का बिल्कुल पालन नहीं किया है।

ऐश्वर्य से पागल, दरिद्र, भिन्न एवं वक्त्रकल धारण करने वाले पुरुषों की भाषा प्राकृत बतलाई गई है। पर उत्तम संन्यासियों के लिए संस्कृत का विधान है। कभी-कभी वेश्या के लिए भी संस्कृत भाषा के व्यवहार का विधान है।

साहित्यदर्पण के अनुसार व्यापक नियम यह है कि जिस पात्र के देश की जो भाषा है, वह उसी को बोलता है और कार्यवश उत्तम आदि पात्र भाषा का परिवर्तन भी करते हैं—

‘यद्देश्यं नीचपात्रं तु तद्देश्यं तस्य भाषितम् ।

कार्यतश्चोत्तमादीनां कार्यो भाषा-विपर्ययः ॥’

भाषा का परिवर्तन करना मुद्राराक्षस आदि नाटकों में पाया जाता है।

स्त्री, सखी, बालवेश्या, धूर्त तथा अप्सरायें अपनी चतुरता प्रदर्शित करने के लिए बीच में संस्कृत बोल सकती हैं—

‘योषित्-सखी-बालवेश्याकितवाप्सरसां तथा ।

वैदग्ध्यार्थं प्रदातव्यं संस्कृतं चान्तराऽन्तरा ॥’

कर्णसुन्दरी में सखी और नायिका, कंसवध में दौवारिक और कुब्जा तथा सुभद्राहरण में नटी भी विदग्धता दिखलाने के लिए संस्कृत भाषा बोलती हैं।

मालविकाग्निमित्र में परिव्राजिका कार्यवश संस्कृत बोलती है।

वाह्लीक भाषा जो उत्तर-देशवासियों के लिए और द्राविडी जो द्रविड-देशवासियों के लिए कही गई है, उनका नाटकों में कहीं भी अस्तित्व देखने में नहीं आता—‘वाह्लीकभाषोदीच्यानां द्राविडी द्रविडादिषु’ (साहि० ६, १६२)।

एक बात और उल्लेखनीय है। प्रायः देखा जाता है कि एक ही घर में पुराण संस्कृत, स्त्री शौरसेनी और लड़का मागधी बोलता है। इसका क्या कारण है ? लड़के तो ऐसे होते नहीं कि बचपन में ही कोई स्वतन्त्र भाषा सीख लें। जो भाषा उनकी माता तथा घरवाले बोलते हैं, वही भाषा वे सीखेंगे और बोलेंगे। माता की भाषा से भिन्न भाषा कभी भी उनसे उच्चारित नहीं हो सकती। फिर नाटकों में ऐसी विचित्रता क्यों देखने में आती है ? शकुन्तला में दुष्यन्त आदि संस्कृत में, शकुन्तला तथा उसकी सखियाँ शौरसेनी में बोलती हैं। तब दुष्यन्त का लड़का मागधी कैसे सीख गया ? इसी प्रकार मृच्छकटिक में चासुदत्त का लड़का भी मागधी बोलता है। इस प्रकार नाटकों के सहारे ठीक विचार नहीं किया जा सकता, क्योंकि बोली दूसरी होने पर भी विशेष स्थल के लिए अन्य बोली बोलनी पड़ती है। किन्तु यह भी देखने में आता है कि लड़कों की बोली स्वभावतः ही मागधी होती है। आजकल के लड़के भी प्रायः मागधी ही बोलते हैं। जैसे :—‘पू ताता ताल लोपेया द।’ इसकी हिन्दी ‘पू चाचा, चार रुपया दो’ होगी। इस प्रकार सब लड़के के स्थान में ल का प्रयोग करते हैं। अतः इस सम्बन्ध में उक्त सन्देह अनावश्यक है।

पहले प्राकृत की उत्पत्ति के विषय में मैंने अपनी सम्मति न देकर केवल भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों के मत का ही उल्लेख किया है। अब अपनी सम्मति देना आवश्यक समझ अपना निर्णय दे रहा हूँ।

मेरे विचार से प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत ही से जान पड़ती है क्योंकि भाषा-विज्ञान की ओर दृष्टि डालने से मालूम होता है कि मनुष्य कष्टसाध्य प्रयत्न न कर सुखोच्चार्य शब्द की ओर ही झुलक जाता है। अतः जो अशिक्षित जन संस्कृत बोलने की चेष्टा तो करते थे, किन्तु बोल नहीं पाते थे उन्हीं के उच्चारण-दोष से विगड़-विगड़ कर एक अन्य भाषा बन गई। सारांश यह कि संस्कृत ही का अशुद्ध स्वरूप प्राकृत है। इसके विरोध में कुछ लोगों का यह कहना

कि प्राकृत के सब शब्द संस्कृत से ही सिद्ध नहीं होते इसलिये उसकी जननी संस्कृत नहीं है। यह कहना ठीक प्रतीत नहीं होता क्योंकि आज भी कुछ शब्द ऐसे देखने में आते हैं जिनका मूल मालूम है, पर उनमें दूतना परिवर्तन हो गया है कि उनके मूल शब्द का अनुमान भी नहीं होता। जैसे—‘हू कम्स देअर’ के स्थान में ‘हुकुमदर’ या ‘हुकुम सदर’, ‘सिगनल’ के स्थान में ‘सिकन्दर’, ‘कृष्णाष्टमी’ के स्थान में ‘किसुन आँठी’ (यह बोली नेपाल की तराई के पास सुनने में आती है) ‘इजलास’ के स्थान में ‘गिलास’ और ‘सेवासमिति’ के स्थान में ‘सेवा सपाठी’ कहते हुए लोग देखने में आते हैं। इन उदाहरणों से यह अनुमान किया जाता है कि संस्कृत ही प्राकृत की जननी है। कुछ शब्द जो सिद्ध नहीं होते इसका कारण यह है कि उनमें बहुत परिवर्तन हो गया है। जब प्राकृत के प्रायः सभी शब्दों के मूल का पता संस्कृत से लग जाता है तब थोटे शब्दों के न मिलने के कारण प्राकृत को रपतन्त्र मानना ठीक नहीं है।

विक्रमोर्वशीय में अपभ्रंश के जो पद्य आये हैं, उनके विषय में कुछ लोगों का कथन है कि वारानस में ये पद्य पहले के नहीं हैं, बाद में जोड़े गये हैं। इसके प्रमाण में वे कहते हैं कि राजा उत्तम पात्रों में गिना जाता है। उत्तम पात्रों की बोली संस्कृत है। इसके अतिरिक्त एक ही पद्य की कई बार आवृत्ति की गई है, जिससे ज्ञात होता है कि ये पीछे से जोड़े गये हैं। परन्तु यह बात नहीं है। यद्यपि राजा उत्तम पात्रों में है और इसकी बोली संस्कृत है तो भी कार्यवश वह अन्य भाषाओं को भी बोल सकता है। आज भी हम सभ्य-समाज में यदि शिष्ट भाषा का प्रयोग करते हैं तो आवश्यकता पड़ने पर साधारण जनों से ग्राम्य बोलियों में भी बात करना नहीं छोड़ते। पुरुरवा ने अपनी प्रिया के लिए आकुल होकर हार्था, भौरे, चक्रवाक आदि से कहा था। उन्होंने समझा होगा कि विना महाराष्ट्री तथा अपभ्रंश में बोले वे लोग समझेंगे नहीं, और नहीं समझने के कारण कदाचित्

वतर नहीं दे सकेंगे। इसलिये व्याचारीयश ही उन्होंने प्राकृत का माधव लिखा होगा, इसमें संदेह नहीं। एक ही बात की आवृत्ति भी स्वाभाविक बात है। जब किसी को उत्तर नहीं मिलता तो वह पुनः-पुनः उसी प्रश्न को दुहराता ही है। इसलिए मेरे विचार मे ये पद्य पीछे के नहीं हैं।

प्राकृत के वैयाकरणों के दो वर्ग हैं—एक त्रिविक्रम का और दूसरा मार्कण्डेय का। त्रिविक्रम के अनुयायी हेमचन्द्र, लक्ष्मीधर और सिंह-राज हैं। लक्ष्मीधर ने त्रिविक्रम के सूत्रों पर अपनी वृत्ति लिखी है जैसे पाणिनि के सूत्रों पर वामन, माधव आदि कितने ही वृत्तिहारों की वृत्तियाँ रची गई हैं। लक्ष्मीधर के ग्रन्थ का नाम पड्भाषा-तन्त्रिका है। मार्कण्डेय के अनुयायी वररुचि हैं। पहले लिखा जा चुका है कि किस ग्रन्थ में किन-किन प्रकार की प्राकृतों का वर्णन मिलता है।

वैयाकरणों ने महाराष्ट्री को प्रधान मान कर सर्वप्रथम उसी का निरूपण किया है अतः यहाँ भी प्रस्तुत प्राकृत व्याकरण के विद्वान् लेखक ने पहले महाराष्ट्री के ही लक्षण दिये हैं। उसके बाद शौरसेना, मागधी, पेशाची और अपभ्रंश के भी विशेष-विशेष विवरण यत्न दिये गये हैं, जिनमें शब्दों के निर्वचन के विषय में जानकारों का ध्यान लेना अतिशय महत्त्व हो गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ मेरी ही प्रेरणा से प्रिंसिपलसिधरनाथ खन्नाजीक भण्डल, अश्वराज (चम्पारन) के अनुसन्धान विभाग की ओर से पूर्ण परिश्रम एवं खोज के साथ निर्मित हुआ है। उनके लेखक ने इस ग्रन्थ को अश्वराज जैसे स्वाधनहीन स्थान में, जहाँ न कोई अच्छा पुस्तकालय ही है और न सुयोग्य परामर्शदाता ही, अकेले जुटकर इस ग्रन्थ का इस रूप में निर्माण किया है। एतदर्थ विद्वान् लेखक को इस सम्बन्ध में जितनी भी बधाई दी जाय, थोड़ी होगी।

संभव है इस पुस्तक में कुछ लोगों को अपूर्णता दिखलाई दे, किंतु जितना भर लिखा जा चुका है, उतने से ही हिन्दी द्वारा प्राकृत पढ़ने वाले छात्रों का अतिशय उपकार होगा, इसमें तर्क भी संदेह नहीं ।

मुझे अपने छात्र-जीवन में हिन्दी में एक प्राकृत व्याकरण की आवश्यकता प्रतीत हुई थी । आज उस इच्छा की पूर्ति से मुझे बड़ी प्रसन्नता है । इस ग्रन्थ के लिखने में लेखक को उत्साहित करनेवालों में मेरे अतिरिक्त तिरहुत प्रमण्डल के आयुक्त श्री श्रीधर वासुदेव सोहोनी तथा चम्पारन के कर्मठ-साहित्यिक श्री गणेश चौबे रहे हैं । अतः ये दोनों ही महानुभाव मेरे लिए धन्यवादाहैं ।

ग्रन्थों के न मिलने से जो कठिनाइयाँ आई, उन्हें बहुत कुछ विहार गिम्नार्च सोमाइटी पटना, धर्मराज मंगलत महाविद्यालय मुजफ्फरपुर एवं श्रीमोक्षनाथ मंगलत महाविद्यालय अरेराज के पुस्तकालयों ने दूर किया है, अतः इन संस्थाओं के अध्यक्ष भी धन्यवादाहैं ।

श्रुवनारायण त्रिपाठी

विषय-प्रवेश

प्रथम अध्याय			५०
संज्ञा-सन्धि-विवेक	५
लिङ्गानुशासन	.	.	१७
द्वितीय अध्याय			
स्वर-सन्धि-विवेक	४४
तृतीय अध्याय			
व्यञ्जनसन्धि-विवेक	५६
चतुर्थ अध्याय			
शब्दलिङ्ग-विवेक	६१
पञ्चम अध्याय			
अव्यय प्रकरण	१०७
षष्ठ अध्याय			
तिङन्त विचार	११७
सप्तम अध्याय			
कुल्ल विशिष्ट पद	१४०
अष्टम अध्याय			
शौरसेनी	१८२
नवम अध्याय			
सागधी	१९५
दशम अध्याय			
पैशाची	२००
एकादश अध्याय			
अपभ्रंश	२०४
परिशिष्ट	
अक्षरानुक्रम शब्द-सूची	२३१
सहायक ग्रन्थ-सूची	२९८



प्रसिद्ध वैयाकरण हेमचन्द्र के अनुसार 'प्रकृति' (= संस्कृत) से प्राकृत शब्द की निष्पत्ति मानी गई है। 'प्रकृतिः संस्कृतम् । तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम्।' अर्थात् जिसकी उत्पत्ति संस्कृत में हुई हो अथवा संस्कृत से निकलकर जो अलग निर्मित हुआ हो वही प्राकृत है।

कुछ भाषा-शास्त्री 'प्रकृत्या (स्वभावेन) सिद्धं प्राकृतम्' इस व्युत्पत्ति के अनुसार स्वभावसिद्ध को ही 'प्राकृत' मानते हैं।

१. देखिए—हेम० ८. १. १. अथ प्राकृतम् और उसी सूत्र पर शङ्कर पाण्डुरङ्ग पण्डित का अंग्रेजी नोट—Hemachandra's system of grammar consists of eight chapters; the first seven deal with Sanskrit grammar and the last chapter with six dialects of Prakrit, viz, महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, पेशाची, चूलिक-पेशाची and अपभ्रंश. The word Prakrit is derived from प्रकृति which according to the author means Sanskrit. Hemachandra classifies Prakrit words into तद्भव, तत्सम, and देशी. He does not treat of तत्सम here as he has already done so in the preceding chapters. He does not speak of देशी words here but discusses only तद्भव words of both types, सिद्ध and साध्यमान।

विवादग्रस्त^१ इन दोनों व्युत्पत्तियों को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद रहा है। किन्तु हम यहाँ हेमचन्द्रवाली व्युत्पत्ति को ही मानकर चलेंगे।

अब आगे चलकर हम नियम, उदाहरण, विशेष तथा पादटिप्पणी के सम्मिलित क्रमों से प्राकृत शब्दों की निरुक्ति का प्रयास करेंगे।

(१) लोक में प्रचलित वर्णसमाम्नाय ही प्राकृत में भी गृहीत है, किन्तु नीचे लिखे ऋ, ऋ, लृ, ऐ, औ ये पाँच स्वर वर्ण और ङ, व्य, श, ष, न, य ये छ व्यञ्जन प्राकृत में नहीं होते^२। हाँ, अपने वर्गवाले अक्षरों से संयुक्त ङ और व्य का व्यवहार देखने को मिलता है। जैसे—पङ्को (पङ्कः), सङ्को (शङ्कः), सङ्का (शङ्का), कञ्जुओ (कञ्जुकः), वञ्जनं (वञ्जनम्)।

१ इस सम्बन्ध में श्रीहृषीकेश शास्त्री महाचार्य के संस्कृत-श्लिषा प्राकृत व्याकरण (१८८३ ई०) के प्रिफेस की नीचे उद्धृत पङ्क्तियाँ प्रकाश ढालती हैं—Modern philologist have not yet satisfactorily solved the question whether these dialects are derived directly from the Sanskrit or (through) some of its corruptions. It is contended by some that Pali was the medium through which all the Prakrit dialects come into existence.

२. हेमचन्द्र के अनुसार ऋ, ऋ, लृ, ऐ, औ ये छ स्वर और ङ, व्य, श, ष, विसर्जनीय और प्लुत प्राकृत के वर्णसमाम्नाय में नहीं होते। किन्हीं किन्हीं शब्दों में हेमचन्द्र के अनुसार ऐ और औ भी देखे जाते हैं। जैसे—कैअवं (कैतवम्), सौअरिअं (सौन्दर्यम्) कौरवा (कौरवाः)

(२) भिन्न वर्गवाले व्यञ्जन वर्णों का परस्पर संयोग नहीं होता अर्थात् त् + क, प् + क, क् + त, क् + य, क् + र, क् + ल्, ल् + क और क् + व इनका परस्पर संयोग न होकर केवल 'क्क' रूप ही होता है। उसी तरह ड् + ग, ढ् + ग, ग् + न, ग् + य, ग् + र, र् + ग और ल् + ग का परस्पर संयोग न होकर केवल ग्ग रूप ही रहता है। जैसे—उक्कंठा (उत्कण्ठा), अक्कवलं (अक्कमलम्), णक्कंचरो (नक्तञ्चरः), जण्णवक्केण (याज्ञवल्क्येन), सक्को (शक्रः), विक्कवो (विक्कवः), उक्का (उल्का), पिक्कं (पक्कम्), खग्गो (खड्गः), अग्गिणी (अग्नीन्), जोग्गो (योग्यः), कअग्गहो (कचग्रहः), मग्गो (मार्गः) बग्गा (बल्गा) ।

विशेष—इसी तरह दूमरे भिन्नवर्गीय वर्णों के बारे से भी जानना चाहिए। जैसे—सत्तावींसा (सप्त-विंशतिः), कण्णउरं (कर्णपुरम्)

(३) वर्ग के पाँचवें अक्षरों का अपने वर्ग के अक्षरों के साथ भी कहीं-कहीं संयोग देखा जाता है, किन्तु सर्वत्र नहीं। यथा—अङ्को (अङ्कः), इङ्गालो (अङ्गारः), तालवेण्टं (तालवृन्तम्), वञ्जणीयम् (वञ्जनीयम्), फन्दनं (स्पन्दनम्), उम्बरं (उदुम्बरम्) ।

(४) प्राकृत में ऐसा व्यञ्जन नहीं मिलता जो (संस्कृत के यावत्, तावत्, ईषत् के तकार के समान) स्वर-रहित हो।

(५) प्राकृत में प्रकृति, प्रत्यय, लिङ्ग, कारक, समाससंज्ञा आदि संस्कृत के समान ही होते हैं।

(६) प्राकृत में द्विवचन नहीं होता। इसी प्रकार संप्रदाप् कारक में आनेवाली चतुर्थी विभक्ति भी प्राकृत में नहीं होती है। हिन्दी और अंग्रेजी की तरह द्विवचन का काम बहुवचन

से और चतुर्थी का काम षष्ठी से पूरा कर लिया जाता है।^१ द्विवचन के बदले बहुवचन का उदाहरण जैसे—वच्छा चलन्ति (वन्सौ चलतः); चतुर्थी के बदले षष्ठी जैसे—विप्पस्स देहि (विप्राय देहि)

(६) समास में कभी-कभी दीर्घ स्वर ह्रस्व स्वर के रूप में और ह्रस्व स्वर दीर्घ स्वर के रूप में बदलता हुआ देखा जाता है। दीर्घ का ह्रस्व जैसे—जहट्टिअं (यथा स्थितम्), अन्तावेइ (अन्तर्वेदी); ह्रस्व का दीर्घ जैसे—सत्तावींसा (सप्त-विंशतिः) ।

(८) कभी-कभी दीर्घ और ह्रस्व के क्रमशः ह्रस्व और दीर्घ रूप समास में विकल्प से होते देखे जाते हैं। जैसे—णइसोत्तं, णईसोत्तं (नदीस्रोतः), बहुमुहं, बहूमुहं (वधूमुखम्), पिआपिअं, पीआपीअं (प्रियाप्रियम्) ।

विशेष :—कभी-कभी स्वरों के उक्त परिवर्तन नहीं भी देखे जाते हैं। जैसे—जुवइ-अणो (युवतिजनः) ।

(६) दो पदों में सन्निध्य रहने पर संस्कृत के लिए विहित कुल सन्धि-कार्य प्राकृत में विकल्प से किये जाते हैं। जैसे—वास + इसी, वासेसी (व्यासर्पिः); दहि + ईसरो, दहीसरो (दधीश्वरः)

१. देखिए वररुचिसूत्र द्विवचनस्य बहुवचनम् ६. ३३. और चतुर्थ्याः षष्ठी ६. ६४. अर्द्धमागधी में चतुर्थी देखी जाती है। जैसे—अधम्माय कुज्झइ (अधर्माय क्रुध्यति), संसाराए सुखं (संसाराय सुखम्), अट्ठाए दण्डो (अर्थाय दण्डः) इत्यादि ।

विशेष :—(क) एक पद में सन्धि-कार्य नहीं होता । जैसे—
पाओ (पादः), पई, वच्छाओ, मुद्धाए इत्यादि ।
(ख) कहीं-कहीं एक पद में भी शब्दों के स्वभाव-
वश सन्धि होती देखी जाती है । जैसे—काहिइ,
काही; बिइओ, बीओ ।

(१०) 'इ' और 'उ' का विजातीय स्वर के साथ कभी
सन्धि-कार्य नहीं होता । जैसे—विअ (इव), महुइँ (मधूनि),
न वेरिवगो वि अवयासो^१ (न वैरिवर्गेऽप्यवकाशः), दगुइन्दरु-
हिरलित्तो^२ (दनुजेन्द्ररुधिरलित्तः) ।

(११) सजातीय स्वर के साथ सन्धि हो जाती है । जैसे—
पुहवी + ईसो = पुह्वीसो (पृथिवीशः); कुल्लद + अहिपो = कुल्ल-
दाहिपो (कुल्लताधिपः) ।

(१२) 'ए' और 'ओ' के आगे यदि कोई स्वर वर्ण हो तो
उनमें सन्धि नहीं होती है । जैसे—देवीए + एत्थ, एओ + एत्थ
(देव्या अन्, एकोऽत्र); बहुआइ नहुल्लिहणे आवन्धन्तीएँ
कञ्चुअं अङ्गे (बध्वा नखोल्लोखने आवधन्त्या कञ्चुकमङ्गे), तं
चेव मलिअ विसदण्ड विरसमालक्खिमौ एण्हि (तदेव मृदित-
विसदण्डविरसमालक्ष्यामह इदानीम्)

१. भीय परित्राणमइं पइण्ण मसिणो तुहाधिरुदस्स ।

(भीतपरित्राणमयी प्रतिज्ञामसेस्तवाधिरुदस्स्य ।)

मन्ने संकाविहुरे न वेरिवगो वि अवयासो ।

(मन्ये शङ्काविहुरे न वैरिवर्गेऽप्यवकाशः ॥)

२. दगु इन्द रुहिरलित्तो सहइ उइन्दो नहप्पहावलि-अरुणो ।

(दनुजेन्द्ररुधिरलित्तः शोभते उपेन्द्रो नखप्रभावत्यरुणः)

(१३) व्यञ्जनघटित स्वर से व्यञ्जन का लोप हो जाने पर जो स्वर बँचा रह जाता है उसे प्राकृत के वैयाकरण लोग 'उद्घृत्त' कहते हैं। कोई भी 'उद्घृत्त' स्वर किसी भी स्वर के साथ सन्धि-कार्य को नहीं प्राप्त करता है। जैसे—गन्ध-उडिं (गन्धकुटीम्), निसाअरो (निशाचरः), रयणीअरो (रजनीचरः)

विशेष :—कहीं-कहीं इस नियम के प्रतिकूल उद्घृत्त स्वर का दूसरे स्वर के साथ सन्धि-कार्य विकल्प से होता है। और कहीं-कहीं सन्धि अवश्य होती है। विकल्प से जैसे—सुउरिसो, सूरिसो (सुपुरुषः); नित्य जैसे—चक्काओ (चक्रवाकः), सालाहणो (सातवाहनः)

(१४) 'तिप्' आदि प्रत्ययों के स्वर किसी भी स्वर के साथ सन्धि-कार्य प्राप्त नहीं करते हैं। जैसे—होइ इह (भवतीह)

(१५) किसी स्वर वर्ण के पर में रहने पर उसके पूर्व के स्वर (उद्घृत्त अथवा अनुद्घृत्त) का वैकल्पिक लुक् होता है। जैसे—तिअस (त्रिदश) के सकार के आगेवाले अकार (अनुद्घृत्त) का 'ईसो' (ईशः) के ई के पर में रहने पर लुक् हो गया। अब स् और ई के मिल जाने से 'तिअसीसो' हुआ। वैकल्पिक होने के कारण 'तिअस ईसो' भी होता है। इसी प्रकार 'राउल्ल' (उद्घृत्त अस्वर का लुक्) और राअ उल्ल (राजकुलम्) भी जानना चाहिए।^१

१. तुलना कीजिए—अण्णावअणुअण्णो (आशावचनोत्कण्ठः) अभि० शा०, २ अं.) सलिलसेअसंभुमुग्गदो (सलिलसेकसंभ्रमोद्गतः) अभि० शा०, २ अं. ।

विशेष :—(क) शौरसेनी आदि प्राकृत के अन्य भेदों में उक्त नियम लागू नहीं होता ।

(ख) प्राकृतप्रकाश के अनुसार किसी भी संयुक्ताक्षर के पूर्व में वर्तमान स्वर से पूर्ववर्ती स्वर का सब जगह लोप होना माना जाता है ।
जैसे—णत्थि (नास्ति)

(१६) शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का सर्वत्र लुक् होता है । जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
जाव	यावत्
ताव ^१	तावत्
जसो ^२	यशः
णहं ^३	नभः
सिरं	शिरः

विशेष :—समास में उक्त नियम विकल्प से होता है ।

सभिवखू (लुक्) सञ्जणो (अलुक्)

(१७) 'श्रत्' और 'उत्' इन दोनों के अन्त्य व्यञ्जन का लुक् नहीं होता । जैसे—सद्दा (श्रद्धा) ; उण्णयं (उन्नयम्)

(१८) 'निर्' और 'दुर्' के अन्तिम व्यञ्जन र् का लुक् विकल्प से होता है । जैसे—निस्सहं (लुगभाव), नीसहं (लुक्); दुस्सहो (लुगभाव), दूसहो (लुक्) । सं. निस्सहम्, दुस्सहः ।

१. शौरसेनी में दाव होता है ।

२. नसान्तप्रावृट्सरदः पुंसि । वर. सू. ४.१८. नान्त, सान्त प्रावृष् और सरद् शब्दों का प्रयोग पुंलिङ्ग में होता है ।

३. न सिरोनभसी । वर० सू० ४.१६. शिरस् और नभस् शब्दों के पुंलिङ्ग में प्रयोग का निषेध है ।

(१६) स्वर वर्ण के पर में रहने पर 'अन्तर्' 'निर्' और 'दुर्' के अन्त्य व्यञ्जन (रेफ) का लुक् नहीं होता । जैसे— अन्तरप्पा (अन्तरात्मा), अन्तरिदा^१ (अन्तरिमा), नि (णि) रुत्तरं^२ (निरुत्तरम्) णिराबाधं^३ (निराबाधम्), दुरुत्तरं (दुरुत्तरम्) दुरागदं^४ (दुरागतम्) ।

विशेष :—कहीं कहीं 'निर्' के रेफ का लुक् देखा भी जाता है । जैसे—मुद्राराक्षस के पाँचवें अङ्क में क्षपणक कहता है 'ता जइ भाउराअणस्स मुद्दालं-च्छिदोऽसि तदो गच्छ वीसत्थो, अण्णघा णिबत्तिअ णिउक्कण्ठं' चिट्ठ । (तद् यदि भागुरायणस्य मुद्रालाञ्छितोऽसि तदा गच्छ विश्वस्तः । अन्यथा निवृत्य निरुत्कण्ठं तिष्ठ ।)

१. तेन हि लदाविडवन्तरिदा सुणिस्सं (तेन हि लताविटपान्तरिता श्रोष्ये ।) विक्र० अ० २ में देखावचन ।

२. वञ्चस्स, णिरुत्तरा एसा (वयस्य, निरुत्तरा एषा) विक्र० अ० ३ में चित्रलेखावचन ।

३. इमिणा दब्भोदएण णिराबाधं एव्व दे शरीरं भविस्सदि (अनेन दर्भोदकेन निराबाधमेव ते शरीरं भविष्यति ।) अभि० शा०, अ० ३ में गौतमीवचन ।

४. हु.गदं दाणिं संवुत्तं (दुरागतभिद्धानीं संवृतम्) विक्र० अ० २ में देवीवचन ।

५. वररुत्ति के (३. १) मत से क्, ग्, झ्, ट्, द्, प्, ष्, स्यदि संयोग के आदि में हों तो उनका लोप हो जाता है । और

(२०) विद्युत् शब्द को छोड़कर खीलिङ्ग में वर्तमान सभी व्यञ्जनान्त शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का आत्व होता है । जैसे— सरिआ (सरित्); संपआ (संपद्); वाआ^१ (वाक्); अछ्छरा^२ (अप्सरः) ।

उन्हीं के अन्य सूत्र (३. ५०) के अनुसार आदि में नहीं रहनेवाले जो संयुक्त के शेष अथवा आदेशभूत अक्षर हों उनका द्वित्व माना गया है । इस प्रकार उत्कण्ठा में त् का लोप और क् का द्वित्व करके 'उक्कण्ठा' बनता है । उत्पातः का 'उप्पाओ' बनता है । यह प्रकार उत्तम है । प्राकृतप्रकाश में दूसरे भी लोपविधायक सूत्र देखे जाते हैं । जैसे— (१) उदुम्बरे दोर्लोपः । वर० २. ४ उदुम्बर शब्द में दु का लोप होता है । उवरं (उदुम्बरम्) (२) कालायसे यस्य वा । वर० ३. ४ कालायस में य का लोप विकल्प से होता है । कालासं-काला असं (कालायसं) (३) भाजने जस्य । वर० ४. ४ भाजन शब्द में ज का वैकल्पिक लोप होता है । भाणं, भाञ्णं (भाजनम्) (४) यावदादिपु वस्य । वर० ५. ४ यावत् प्रभृति शब्दों में 'व' का वैकल्पिक लोप होता है । जा, जाव; ता, ताव; पाराओ, पारावओ; अनुत्तेन्तो, अनुवत्तन्तो; जीअं, जीविअं; एअं, एव्वं; एअ, एव्व; कुलअं, कुवलअं; (यावत्, तावत्, पारावत्; अनुवर्तमानः, जीवितम् एवं, एव, कुवलयम्) ।

१. एत्तिअं जेअ अत्थि मे वाआच्छलं (एतावदेवास्ति मे वाक्छलम्) शुद्धा० अ० १. में चन्दनदासवचन । णत्थि में वाआविहवो (नास्ति में वाग्विभवः) विक्र० अ० २ में उर्वशीवचन ।

२. सहि, अछ्छरावावारपञ्जाएण तत्र भअदो सुज्जस्स उवट्ठाओ बट्ठी (सखि, अप्सरो व्यापारपर्यायेण तत्र भवतः सूर्यस्थोपस्थाने तमाना) विक्र० अ० ४ में चित्रलेखावचन ।

विशेष—(क) यह नियम इसी अध्याय के नियम १६ का अपवाद है।

(ख) विद्युत् शब्द का प्राकृत रूप विज्जू होता है।

(ग) उक्त नियम से जो आ होता है, उसका उच्चारण कभी-कभी ईपत्स्पृष्टतर या के समान भी होता है। सरिया, पाडिवया, संपया।

(घ) अपसरस का एक रूप अच्छरसा भी होता है।

(२१) स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान रेफान्त शब्द के अन्तिम र् का आदेश होता है। जैसे—धुरा^१, गिरा^२, पुरा (धूः, गीः, पूः)

(२२) 'भ्रुध्' शब्द के अन्त्य व्यञ्जन का 'हा' आदेश होता है। जैसे—छुहा (क्षुत्)

(२३) 'शरत्' प्रभृति शब्दों के अन्तिम व्यञ्जन के स्थान में 'अ'^३ आदेश होता है। जैसे—सरअ^४, भिसअ (शरत्, भिषक्)

१. दुष्मोज्झा वि अचलम्बिश्वा कज्जधुश्वा । राव० ५. ४४

२. पासम्मि ठिश्वा तस्स य महु प्रगोरोश्चो महुअमहुरगिरा । (पाश्चै स्थिताः तस्य याः मधूकगौर्यो मधूकमधुरगिरः) कुमा० पा० १. ७५

३. प्राकृतप्रकाश के 'शरदो दः' वर० सू० ४. १० के अनुसार शरत् के अन्तिम व्यञ्जन का 'द' 'आदेश' होता है। इसके अनुसार शरत् के लिए 'सरअ' न होकर 'सरदो' रूप होता है।

४. सीश्वा वाह विहाश्चो दहमुहवज्झ दिअहो उवगश्चो सरओ राव० १. १६

(२४) 'दिश्' और 'प्रावृष्' शब्दों के अन्तिम व्यञ्जनों के स्थान में 'स' आदेश होता है । जैसे—दिसा,^१ पाउसो^२ (दिक्, प्रावृट्)

(२५) 'आयुष्' और 'अप्सरस्' के अन्त्य व्यञ्जनों का 'स' आदेश विकल्प से होता है । जैसे—दीहाउसो^३ दीहाऊ, अच्छरसा,^४ अच्छरा^५ (अप्सराः)

(२६) ककुम् शब्द के अन्त्य व्यञ्जन का ह आदेश होता है । जैसे—कउहा (ककुम्)

(२७) धनुष् शब्द के अन्त्य व्यञ्जन के स्थान में ह आदेश विकल्प से होता है । जैसे—धणुहं, धणू^६ (धनुः)

(२८) अन्त्य 'म्' का अनुस्वार होता है । जैसे—जलं, फलं, वच्छं, गिरिं पेच्छ (जलम्, फलम्, वत्सम्, गिरिम्, प्रेक्षस्व) ।

१. फुरइ फुरिअट्टहासं उद्धपडित्तिभिरं मिव दिसा दिसा-अक्कं ।
रावण० १. ५

२. दिसाण पाउस-किलत्ताण । (दिशां प्रावृट्कान्तानाम् ।) कुमा०
पा० १. ९

३. दिहाऊ वि अदीहाउसमाणी सह विवेइ-जणो । (दीर्घायुरपि
अदीर्घायुर्मानि सदा विवेकिजनः ।) कुमा० पा० १. १०

४. जीअ-विट्ठत्तच्छरसं । रावण० १३. ४७

५. गअण-णिराअ-भिण्ण-वण भेसि अच्छरेहिं । रावण० ७. ४५

६. कुसुमधणू धणुहधरो कउहा-मुह-मण्डणम्मि चन्द्रंभि ।

(कुसुमधनुर्धनुर्धरः ककुम्मुखमण्डने चन्द्रे ।) कुमा० पा० १. ११

(२६) कहीं-कहीं अनन्त्य मकार का वैकल्पिक रूप से अनुस्वार होता है । जैसे—वणम्मि, वणंमि (वने)

(३०) स्वर के पर में रहने पर अनन्त्य मकार का अनुस्वार विकल्प से होता है । जैसे—फलं अवहरइ, फलमवहरइ (फल-मवहरति)

विशेष :—अनुस्वार के अभाव पक्ष में म् का म् ही रह गया । लुक् का अपवाद होने से लुक् (१-१६) नहीं हुआ ।

(३१) कभी-कभी 'म्' के अतिरिक्त दूसरे व्यञ्जनों के स्थान में भी पाक्षिक मकार होता देखा जाता है । जैसे—वीसुं, पिहं, सम्मं, सक्खं, जं, तं, (विष्वक्, पृथक्, सम्यक्, साक्षात्, यत्, तत्)

(३२) व्यञ्जन वर्णों के पर में रहने पर ङ् व् ण् न् के स्थान में अनुस्वार होता है । जैसे—पंत्ती, परंमुहो, कंचुओ, वंचणं; संमुहो, उक्कठा; कंसो, अंसो (पङ्क्तिः, पराब्धुखः कञ्चुकः, वञ्चनम्; पण्मुखः, उत्कण्ठा, कंसः. अंशः)

(१३) वक्रप्रभृति^२ शब्दों में कहीं प्रथम, कहीं द्वितीय तथा कहीं तृतीय स्वर के आगे अनुस्वार का आगम होता है ।

१. वीसुं वासा-नीसित्त-महि-अले ऊस-मालि तेअस्स (विष्वग्बर्षानि-पित्तमहीतले उल्लमालितेजसः । कुमार पा० १. ३२.

२. वक्रथ्यस्रवयस्याश्रु रमश्रुपुच्छातिमुक्तकौ ;

गृष्टिर्मनस्विनी स्पर्शश्रुतप्रतिश्रुतं तथा ।

नियसनं दर्शनश्चैव वक्रादिव्येषमादयः ॥

(प्राकृतकल्पलिका के अनुसार वक्रादि गण । यह गण आकृति गण माना जाता है ।)

जैसे—वंकं (वक्रम्), तंसं (त्र्यसम्), अंसुं (अश्रु), मंसू (श्मश्रु) पुंछं (पुच्छम्) गुंछं (गुच्छम्), मुंढा अथवा मुंढं (मूर्द्धा), फंसो (स्पर्शः), बुंधो (बृध्नः), कंकोडो (कर्कोटः), कुंपलं (कृटमलं अथवा कुड्मलम्), दंसणं (दर्शनम्) विंछिओ (वृश्चिकः), गिंठी अथवा गुंठी (गृष्टिः) मंजारो (मार्जारः)^१ वयंसो (वयस्यः), मणंसिणी (मनस्विनी), मणंसिला (मनः-शिला), पडिसुदं (प्रतिश्रुतम्), पडिसुआ (प्रतिश्रुत्)^२ उवरि (उपरि), अहिमुंको (अभिमुक्तः) अणिउंतयं, अइमुंतयं (अति-मुक्तकम्)^३

(३४) क्त्वा एवं स्वादि के ण और सु के आगे विकल्प से अनुस्वार आता है ।

क्त्वा के आगे जैसे—

प्राकृत

संस्कृत

काउणं (अनुस्वार), काऊण (अनुस्वार का अभाव) कृत्वा
स्वादि के ण के आगे जैसे—

वच्छेणं (अनुस्वार), वच्छेण (अनु० का अभाव) वृत्तेण
स्वादि के सु के आगे जैसे—

वच्छेसुं (अनुस्वार), वच्छेसु (अनु० का अभाव) वृत्तेषु

१. वंकं से मंजारो तक प्रथम स्वर के आगे अनुस्वार का आगम हुआ है ।

२. वयंसो से पडिसुआ तक शब्दों में द्वितीय स्वर के आगे अनुस्वार का आगम होता है ।

३. उवरि से अइमुंतयं तक शब्दों में तृतीय स्वर के आगे अनुस्वार का आगम होता है ।

(३५) विंशति प्रभृति^१ शब्दों के अनुस्वार का लुक् होता है। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
वीसा	विंशतिः
तीसा	त्रिंशत्
सक्कअं	संस्कृतम्
सक्कारो	संस्कारः
सत्तुअं	संस्तुतम्

(३६) मांसादि गण^२ में अनुस्वार का लुक् विकल्प से होता है। जैसे—

(क) प्रथम स्वर के आगे अनुस्वार का लुक्—

प्राकृत	संस्कृत
मासं, मंसं	मांसम्
मासलं, मंसलं	मांसलम्
कि, किं,	किम्

१. विंशत्यादि गण में विंशति, त्रिंशत्, संस्कृत, संस्कार और संस्तुत शब्द गृहीत हैं।

२. मांसादि गण के विषय में प्राकृतप्रकाश में यों लिखा गया है—
‘यत्र क्वचित् वृत्तभङ्गभगान् त्यज्यमानः क्रियमाणश्च विन्दुर्भवति स मांसादिषु द्रष्टव्यः।’ अर्थात् छन्दोभङ्ग के भय से जिस किसी शब्द में अनुस्वार छोड़ा जाता या गृहीत होता है, वह शब्द मांसादि गण में माना जाता है।

प्राकृत	संस्कृत
कासं, कंसं	कांसम्
सीहो, सिंघो	सिंहः
पासू, पंसू	पांसुः (शुः)

(ख) द्वितीय स्वर के आगे अनुस्वार का लुक्—

प्राकृत	संस्कृत
कह, कहं	कथम्
एव, एवं	एवम्
नूण, नूणं	नूनम्

(ग) तृतीय स्वर के आगे अनुस्वार का लुक्—

प्राकृत	संस्कृत
इआणि, इआणिं	इदानीम्
ससुहं, संसुहं	सम्मुखम्
केसुअं, किंसुअं	किंशुकम्

(३७) वर्गों का यदि कोई अक्षर पर में हो तो पूर्व के अनुस्वर के स्थान में पर अक्षर के वर्ग का पञ्चम अक्षर विकल्प से होता है । क, ख, ग, घ के पर में जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
पङ्को, पंको	पङ्कः
सङ्घो संखो	शङ्खः
अङ्गणं, अंगणं	अङ्गनम्
लङ्घणं, लंघणं	लङ्घनम्

च, छ, ज, झ के पर में जैसे—

कञ्चुओ, कंचुओ	कञ्चुकः
लञ्छणं लंछणं	लाञ्छनम्
व्यञ्जिअं, वंजिअं	व्यञ्जितम्
सब्भा, संभा	सन्ध्या

ट, ठ, ड, ढ के पर में जैसे—

कण्टओ, कंटओ	कण्टकः
उक्कण्ठा, उक्कंठा	उत्कण्ठा
कण्डं, कंडं	काण्डम्
सण्डो, संढो	षण्डः

त, थ, द, ध के पर में जैसे—

अन्तरं, अंतरं	अन्तरम्
पन्थो, पंथो	पन्थाः
चन्दो, चंदो	चन्द्रः
बन्धवो, बंधवो	बान्धवः

प, फ, ब, भ के पर में रहने पर जैसे—

कम्पइ, कंपइ	कम्पते
वम्फइ, वंफइ	काङ्क्षति
कलम्बो, कलंबो	कलम्बः
आरम्भो, आरंभो	आरम्भः

विशेष :—(क) पर में वर्ग का अक्षर नहीं रहने से किंसुओं और संह्रइ में उक्त नियम लागू नहीं हुआ ।

(ख) प्राकृत के अन्य वैयाकरण उक्त नियम को वैकल्पिक न मान कर नित्य मानते हैं ।

लिङ्गानुशासन

(३८) प्रावृष्, शरद् और तरणि शब्दों का पुंलिङ्ग में प्रयोग किया जाना चाहिए । जैसे—पाउसो,^१ सरओ,^२ तरणी^३

(३९) दामन्, शिरस् और नभस् से वर्जित सकारान्त तथा नकारान्त शब्द पुंलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं ।

सान्त जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
जसो ^४	यशः
पओ ^५	पयः
तमो ^६	तमः
तेओ ^७	तेजः
सरो ^८	सरः

१ जइआ गिम्हो पयहओ तइअ चिअ किर आसि पाउसो ।
कुमा० पा० ४. ७८

२ दहमुह-वज्म-दिअहो उवगओ सरओ । रावण० १. १६

३ न जत्थ दीसइ फुडो तरणी । कुमार० पा० १. २१

४ परोहो व्व खुडिओ महेन्दस्स जसो । रावण० १. ४

५ धीरअं सइ मुहल-घण-पअ-विज्जन्तअं । रावण० २. २४

६ णह-णिहं तमेण व चउदिसं भाविअं । रावण० २. २३

७ देखिए १. ३१ की पादटिप्पणी ।

८ अमुणा सरेण हंसाण माणसं तं पि विम्हरिअं । कुमा० प.

नान्त जैसे—

जम्मो ^१	जन्म
नम्मो ^२	नर्म
कम्मो ^३	कर्म
वम्मो ^४	वर्म

(४०) दामन्, शिरस् और नभस् शब्द नपुंसक लिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं । जैसे—दामं^१ (दाम), सिरं^२ (शिरः), नहं^३ (नभः)

विशेष :—(क) यह नियम पूर्व नियम (१. ३६) में प्रतिपिद्ध दामन् आदि तीनों शब्दों के लिङ्ग का बोधन करता है ।

(ख) नीचे लिखे उदाहरणों में भी उक्त १. ३६ नियम प्रवृत्त नहीं होता है । अर्थात् नपुंसकत्व हो जाता है । जैसे—

१ सहलो जम्मो सभूलं च जीवित्रं ताण देव फणि-चिन्ध ।
कुमा० पा० २. ५६

२ इश्च नम्म-पड्डु जल पाण-रई । कुमा० पा० ४. ३३

३ काही सउहे गमणं संझा कम्मं च काहीश्च । कुमा० पा० ५; ८७

४ अग्घिअवम्मा (राजितवर्माणः) छज्जिश्च सिरकया । कुमा०
पा० ६. ६३

५ गलिअं घण-लच्छि रश्चण-रसणा दामं । रावण० १. १८

६ उरणाभिअं णणु सिरं जाश्चं । रावण० ४. ५६

७ थाण-प्फिडिअ-सिदिलं पडन्तं व णहं । रावण० ४. ५४

वयं^१ (वयः), सुमणं^२ (सुमनः), सम्मं^३
(शर्म), चम्मं^४ (चर्म)

(४१) अक्षि (आँख) के समानार्थक शब्द तथा निम्न निर्दिष्ट वचनादि^५ गण के शब्द पुंलिङ्ग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं । अक्षि शब्द का पाठ अञ्जल्यादि गण में भी किया गया है, इसलिए स्त्रीलिङ्ग में भी उसका प्रयोग होता है । जैसे—

प्राकृत		संस्कृत
अच्छी ^६	(पुंलिङ्ग)	अक्षिणी
अच्छीइं ^७	(नपुंसक)	अक्षिणी
एसा अच्छी	(स्त्रीलिङ्ग)	एतदक्षि
चक्खू (पुंलिङ्ग)	}	चक्षुषी
चक्खूइं (नपुंसक)		
णअणा (पुंलिङ्ग)	} c	नयनम्
णअणं (नपुंसक)		

१. २ सव्वत्रयाणं मडिम्मवयं व सुमणाण जाइ सुमणं वा ।
कुमा० पा० १. २३
- ३ सम्माण मुत्ति-सम्मं न पुंइइ नयराण जं सेयं । कुमा० पा० १. १३
- ४ चम्मं जाण न अच्छी । कुमा० पा० १. २४
- ५ वचनादि गण में वचन, कुल, माहात्मा, दुःख, छन्दस्, विजु
आदि शब्द गृहीत हैं ।

- ६ अज्ज वि सा सवइ ते अच्छी । (अद्यापि सा शपति तेऽक्षिणी)
- ७ नच्चावियाइँ तेणम्ह अच्छीइँ (नर्तितानि तेनास्माकमक्षीणि)
- ८ शाकल्यः शरदं स्त्रीत्वे क्लान्त्वे नान्तश्च कुण्डिनः । पुंक्लीबयोस्त-
थाख्यात नयनादि तथा परैः । कल्पलतिका ।

विअसन्ति जत्थनयणाकिं पुण अच्चाण नयणाइँ, कुमा० पा० १. २४०

लोअणो (पुंलिङ्ग) } लोअणं (नपुंसक) }	१	लोचनम्
वअणो (पुंलिङ्ग) } वअणं (नपुंसक) }	२	वचनम्
कुलो (पुंलिङ्ग) } कुलं (नपुंसक) }		कुलम्
माहप्पो } माहप्यं }	३	माहात्म्यम्

(४२) किसी किसी आचार्य के मत से पृष्ट, अक्षि और प्रभ्र शब्द विकल्प से स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं । जैसे—पुट्टी, पुट्टं (पृष्टम्); अच्छी, अच्छं (अक्षि), पण्हा, पण्हो (प्रभ्रः) ।

(४३) गुणादि^१ शब्द नपुंसक लिङ्ग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं । जैसे—गुणं^२ गुणो (गुणः); देवाणि, देवा (देवाः); खग्गं, खग्गो (खड्गः); मण्डलग्गं, मण्डलग्गो (मण्डलाग्रः); कररुहं, कररुहो (कररुह); रुक्खाइं, रुक्खा (वृक्षाः)

(४४) इमान्त (इमन् प्रत्यय जिसके अन्त में आया हो)

१ बिहसन्तहिओ बिहसेन्त लोअणो । कुमा० पा० ५. ८४.

२ गुरुणो वयणा वयणाइं । कुमा० पा० १. २५.

३ नेत्र और कमल शब्दों का वचनादि में ग्रहण नहीं है । क्योंकि वे संस्कृत के अनुसार ही हैं ।

४ गुणादि में गुण, देव, विन्दु, खड्ग, मण्डलाग्र, कररुह, और वृक्ष शब्द गृहीत हैं ।

५ बिहवेहिं गुणाइं मग्गन्ति (विभवैर्गुणाः मृग्यन्ते) हेम० १.४३

और अञ्जल्यादि^१ गण के शब्द विकल्प से स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं।

इमान्त में जैसे—

प्राकृत

एसा गरिमा; एसो गरिमा
एसा महिमा; एसो महिमा^२

संस्कृत

एष गरिमा,
एष महिमा

अञ्जल्यादि में जैसे—

एसा अंजली, एसो अंजली^३
चोरिआ (स्त्री०), चोरिओ (पु०)
निही (स्त्री०), निही (पु०)^४
विही (स्त्री०), विही (पु०)
गंठी (स्त्री०), गंठी (पु०)

एष अञ्जलिः
चौर्यम्
निधिः
विधिः
ग्रन्थिः

(४५) जब बाहु शब्द स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होता है, तब उसके उकार के स्थान में आकार आदेश होता है। किन्तु जब

१ अञ्जल्यादि गण में अञ्जलि, पृष्ठ, अक्षि, प्रश्न, चौर्य, कुक्षि, बलि, निधि, विधि, रश्मि और ग्रन्थि शब्द गृहीत हैं। रश्मिः स्त्रियां वेति कल्पलतिका। कल्पलतिकायां काश्मीरोष्म सीम शब्दाः पठिताः।

२ एयाए महिमाए हरिओ महिमा सुर-पुरीए।

—कुमा० पा० १. २६

३ जत्थञ्जलिणा कणयं रयणाई वि अञ्जलीइ देह जणो।

—वही। १. २७

४ कणय-निही अक्खीणो रयण-निही अक्खया तह वि।

—वही। १. २७

पुंलिङ्ग में प्रयुक्त होता है तब आकार आदेश न होकर बाहु रूप ही रह जाता है। जैसे एसा बाहा^१; एसो बाहू^२। (एष बाहुः)

(४६) संस्कृत व्याकरण के अनुसार जब किसी प्रकार के आगे विसर्ग आया हो, तो उस विसर्ग के स्थान में ओ आदेश हो जाता है और ओ के पूर्व के व्यञ्जन सहित अ का लोप होता है। जैसे—सव्वओ (सर्वतः); पुरओ (पुरतः); अग्गओ (अग्रतः); मग्गओ (मार्गतः)।

विशेषः—तह सार्गत्रिक नियम नहीं है कि शब्द अकारान्त ही हो। अतः व्यञ्जनान्त शब्दों में भी उक्त नियम लागू हो जाता है। जैसे—भवओ (भवतः) भवन्तो (भवन्तः) सन्तो (सन्तः); कुदो (कुतः)

(४७) माल्य शब्द के पर में रहने पर निर् और स्था धातु के पर में रहने पर प्रति के स्थान में क्रमशः ओत् और परि आदेश विकल्प से होते हैं। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
ओमल्लं अथवा ओमालं (ओ)	निर्माल्यम्
निम्मलं (ओ का अभाव)	
परिद्धा (परि आदेश)	प्रतिष्ठा
पइद्धा (परि का अभाव)	

१ तस्य सिरि-कुमर-बालो बाहाए सव्वओ वि धरिअ-धरो ।

—कुमा० पा० १. २८.

२ बाहूसु सिला-अल-टिठएसु गिसण्णो । —रावण० ३. १.

परिद्धिअं (परि आदेश)	}	प्रतिष्ठितम्
पइद्धिअं (परि का अभाव)		

(४८) त्यद् आदि^१ सर्वनामों से पर में रहनेवाले अव्ययों तथा अव्ययों से पर में रहनेवाले त्यादादि के आदि स्वर का लुक् विकल्प से होता है । जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
अम्हेव (त्यदादि से पर अव्यय के आदि स्वर का लुक्) -	} वयमेव
अम्हे एव (लुक् का अभाव)	
जइहं (अव्यय से पर में आनेवाले त्यादादि के आदि स्वर का लुक्	} यद्यहम्
जइ अहं (लुक् का अभाव)	

(४९) पद से पर में रहनेवाले अपि अव्यय के आदि अ का लुक् विकल्प से होता है । जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
तं पि; तमवि	तमपि
किं पि; किमवि	किमपि
केण वि; केणावि	केनापि
कहं पि; कहमवि	कथमपि

(५०) पद से पर में रहनेवाले इति अव्यय के आदि इकार

^१ त्यद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, एक. द्वि, युष्मद्, अस्मद्, भवतु किम् ये ही त्यादादि सर्वनाम माने गये हैं ।

का लुक् विकल्प से होता है और स्वर से पर में रहनेवाले तकार का द्वित्व होता है। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
किं ति	किमिति
यं ति	यदिति
दिद्वं ति	दृष्टमिति
न जुक्तं ति	न युक्तमिति

स्वर से पर रहने पर जैसे—

तह् ति	तथेति
पिओ ति	प्रिय इति
पुरिसो ति	पुरुष इति

विशेष—पद से पर में नहीं रहने के कारण नीचे लिखे उदाहरण में न तो इति के आदि इ का लुक् हुआ और न तकार का द्वित्व ही। इअ^१ विञ्ज-गुहा-निलयाए।

(५१)—जिन श्, प्, स् से पूर्व अथवा पर में रहनेवाले य्, र्, व्, श्, प्, स् वर्णों का प्राकृत के नियमानुसार लोप हुआ हो उन शकार, षकार और सकारों के आदि स्वर का दीर्घ हो जाता है^२। जैसे—

१ देखिए—नियम १. ६९

२ इस नियम को पूर्णतः समझने के लिए हेमचन्द्र के अधोम-नयाम् २. ७८ अनादौ शोषादेशयोर्द्वित्वम्। २. ८६ न दीर्घानुस्वा-रात्। २. ६२ आदि सूत्रों का मनन आवश्यक है।

ग्राकृत	संस्कृत
पाइस (यलोपर.७८;द्वि०२.८६; = पस्सइ.सलुकृ.७७;दीर्घ) पश्यति	
कासवो (" " " " = कस्सवो. " " ") काश्यपः	
वीसमइ (र लोप २.७६; दीर्घ)	विश्राम्यति
वीसामो (" " ")	विश्रामः
संफासो (" " द्वित्व२.८६; संफस्सो.सलुकृ.७७;दीर्घ) संफासो	
आ सो (व लोप २.७६. " " अरसो " " ") अश्वः	
वीससइ (" " " विस्ससइ " " ") विश्वसिति	
विसासो (" " " " विस्सासो " " ") विश्वासः	
दूसासणो (श लोप २.७७; दीर्घ)	दुश्शासनः
मणासित्ता (श लोप २.७७; दीर्घ)	मनःशित्ता
सीसो (य लोप २.७८.द्वित्व२.८६.सिस्सो सलुकृ.७७दीर्घ)शिष्यः	
पूसो (" " " " पुस्सो " " ") पुष्यः	
मनूसो (" " " " मनुस्सो " " ") मनुष्यः	
कासओ (र लोप २.७६ " " कस्सओ " " ") कर्षकः	
वासा (" " " " वस्सा " " ") वर्षाः	
वीसुं (व लोप २.७६. उत्त्व१.५२.द्वि, विस्सुं " " ") विष्वक्	
सासं (य लोप २.७८. " " सस्सं " " ") सस्यम्	
कासइ(य लोप २.७८;द्वित्व२.८६;कस्सइ;सलुकृ.७७;दीर्घ)कस्यचित्	
ऊसो (र लोपर.७६; " " " उस्सो " " ") उखः	
विकासरो (व लोप " " " विकस्सरो " " ") विकस्वरः	
नीसो (" " " " निस्सो " " ") निस्वः	
नीसहो (स लोप २.७७ दीर्घ)	निस्सहः

(५२)—समृद्ध्यादि^१गण के शब्दों में आदि अकार का दीर्घ विकल्प से होता है । जैसे—सामिद्धी, समिद्धी (समृद्धिः); पाअडं, पअडं (प्रकटम्); पासिद्धी, पसिद्धी (प्रसिद्धिः); पाडि-वआ, पडिवआ (प्रतिपदा); पासुत्तं, पसुत्तं (प्रसुप्तम्); पाडि-सिद्धी, पडिसिद्धी (प्रतिसिद्धिः); सारिच्छो, सरिच्छो (सदृक्षः); माणंसी, मणंसी (मनस्वी); माणंसिणी मणंसिणी (मनस्विनी); आहिआई,^२ अहिआई^३ (अभिजातिः); पारोहो, परोहो (प्ररोहः); पावासू, पवासू (प्रवासी); पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी (प्रतिस्पद्धी); आसो, अस्सो (अश्वः) ।

विशेष—प्राकृतप्रकाश ने इस गण को आकृति गण माना है । ऊपर उदाहरणों में इसीलिए मनस्वी, प्ररोहः और अश्वः की उक्त गण के भीतर सिद्धि मानी गई है ।

(५३) दक्षिण शब्द में आदि अकार का, ह के पर में रहने पर, दीर्घ होता है । जैसे—दाहिणो (दक्षिणः)

विशेष—ह नहीं रहने पर दक्षिणः का दक्खिणो यही रूप रह जाता है ।

(५४) स्वप्न आदि शब्दों में आदि 'अ' का इकार होता है । जैसे—सिचिणो (स्वप्नः); इसि (इपत्); वेडिसो (वेतसः),

१ समृद्ध्यादि गण के शब्दों का परिगणन यों है—

समृद्धिः, प्रतिसिद्धिश्च, प्रसिद्धिः प्रकटं तथा;

प्रसुप्तश्च प्रतिस्पद्धीं प्रतिपञ्च मनस्विनी ।

अभिजातिः, सदृक्षश्च समृद्ध्यादिरयं गणः ॥—कल्पलतिका ।

२ आहिआई यह पाठान्तर है ।

३ अहिआई यह पाठान्तर है ।

विलिअ (व्यलीकम्); विअणं (व्यजनम्); मुइंगो (मृदङ्गः);
किविणो (कृपणः); उत्तिमो (उत्तमः); मिरिअं (मरियम्);
दिण्णं^१ (दत्तम्) ।

विशेष--जहाँ दत्त के त्त के स्थान में णत्व नहीं हुआ हो
वहाँ उक्त नियम में बहुल (प्रायः) का अधिकार
होने से इत्व नहीं होता है । जैसे—दत्तं; देवदत्तो ।

(५५) मयट् प्रत्यय में आदि अ के स्थान में 'अइ' आदेश
विकल्प से होता है । अइ होने पर जैसे—विसमइओ; अइ के
अभाव में जैसे—विसमओ (विषमयः)

(५६) अभिञ्ज^२ आदि शब्दों में णत्व करने पर ज्ञ के ही

* प्राकृतप्रकाश में—'इदीपत्पक्वस्वप्नवेतसव्यजनमृदङ्गा-
ङ्गारेषु' यह सूत्र है । इस सूत्र में 'वेति निवृत्तम्' ऐसा कहा गया है ।
इसि (ईषत्); पिकं (पक्कं); सिविणो (स्वप्नः); वेत्सो (वेतसः);
विअणो (व्यजनम्); मिइङ्गो (मृदङ्गः); इङ्गालो (अङ्गारः) । किन्तु
प्राकृतमञ्जरी के अनुसार यह इत्व विकल्प से होता है । ईषत् पक्
तथा स्वप्नो वेतसो व्यजनं पुनः । मृदङ्गश्च तथाङ्गार एषु शब्देषु सप्तसु ।
अत इद्वा भवेदीषदीसि वा पुनरीस वा । पकं पिकश्च पक्कश्च तथान्येष्वपि
दृश्यताम् । इत्वमीषत्पदे कैश्चिदीकारस्यापि चेष्ट्यते । 'इसि लुम्बिअमित्यादि
रूपं तेन हि सिद्धयति । शौर-सेनी में अङ्गार और वेतस के आदि
अकार का इकार नहीं होता । आर्ष में स्वप्न शब्द के आदि अकार
का उकार भी होता है । जैसे—लुमिणो । इसके लिए देखिए—हेम०
१. ४६ ।

‡ जिनके श का णत्व कर देने पर उरव देखा जाता है, वे ही
अभिज्ञादि हैं । देखिए हेम० १. ५६.

अकार का उत्त्व होता है। जैसे—अहिण्णू (अभिज्ञः); सव्वण्णू^१ (सर्वज्ञः); आगमण्णू (आगमज्ञः)

विशेष—णत्वाभाव में अहिज्जो (अभिज्ञः) और सव्वज्जो (सर्वज्ञः) रूप होते हैं। अभिज्ञादि से भिन्न स्थल में नियम नहीं लगता। पण्णो (प्राज्ञः)।

(५७) शय्या^२ आदि शब्दों में आदि अकार का एकार आदेश होता है। जैसे—सेज्जा^३ (शय्या); सुदेरं (सुन्दरम्); उक्केरो (उत्करः); तेरहो (त्रयोदश); अच्छेरं (आश्चर्यम्); पेरन्तं (पर्यन्तम्); वेल्ली (वल्ली)।

विशेष—कोई-कोई प्राकृत वैयाकरण शय्यादि गण में कन्दुक का भी पाठ मानते हैं। उनके मत से गण्डुअं (कन्दुकम्) रूप होता है।

(५८) अर्पि धातु के आदि अ का ओ आदेश विकल्प से होता है। ओ जैसे—ओप्पेइ; ओ का अभाव जैसे—अप्पेइ

१ पैशाची में सव्वण्णू न होकर सव्वज्जो और शौरसेनी में सव्वण्णो होता है।

२ शय्यादि गण में निम्नलिखित शब्द ही माने गये हैं।

शय्या त्रयोदशाश्रयं पर्यन्तोत्करवलयः;

सौन्दर्यं चेति शय्यादिगणः शेषस्तु पूर्ववत् ॥

३ प्रसिद्ध वैयाकरण हेमचन्द्र ने एच्छय्यादौ १. ५७ और वल्ल्युत्करपर्यन्ताश्रय्ये वा १. ५८ इन दो सूत्रों को बनाकर प्रथम सूत्र से नित्य एत्व करते हुए सेज्जा, सुन्दरं, गेन्दुअं, एत्य (अत्र) इन उदाहरणों की सिद्धि मानी है। दूसरे से वैकल्पिक एत्व करते हुए वेल्ली, वल्ली; उक्केरो, उक्करो; पेरन्तो, पज्जन्तो; अच्छेरं, अच्छेरिअं, अच्छअरं, अच्छरिज्जं अच्छरीअं उदाहरण दिये हैं।

(अर्पयति); एवं ओ आदेश जैसे—ओपिअं ओ का अभाव जैसे—अपिअं (अर्पितम्)

(५६) स्वप् धातु में आदि स के स्थान में ओत् और उत् आदेश पर्याय (बारी-बारी) से होते हैं । ओत् जैसे—सोवइ; उत् जैसे—सुवइ (स्वपिति) ।

(६०) नच् के बाद में आनेवाले पुनर् शब्द के अ के स्थान में आ और आइ आदेश विकल्प से होते हैं । जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
ण उणा (आ)	} न पुनः
ण उणाइ (आइ)	
ण उण (पक्ष में)	

(६१) अव्ययों में और उत्खात,^१ चामर, कालक, स्थापित प्रतिस्थापित, संस्थापित, प्राकृत, तालवृन्त हालिक, नाराच, बलाका, कुमार, खादित, ब्राह्मण एवं पूर्वाह्न शब्दों में आदि

१ प्राकृतप्रकाश और कल्पलतिका में उक्त उदाहरणों की सिद्धि के लिए 'अदातो दथादिपु वा' सूत्र मिलता है । कल्पलतिका में यथादि गण में शब्दों की परिगणना यों की गई है—

यथातथातालवृन्त प्राकृतोत्खातचामरम् ।
 चट्टप्रहावप्रस्तारप्रर्वाहाहालिकस्तथा ॥
 मार्जारश्च कुमारश्च मार्जारैयुकलोपिनि ।
 संस्थापितं खादितश्च मरालश्चैवमादयः ॥

प्राकृतमस्त्रीकार यथादि गण की गणना इस प्रकार करते हैं—

यथा चामरदावाग्निप्रहारोत्खातहालिकाः
 तालवृन्ततथाचाट्ट यथादिः स्यादयं गणः ।

आकार का अकार विकल्प से होता है। यथा—जह, जहा (यथा); तह, तथा (तथा); अहव, अह्वा (अथवा); उक्खअं, उक्खाअं (उत्खातम्); चमरं, चामरं (चामरम्); कलओ, कालओ (कालकः); ठविअं, ठाविअं (स्थापितम्); परिठविअं, परिठ्ठापि (प्रतिष्ठापितम्); संठविअ, संठाविअं (संस्थापितम्); पउअं, पाउअं (प्राकृतम्); तलवेण्टं, तालवेण्टं (तालवृन्तम्); हलिओ, हालिओ (हालिकः); णराओ, णाराओ (नाराचः); वलाआ, वलाआ (बलाका); कुमरो, कुमारो (कुमारः); खइअं, खाइअं (खादितम्); बम्हणो, बाम्हणो (ब्राह्मणः); पुव्वाण्हो, पुव्वाण्हो^१ (पूर्वालः)

(६२) घञ् को निमित्त मानकर जहाँ आ रूप वृद्धि हुई हो, उस आदि आकार का अत्व विकल्प से होता है। जैसे—

प्राकृत

पवहो }

पवाहो }

संस्कृत

प्रवाहः

१ प्राकृतप्रकाश और कल्पलतिका के अनुसार प्रस्तार प्रहार, दावामि, चाट्ट, मार्जार, मराल, प्रवाह इन शब्दों के आदि आकार का भी अत्व विकल्प से होता है। कल्पलतिका के अनुसार स्थापित, पांशुर तथा माधुर्य के आदि आकार का नित्य ही अत्व होता है। शौरसेनी आदि प्राकृत के अङ्गों में कहीं अत्व का निषेध देखा जाता है। क्रमशः यहाँ उदाहरण दिये जा रहे हैं।—पत्थरो, पत्थारो (प्रस्तारः), पहरो, पहारो, (प्रहारः), दवग्गो, दावग्गी (दावामिः); चड्ड, चाड्ड (चाट्ट); मज्जारो, माज्जारो (मार्जारः); मरलो, मरालो (मरालः); पवहो, पवाहो (प्रवाहः)।—ठविअं (स्थापितम्); पंसुरं (पांशुरम्); मधुरीअं (माधुर्यम्); जथा (यथा); तथा (तथा)।

पअरो }
पअरो }

प्रकारः

विशेष—कुछ घञन्त शब्दों में यह नियम लागू नहीं होता । जैसे—राओ (रागः) इत्यादि ।

(६३) मांस जैसे शब्दों में अनुस्वार रहने पर (देखिए नियम १. ३६) आदि आकार का अत्व होता है । जैसे—मंसं (मांसम्) पंसू (पांशुः); पंसनो (पांसनः); कंसं (कांसम्); कंसिओ (कांसिकः); वंसिओ (वांसिकः); संसिद्धिओ (सांसिद्धिकः); संजत्तिओ (सांयात्रिकः)

(६४) सदा आदि शब्दों में आकार का इकार आदेश विकल्प से होता है । इकार जैसे—सइ, तइ, जइ, गिसिअरो । इकार का अभाव जैसे—सआ, तआ, जआ, गिसाअरो (सदा, तदा, यदा, निशाचरः)

(६५) यदि आर्या शब्द श्वश्रु (सास) के अर्थ में प्रयुक्त हो तो 'र्य' के पूर्ववर्ती आकार के स्थान में ऊ होता है । जैसे—ऊञ्जा (सास अर्थ), अञ्जा (श्रेष्ठ अर्थ); (आर्या) ।

(६६) मात्रट् प्रत्यय के आकार के स्थान में एकार विकल्प से होता है । एकार आदेश जैसे—एतिअमेत्तं एकाराभाव जैसे—एतिअमत्तं (एताश्नमात्रम्) ।

विशेष—कहीं-कहीं मात्र शब्द में भी आकार का एकार होता देखा जाता है । जैसे—भोअणमेत्तं (भोजनमात्रम्)

(६७) संयोग से अव्यवहित पूर्ववर्ती दीर्घ का कभी-कभी ह्रस्व रूप हो जाता है । जैसे—अंबं (आन्नम्); तंबं (तान्नम्);

विद्रहग्गी (हिरहामिः); अस्सं (आस्यम्); मुनिंदो (मुनीन्द्रो)
 तित्थं (तीर्थम्); गुरुल्लावा (गुरुल्लापाः) चुण्णो (चूर्णः); नरिन्दो
 (नरेन्द्रः); मिलिच्छो (म्लेच्छः); अहरुट्ठं (अधरोष्ठम्) नीलुप्पलं
 (नीलोत्पलम्)

विशेष—संयोग पर में नहीं रहने से आयासं ईसरो, ऊसवो
 आदि शब्दों में उक्त नियम लागू नहीं होता है ।

(६८) आदि इकार का संयोग के पर में रहने पर एकार
 विकल्प से होता है । एकार होने पर जैसे—पेण्डं, रोदासंदूरं,
 धम्मेल्लं, वेण्हू, पेण्हं, चेण्हं, वेल्लं । एकाराभाव में जैसे—पिण्डं
 गिहा, सिंदूरं, धम्मिल्लं, विण्हू, पिण्हं, चिण्हं, विल्लं (पिण्डम्);
 निद्रा, सिन्दूरम्, धम्मिल्लं, विण्णु, पृष्ठम्, चिह्णम्, विल्लम् ।)

विशेष—इस नियम के अनुसार पिण्डादि में जो एत्व
 होता है, शौरसेनी आदि में नहीं होता । उसमें
 पिण्डं, गिहा और धम्मिल्लं ये ही रूप होते हैं ।

(६९) जब इति शब्द किसी वाक्य के आदि में प्रयुक्त होता
 है, तब तकारवाले इकार का अकार हो जाता है । जैसे—

प्राकृत

संस्कृत

इअ जं पिअवसाणे

इति यत् प्रियावसाने

इअ उअह अण्णह वअणं

इति पश्यतां यथा वचनम्

विशेष—इति शब्द के वाक्यादि में प्रयुक्त नहीं रहने पर
 अत्व नहीं होता । जैसे—पिओ^१ ति (प्रिय इति)
 पुरिसो ति (पुरुष इति)

(७०) जहाँ निर् के रेफ का लोप होता है, जहाँ नि के इकार का ईकार हो जाता है। जैसे—णीसहो (निःसहः) णीसासो (निःश्वासः) ।

विशेष—रेफ के लोप का अभाव रहने पर उक्त ईकार नहीं होता। जैसे—णिरओ (निरयः), णिःसहो (निःसहः) ।

(७१) द्वि शब्द और नि उपसर्ग के इकार का उ आदेश होता है। किन्तु कहीं-कहीं यह नियम नहीं भी लागू होता। द्वि शब्द के विषय में कहीं विकल्प से उत्त्व होता और कहीं ओत्व भी देखा जाता है। द्वि शब्द के विषय में नित्य उत्त्व जैसे—दुवाई, दुवे, दुवअणं (द्वौ, द्विवचनम्); द्वि शब्द में विकल्प से उत्त्व जैसे—दुउणो, दिउणो; दुइओ, दिउओ (द्विगुणः, द्वितीयः) द्वि शब्द के विषय में नियम की अप्रवृत्ति—दिओ, द्विरओ (द्विजः, द्विरदः); द्वि शब्द के विषय में ओत्व—दोवअणं (द्विवचनम्) । नि उपसर्ग के विषय में इकार का उत्त्व जैसे—णुमज्जइ, गुमण्णो (निमज्जति, निमग्नः); नि उपसर्ग के विषय में नियम का अप्रवृत्ति जैसे—णिवडइ (निपतति)

(७२) कृञ् धातु के प्रयोग में द्विधा शब्द के इकार का ओत्व और उत्त्व होता है। जैसे—

प्राकृत

दोहा इअं (ओकार) ।
दुहा इअं (उकार) ।

संस्कृत

द्विधा कृतम्

दोहा किज्जदि (ओकार) }
दुहा किज्जदि (उकार) } द्विधा क्रियते

विशेष—(क) कृञ् का प्रयोग नहीं रहने से दिहा-गयं (द्विधागतम्) में उक्त नियम नहीं लगा ।
(ख) कहीं-कहीं केवल (कृञ् रहित) द्विधा में भी उत्त्व देखा जाता है । दुहा वि सो सुर-बहू-सत्थो (द्विधापि स सुरवधूसार्थः)

(७३) पानीय^३ गण के शब्दों में दीर्घ ईकार के स्थान में ह्रस्व इकार होता है । जैसे—पाणिअं (पानीयम्); अलिअं (अलीकम्); जिअइ (जीवति); जिअउ (जीवतु); विलिअं (व्रीडितम्); करिसो (करीपः); सिरिसो (शीरीपः); दुइअं (द्वितीयम्); तइअं (तृतीयम्); गहिरं (गभीरम्); उवणिअं (उपनीतम्); आणिअं (आनीतम्); पालिविअं (प्रदीपितम्); ओसिअन्तो (अवसीदन्); पसिअ (प्रसीद); गहिअं (गृहीतम्); वम्मिओ (वल्मीकः); तयाणि (तदानीम्)^४

१. कल्पलतिका के अनुसार पानीय गण में निम्नलिखित शब्द संगृहीत हैं—

पानीयव्रीडितालीकद्वितीयं च तृतीयकम्,
यथागृहीतमानीतं गभीरञ्च करीषवत्
इदानीं च तदानीं च पानीयादिगणो यथा ।

प्राकृतमञ्जरी में इनसे भी कम संगृहीत हुए हैं—

पानीयव्रीडितालीकद्वितृतीयकरीषकाः
गभीरञ्च तदानीञ्च पानीयादिरयं गणः ।

२. प्राकृतप्रकाश पानीयादि गण में उपनीत, आनीत, जीवति,

विशेष—बहुल का अधिकार आने से अर्थात् इस नियम के प्रायिक होने से पाणीअं, अलीअं, जीअइ, करीसो, उवणीओ ये रूप भी सिद्ध होते हैं ।

(७४) तीर्थ शब्द के ईकार का ऊकार तब होता है, जब कि उसके आगे का 'र्थ' ह हो गया हो । ह होने पर ऊकार जैसे—तूहं । ह नहीं होने पर उत्वाभाव और ह्रस्व जैसे—तित्थं (तीर्थम्)

(७५) मुकुलादि गण में आदि उकार के स्थान में अकार आदेश होता है ।

[प्राकृतप्रकाश में मुकुलादि गण न कहकर मुकुटादि^१ गण कहा गया है जैसे—अन्मुकुटादिषु]

मुकुलादि अथवा मुकुटादि के उदाहरण—मउलं (मुकुला); गरुई (गुर्वी); मउडं* (मुकुटम्); जहुट्टिलो, जहिट्टिलो (युधिष्ठिर:); सोअमल्लं (सौकुमार्यम्); गोलोई (गडुची)

विशेष—कहीं-कहीं प्रथम उकार का आकार भी होता देखा जाता है । जैसे—विद्वाओ (विद्रुतः)

जीवतु, प्रदीपित, प्रसीद, शिरीष, गृहीत, वल्मीक और अबसीदन् शब्दों का उल्लेख नहीं करता ।

१ मुकुटादि गण में प्राकृतमञ्जरी के अनुसार निम्नलिखित शब्द हैं ।

मुकुटं मुकुलं गुर्वी सुकुमारो युधिष्ठिरः

अगुरुपरि शब्दौ च मुकुटादिरियं गणः ।

२. तुलना कीजिए—भोजपुरी का 'मउर' शब्द और संस्कृत का 'मौलि' शब्द ।

(७६) यदि गुरु शब्द के आगे स्वार्थ में क प्रत्यय किया गया हो, तो उस गुरु शब्द के आदि उकार का अ आदेश विकल्प से होता है । जैसे—गरुओ, गुरुओ (गुरुकः गुरु) स्वार्थिक क के अभाव में गुरुओ (गुरुकः । थोड़ा गुरु) होता है ।

(७७) उत्साह और उच्छन्न शब्दों को छोड़कर वैसे ही अन्य शब्दों में 'त्स' और 'च्छ' के पर में रहने पर पूर्व के आदि उकार का दीर्घ ऊकार होता है जैसे—ऊसुओ (उत्सुकः); ऊसओ (उत्सवः); ऊसित्तो (उत्सिक्तः), ऊच्छुओ (उच्छुकः । उद्रताः शुका यस्मात् तः)

विशेष—उच्छ्राहो (उत्साहः), उच्छण्णो (उच्छन्नः) में उक्त नियमानुसार दीर्घ ऊकार नहीं होता ।

(७८) दुरु उपसर्ग के रेफ का लोप हो जाने पर ह्रस्व उ का दीर्घ ऊ विकल्प से होता है । ऊकार जैसे—दूसहो, दूअो; ऊ का अभाव जैसे—दुगतो, दुगओ (दुःमहः, दुर्भागः)

विशेष—दुस्सहो विरहो में रेफ का लोप नहीं रहने से वैकल्पिक ऊकार नहीं हुआ ।

(७९) संयुक्त अक्षरों के पर में रहने पर पूर्ववर्ती प्रथम उकार का ओकार होता है । जैसे—

तोण्डं (तुण्डम्); मोण्डं (मुण्डम्); पोक्खरं (पुण्करम्); कोट्टिमं (कुट्टिमम्); पोत्थअं (पुस्तकम्); लोद्धओ (लुब्धकः); मोत्ता (मुक्ता) वोक्कन्तं (व्युत्क्रान्तम्); कोन्तलो (कुन्तलः)

१. प्राकृतप्रकाश में 'उत् ओत्तुण्डरूपेण' १०. २०. यह सूत्र है । कल्पलतिका के अनुसार तुण्डादिगण के शब्द यों परिगणित हैं— तुण्डकुट्टिमकुहालमुक्तामुद्ररलुब्धकाः । पुस्तकश्चैवमन्येऽपि कुम्भीकुन्तल-पुष्कराः ।

विशेष—शौरसेनी में यह अत्व नित्य नहीं होता ।

(८०) शब्द के आदि ऋकार का अकार होता है । जैसे—
घअं (घृतम्); तणं (तृणम्); कअं (कृतम्) वसहो (वृषभः)
मओ (मृगः अथवा मृतः) वड्ढी आदि ।

(८१) कृपादिगण के शब्दों में आदि ऋकार का इत्व होता है । जैसे—किवा (कृपा); दिडं (दृष्टम्); सिड्डी (सृष्टिः); भिऊ (भृगुः); सिंगारो (शृङ्गारः); घुसिणं (घुसृणम्); इड्ढी (ऋद्धिः); किसारू (कृशानुः) किई (कृतिः); किवणो (कृपणः); भिंगारो (भृङ्गारः); किसो (कृशः); विञ्चुओ (वृश्चिकः); विंहिओ (बृंहितः); तिपं (तृप्तम्); किच्चं (कृत्यम्); हिअं (हृतम्); विसी (वृषिः); सइ (सकृत्); हिअं (हृदयम्); दिड्डी (दृष्टिः); गिड्डी (गृष्टिः); भिंगो (भृङ्गः); सियालो (शृगालः) विड्ढी (वृद्धिः); घिणा (घृणा); किच्छं (कृच्छम्); निवो (नृपः); विहा (स्पृहा); गिड्ढी (गृद्धिः); किसरो (कृशरः) धिई (धृतिः); किवणं (कृपाणम्); किसिओ (कृपितः); वित्तं (वृत्तम्); वाहित्तं (व्याहृतम्); इसी (ऋषिः); वितिण्हो (वितृष्णः); मिडं (मृष्टम्); सिडं (सृष्टम्); पित्थी

१. कृपादिगण के उदाहरणों की सिद्धि के लिए प्राकृतप्रकाश में इह्यादिषु सूत्र आया है । ऋष्यादिगण के शब्दों की गणना कल्पलतिका में इस प्रकार की गई है—ऋष्यादिषु कृतिः कृत्या घृष्टो वृषभ-वृश्चिकः । वृषश्च पृथुलो गृध्रो मृगाङ्को मसृणं कृषिः । सृष्टिर्दो भृतो गृष्टिवितृष्णकृतकृत्यः । संज्ञावाजकऋणोऽयमृष्यादिगण ईदृशः । प्राकृतमञ्जरीकार के मत से ऋष्यादिगण यों है—ऋषिर्दृष्टिः कृशो घृष्टिः कृपाशृङ्गारवृश्चिका, मृदङ्गो हृदयं मृङ्गः शृगाल इति सृष्टयः । विमृष्टश्च मृगस्तद्वद् भृत्यश्च कृशरस्तथा । आकृतिः प्रकृतिश्चैव स्यादश्यादिरयं गणः ।

(पृथ्वी); समिद्धी: (समृद्धि:); किवो (कृप:); वित्ती (वृत्ति:); उक्किटं (उत्कृष्टम्)

विशेष—कल्पलतिका के अनुसार नीचे लिखे शब्दों में ऋकार का नित्य ही इत्व होता है शेष में विकल्प से—भृङ्गभृङ्गारभृङ्गाराः कृपाणं कृपणः कृपा । भृगालहृदये वृष्टिर्दष्टिर्बृंहितमेव च । समृद्धि-कृशारात्प्रिवृत्ति वृद्धिस्तु कृत्रिमम् । कृकराकुस्तथेत्यादौ नित्यमित्वं ऋतो मतम् । विकल्प जैसे—विसो, वसो (वृषः) किण्हो, कण्हो (विष्णुवाची कृष्ण)

(८२) पृष्ठ शब्द जहाँ किसी समास आदि में उत्तर पद नहीं हो, वहाँ ऋ का इ विकल्प से होता है । जैसे—पिट्टं, पट्टं (पृष्ठम्)

विशेष—महिविट्टं (महीपृष्ठम्) में उत्तरपद रहने से पृष्ठ शब्द का वैकल्पिक इत्व नहीं हुआ ।

(८३) ऋतु प्रभृति^१ शब्दों में आदि ऋ का उकार होता है । जैसे—उदू (ऋतुः); पउत्ती (प्रवृत्तिः); परामुट्टो (परामृष्टः); पाउसो (प्रावृट्); परहुओ (परभृत्); णिवुअं, णिवुदं (निर्वृतम्); उसहो (ऋषभः); भाउओ (भ्रातृकः); पहुदि (प्रभृति); संवुदं

१. कल्पलतिका में ऋत्वादि गण यों माना गया है—

ऋतुर्मृदङ्गो निभृतं वृतः परभृतो मृतः । प्रावृट् प्रवृत्तिर्वृत्तान्तो मातृका
आतृकस्तथा । मृगालपृथिवीवृन्दान्नावनजामातृका अपि । वृन्दारकश्च
प्रभृतिः पृष्ठ वृद्धादयः परे ॥ अत्र लक्ष्यानुसारतोऽन्येऽपि शब्दा ज्ञेयाः ।
(यहाँ लक्ष्यों के अनुसार ऐसे ही दूसरे शब्दों को भी जानना चाहिए ।)

(संवृत्तम्), बुद्धो (वृद्धः) मुडालं (मृणालम्); पाहुदं (प्राभृतम्);
 पुहुं (पृष्ठम्); पुहइ, पुहवी (पृथिवी), पाउअं (प्रावृतम्) भुई
 (भृतिः); विउअं (विवृतम्); वुंदावणं (वृन्दावनम्); जामाउओ,
 जामादुओ (जामातृकः); पिउओ (पैतृकः); णिहुअं, णिहुदं
 (निभृतम्); णिवुई (निर्वृतिः); बुड्ठी (वृद्धिः); माउआ (मातृका);
 णिउअं (निवृतम्); वुत्तान्तो (वृत्तान्तः); उजू (ऋजुः); पुहुवी
 (पृथिवी); वुंदं (वृन्दम्); माऊ, मादु (माता)

विशेष—मृगाङ्क शब्द में मुअंको और मअंको दोनों
 रूप होंगे ।

(८४) समास आदि में जो पद प्रधान न होकर गौण होता
 है, उसके अन्तिम ऋ के स्थान में उकार होता है । जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
माउ मण्डलं } मादु-मण्डलं }	मातृमण्डलम्
माउ-हरं } मादु-हरं }	मातृगृहम्
पिउ-वणं	पितृवनम्

(८५) गौण (अप्रधान) मातृ शब्द के ऋकार का इकार
 विकल्प से होता है । जैसे—माइ-मण्डलं, माइ-हरं । पक्ष में—
 माउ (दु)-मण्डलं; माउ (दु)-हरं

विशेष—कभी-कभी प्रधान (अगौण) मातृ के ऋकार का
 भी इत्व हो जाता है । जैसे—माइणो (मातुः)
 (८६) व्यञ्जन से सम्पर्करहित ऋ का रि आदेश कहीं विकल्प

से और कहीं नित्य होता है। जैसे—रिद्धी (ऋद्धिः); रिणं, ऋणं (ऋणम्); रिञ्जू, उञ्जू (ऋजुः); रिसहो, उसहो (ऋषभः); रिऊ, उदू (ऋतुः); रिसी, इसी (ऋपिः)

(८७) जिस दृश धातु के आगे कृत् के क्तिप्, टक् और सकृ प्रत्यय आये हों, उसके ऋ का रि आदेश होता है। जैसे—एहारिसो, तारिसो, सरिसो, सरिच्छो, एरिसो, केरिसो अण्णारिसो अम्हारिसो, तुम्हारिसो ।

विशेष—शौरसेनी, पैशाची और अपभ्रंश में इन शब्दों के रूप कुछ और ही होते हैं ।

शौर० जादिसं	यादृशम्
तादिसं	तादृशम्
पै० जातिसं	यादृशम्
तातिसं	तादृशम्
अप० जइशं	यादृशम्
तइशं	तादृशम्

(८८) किसी भी शब्द में आदि ऐकार का एकार होता है। जैसे—सेलो (शैलः); सेत्तं, सेच्चं (शैत्यम्); एरावणो (ऐरावतः); तेल्लुकं (त्रैलोक्यम्); केलासो (कैलासः); केढवो (कैतवः); वेह्वं (वैधव्यम्)

(८९) दैत्यादि^१ गण में ऐ के स्थान में ए का अपवाद

१. कल्पलतिका के अनुसार दैत्यादि गण के शब्द निम्नलिखित हैं—
दैत्यादौ वैश्यवैशाखवैशम्पायनकैतवाः;
स्वैरवैदेहवैदेशक्षेत्रवैषयिका अपि ।
दैत्यादिष्वपि विज्ञेयास्तथा वैदेशिकादयः ॥

अइ आदेश होता है। जैसे—^१दइच्चं (दैत्यम्), दइण्णं (दैन्यम्); अइसरिअं (ऐश्वर्यम्); भइरवो (भैरवः); दइवअं (दैवतम्); वइआलीओ (वैतालिकः); वइएसो (वैदेशः); वइएहो (वैदेहः); वइअव्भो (वैदर्भः); वइस्साणरो (वैश्वानरः); कैअवं (कैतवम्); वइसाहो (वैशाखः); वइसालो (वैशालः)

(६०) वैरादि^२ गण में ऐत् के स्थान में अइ आदेश विकल्प से होता है। जैसे—वइरं, वेरं (वैरम्); कइलासो, केलासो (कैलासः); कइरवं, केरवं (कैरवम्); वइसवणो, वेसवणो (वैश्रवणः); वइसंपाअणो, वेसंपाअणो (वैशम्पायनः); वइआलिओ, वेआलिओ (वैतालिकः); वइसिओ, वेसिओ (वैशिकः); चइत्तो, चेत्तो (चैत्रः)

(६१) शब्द के आदि औकार का ओकार आदेश होता है। जैसे—कोमुई (कौमुदी); जोव्वणं (यौवनम्), कोत्थुहो (कौस्तुभः); सोहग्गं (सौभाग्यम्), दोहग्गं (दौर्भाग्यम्), गोदमो (गौतमः), कोसंबी (कौशाम्बी), कोचो (कौञ्चः), कोसिओ (कौशिकः)

(६२) सौन्दर्यादि^३ गण के शब्दों में औत् के स्थान में उत्

१. प्राकृतमञ्जरी के अनुसार दैत्यादि गण में निम्नलिखित शब्द परिगृहीत हैं—

दैत्यः स्वैरं कैटभवैदेहकौ च वैशाखः ।

वैशिकभैरववैशम्पायनवैदेशिकाश्च दैत्यादिः ॥

२. वैरादिगण में वैर, कैतव, चैत्र, कैलास, दैव और भैरव गृहीत हैं। शौरसेनी में दैव शब्द में यह नियम लागू नहीं होता ।

३. कल्पलतिका के अनुसार सौन्दर्यादिगण के शब्द यों हैं—

सौन्दर्यं शौण्डिको दौवारिकः शौण्डोपरिष्टकम् ।

आदेश होता है। जैसे—सुन्देरं, सुन्दरिअं (सौन्दर्यम्); सुंडो (शौण्डः); दुवारिओ (दौवारिकः); मुञ्जाय (अ) णो (मौञ्जायनः); सुगन्धत्तणं (सौगन्ध्यम्); पुलोमी (पौलोमी); सुवण्णिओ (सौवर्णिकः)

(६३) कौत्सेयक और पौरादि^१ गण के शब्दों में औत् के स्थान में अउ आदेश होता है। जैसे—कउक्खेअओ, कुक्खेअओ (कौत्सेयक); पउरो (पौरः); कउरओ(वो) (कौरवः); पउरिसं (पौरुषम्); सउहं (सौधम्); गउडो (गौडः); मउली (मौलिः); मउणं (मौनम्); सउरा (सौराः); कउत्ता (कौत्ताः)।

विशेष—कौशल शब्द के विषय में दो रूप होते हैं—
कोसलो, कउसलो (कौशलम्)

(६४) अब और अप उपसर्गों के आदि स्वर का आगेवाले सस्वर व्यञ्जन के साथ 'ओत्' विकल्प से होता है। जैसे—ओआसो, अवआसो (अवकाशः); ओसरइ; अवसरइ (अपसरति); ओहणं, अअहणं (अपघनम्)।

विशेष—उक्त नियम कहीं पर नहीं भी लागू होता है।
जैसे—अवगअं (अपगतम्); अवसदो (अपसदः)।

कौत्सेयः पौरुषः पौलोमिमौञ्जदौस्याधिकादयः ॥

प्राकृतमञ्जरी के अनुसार—

सौन्दर्यशौण्डकौत्सेयास्तथा मौञ्जायनो ऽपि च ।

तथा दौवारिकश्चेति सौन्दर्यादिरयं गणः ॥

२. कल्पलतिका के अनुसार पौरादि निम्नलिखित हैं—

पौरपौरुषशैलानि गौडक्षौरितकौरवाः ।

कोशलमौलिबौचित्यं पौराकृतिगणा मताः ॥

(६५) आगेवाले सस्वर व्यञ्जन के साथ उप के आदि स्वर के स्थान में ऊत् और ओत् आदेश विकल्प से होते हैं । जैसे— ऊहसिअं, ओहसिअं (उपहसितम्); ऊआसो, ओआसो (उपवासः) ।

❀ प्रथम अध्याय समाप्त ❀



द्वितीय अध्याय

(१) स्वर से पर में रहनेवाले, अनादिभूत तथा दूसरे किसी व्यञ्जन से संयोगरहित क, ग, च, ज, त, द, प, य और व अक्षरों का प्रायः लुक् होता है। कलोप जैसे—लोओ, सअदं,^१ मउलो, णउलो, णोआ (लोकः, शकटम्, मुकुलम्, नकुलः; नौका); गलोप जैसे—णओ,^२ णअरं,^३ मअङ्को,^४ साअरो, भाइरही (नगो, नगरम्, मृगाङ्कः, सागरः, भागीरथी); चलोप जैसे—सई, कअग्गहो,^५ वअणं, सूई, रोअदि, उइदं, सूअअं (शची, कचग्रहः, वचनम्, सूची, रोचते, उचितम्, सूचकम्); जलोप जैसे—रअओ, पआवई^६ गओ, रअदं (रजकः, प्रजापतिः, गजः, रजतम्); तलोप जैसे—विआणं, किअं, रसा-अलं,^७ रअणं (वितानम्, कृतम्, रसातलम्, रत्नम्), दलोप जैसे—

-
१. हेम० व्या० में सयदं पाठान्तर है।
 २. हेम० व्या० में 'नओ' ”
 ३. हेम० व्या० में 'नअरं' ”
 ४. हेम० व्या० में 'मअङ्को' ”
 ५. हेम० व्या० में 'कअग्गहो' ”
 ६. हेम० व्या० में 'पआवई' ”
 ७. हेम० व्या० में 'रसा-अलं' ”

जइ, नई, गआ^१, मअणो^२, वअणं, मओ (यदि, नदी, गदा, मदनः, वदनम्, मदः); पलोप जैसे—रिऊ, सुउरिसो, कई, विउलं (रिपुः, सुपुरुषः, कपिः, विपुलम्); यलोप जैसे—दआळू^३, णअणं^४, विओओ, वाउणा (दयालुः, नयनम्, वियोगः, वायुना); वलोप जैसे—जीओ, दिअहो, लाअण्णं^५, विओहो, वडआणलो^६ (जीवः, दिवस, लावण्यम्, विबोधः, वडवानलः)

विशेष :—(क) प्रायः कहने से कहीं-कहीं लोप नहीं होता है । जैसे—सुकुसुमं; प्रयाग-जलं, पियगमणं, सुगदो, अगुरू,^७ सचावं, विजणं, अतुलं, सुतरं,^८ विदुरो, आदरो, अपारो, अजसो, देवो, दाणवो, सबहुमानम्, इत्यादि ।

(ख) स्वर से पर में नहीं रहने के कारण संकरो, संगमो, णक्कंछरो,^९ घणंजओ,

१. हेम व्या० में 'गया' पाठान्तर है ।
२. हेम व्या० में 'मयणो' ”
३. हेम व्या० में 'दयालू' ”
४. हेम व्या० में 'नयणं' ”
५. हेम व्या० में 'लायणं' ”
६. हेम व्या० में 'वलयाणलो' ”
७. हेम व्या० में 'अगरू' ”
८. हेम व्या० में 'सुतारं' ”
९. हेम व्या० में कक्कंचरो ”

पुरंदरो और संवरो इत्यादि में लोप नहीं होता ।

- (ग) अङ्को, वग्गो, अग्घो, मग्गो, आदि में संयुक्त होने के कारण लोप नहीं होता है ।
- (घ) कालो, गन्धो, चोरो, जारो, तरू, दवो पावंआदि में आद्यक्षर होने के कारण लोप नहीं होता है ।
- (ङ) समास में उत्तर पद के आदि का लोप होता और नहीं भी होता है । जैसे—सह अरो, सहचरो, जलअरो, जलचरो, सह-आरो, सहकारो आदि ।
- (च) कुछ लोग किन्हीं प्रयोगों में क का लोप नहीं कर के ग आदेश करते हैं जैसे—एगत्तणं (एकत्वम्); एगो (एकः); अमुगो (अमुकः); आगारो (आकारः); आगरिसो (आकर्षः)
- (छ) कहीं आदि के कादि वर्णों का भी लोप, कहीं च का ज और कहीं आर्प में च का ट आदेश^१ भी होते देखे जाते हैं ।

१. शौरसेनी में पताका, व्यापृत, और गर्भित को छोड़ कर अन्य त के स्थान में द आदेश होता है । पताका का पडाआ, व्यापृत का व्वावडो और गर्भित का गब्भिणं में रूप होते हैं । भरत के तकार का धकार होकर भरघो रूप होता है । इसी प्रकार द का प्रायः लोप नहीं

आदि के कादि के लोप जैसे—स उण
(स पुनः), सो अ (स च); इन्धं (चिह्नम्);
च का ज जैसे—पिसाजी (पिशाची);
आर्ष में च का ट जैसे—आउष्टणं
(आकुञ्चनम्)

विशेष—जहाँ नियम २.१. के अनुसार कादि वर्णों के लोप हो चुकने पर अ अथवा आ अवशिष्ट हों, वहाँ लघुप्रयत्नतर यकार का उच्चारण जानना चाहिए । -

(२) अवर्ण से पर में अनादि प का लुक् नहीं होता है ।
जैसे—सवहो (शपथः); सावो (शापः)

(३) स्वर से पर में होनेवाले असंयुक्त तथा अनादि ख, घ, थ, ध और भ अक्षरों के स्थान में प्रायः ह आदेश होता है ।

होता । जैसे—वदणं, सौदामिणी । प्रायः कहने से हिअत्रं में लोप हो जाता है । मागधी में छ के स्थान में श्व आदेश होता है । ज घ के स्थान में य होता है । य का लोप नहीं होता । पैशाची में त और द के स्थान में त होता है । हृदयं का हितयं रूप होता है । अपभ्रंश में स्वर से परे अनादि और असंयुक्त क, ख, त, थ, प और फ के स्थान में क्रमशः ग, घ, द, ध, ब और भ ये ही आदेश होते हैं । पैशाची में वर्ग के तृतीय और चतुर्थ अक्षरों के स्थान में क्रमशः वर्ग के प्रथम और द्वितीय अक्षर होते हैं । जैसे नगरं का नकरं तथा भगवती का फकवती । प्रसङ्ग उपस्थित हो जाने के कारण यहाँ इतनी बातें लिखी गई हैं ।

ख का ह जैसे—महो, मुहं, मेहला, लिहइ, पमुहेण, सही, आलिहिता (मखः, मुखम्, मेखला, लिखति, प्रमुखेण, सखी, आलिखिता); **घ का ह जैसे**—मेहो; जहणं, माहो, लाइअं, लहु (मेघः, जघनम्, माघः, लाघवम्, लघु); **थ का ह जैसे**—नाहो,^१ गाहा, मिहुणं, सवहो, कहेहि, कहं, मणोरहो (नाथः, गाथा, मिथुनम्, शपथः, कथय, कथम्, मनोरथः) **ध का हू जैसे**—साहू, राहा, वाहो, वहिरो, वाहइ, इंदहरण, अहिअं, माहवीलदा, महुअरो (साधुः, राधा, बाधाः, वहिरः, वाधते, इन्द्रधनुः, अधिकम्, माधवीलता, मधुकरः; **भ का ह^२ जैसे**—सहा, सहावो, णहं, सोहइ, सोहणं, आहरणं, दुल्लहो (सभ, स्वभावः, नभः, शोभते, शोभनम्, आभरणम्, दुर्लभः)

विशेष—(क) स्वर से पर में नहीं रहने से—संखो (शङ्खः) संघो (सङ्घः) और कंथा (कन्था) में ह आदेश नहीं हुआ ।

(ख) संयुक्त होने से—लुम्पइ (लुम्पति) और अक्खइ (अक्षति) में ह आदेश नहीं हुआ ।

(ग) आदि में होने के कारण गज्जंतो (गर्जयन्) खे और गज्जइ घणो (गर्जयतिघणः) में आदेश नहीं हुआ ।

१. पृथिवी और प्रथम को छोड़कर शौरसेनी में थ का प्रायः घ होता है । जैसे—जघा (यथा), तघा (तथा) और अण्णघा (अन्यथा) । पृथिवी के लिए पहुबो और प्रथम के लिए पडुम होते हैं ।

२. शौरसेनी में ध क्ष द के समान और भ क्ष व के समान उच्चारण भर होता है लेख में तो ध और भ ही रहते हैं ।

(घ) प्रायः कथन के बल से पखलो (प्रखलः); पलंबघणो (प्रलम्बघ्नः), अधीरो (अधीरः), अधण्णो (अधन्यः;) जिणधम्मो (जिनधर्मः) इत्यादि में ह आदेश नहीं होता ।

(४) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि ट ठ और ड के स्थान में क्रमशः ड ढ और ल आदेश होते हैं । ट का ड जैसे—णडो^३, भडो, विडवो, घडो, घडइ (नटः, भटः, विटपः, घटः, घटते); ठ का ढ जैसे—मढो, सढो कमढो, कुढारो (मठः; शठः, कमठः, कुठारः); ड का ल जैसे—बलवामुहं, गरुलो, कीलइ, तलावो, बलही (बढवामुखम्, गरुडः, कीडति, तडागः, वलही)

विशेष—(क) स्वर से पर में ऐसा कहने से घंटा (घण्टा) वैकुंठो (वैकुण्ठः), मोडं (मुण्डम्) एवं कौडं (कुण्डम्) में ट, ठ और ड के स्थान में क्रमशः ड, ढ और ल नहीं हुए ।

(ख) संयुक्त रहने के कारण खट्टा, चिट्टइ (तिष्ठति) खड्डो के ट, ठ और ड के स्थान में ड, ढ और ल नहीं हुए ।

(ग) अनादि नहीं होने से टंकः, ठाई (स्थायी) और डिंभो में ट, ठ ड के ड, ढ, ल, नहीं हुए ।

(घ) कहीं पर ट का ड नहीं होता और ण्यन्त पट धातु में ट का ल आदेश विकल्प से होता है । अटइ (अटति) में डदेश का अभाव और फालेइ, फालेइ (पाटयति) में ट के स्थान में ल और ड पर्याय से हुए ।

(ड) ड का ल आदेश प्रायिक है, अतः आगेवाले शब्दों में विकल्पसे ल होता है। वलिसं, वडिसं, दालिमं, दाडिमं; गुलो, गुडो; णाली, नाडी; णलं, णडं। प्राकृत-प्रकाशकार दाडिम, वडिस, निविड में ल आदेश नहीं मानते हैं। कल्पलतिका के मत से केवल पीडित और गुड में वैकल्पिक लत्व होता है। वस्तुतः निविडं, पीडिअं और णीडं में ल का अभाव ही उचित है।

(५) 'प्रति' उपसर्ग में तकार के स्थान में प्रायः डकार आदेश होता है। जैसे—पडिवणं (प्रतिपन्नम्); पडिसरो (प्रतिसरः); पडिमा (प्रतिमा)

विशेष—'प्रायः' कहने से आगे के उदाहरणों में तकार विधान वाला नियम नहीं लागू हुआ। पड्वं (प्रतीपम्); संपई (संप्रति); पड्ढाणं (प्रतिष्ठानम्); पड्ढा (प्रतिष्ठा); पड्ढणा (प्रतिज्ञा)

(६) ऋत्वादि गण^१ के शब्दों में तकार का दकार होता है। जैसे—उदू (ऋतुः); रजदं (रजतम्); आअदो (आगतः); णिन्वुदी (निर्वृतिः); आउदी (आवृतिः); संवुदी (संवृतिः); सुइदी (सुकृतिः); आइदी (आकृतिः); हदो (हतः); संजदो

१. ऋत्वादिगण के शब्द इस प्रकार उल्लिखित हैं :—

ऋतुः किरातो रजतश्च तातः सुसङ्गतं संयतसाम्प्रतश्च
सुसंस्कृतिप्रतिसमाप्तशब्दास्तथाकृतिर्निर्वृतिरुल्यमेतत् ।
उपसर्गसमायुक्ते कृतिवृत्ती वृतागतौ ।
ऋत्वादिगणने तेया अन्ये शिष्टानुसारतः ॥

(संयत) ; विउदं (विवृतम्) ; संजादो (संयातः) ; संपदि (संप्रति) ; पडिवद्दी (प्रतिपत्तिः) ।

विशेष—उक्त नियम प्राकृतप्रकाश (२. ७) के ऋत्वादिषु

तो दः सूत्र के अनुसार बनाया गया है । किन्तु साधारण प्राकृत के लिए इस नियम को नहीं मानते । वे कहते हैं कि—‘स तु शौरसेनी-मागधी-विषय एव दृश्यत इति नोच्यते ।’ अर्थात् यतः यह सूत्र शौरसेनी और मागधी भाषाओं में ही लागू होता है अतः हम इसका परित्याग करते हैं ।

अतः साधारण प्राकृत में उक्त गण में तकार का दकार आदेश नहीं होता । रूप इस प्रकार के होंगे—उऊ (ऋतुः) ; रअं (रजतम्) ; एअं (एतम्) ; गओ (गतः) ; संपञ्चं (साम्प्रतम्) ; जओ (यतः) ; तओ (ततः) ; कअं (कृतम्) ; हआसो (हताशः) ; ताओ (तातः)

(७) दंश और दह, प्रदीपि और दीप धातुओं के दकार के स्थान में क्रमशः ड, ल और वैकल्पिक ध आदेश होते हैं जैसे :—

प्राकृत		संस्कृत
डसइ	(द = ड)	दशति
डहइ	(द = ड)	दहति
पलीबेइ	(द = ल)	प्रदीपयति
पलित्तं	(द = ल)	प्रदीपम्
धिप्पइ, दिप्पइ (वैकल्पिक धा)		दीप्यति

(८) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि^१ न का ण आदेश होता है । किन्तु आदि में वर्तमान असंयुक्त न का विकल्प से ण होता है । स्वर से पर अनादि और असंयुक्त न का ण जैसे—सअणं (शयनम्); कणअं (कनकम्); वअणं (वचनम्); माणुसो (मानुषः) । आदि में असंयुक्त न का वैकल्पिक ण जैसे—णरो, नरो (नरः); णई, नई (नदी)

विशेष—आदि में वर्तमान संयुक्त न का वैकल्पिक णत्व नहीं होता । जैसे—न्यायः

(९) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि^२ प के स्थान में प्रायः व आदेश हो जाता है । जैसे—सवहो (शपथः) सावो (शापः); उवसग्गो (उपसर्गः); पईवो (प्रदीपः); कासवो (काश्यपः); पावं (पापम्); उवमा (उपमा); महिवालो (महीपालः); गोवेइ (गोपयति); कलावो (कलापः); तवइ (तपति); कवोलो (कपोलः)

विशेष—(क) स्वर से पर में रहनेवाले कहने से कम्पइ (कम्पते) में व आदेश नहीं हुआ ।
(ख) असंयुक्त कहने से अप्पमत्तो (अप्रमत्तः) में व आदेश नहीं हुआ ।

१. प्राकृत-प्रकाश २. ४. सर्वत्र (आदि और अनादि में) न का ण मानता है । ऊपर का नियम < हेमचन्द्र के अनुसार है । पैशाची में णकार का नकार हो जाता है ।

२. शौरसेनी में अपूर्व शब्द के स्थान में 'अवरुवं' और अउव्वं ये दो रूप होते हैं ।

(ग) आदि में रहने के कारण पढइ (पठति)
के प का व नहीं हुआ ।

(ध) प्रायः कहने से रिऊ (रिपुः) में व
नहीं हुआ ।

(१०) ण्यन्त पट धातु में प के स्थान में फ आदेश होता
है । जैसे—फालेइ, फाडेइ (पाटयति)

(११) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि
फ के स्थान में कहीं भ, कहीं ह और कहीं दोनों (भ और ह)
होते हैं । भ जैसे—रेभो (रेफः); सिभा (शिफा), फ का
ह जैसे—मुत्ताहलं (मुक्ताफलम्); दोनों जैसे—सेभालिआ,
सेहालिआ (शेफालिका); सभरी, सहरी (शफरी)

विशेष—(क) स्वर से पर में नहीं रहने के कारण
गुम्फइ (गुम्फति) में उक्त नियम नहीं लगा ।

(ख) संयुक्त होने के कारण पुप्फ (पुष्पम्)
में नियम लागू नहीं हुआ ।

(ग) आदि में होने के कारण फणी के फ
को उक्त आदेश नहीं हुए ।

(१२) स्वर से पर में रहनेवाले, असंयुक्त और अनादि व
का व आदेश होता है । जैसे—अलावू, अलाऊ (अलावू);
सवलो (शबलः)

(१३) विसिनी शब्द के व के स्थान में भ आदेश होता
है । जैसे—भिसिणी (विसिनी) .

विशेष—उक्त नियम में विस के खीलिङ्ग रूप विसिनी का उल्लेख हुआ है। अतः विसं (विसम्) में यह नियम लागू नहीं हुआ।

(१४) पद के आदि य का ज^१ आदेश होता है। जैसे :—
जसो (यशः); जमो (यमः); जाइ (याति)

विशेष—(क) पद के आदि में न होने के कारण अव-
अवो (अवयवः) में नियम नहीं लगा।

(ख) उपसर्गयुक्त हो जाने पर अनादि य का भी ज आदेश होता है। जैसे—संजमो (संयमः); संजोओ (संयोगः); अवजसो (अपयशः)।

(ग) कल्पलतिका के मत से सामान्यतः उत्तर पदस्थ य का भी ज आदेश होता है। जैसे :—
गाढ-जोव्वणा (गाढयौवना); अजोग्गो (अयोग्यः)

(घ) कभी-कभी आदि य का लोप भी हो जाता है। जैसे—अहाजाअं (यथाजातम्)

(१५) तीय एवं कृत् प्रत्ययों के यकार के स्थान में द्विरुक्त-
ज (ज्ज) आदेश विकल्प से होता है। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
दीज्जी, दीओ	द्वितीयः
करणिज्जं, करणीअं	करणीयम्
रमणिज्जं रमणीअं	रमणीयम्
पेज्जं, पेअं	पेयम्

१. मागधी में य का ज आदेश नहीं होता है।

(१६) युष्मद् शब्द के य के स्थान में त आदेश होता है ।
जैसे—तुम्हारिसो (युष्माद्दशः)

(१७) छाया शब्द में यकार के स्थान में हकार आदेश होता है । जैसे—छाहा (छाया)

(१८) हरिद्रादि^१ गण के शब्दों में असंयुक्तर के स्थान में ल आदेश होता है । जैसे—हलद्दा (हरिद्रा); दलिद्दो (दरिद्रः)

(२६) संस्कृत वर्णमाला के श और ष के स्थान में प्राकृत में स आदेश होता है । जैसे—कुसो (कुशः); सेसो (शेषः)

विशेष—वस्तुस्थिति तो यह है कि प्राकृत वर्णमाला में श और ष वर्णों के लिए कोई स्थान ही नहीं है ।

(२०) अनुस्वार से पर में रहनेवाले ह के स्थान में घ आदेश होता है । जैसे—सिंघो, सीहो (सिंहः); संघारो, संहारो (संहारः)

विशेष—कहीं-कहीं अनुस्वार से पर में नहीं रहने पर भी ह का घ होता देखा जाता है । जैसे—दाघो (दाहः)

द्वितीय अध्याय समाप्त ।



१. कल्पलतािका के मत से हरिद्रादि गण यों है—

हरिद्रामुखराङ्गारसकुमारयुधिष्ठिराः ।

करुणाचरणञ्जैव परिखापरिघावपि ॥

किरातश्चाङ्गुरीचैव दरिद्रश्चैवमादयः ।

आदि शब्द से पारिभद्र, जठर, निष्ठुर और अपद्वार शब्दों का इस गण में सम्प्रह किया जाता है । चरण शब्द शरीराङ्गवाची गृहीत है । इसलिए 'पइस्त चरण' में नियम नहीं लगता । भागधी और पैशाची में र के स्थान में ल होता है ।

तृतीय अध्याय

(१) क, ग, ट, ड, त, द, प, श, ष और स व्यञ्जन वर्ण जब किसी संयोग के प्रथम अक्षर हों तो उनका लुक् हो जाता है। और अनादि में वर्तमान शेष वर्णों का द्वित्व होता है।
जैसे :—

प्राकृत		संस्कृत
मुक्तं	[कलुक् ; तद्वित्व]	मुक्तम्
सिक्थं	[कलुक् ; थद्वित्व]	सिक्थम्
भक्तं	[कलुक् ; तद्वित्व]	भक्तम्
मुक्तं	[कलुक् ; तद्वित्व]	मुक्तम्
दुद्धं	[गलुक् ; धद्वित्व]	दुग्धम्
मुद्धं	[गलुक् ; धद्वित्व]	मुग्धम्
सिणिद्धो	[गलुक् ; धद्वित्व]	सिग्धम्
सप्पओ	[टलुक् ; पद्वित्व]	पट्पदः
खग्गो	[डलुक् ; गद्वित्व]	खड्गः
सज्जो	[डलुक् ; जद्वित्व]	पड्जः
उप्पलं	[तलुक् ; पद्वित्व]	उत्पलम्
उप्पाओ	[तलुक् ; पद्वित्व]	उत्पातः
मुग्गो	[दलुक् ; गद्वित्व]	मुद्गः
मुग्गरो	[दलुक् ; गद्वित्व]	मुद्गरः
ग्गूम	[दलुक् ; गद्वित्व]	मद्गुः

सुत्तं	[पलुक् ; तद्वित्त्व]	सुत्तम्
पञ्जत्तं	[पलुक् ; तद्वित्त्व]	पर्याप्तम्
गुत्तो	[पलुक् ; तद्वित्त्व]	गुप्तः
निच्चलो	[शलुक् ; चद्वित्त्व]	निश्चलः
चुअइ	[शलुक् ; द्वित्वाभाव ^१]	श्च्योतति
गोष्ठी	[षलुक् ; ठद्वित्त्व]	गोष्ठी
निष्ठुरो	[षलुक् ; ठद्वित्त्व]	निष्ठुरः
खलिअं	[सलुक् ; ख का द्वित्वाभाव ^२]	स्खलितम्
रोहो	[सलुक् ; ण का द्वित्वाभाव ^३]	स्नेहः

(२) म, न और य ये व्यञ्जन यदि संयुक्त के अन्तिम अक्षर हों तो उनका लुक् होता है और अनादि में वर्तमान शेष वर्णों का द्वित्व हो जाता है। जैसे—

प्राकृत		संस्कृत
जुगं	[मलुक् ; गद्वित्त्व]	युग्मम्
रस्सी	[मलुक् ; सद्वित्त्व]	रश्मिः
सरो	[मलुक् ; द्वित्वाभाव ^४]	स्मरः
नग्गो	[नलुक् ; गद्वित्त्व]	नग्नः
भग्गो	[नलुक् ; गद्वित्त्व]	भग्नः
लग्गं	[नलुक् ; गद्वित्त्व]	लग्नम्
सोम्मो	[यलुक् ; मद्वित्त्व]	सौम्यः

(३) ल, व, र ये व्यञ्जन संयुक्त के आद्यक्षर हों अथवा अन्त्याक्षर चन्द्र शब्द को छोड़कर सर्वत्र (संयुक्त के आदि और

१. २. ३. आदि में होने से चुअइ, खलिअं और रोहो में द्वित्व नहीं हुए।

४. आदि में होने से सरो के स.का द्वित्व नहीं हुआ।

अन्त में) उक्त व्यञ्जनों का लुक् होता है । और अनादि में स्थित शेष वर्णों का द्वित्व होता है । जैसे—

प्राकृत		संस्कृत
उक्ता	[संयुक्तादि ललुक् ; कद्वित्व]	उल्का
वक्कलं	[संयुक्तादि ललुक् ; कद्वित्व]	वल्कलम्
सण्हं	[संयुक्तान्त्य ललुक् ; द्वित्वाभाव]	श्लक्ष्णम्
त्रिक्रवो	[संयुक्तान्त्य ललुक् ; कद्वित्व]	विक्रवः
सदो	[संयुक्तादि वलुक् ; दद्वित्व]	शब्दः
अदो	[संयुक्तादि वलुक् ; दद्वित्व]	अब्दः
पिक्रं	[संयुक्तान्त्य वलुक् ; कद्वित्व]	पक्वम्
घत्थं	[संयुक्तान्त्य वलुक् ; द्वित्वाभाव]	ध्वस्तम्
अक्को	[संयुक्तादि रलुक् ; कद्वित्व]	अर्कः
वग्गो	[संयुक्तादि रलुक् ; गद्वित्व]	वर्गः
चक्कं	[संयुक्तान्त्य रलुक् ; कद्वित्व]	चक्रः
गहो	[संयुक्तान्त्य रलुक् ; द्वित्वाभाव]	ग्रहः
रत्ती	[संयुक्तान्त्य रलुक् ; तद्वित्व]	रात्रिः

विशेष—(क) चन्द्र शब्द का चन्द्रो यही रूप होता है । किन्तु हृषीकेश भट्टाचार्य अपने व्याकरण के प्र० ५६ की पादटिप्पणी में लिखते हैं कि We find the form चंदो in many Manus cripts.

(ख) द्व इत्यादि में जहाँ दोनों व्यञ्जनों का लुक् प्राप्त हो, वहाँ प्राचीन प्राकृत आचार्यों के रूप दर्शन से कहीं संयुक्त के आदि वर्ण कहीं अन्त्य वर्ण और कहीं बारी-बारी से दोनों वर्णों के लुक्

होते हैं। संयुक्तादिवर्ण का लुक् जैसे—उव्विग्गो (उव्विग्गः) विउणो (द्विगुणः); कम्मसं (कल्म-
षम्); सव्वं (सर्वम्); संयुक्तान्त्य वर्ण का लुक्
जैसे—कव्वं (काव्यम्); कुल्ला (कुल्या) मल्लं
(माल्यम्); दिओ (द्विपः); दुआई (द्वजातिः) ।
बारी-बारी से आद्यन्त वर्ण लुक् जैसे—वारं,
दारं (द्वारम्)

(४) द्र के रेफ का लुक् विकल्प से होता है । जैसे—दोहो,
द्रोहो (द्रोहः); रुहो, रुद्रो (रुद्रः); भद्दं, भद्रं (भद्रम्); समुदो,
समुद्रो (समुद्रः); द्रहो, दहो^१ (ह्रदः)

(५) 'ज्ञा' धातु सम्बन्धी ज् का लुक् विकल्प से होता है
एवं अनादि ज् का द्वित्व होता है । जैसे—सव्वज्जो, सव्वण्णू
(सर्वज्ञः); अप्पज्जो, अप्पण्णू (अल्पज्ञः); अह्विज्जो, अह्विण्णू
(अभिज्ञः); जाणं^२, णाणं (ज्ञानम्); दइवज्जो, दइवण्णू
(दैवज्ञः); इङ्गिअज्जो, इङ्गिअण्णू (इङ्गितज्ञः); मणोज्जं, मणोण्णं
(मनोज्ञम्); पज्जा, पण्णा (प्रज्ञा); अज्जा, आणा^३ (आज्ञा)^४
संजा^५, सण्णा (संज्ञा)

१. ह्रद शब्द की स्थितिपरिवृत्ति (इसके लिए देखिए हेम० २.
१२०) के बाद द्रह रूप होता है । यहाँ इसी द्रह में उक्त नियम
(३. ४.) लग जाने से दहो और द्रहो रूप हुए । कुछ लोग र का
लुप करना नहीं चाहते और कुछ लोग द्रह को संस्कृत मानते हैं ।

२. आदि में होने से द्वित्व नहीं हुआ ।

३. किसी-किसी पुस्तक में 'अण्णा' पाठ मिलता है ।

४. स्वर से पर में नहीं होने से द्वित्व नहीं हुआ ।

विशेष—कहीं-कहीं यह नियम नहीं लागू होता है।

जैसे—विष्णाणं (विज्ञानम्)^१

(६) अनादि एकाकी व्यञ्जन, जो कि पूर्वोक्त नियमों से संयुक्त व्यञ्जन के लुक् होने पर अवशिष्ट रहता है द्वित्व को प्राप्त करता है। जैसे—

प्राकृत संस्कृत

दिष्टी	[षलुक् ; ठद्वित्व]	दृष्टिः
हत्थो	[सलुक् ; थ द्वित्व]	हस्तः

(७) वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ वर्णों के द्वित्व का प्रसङ्ग हो तो द्वितीय वर्ण के ऊपर उसी वर्ग के प्रथम और चतुर्थ के ऊपर उसी वर्ग के तृतीय अक्षर होते हैं। जैसे—वक्खाणं (व्याख्यानम्); अर्घो (अर्घः)

(८) दीर्घ स्वर एवं अनुस्वार से पर में रहनेवाले संयुक्तशेष व्यञ्जन (ऊपर के नियमों से संयुक्ताक्षरों में व्यञ्जन के लुक् हो जाने पर अवशिष्ट व्यञ्जन) का द्वित्व नहीं होता है।^२ जैसे—

१. शौरसेनी में झ के स्थान में ज होता है। मागधी और पैशाची में झ के स्थान में ज्ज होता है। पैशाची में राजन् शब्द सम्बन्धी झ चिञ् विकल्प से होता है। शौरसेनी, मागधी और पैशाची में न्य और ण्य के स्थान में भी ज्ज होता है।

२. हेमचन्द्र ने 'अनादौ शेषादेशयोर्द्वित्वम्' २. ८९. सूत्र बनाकर आदेश का भी द्वित्व माना है। जैसे—उक्को, जक्खो, रग्गो, क्किची, रूप्पी। कहीं पर यह नियम नहीं लगता है। जैसे—कसिणो। अनादि कहने से खलिञ्चं, थेरो, खम्भो में नियम नहीं लगा।

३. यहाँ दीर्घ और अनुस्वार नियमवशात् सम्पन्न (लाक्षणिक) और स्वाभाविक (अलाक्षणिक) दोनों गृहीत हैं। लाक्षणिक दीर्घ—छूढो,

ईसरो (ईश्वरः); लासं (लास्यम्); संकंतो (संक्रान्तः) संज्ञा (संध्या)

(६) रेफ^१ और हकार का द्वित्व नहीं होता है। जैसे—
सुंदेरं (सौन्दर्यम्); वम्हचेरं (ब्रह्मचर्यम्); धीरं (धैर्यम्);
विहलो (विह्वलः); कहावणो (कार्षापणः)

(१०) वर्णों के द्वित्व करानेवाले पूर्वोक्त नियम समस्त (समासवाले) पदों में विकल्प से प्रवृत्त होते हैं। तात्पर्य यह है कि समास में शेष और आदेश व्यञ्जन का द्वित्व विकल्प से होता है। जैसे—नइ-ग्गामो, नइ-ग्गामो (नदी ग्रामः); कुसुम-प्पयरो, कुसुम-पयरो (कुसुम प्रकरः); देव-त्थुई; देव-त्थुई (देव-स्तुतिः) इत्यादि।

विशेष—कभी-कभी पूर्वोक्त द्वित्वविधायक नियमों की विषयता नहीं होने पर भी समास में वैकल्पिक द्वित्व होता देखा जाता है। जैसे—पम्मुक्कं, पमुक्कं (प्रमुक्तम्) तेल्लोक्कं, तेलोक्कं (त्रैलोक्यम्) इत्यादि।

(११) तैलादि^२ गण के शब्दों में प्राचीन प्राकृत आचार्यों

नीसासो, फासो। अलाक्षणिक दीर्घ—पासं, सीसं। लाक्षणिक अनुस्वार—तंसं अलाक्षणिक अनुस्वार—संमा, विंमो। यह नियम आदेश में भी लगता है।

१. रेफ शेष नहीं मिलता है। आदेश ही मिलता है। देखो नियम ३. ३.

२. प्राकृत-प्रकाश में तैलादि गण के बदले नीडादि गण से काम लिया गया है। कल्पलतिका में नीडादि गण यों है—

नीड व्याहृतमण्डूकस्रोतांसि प्रेमयौवने।

ऋजुः स्थूलं तथा तैलं त्रैलोक्यं च गणो यथा ॥

के निर्णयानुसार कहीं अन्त्य और कहीं अनन्त्य व्यञ्जनों का द्वित्व होता है। जैसे—तेल्लं (तैलम्); मंडुक्को (मण्डूकः); उज्जू (ऋजुः); सोत्तं (स्रोतः); पैम्मं (प्रेम) विड्डा (व्रीडा); जोव्वणं (यौवनम्)

(१२) सेवादि^१ गण के शब्दों में प्राचीन प्राकृत आचार्यों के निर्णयानुसार कहीं अन्त्य और कहीं अनन्त्य (किन्तु अनादि) व्यञ्जनों का विकल्प से द्वित्व होता है। जैसे—सेव्वा, सेवा (सेवा); विहित्तो, विहिओ (विहितः); कोउहल्लं, कोउहलं (कौतूहलम्); वाउल्लो, वाउलो (व्याकुलः); नेड्डुं, नीडं, नेडं (नीडम्); नक्खा, नहा (नखाः); निहित्तो, निहिओ (निहितः); वाहित्तो, वाहिओ (व्याहृतः); माउक्कं माउअं (मृदुकम्); एक्को, एओ (एकः); थुल्लो, थोरो (स्थूलः) हुत्तं, हूअं (हुतम्); दइव्वं, दइयं (दैवम्); तुण्हक्को, तुण्हओ (तूष्णीकः), मुक्को, मूओ (मूकः); खण्णू, खारू (स्थाणुः); थिण्णं, थीणं (स्त्यानम्); अम्हक्केरं, अम्हकेरं (अस्मदीयम्) इत्यादि ।

(१३) क्ष के स्थान में ख आदेश होता है। किन्तु कुछ स्थलों में छ और भ आदेश भी होते हैं। ख आदेश जैसे—

१. कल्पलतिका में सेवादि गण यों है—

सेवा कौतूहलं दैवं विहितं मखजानुनी ।

पिबादयः सवा (१) शब्दा एतदावा यथार्थकाः ॥

त्रैलोक्यं कर्णिकारक्ष वेश्या भूर्जच्च दुःखितम् ।

रात्रिविश्वासनिश्वासा मनोऽस्त्रेश्वर रश्मयः ॥

दीर्घैकशिव्रतूष्णीकमित्रपुष्पासि दुर्लभाः ।

दुष्करो निष्कृपः कर्मकरेष्वासपरस्परम् ॥

नाम्नकाद्यास्तथ शब्दाः सेवादिगणसम्भवाः ।

खओ (क्षयः); लखणं (लक्षणम्); छ और ख आदेश जैसे—
छीणं, खीणं (क्षीणम्); झ और ख आदेश जैसे—भिज्जइ,
खिद्यति (द्विद्यति)

(१४) अद्यादि^१ गण के शब्दों में क्ष के स्थान में ख न
होकर छ आदेश होता है । जैसे—अच्छी (अक्षि); उच्छु (इक्षुः)

विशेष—स्थगित शब्द के स्थ के स्थान में भी उक्त
नियम से छ आदेश हो जाता है । जैसे—छइयं
(स्थगितम्)

(१५) उत्सव अर्थ के वाचक क्षण शब्द में क्ष के स्थान
में छ आदेश होता है । उत्सव अर्थ में जैसे—छगो; समय
अर्थ में जैसे—खगो (क्षणः)

(१६) संयुक्त कम और ड्म के स्थान में प आदेश होता
है । कम में जैसे—रुपं, रुपिणी (रुक्मम्, रुक्मिणी) ।
ड्म में जैसे—कुप्लं (कुड्मलम्)

विशेष—कहीं-कहीं कम के लिए चम आदेश भी देखा
जाता है । जैसे—रुचमी (रुक्मी)

(१७) षक और स्क के स्थान में ख आदेश होता है, यदि
उन संयुक्तक्षरों से घटित शब्द द्वारा किसी नाम (संज्ञा) की
प्रतीति होती हो । षक का ख जैसे—पोक्खरं (पुष्करम्); पोक्ख-

१. कल्पलतिका के अनुसार अद्यादि गण यों हैं—

अत्राक्षिचक्षुरक्षुण्णक्षार उत्क्षिप्तमक्षिकैः ।

दक्षो वक्षः सदृक्षोऽक्ष क्षेत्रक्षीरेक्षुकुक्षयः ॥

क्षुधा चेत्यादयः शब्दा अद्यादिगणसम्भवाः ।

रिणी (पुष्करिणी); निक्खं (निष्कम्) स्क का ख जैसे—
खंधो (स्कन्धः) खंधावारो (स्कन्धावारः)

विशेष—संज्ञा नहीं होने से दुक्करं (दुष्करम्) निक्काम्मं
(निष्काम्यम्) और सक्कअं (संस्कृतम्) में उक्त
नियम लागू नहीं हुआ ।

(१८) उष्ट्र, इष्ट और संदष्ट शब्द के ष्ट को छोड़कर अन्य
ष्ट के स्थान में ठ आदेश होता है । जैसे—लट्टी (यष्टिः) मुट्टी
(मुष्टिः); दिट्टी (दष्टिः); सिट्टी (सष्टिः); पुट्टो (पुष्टः);
कट्टं (कष्टम्)

विशेष—उष्ट्र आदि में ठ आदेश नहीं होने से उट्टो इट्टो
चुण्ण व्व और संदट्टो रूप होते हैं ।

(१९) चैत्य शब्द के त्य को छोड़कर अन्य त्य के स्थान में
च आदेश होता है । जैसे—सच्चं (सत्यम्); पच्चओ (प्रत्ययः);
निच्चं (नित्यम्); पच्चच्छं (प्रत्यक्षम्)

विशेष—चैत्य शब्द का चइत्तं रूप होता है ।

(२०) कुछ स्थलों में त्व, थ्व, द्व और ध्व के स्थान में
क्रमशः च्च, च्छ, ज्ज और ज्झ आदेश होते हैं । त्व का जैसे—
भोच्चा, णच्चा, सोच्चा (भुक्त्वा, ज्ञात्वा श्रुत्वा); थ्व का जैसे—
पिच्च्छी (पृथ्वी); द्व का जैसे—विज्जं (विद्वान्); ध्व का
जैसे—बुज्झा (बुद्ध्वा)

(२१) धूर्तादि गण के शब्दों को छोड़कर अन्य र्त का ट
आदेश विकल्प से होता है । जैसे—केवट्टो (कैवर्त्तः); वट्टी
(वर्त्तिः); णट्टओ (नर्त्तकः); णट्टई (नर्त्तकी) संवट्टिअं (संवर्त्तिकम्)

विशेष—धूर्तादि गण में उक्त नियम लागू नहीं होता है। धुत्तो, किन्ती, वत्ता, आवत्तणं, निवत्तणं, पवत्तणं, संवत्तणं, आवत्तओ, निवत्तओ, पवत्तओ, संवत्तओ, वत्तिआ, वत्तिओ, कत्तिओ, उक्कत्तिओ, कत्तरी, मुत्ती, मुत्तो, मुहुत्तो।

(२२) ह्रस्व से पर में वर्तमान थ्य, श्र, त्स और प्स के स्थान में छ आदेश होता है। किन्तु निश्चल शब्द के श्र का छ आदेश नहीं होता। थ्य का छ जैसे :—पच्छं (पथ्यम्); पच्छा (पथ्या); मिच्छा (मिथ्या); रच्छा (रथ्या) श्र का छ जैसे :—पच्छिमं (पश्चिमम्); अच्छेरं (आश्चर्यम्); पच्छा (पश्चात्) त्स का छ जैसे :—उच्छाहो (उत्साहः); मच्छरो (मत्सरः); वच्छो (वत्सः) प्स का छ जैसे—ल्लिच्छड (लिप्सति); जुगच्छइ (जुगुप्सते); अच्छरा (अप्सराः)

विशेष—(क) ह्रस्व से पर में नहीं रहने से ऊत्सारिओ (उत्सारितः) में उक्त नियम नहीं लगा।

(ख) निश्चल शब्द का णिञ्चलो रूप होता है।

(ग) तथ्य का आर्ष प्राकृत रूप तत्थं और तञ्चं होता है।

(२३) संयुक्त थ्य, य्य और र्य्य के स्थान में ज आदेश होता है। थ्य का ज जैसे :—मज्जं, अवज्जं, वेज्जं, विज्जा (मद्यम्, अवद्यम्, वेद्यम्, विद्या) य्य का ज

१. धूर्तादि गण में धूर्त, कीर्ति, वार्ता, आवर्तन, निवर्तन, प्रवर्तन, संवर्तन, आवर्तक, निवर्तक, प्रवर्तक, संवर्तक, वर्तिका, वार्तिक, कार्तिक, उत्कर्तित, कर्तरी, मूर्ति, मूर्त और मुहूर्त शब्द परिगणित हैं।

जैसे:—जज्जो, सेज्जा (जज्यः, शय्या) र्य का ज जैसे:—
भज्जा, कज्जं, वज्जं, पज्जाओ, पज्जन्तं (भार्या, कार्यम्, वर्यम् ,
पर्यायः, पर्यन्तम्)

विशेष—(क) शौरसेनी में र्य के स्थान में थ्य भी होता है ।

(ख) पौशाची में र्य के स्थान में कहीं रिय आदेश होता है ।

(२४) ध्य के स्थान में झ एवं झ्र और झ के स्थान में ण आदेश होते हैं । ध्य का झ जैसे:—भाणं, उव-
ज्भाओ, सज्भाओ, मज्झं, विज्झो, अज्झाओ (ध्यानम् , उपा-
ध्यायः, साध्यायः या स्वाध्यायः, मध्यम् , विन्ध्यः, अध्यायः)
झ्र का ण जैसे:—निण्णं, पज्जुण्णो, (निम्नम् , प्रद्युम्नः)
झ का ण जैसे:—णाणं, संणा, पण्णा, विण्णाणं (ज्ञानम् ,
संज्ञा, प्रज्ञा, विज्ञानम्)

(२५) समस्त और स्तम्ब के स्त को छेड़कर अन्य स्त के स्थान में थ आदेश होता है । जैसे:—हत्थो, थोत्तं,
थोअं, पत्थरो, थुई (हस्तः, स्तोत्रम्, स्तोकम्, प्रस्तरः, स्तुतिः)

विशेष—(क) मागधी में स्त और र्थ के स्थान में स्त ही होता है ।

(ख) समस्त शब्द का रूप समत्तं और स्तम्ब शब्द का तंबो होता है ।

(२६) संयुक्त न्म के स्थान में म आदेश होता है ।
जैसे:—जम्मो, मम्महो (जन्म, मन्मथः)

(२७) ष्य और स्प के स्थान में फ आदेश होता है । ष्य का फ जैसे :—पुष्फं, सप्फं, निष्फेसो (पुष्पम्, शध्पम्, निष्पेपः) स्प का फ जैसे :—फंदणं, पडिष्फदी, फंसो (स्पन्दनम्, प्रतिस्पर्द्धा, स्पर्शः)

(२८) संयुक्त श्र, ष्ण, ख्र, ह्र, ल्र और सूक्ष्म शब्द के क्ष के स्थान में ण्ह आदेश होता है । श्र का ण्ह जैसे :—पण्हो (प्रश्नः); ष्ण का ण्ह जैसे :—विण्हू, कण्हो, उण्हिसं (विष्णुः, कृष्णः, उष्णीषम्) ख्र का ण्ह जैसे :—जोण्ह्वा, ण्ह्वाऊ, ण्ह्वाणं, वण्ह्नी, जण्हू (ज्योत्स्ना, स्नायुः, स्नानम्, वह्निः, जहुः) ल्र का ण्ह जैसे :—पुव्वण्हो, अवरण्हो (पूर्वाल्लः, अपैराल्लः) क्षण का ण्ह जैसे :—सण्हं, तिण्हं (श्लक्ष्णम्, तीक्ष्णम्) सूक्ष्म के क्ष्म का ण्ह जैसे :—सण्हं (सूक्ष्मम्)

(२९) संयुक्त श्म, ष्म, स्म और ह्र के स्थान में म्ह आदेश होता है । श्म का म्ह जैसे :—कम्हारो (काश्मीरः) ष्म का म्ह जैसे :—गिम्हो, उम्हं (ग्रीष्मः, उष्मा); स्म का म्ह जैसे :—अम्हारिसो, विम्हो (अस्मादृशः, विस्मयः) ह्र का म्ह जैसे :—बम्हा, सम्हो, बम्हणो, बम्हचरं (ब्रह्मा, सुह्राः, ब्राह्मणः, ब्रह्मचर्यम्)

विशेष—(क) ब्रह्मचर्यम् के लिए कभी-कभी वम्भचेरं रूप भी देखा जाता है ।

(ख) रश्मिः और स्मरः में उक्त नियम लागू नहीं होता है । जैसे :—रस्सी, सरो ।

(३०) संयुक्त ह्य के स्थान में भा आदेश होता है ।
जैसे :—सभो, मभं, गुज्भं (सभः, मभ्यम्, गुह्यम्)

(३१) संयुक्त ह्र के स्थान में ल्ह आदेश होता है ।
जैसे :—कल्हारं, पल्हाओ (कल्हारम्, प्रल्हादः)

(३२) जिस संयुक्त अक्षर का अन्त लकार से होता हो उसका विप्रकर्ष होता है । और पूर्व के अक्षर को इत्व भी होता है । जैसे :—किलिण्णं, किलिट्टं, सिलिट्टं, पिलिट्टं, सिलोओ, किलेसो, मिलानं, किलिस्सइ (क्लिन्नम्, क्लिष्टम्, श्लिष्टम्, प्लुष्टम्, श्लोकः, क्लेशः, म्लानम्, क्लिश्यति)

विशेष—कभो (क्लमः); पवो (प्लवः) और सुक्-
पक्खो (शुक्लपक्षः) में उक्त नियम लागू नहीं होता ।

(३३) उकारान्त किन्तु डीप्रत्ययान्त तन्वी (तन् +
ई) सदृश शब्दों में वर्तमान संयुक्ताक्षरों का विप्रकर्ष होता है और पूर्व के आक्षर का उकार स्वर से योग होता है ।
जैसे :—तिगुवी, लगुई (तन्वी); लहुवी, लहुई (लध्वी);
गुरुवी, गुरुई (गुर्वी); मुहुवी (मृध्वी)

विशेष—उक्त नियम की विषयता नहीं रहने पर भी
सुरूघो (सुन्नः) में नियम प्रवृत्त हो जाता है । प्राकृत के
प्राचीन ऋषियों के अनुसार सूक्ष्म शब्द का सुहुमं रूप
हो जाता है ।

(३४) जब श्वस् और स्व शब्द किसी समास के अङ्ग न होकर पृथक् ही एक पद हों तब इनका विप्रकर्ष हो जाता एवं पूर्व के व्यञ्जन में उ स्वर का योग भी हो जाता है । जैसे :—

प्राकृत

सुवे कअं

सुवे जना

संस्कृत

श्वः कृतन्

स्वे जनाः

विशेष—हेमचन्द्र ने २.११४. में एकस्वरवाले पद में श्वस् और स्व शब्दों का उक्त कार्य माना है । उसका भी तात्पर्य पृथक् ही एक पद होने में है । समास का अङ्ग हो जाने पर सयगो (स्वजनः) हो जाता है ।

(३५) शील (स्वभाव, आदत), धर्म (गुण) अथवा साधु (प्रवीण) अर्थ में जो प्रत्यय आते हैं उनके स्थान में 'इर' आदेश होता है । जैसे :—हसिरो, रञ्चिरो, लज्जिरो, भमिरो, जम्पिरो, वेविरो, उरसिरो (हसनशीलः इत्यादि)

विशेष—कोई-कोई तुन् के स्थान में ही 'इर' का आदेश मानते हैं । उनके मत से संस्कृत के नमी और गमी के लिए नमिर और गमिर रूप नहीं सिद्ध होते ।

(३६) क्त्वा प्रत्यय के स्थान में तुम्, अत्, तूग और तुआण ये ४ आदेश होते हैं । जैसे :—

प्राकृत		संस्कृत
दद्धुं	[त्वा = तुम्]	दग्ध्वा
मोत्तुं	[" "]	मुत्त्वा
भमिअ	[त्वा = अत्]	भ्रमित्वा
रमिअ	[" "]	रन्त्वा
घेत्तूण	[त्वा = तूण]	गृहीत्वा
काऊण	[" "]	कृत्वा
भोत्तुआण ^१	[त्वा=तुआण]	भुक्त्वा
सीउआण ^२	[" "]	सवित्वा

विशेष—(क) कहीं-कहीं तुम्वाले म् के अनुस्वार का लोप हो जाता है। जैसे:—वन्दित्तु। व का लोप करके वन्दित्वा संस्कृत का वन्दित्ता प्राकृत रूप बनता है।

(ख) **शौरसेनी** में क्त्वा के स्थान में इय और दूण आदेश होते हैं। कृ और गम धातुओं से अदूय होता है। मागधी-आवन्ती में क्त्वा के स्थान में तूण आदेश होता है। अपभ्रंश में क्त्वा के स्थान में इइ, उइ, विअवि आदेश होते हैं।

(३७) इदमर्थ में प्रयुक्त प्रत्ययों के स्थान में 'केर' आदेश होता है। जैसे:—तुम्हकेरो, अम्हकेरो (युष्मदीयः, अस्मदीयः)

-
१. २. हेमचन्द्र २.१४६ में भेत्तुआण और सेउआण रूप मिलते हैं।
 ३. किसी से सम्बन्ध रखनेवाला पुरोवर्ती पदार्थ। जैसे—तुम्हारा यह ग्रन्थ, इस अर्थ में संस्कृत में 'युष्मदीयो ग्रन्थः' ऐसा प्रयोग इदमर्थ में है।

विशेष—मईअ-पक्खे, पाणिणीआ (मदीयपत्ते; पाणि-
नीयाः) में उक्त नियम नहीं लगता है । पर और राजन्
शब्दों से पारक्कं और राइक्कं भी बनते हैं ।

(३८) इदमर्थ में युष्मद्-अस्मद् शब्दों से पर में
रहनेवाले अब् प्रत्यय के स्थान में 'एच्चय' आदेश
होता है । जैसे :—तुम्हेच्चयं, अम्हेच्चयं (यौष्माकम् ,
आस्माकम्)

विशेष—अपभ्रंश में इदमर्थ प्रत्ययों के स्थान में केवल
'आर' आदेश होता है । यथा :—अम्हारो (अस्मदीयः) ।

(३९) त्व प्रत्यय के स्थान में 'डिमा' और 'त्तण'
आदेश विकल्प से होते हैं । जैसे :—पीणिमा, पीणत्तणं
(पीनत्वम्)

विशेष—तल् (ता) प्रत्ययान्त पीनता आदि के
स्थान में पीणआ (या) इत्यादि रूप होते हैं । पीणदा रूप
विशेष प्राकृत में भले ही होता हो, किन्तु सामान्य प्राकृत
में नहीं होता । हाँ प्राकृतप्रकाशकार कुल प्राकृतों में तल्
प्रत्यय के स्थान में 'दा' आदेश करते हैं ।

(४०) अंकोठवर्जित शब्द से पर में आनेवाले 'तैल'
प्रत्यय के स्थान में 'डेल्ल' आदेश होता है । जैसे :—इङ्गुदी-
एल्लं (इङ्गुदीतैलम्)

विशेष—अंकोठ शब्द से अंकोल्लतेल्लं रूप होता है ।

(४१) यद्, तद् और एतद् शब्दों से पर में आने-वाले परिमाणार्थक प्रत्यय के स्थान में 'इत्तिअ' आदेश होता है और एतद् शब्द का लुक् भी होता है । जैसे :—जित्तिअं, तित्तिअं, इत्तिअं (यावन्, तावन्, एतावत्)

(४२) इदम्, किम्, यद्, तद् और एतद् शब्दों से पर में आनेवाले परिमाणार्थक प्रत्यय के स्थान में 'डेत्तिअं' 'डेत्तिल' और 'डेदह' आदेश होते हैं । इन प्रत्ययों के आने पर एतद् शब्द का लुक् हो जाता है । इदम् शब्द से जैसे :—एत्तिअं, एत्तिलं, एदहं (इयन्); केत्तिअं, केत्तिलं, केदहं (कियत्); जेत्तिअं, जेत्तिलं, जेदहं (यावत्); तेत्तिअं, तेत्तिलं, तेदहं, (तावन्), एत्तिअं, एत्तिलं, एदहं (एतावत्)

(४३) कृत्वस् प्रत्यय (क्रिया की अभ्यावृत्ति की गणना अर्थ में होनेवाले) के स्थान में 'हुत्तं' आदेश होता है । जैसे :—बहुहुत्तं (बहुकृत्वः)

(४४) मतुप् प्रत्यय के स्थान में आलु, इल्ल, उल्ल, आल, वन्त और इन्त आदेश होते हैं । आलु जैसे :—ईसाल्ल, णिहाल्ल (ईर्यावान्, निद्रावान्) इल्ल जैसे :—विआरिल्लो, सोहिल्लो (विकारवान्, शोभावान्) उल्ल जैसे :—विआरुल्लो, मंसुल्लो (विकारवान्, मांसवान्) आल जैसे :—रसालो, जगलो, जोण्हालो (रसवान्, जडवान्, ज्योत्स्ना-

१. प्रत्ययों के आदि ड् के इत् अर्थात् लुप्त होने से यद् और तद् के टि अर्थात् अदभाग का भी लोप हो जाता है ।

२. दे० 'संख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच् ।' पा० सू० ५।४।२७

वान्) वन्त जैसे :—धणवन्तो, भक्तिवन्तो (धनवान् , भक्तिमान्)

विशेष—(क) हेमचन्द्र के मन से मन्त और इर आदेश भी होते हैं । जैसे :—सिरिमंतो, पुष्णमंतो, धणिरो (श्रीमान् , पुष्यवान् , धनवान्)

(ख) कुछ लोगों का कहना है कि इल्ल और उल्ल सार्वत्रिक न होकर पाणिनीय व्याकरण के शैषिक प्रकरण में ही आते हैं । जैसे :—पुरिल्लं (पौरस्त्यम्), अप्पुल्लं (आत्मीयम्)

(४५) वति प्रत्यय के स्थान में 'व्व' यह आदेश होता है । जैसे :—महुव्व (मधुवन्)

स्वार्थिक प्रत्यय ।

प्राकृत	प्रत्यय	संस्कृत	प्राकृत	प्रत्यय	संस्कृत
नवल्लो	ल्ल	नवः	मिमालिअ	डालिअ	मिश्र
एकल्लो, एकल्लो	॥	एकः	दीहरं	र	दीर्घः
अवरिल्लो	॥	उपरि	विज्जला	ल	विद्युत्
मुमया	मया	भ्रूः	पन्नलं	॥	पत्रम्
भमया	डमया		पीवलं	}	॥
सणिअं	डिअं	शनैः	पीअलं		
मणिअं	॥	मनाक्	अंधल्लो	॥	अन्धः
मणअं	डअं		जमलं	॥	यमः

विशेष—स्वार्थ में लभी शब्दों से क प्रत्यय होता है ।

तृतीय अध्याय समाप्त



चतुर्थ अध्याय

[शब्दसाधन प्रकरण]

(१) प्राकृत में संस्कृत के समान ही पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग होते हैं ।

विशेष—संस्कृत के जिन शब्दों का प्राकृत में लिङ्ग बदल जाता है, उनके विषय में इस ग्रन्थ के १-३८-४५ तक में विचार किया गया है ।

(२) प्राकृत में संस्कृत के समान तीनों वचन न होकर एकवचन और बहुवचन ही होते हैं ।

(३) कर्ता आदि छवों कारकों की चतुर्थीरहित विभक्तियाँ प्राकृत शब्दों के आगे प्रयुक्त होती हैं । चतुर्थी के स्थान की पूर्ति पष्ठी विभक्ति से होती है । विभक्तियों के नाम पाणिनि के नामकरण के अनुसार ही हैं ।

(४) प्राकृत में अवर्णान्त (अ और आ से अन्त होनेवाले), इवर्णान्त (इ और ई से अन्त होनेवाले), उवर्णान्त (उ और ऊ से अन्त होनेवाले), ऋवर्णान्त (ऋ से अन्त होनेवाले) तथा हलन्त (जिनके अन्त में व्यञ्जन अक्षर आये हों) ये पाँच प्रकार के शब्द पाये जाते हैं ।

विशेष—वस्तुतः प्रयोग में ऋकारान्त तथा हलन्त शब्दों की उपलब्धि नहीं होने से तीन ही प्रकार के शब्द रह जाते हैं ।

(५) पुँल्लिङ्ग में वर्तमान ह्रस्व अकारान्त शब्द के आगे आनेवाली प्रथमा के एकवचन की 'सु' विभक्ति के स्थान में 'ओ' आदेश होता है । जैसे :—देवो, हरिअंदो, हृदो (देवः, हरिश्चन्द्रः, हृदः)

विशेष—(क) मागधी में सु के पर में रहने पर अन्त के अ का ए हो जाता है और सु का लोप हो जाता है । जैसे :—रुक्खे, एशे, मेशे (वृक्षः, एषः, मेषः)

(ख) अपभ्रंश में सु और अम् के पर में रहने पर अन्त के अ के स्थान में उ आदेश माना जाता है ।

(६) जस्, शस्, डसि और आम् इन विभक्तियों के पर में रहने पर पुँल्लिङ्ग शब्द के अन्त्य अ के स्थान में आ आदेश होता है तथा जस् और शस् विभक्तियों का लोप होता है । जैसे :—देवा, णउला (देवाः, देवान्, नकुलः, नकुलान्)

(७) अदन्त (अ से अन्त होनेवाले) शब्द से पर में आनेवाले अम् के अकार का लुक् हो जाता है । जैसे :—देवं, णउलं (देवं, नकुलम्)

(८) ह्रस्व अकारान्त शब्द से पर में आनेवाले टा (तृतीया के एकवचन) और आम् (पष्ठी के बहुवचन) के स्थान में ण आदेश होता है । जैसे :—देवेण, देवाण, अथवा देवाणं (देवेन, देवानाम्)

विशेष—अपभ्रंश में टा के स्थान में ण्ण और अनु-स्वार होते हैं । तथा टा के पर में रहने पर अ का नित्य

एव्य होता है एवं भिस् के पर में रहने पर विकल्प से ।
से अ पर में आप् का हं आदेश होता है ।

(६) अदन्त (अ से अन्त होनेवाले) शब्दों के अन्तिम अ के स्थान में ए होता है, यदि उनसे आगे डि (सप्रमी-एकवचन) और डस् (पष्ठी-एकवचन) से भिन्न विभक्तियाँ आती हों । जैसे:—देवेहिं, देवेसु, णउलेहिं, णउलेसु (देवैः देवेषु, नकुलैः, नकुलेषु)

(१०) अदन्त (अ से अन्त होनेवाले) शब्द से पर में आनेवाले भिस् के स्थान में केवल (अनुनासिक एवं अनुस्वार से रहित), सानुनासिक और सानुस्वार 'हि' आदेश होता है । जैसे—देवेहि, देवेहिँ, देवेहिं, णउलेहि, णउलेहिँ, णउलेहिं (देवैः, नकुलैः)

विशेष—'प्राकृतप्रकाश' और 'कल्पलतिका' के अनुसार भिस् के स्थान में केवल हिम् आदेश किया जाता है ।

(११) अदन्त (अ से अन्त होनेवाले) शब्द से पर में आनेवाले डसि के स्थान में त्तो, द्वा, दु, हि और हित्तो आदेश होते हैं । दो और दु के दकार का लुक् भी होता है । जैसे :—देवत्तो, देवाओ, देवाड, देवाहि और देवाहित्तो' (देवात्)

विशेष—(क) प्राकृतप्रकाश और कल्पलतिका के अनुसार डसि के स्थान में आदो, दु तथा हि आदेश किये जाते हैं ।

१. हेमचन्द्र (३. ८.) के अनुसार डसि का लुक् होकर एक रूप 'देवा' भी होता है ।

(ख) शौरसेनी में डसि के स्थान में 'आद्दो', और 'आद्दु' आदेश होते हैं, किन्तु कल्पलतिका के अनुसार केवल 'दो' आदेश होता है ।

(ग) पैशाची में डसि के स्थान में 'आतो' और 'आत्तो' आदेश होते हैं ।

(घ) अपभ्रंश में डसि के स्थान में 'ह' और 'हू' आदेश होते हैं ।

(१२) अदन्त (अ से अन्त होनेवाले) शब्द से पर में आनेवाले भ्यस् के स्थान में त्तो, दो, दु, हि, हितो और सुंनो आदेश होने हैं । जैसे :—देवत्तो, देवाओ, देवाड, देवाहि, देवेहि, देवाहिनो, देवेसुंनो (देवेभ्यः)

विशेष—अपभ्रंश में अदन्त शब्दों से पर में आनेवाले भ्यस् के स्थान में 'हूँ' आदेश होता है ।

(१३) अदन्त शब्द से पर में आनेवाले डस् (पष्ठी-एकवचन) के स्थान में 'स्स' आदेश होता है । जैसे :—देवस्स, णडलस्स (देवस्य, नकुलस्य)

विशेष—(क) मागधी में डस् के स्थान में विकल्प से 'आह' आदेश होता है ।

(ख) अपभ्रंश में डस् के स्थान में सु, हो, स्सो ये आदेश होते हैं ।

(१४) अदन्त शब्द से पर में आनेवाले डि (सप्तमी-एकवचन) के स्थान में 'ण' और 'म्मि' आदेश होते हैं । जैसे :—देवे, देवेम्मि, णडले, णडलेम्मि (देवे, नकुले)

उपर्युक्त नियमों के अनुसार अकारान्त पुँल्लिङ्ग

देव शब्द के रूप—

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा देवो	देवा
द्वितीया देवं	देवे, देवा
तृतीया देवेण, देवेणं	देवेहि-हिँ-हिँ
पञ्चमी { देवत्तो, देवाओ, देवाउ, देवाहि देवाहित्तो इत्यादि	देवाहित्तो, देवासुंतो देवेहित्तो, इत्यादि
षष्ठी देवस्स	देवाण, देवाणं
सप्तमी देवे, देवेम्मि	देवेसु, देवेसुं
संबोधन देव, देवो	देवा

कुल अदन्त शब्दों के रूप उक्त देव शब्द के समान ही प्रायः चलते हैं ।

(१५) इदन्त (इ से अन्त होनेवाले) और उदन्त (उ से अन्त होनेवाले) पुँल्लिङ्ग शब्दों का सु, जस्, भिस्, भ्यस् और सुप् विभक्तियों के पर में रहने पर अन्त (इ और उ) का दीर्घ होता है ।

विशेष—हेमचन्द्र के मत से शस् (द्वितीया-बहुवचन) के लुक् हो जाने पर भी इदन्त-उदन्त का दीर्घ होता है ।

(१६) इदन्त और उदन्त पुँल्लिङ्ग शब्दों से पर में आने-वाले जस् के स्थान में ओ और णो आदेश होते हैं । कहीं-कहीं जस् का लुक् भी हो जाता है ।

विशेष—हेम० ३, २०, २१, २२ के अनुसार इदन्त-उदन्त से पुँल्लिङ्ग में जस् के स्थान में डित् अउ-अओ आदेश और उदन्त से केवल डित् अओ आदेश विकल्प से होते हैं । णो आदेश भी विकल्प से होता है । डित् होने से पूर्व के 'टि' का लोप जानना चाहिए ।

(१७) इदन्त और उदन्त पुँल्लिङ्ग शब्दों से पर में आनेवाले शस् के स्थान में नित्य और डस् के स्थान में विकल्प से णो आदेश होता है ।

विशेष—अपभ्रंश में इदन्त-उदन्त से पर में आनेवाले 'डसि' के स्थान में 'हे', 'भ्यस्' के स्थान में 'हुं' और डि के स्थान में हि आदेश होते हैं ।

(१८) इदन्त और उदन्त शब्दों से पर में आनेवाले 'टा' (तृतीया-एकवचन) के स्थान में 'णा' आदेश होता है ।

विशेष—अपभ्रंश में टा के स्थान में सानुस्वार ए और ण आदेश होते हैं ।

(१९) शेष रूपों की सिद्धि अदन्त शब्दों के समान ही जाननी चाहिए ।

उपर्युक्त नियमों के अनुसार इदन्त-पुँल्लिङ्ग

गिरि शब्द के रूप—

एकवचन		बहुवचन	
प्रथमा	गिरी	गिरीओ,	गिरिणो
द्वितीया	गिरिं	गिरिणो	
तृतीया	गिरिणा	गिरीहि-हिँ-हि	

पञ्चमी	गिरित्तो इत्यादि	गिरिहितो, गिरिसुंतो इत्यादि
षष्ठी	गिरिणो, गिरिस्स	गिरिण, गिरिणं
सप्तमी	गिरिम्मि	गिरीसु, गिरीसुं
संबोधन	गिरि	गिरीओ

हेमचन्द्र (३, १६-२४) के अनुसार गिरि शब्द के रूप—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	गिरी	गिरी, गिरवो, गिरउ, गिरिणो,
द्वितीया	गिरि	गिरी, गिरिणो
तृतीया	गिरिणा	गिरीहि-हिँ-हिँ
पञ्चमी	गिरिणो, गिरित्तो	गिरित्तो, गिरीओ, } गिरीउ, गिरीहितो, } गिरीसुंतो }
	गिरीओ, गिरीउ	
	गिरीहितो	
षष्ठी	गिरिणो, गिरिस्स	गिरीण, गिरीणं
सप्तमी	गिरिम्मि	गिरीसु, गिरीसुं
संबोधन	गिरि, गिरी	गिरिणो, गिरओ, गिरउ, गिरी

उदन्त पुँल्लिङ्ग गुरु शब्द के रूप:—

प्रथमा	गुरू	गुरूओ, गुरूणो
द्वितीया	गुरुं	गुरूणो
तृतीया	गुरूणा	गुरूहि-हिँ-हिँ
पञ्चमी	गुरूत्तो इत्यादि	गुरूहितो इत्यादि
षष्ठी	गुरूणो, गुरूस्स	गुरूणं, गुरूण
सप्तमी	गुरूम्मि	गुरूसु, गुरूसुं
संबोधन	गुरु	गुरूओ

पुँल्लिङ्ग में कुल इकारान्त, उकारान्त शब्दों के रूप गिरि और गुरु शब्दों के समान ही होते हैं ।

हेमचन्द्र के अनुसार गुरु शब्द के रूप :—

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा गुरू	(गुरू, गुरवो, गुरओ गुरउ, गुरुणो
द्वितीया गुरुं	गुरू, गुरुणो
तृतीया गुरुणा	गुरूहि-हिँ-हिं
पञ्चमी (गुरुणो, गुरुत्तो, गुरुओ गुरुउ, गुरूहिंतो	गुरुत्तो, गुरूओ, गुरूउ गुरूहिंतां, गुरूसुंतां
षष्ठी गुरुणो, गुरुस्म	गुरूण, गुरूणं
सप्तमी गुरुम्मि	गुरूसु, गुरूसुं
संबोधन गुरु, गुरू	गुरू, गुरुणो, गुरवो गुरउ, गुरओ

(२०) ऋकारान्त शब्दों के आगे किसी भी विभक्ति के आने पर अन्त्य ऋ के स्थान में 'आर' आदेश होता है और उसका रूप अदन्त शब्दों जैसा पाया जाता है ।

(२१) सु और अम् को छोड़ कर शेष सभी विभक्तियों के पर में होने पर ऋकारान्त शब्द के अन्त्य ऋ के स्थान में विकल्प से उकार होता है । उत्व पक्ष में उकारान्त शब्दों के जैसा रूप होते हैं ।

(२२) संबोधनवाले सु के पर में रहने पर ऋदन्त शब्द के अन्तिम ऋ के स्थान में 'अ' आदेश विकल्प से होता है ।

किन्तु जो ऋकारान्त शब्द विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ हो उसमें उक्त नियम लागू नहीं होता है । जैसे :—हे पिअ, हे पिअर (हे पितः)

विशेष—कर्तृशब्द विशेषणवाची ऋकारान्त है, अतः उक्त नियम लागू नहीं हुआ । इससे 'हे कत्तार' रूप होगा ।

(२३) पितृ, भ्रातृ और जामातृ शब्दों से पर में किसी भी विभक्ति के आने पर ऋकार के स्थान में 'आर' का अपवाद 'अर' आदेश होता है ।

विशेष—(क) 'अर' आदेश होने पर उसके रूप भी अदन्त शब्दों के समान ही चलते हैं ।

(ख) सु के पर में रहने पर ऋदन्त शब्दों के ऋ के स्थान में 'आ' आदेश विकल्प से होता है ।

उपर्युक्त नियमों के अनुसार भर्तृ शब्द के रूप :—

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा भत्तारो	भत्तुणो भत्तारा
द्वितीया भत्तारं	भत्तुणो, भत्तारे
तृतीया भत्तुणा, भत्तारेण	भत्तारेहि भत्तुहिं
पञ्चमी भत्तारादो, भत्तुणो, इत्यादि	भत्तारहितो, भत्तुहितो, इत्यादि
षष्ठी भत्तुणो, भत्तारस्स	भत्तुणं, भत्ताराणं
सप्तमी भत्तारे, भत्तारम्मि, भत्तुम्मि	भत्तुसु, भत्तारेसु
संबोधन हे भत्तार	हे भत्तारा

हेमचन्द्र (३, ३६, ४०, ४४, ४८) के अनुसार भर्तृ

शब्द के रूपः—

एकवचन

बहुवचन

प्रथमा	भक्तारो	भक्तारा, भक्तू, भक्तुणो भक्तउ, भक्तओ	
द्वितीया	भक्तारं	भक्तारे, भक्तू, भक्तुणो	
तृतीया	भक्तुणा, भक्तारेण	भक्तूहिं, भक्तारेहिं	
पञ्चमी	भक्तुणो, भक्तूओ, भक्तूड, भक्तूहि, भक्तूहितो, भक्ता- राओ, भक्ताराड, भक्ताराहि, भक्ता- राहितो, भक्तारा	भक्तू, भक्तूओ, भक्तूहितो, भक्तूसुंतो, भक्ताराओ, भक्ताराड, भक्ताराहि, भक्तारेहि, भक्ता- राहितो, भक्तारेहितो, भक्तारा- सुंतो, भक्तारेसुंती	
		भक्तूणं, भक्तूण, भक्ताराणं, भक्ताराण	
		भक्तूमि, भक्तारे, भक्तारमि	भक्तूसु, भक्तारेसु
		हे भक्तार	हे भक्तारा

कुल ऋकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप भर्तृ शब्द के समान ही चलते हैं ।

ऋकारान्त पितृ शब्द के रूपः—

प्रथमा	पिआ, पिअरो	पिअरा
द्वितीया	पिअरं	पिअरे, पिदुणो
तृतीया	पिअरेण, पिदुणा	पिअरेहिं
पञ्चमी	पिअरादो, पिदुणो, इ०	पिअरहितो, पिदुहितो, इत्यादि
षष्ठी	पिअरस्स, पिदुणो	पिअराणं, पिदुणं

एकवचन

बहुवचन

सप्तमी	पिअरे, पिअरम्मि, पिटुम्मि	पिअरेसु, पिटुसुं
संबोधन	हे पिअ, हे पिअर	हे पिअरा

पितृ शब्द के समान ही भ्रातृ और जामातृ शब्दों के रूप चलते हैं ।

हेमचन्द्र (३. ३६-४०, ४४-४८.) के अनुसार पितृ शब्द के रूप :—

प्रथमा	पिआ ^१ , पिअरो	{ पिअरा, पिउणो, पिअवो, पिअओ, पिअउ पिऊ
द्वितीया	पिअरं	पिअरे, पिअरा, पिउणो, पिऊ
तृतीया	पिअरेण, पिअरेणं, पिउणा इत्यादि	पिअरेहि-हिं हिं ^२ , पिऊहिं-हिं ^३ -हिं इत्यादि
संबोधन	पिअ, पिअरं	पिअरा, पिउणो, पिअवो इत्यादि

शेष विभक्तियों के रूपों का ऊह कर लेना चाहिए ।

(२४) प्राकृतप्रकाश और प्राकृतकल्पलतिका में ईकारान्त उकारान्त शब्दों के साधन के लिए अलग सूत्र नहीं देखे जाते । इससे सिद्ध होता है कि उनके (ईकारान्त-उकारान्त के) कार्य भी क्रमशः इकारान्त-उकारान्त शब्दों के समान ही होते हैं ।

(२५) हेमचन्द्र ने सभी विभक्तियों में क्विबन्त ईकारान्त-उकारान्त शब्दों के दीर्घ ईऊ के लिए ह्रस्व का विधान किया है । और केवल संबोधन के एकवचन में अपने नियम को वैकल्पिक माना है ।

१. शौरसेनी में प्रथमा के एकवचन में पिदा रूप होता है । देखिए :
'तादकणो वि एदाए पिदा'-अभिज्ञान-शाकुन्तल

(२६) पुँल्लिङ्ग में गो शब्द का गाव यह रूप होता है । इस लिए इसके रूप अदन्त शब्दों के समान ही चलते हैं ।

स्त्री-प्रत्यय

(२७) प्राकृत में कुछ ही ऐसे शब्द हैं, जिनमें विशेष नियमों के अनुसार विशेष स्त्री-प्रत्यय आते हैं । शेष शब्दों के आगे संस्कृत के ही अनुसार स्त्री-प्रत्यय आते हैं ।

(२८) पाणिनि (४-१-१५) के अनुसार अण् आदि प्रत्यय निमित्तक जो ङीप् होता है, वह प्राकृत में विकल्प से होता है । जैसे :—साहणी, साहणा, कुरुचरी, कुरुचरा ।

(२९) अजातिवाची पुँल्लिङ्ग नाम (प्रातिपदिक) से स्त्री-लिङ्ग को बतलाने में विकल्प से ङी प्रत्यय होता है । जैसे :—नीली, नीला; काली, काला; हसमाणी, हसमाणा; सुप्पणही, सुप्पणहा; इमीए, इमाए; इमीणं, इमाणं; एईए, एआए; एईणं, एआणं ।

विशेष—(क) कुमार्यादि में संस्कृत के समान नित्य ही ङी होता है । कुमारी, गौरी इत्यादि ।

(ख) जातिवाची में उक्त नियम के नहीं लगने से करिणी, अया, एलया इत्यादि रूप होते हैं ।

(३०) छाया और हरिद्रा शब्दों में 'आप्' का प्रसङ्ग (प्राप्ति) होने पर विकल्प से 'ङी' प्रत्यय होता है । जैसे :—छाही, छाहा; हलही, हलहा ।

(३१) स्त्रीलिङ्ग में स्वस्त्रादि^२ शब्दों से पर में डा प्रत्यय

१. हेमचन्द्र के अनुसार 'छाया' पाठ है । देखें हेम० ३. ३४.

२. स्वस्त्रा तिस्रश्चतस्रश्च ननान्दा दुहिता तथा ।

याता मातेति सप्तैते स्वस्त्रादय उदाहृताः ॥ सिद्धा. कौ. अजन्तस्त्री.

होकर ससा आदि रूप हो जाते हैं और उनके रूप आदन्त शब्दों जैसे चलते हैं। जैसे :—ससा, नणन्दा, दुहिया।

(३२) सु, अम् और आम्वर्जित^१ सुप् (सभी विभक्तियों) के पर में रहने पर किम्, यद् और तद् शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में 'ङी' प्रत्यय विकल्प से होता है। जैसे :—कीओ, काओ; कीए, काए; कीसु, कासु; जीओ, जाओ; तीओ, ताओ।

(३३) स्त्रीलिङ्ग शब्द से पर में आनेवाले जस् और शस् के स्थान में विकल्प से 'उत्' और 'ओत्' आदेश होते हैं। और उनसे पूर्व के ह्रस्व स्वर का विकल्प से दीर्घ हो जाता है। जैसे :—मालाउ, मालाओ; पक्ष में—माला। बुद्धीउ, बुद्धीओ, पक्ष में बुद्धी। सहीउ, सहीओ, पक्ष में सही। घेणूउ, घेणूओ, पक्ष में घेणू। वहूउ-वहूओ, पक्ष में वहू।

विशेष—शौरसेनी में स्त्रीलिङ्ग शब्द से जस् का उन् नहीं होता है।

(३४) स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान नाम (प्रातिपदिक) से पर में आनेवाले टा, डस् और ङी के स्थान में 'अत्' 'आत्' 'इत्' और 'एत्' आदेश होते हैं। पूर्व के ह्रस्व स्वर का दीर्घ भी होता है। आदन्त शब्द से टादि के स्थान में केवल आत् आदेश नहीं होता। उक्त चारों आदेश जब डसि के स्थान में होते हैं, तब उनके पूर्व के ह्रस्व स्वर का विकल्प से दीर्घ हो जाता है। जैसे :—मुद्धाअ, मुद्धाइ, मुद्धाए; बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए।

विशेष—(क) अपभ्रंश में टा के स्थान में एन् होता है।

१. उक्त नियम हेमचन्द्र के अनुसार है। किन्तु एच. भट्टाचार्य अपने प्राकृत व्याकरण में 'अनामि सुपि' लिखते हैं। पृ. १०७, पं. १७

(ख) अपभ्रंश में डसि और डस् के स्थान में हे, भ्यस् और आम् के स्थान में हुं और डि के स्थान में हिं होने हैं।

(३५) अम् विभक्ति के पर में रहने पर स्त्रीलिङ्ग शब्द के अन्तिम दीर्घ को ह्रस्व विकल्प से होता है।

(३६) स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान दीर्घ ईकारान्त शब्द से पर में आनेवाले सु जस् और शस् के स्थान में 'आ' आदेश विकल्प से होता है।

(३७) संबोधनवाली विभक्ति के पर में रहने पर आबन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के अन्तिम आ को 'ए' आदेश होता है।

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग लता शब्द के रूप :—

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा लदा	लदा, लदाओ, लदाउ
द्वितीया लदं	लदा, लदाओ, लदाउ
तृतीया लदाए, लदाइ, लदाअ	लदाहि-हिं-हि
पञ्चमी लदादो, लदाए, इत्यादि	लदाहितो, इत्यादि
षष्ठी लदाए, लदाइ, लदाअ	लदाणं, लदाण
सप्तमी लदाए, लदाइ, लदाअ	लदासु, लदासुं
संबोधन हे लदे	हे लदाओ

हेमचन्द्र के अनुसार लता शब्द के रूप :—

प्रथमा लदा	लदा, लदाओ, लदाउ
द्वितीया लदं	लदा, लदाओ, लदाउ

	एकवचन	बहुवचन
तृतीया	लदाए, लदाइ, लदाअ	लदाहि-हिँ-हिं
पञ्चमी	लदाए, लदाइ, लदाअ लदत्तो, लदाओ, लदाउ लदाहितो, इत्यादि	लदत्तो, लदाओ, लदाउ लदाहितो, लदासुंतो
षष्ठी	लदाए, लदाइ, लदाअ	लदाण, लदाण
सप्तमी	लदाए, लदाइ, लदाअ	लदासु, लदासुं
संबोधन	हे लदे, लदा	हे लदा, लदाओ, लदाउ

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग बुद्धि शब्द के रूप :—

प्रथमा	बुद्धी	बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ
द्वितीया	बुद्धि	बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ
तृतीया	बुद्धीए, बुद्धीइ, बुद्धीआ, बुद्धिअ	बुद्धीहि-हिँ-हिं
पञ्चमी	बुद्धीए, बुद्धीइ, इत्यादि	बुद्धीहितो, बुद्धीसुन्तो इत्यादि
षष्ठी	बुद्धीए, बुद्धीइ, बुद्धीआ, बुद्धीअ	बुद्धीणं, बुद्धीण
सप्तमी	बुद्धीए, बुद्धीइ, बुद्धीआ, बुद्धीअ	बुद्धीसु, बुद्धीसुं
संबोधन	हे बुद्धी	हे बुद्धी, बुद्धीओ, इत्यादि

हेमचन्द्र के अनुसार बुद्धि शब्द के रूप :—

प्रथमा	बुद्धी	बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ
द्वितीया	बुद्धि	बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ
तृतीया	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए	बुद्धीहि-हिँ-हिं
पञ्चमी	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धित्तो बुद्धीइ, बुद्धीए, बुद्धीओ बुद्धीउ, बुद्धीहितो	बुद्धित्तो, बुद्धीओ-उ- हितो-सुतो

	एकवचन	बहुवचन
पष्ठी	बुद्धीअ-आ-इ-ए	बुद्धीण-णं
सप्तमी	” ” ”	बुद्धीसु-सुं
संबोधन	हे बुद्धि, बुद्धी	हे बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ

कुल इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप उक्त बुद्धि शब्द के समान ही चलते हैं। ऐसे ही हेमचन्द्र के अनुसार धेणु, सही, वहु शब्दों के रूप भी चलते हैं।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग धेणु शब्द के रूप :—

प्रथमा	धेणू	धेणू, धेणूओ, धेणूउ
द्वितीया	धेणु	” ” ”
तृतीया	धेणूए-इ-आ-अ	धेणूहि-हिँ-हिँ
पञ्चमी	धेणूदो धेणूइ, इत्यादि	धेणूहितो-सुंतो
षष्ठी	धेणूए-इ-आ-अ	धेणूण, धेणूण
सप्तमी	” ” ” ”	धेणूसु-सुं
संबोधन	हे धेणु, धेणू	हे धेणू, धेणूओ, इत्यादि

सभी उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप धेणु शब्द के समान ही चलते हैं।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग नदी शब्द के रूप :—

प्रथमा	नई, नईआ	नईओ, नईआ
द्वितीया	नई	नई, नईओ, नईआ
तृतीया	नईए-इ-आ-अ	नईहि-हिँ-हिँ
पञ्चमी	नईए, नईअ, नईदो, इत्यादि	नई, नईहितो, नईसुंतो

एकवचन

पद्यो	नईए,-इ,-आ-अ
सप्तमी	” ” ” ”
संबोधन	हे नइ, नई

बहुवचन

नईणं, नईण
नईसु, नईसुं
हे नई, नईओ, इत्यादि

कुल ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप नदी शब्द के समान ही चलते हैं ।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग वहू (वधू) शब्द के रूप :—

प्रथमा	वहू	वहू , वहूओ, इत्यादि
द्वितीया	वहुं	वहू , वहूओ, इत्यादि
तृतीया	वहूए-इ-आ-अ	वहूहि-हिं -हि
पञ्चमी	वहूदो, वहूए, इत्यादि	वहूहितो-सुंतो
षष्ठी	वहूए-इ-आ-अ	वहूण, वहूण
सप्तमी	” ” ” ”	वहूसु-सु
संबोधन	हे वहू, वहू	हे वहू, वहूओ, इत्यादि

कुल उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप वहू शब्द के समान ही चलते हैं ।

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग मातृ शब्द के रूप :—

१. हेमचन्द्र (३. ४६) के अनुसार मातृ शब्द के दो प्राकृत रूप मिलते हैं—मात्रा (माता) और मात्ररा (देवी, Goddess) । हमें इस शब्द से ३. ४४. के अनुसार 'माउ' और १. १३५ के अनुसार 'माइ' रूप भी मिलते हैं । इनमें 'मात्रा' और 'मात्ररा' के रूप माला एवं लता शब्दों के अनुसार, माउ के रूप घेणु के अनुसार और माइ के रूप बुद्धि शब्द के अनुसार चलते हैं ।

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा माआ	माआ
द्वितीया माअ ^१	माए
तृतीया माआइ, माआअ, इत्यादि	माएहि-हिँ-हि
पञ्चमी माआदो, माआए, इत्यादि	माआहितो, माआसुंतो
षष्ठी माआइ, माआअ, इत्यादि	माआणं, माआण
सप्तमी " " "	माआसु-सुं
संबोधन हे माअ, इत्यादि	हे मात्रा, इत्यादि

स्त्रीलिङ्ग में गो शब्द के गावी और गाई ये दो रूप होते हैं। इन दोनों के रूप ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अनुसार चलते हैं।

अजन्त नपुंसक लिङ्ग के शब्दों के सम्बन्ध में नियम :—

(३८) नपुंसक लिङ्ग में वर्तमान स्वरान्त शब्दों से पर में आनेवाले सु (प्रथमा के एकवचन) के स्थान में 'म्' होता है। जैसे :—वणं (वनम्)

(३९) नपुंसक लिङ्ग में वर्तमान स्वरान्त शब्दों से पर में आनेवाले जस् और शस् (प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन) के स्थान में ईं, ईं और णि आदेश होते हैं। जैसे :—कुलाईं, कुलाईं और कुलाणि।

विशेष—(क) शौरसेनी में नपुंसक लिङ्ग में जस्-शस् के स्थान में केवल 'णि' आदेश होता है।

(ख) अपभ्रंश में जस्-शस् के स्थान में 'इं' आदेश होता है।

१. शौरसेनी में द्वितीया के एकवचन में 'मादरं' यह रूप होता है।

(४०) नपुंसक लिङ्ग में वर्तमान शब्दों से पर में आनेवाले संबोधन के 'सु' का लोप होता है ।

(४१) सु (प्रथमा के एकवचन) के पर में रहने पर इदन्त-उदन्त नपुंसक शब्दों के अन्तिम इ और उ को दीर्घ नहीं होता है ।

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग कुल शब्द के रूप :—

एकवचन		बहुवचन
प्रथमा	कुलं	कुलाई, कुलाई, कुलाणि
द्वितीया	”	” ” ”
संबोधन	हे कुल	

शेष रूप पुंलिङ्ग के समान चलते हैं ।

इकारान्त नपुंसक दधि शब्द के रूप :—

प्रथमा	दहिं, दहि	दहीइँ, दहीइं, दहीणि
द्वितीया	” ”	” ” ”
संबोधन	हे दहि	

उकारान्त नपुंसक मधु शब्द के रूप :—

प्रथमा	महुं, महु	महूइँ, महूइं, महूणि
द्वितीया	” ”	” ” ”
संबोधन	हे महु	

शेष रूपों का ऊह पुंलिङ्ग आदि से कर लेना चाहिए ।

हलन्त शब्दों के साधनसंबन्धी नियम एवं उनके रूप :—

प्राकृत में हलन्त शब्द नहीं होते हैं । कुछ हलन्त शब्दों के

अन्त्य व्यञ्जनों का लोप होता है और कुछ हलन्त शब्द अजन्त के रूप में परिणत हो जाते हैं। अतः हलन्त शब्दों के साधनार्थ विशेष नियम नहीं हैं।

केवल आत्मन् और राजन् शब्दों के साधनार्थ प्राकृत के कुछ प्राचीन आचार्यों ने नियम बनाये हैं। वे ही नियम प्रयोग के अनुसार अन्य नान्त शब्दों के लिए भी उपयुक्त माने गये हैं।

राजन् शब्द के रूपः—

एकवचन

प्रथमा राआ
द्वितीया राञ्चं
तृतीया रण्णा, राइणा
पञ्चमी राआदो, रण्णो, राआदु, राइणो
षष्ठी रण्णो, राइणो. राअस्स
सप्तमी राअम्मि, राए, राइम्मि
संबोधन हे राआ, राअं

बहुवचन

राआणो, राआ
राए, राआणो
राएहि
राआहिँतो, राइहिँतो
राआणं, राइणं, राआण्ण
राएसु, राएसुं

हेमचन्द्र (३, ४६-४५,) के अनुसार राजन् शब्द

के रूपः—

प्रथमा	राया	राया, रायाणो, राइणो
द्वितीया	रायं, राइणं	राये, राया, रायाणो, राइणो
तृतीया	राइणा, रण्णा; राएण, राएणं	राएहि-हिँ-हिँ; राईहि-हिँ-हिँ
पञ्चमी	रण्णो, राइणो, रायत्तो, इ०	रायत्तो, राइत्तो, इत्यादि
षष्ठी	रण्णो, राइणो, रायस्स	राईण, राईण; रायाण, रायाण

	एकवचन	बहुवचन
सप्तमी	राये, रायम्मि, राइम्मि	राईसु, राईसुं, राएसु, राएसुं
संबोधन	हे राया, राय	राया, रायाणो, राइणो

आत्मन् शब्द के रूप :—

प्रथमा	अप्पा, अप्पाणो	अप्पाणा, अप्पाण्णो, अप्पा
द्वितीया	अप्पाणं, अप्पं	अप्पाणो, अप्पणो
तृतीया	अप्पाणोण, अप्पणा	अप्पाणोहि, अप्पेहिं
पञ्चमी	अप्पाणाओ, अप्पणो	अप्पाणाहितो, अप्पाहितो,
	अप्पाओ, अप्पादो, इ०	इत्यादि
षष्ठी	अप्पाण्णस्स, अप्पणो	अप्पाणाणं, अप्पाणं
सप्तमी	अप्पाणम्मि, अप्पे	अप्पाणोसु, अप्पेसु
संबोधन	हे अप्पं, इत्यादि	

विशेष—हेमचन्द्र (३. ५६-५७.) के अनुसार आत्मन् शब्द के दो प्राकृत रूप अप्प और अप्पाण होते हैं। इनमें अप्प के रूप राजन् शब्द जैसे चलते हैं। और 'अप्पाण' के वच्छ अथवा देव शब्द के अनुसार। तृतीया के एकवचन में उसके दो और अधिक रूप होते हैं—'अप्पणिआ' और 'अप्पणइआ'

(४२) प्राकृत-कल्पलतिका के अनुसार 'भवत्' और 'भगवत्' के अन्तिम तकार के स्थान में सु विभक्ति के पर में रहने पर अनुस्वार क्रिया जाता है। यह नियम यहाँ भी गृहीत है। जैसे:—भवं (भवान्), हे भवं (हे भवन्), भअवं (भगवान्), हे भअवं (हे भगवन्)

(४३) प्राच्या में भवत् शब्द के स्त्रीलिङ्ग में भोदी यह रूप होता है।

सर्वनाम शब्दों के साधन के नियम और रूप :—

प्राकृत में सर्वनाम के संबंध में सामान्य नियम देखने में नहीं आते हैं। जो भी नियम देखने में आते हैं, विशेष स्थलों के लिए विशेष नियम हैं। केवल अदन्त सर्वनाम शब्दों की सिद्धि के लिए कुछ साधारण नियम हैं, जिनका नीचे उल्लेख हुआ है। अन्य विशेष नियमों का परिज्ञान उदाहरणों द्वारा ही सम्भव है। अदन्त सर्वनाम शब्दों के विषय में नियम ये हैं :—

(४४) सर्वादिगण-पठित शब्दों के अन्तिम अ से पर में आनेवाले जस् के स्थान में 'ए' आदेश होता है।

विशेष—कहीं कहीं सर्वादि के प्रथम अ का वैकल्पिक एत्व होकर सेव्वे और सर्वे रूप होते हैं।

(४५) अदन्त सर्वादि से पर में आनेवाले 'आम्' के स्थान में 'एलि' आदेश विकल्प से होता है। तथा 'डि' के स्थान में 'स्सि', 'म्मि' और 'त्थ' ये आदेश होते हैं और इदम् तथा एतद् शब्दों को छोड़कर अन्य सर्वादि शब्दों से आनेवाले डि के स्थान में 'हि' आदेश भी होता है।

पुँल्लिङ्ग में सर्व शब्द के रूप :—

एकवचन		बहुवचन
प्रथमा	सव्वो	सव्वे
द्वितीया	सव्वं	सव्वे
तृतीया	सव्वेण	सव्वेहिं
पञ्चमी	सव्वदो, सव्वत्तो, इत्यादि	सव्वेहित्तो, इत्यादि
षष्ठी	सव्वस्स	सव्वेस्सिं, सव्व्वाणं

	एकवचन	बहुवचन
सप्तमी	{ सव्वस्सि, सव्वम्मि, सव्वत्थ, सव्वहिं	सव्वेसु, सव्वेसुं
संबोधन		हे सव्व, सव्वो
		सव्वे

स्त्रीलिङ्ग में सर्व शब्द के रूप आदन्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के समान तथा नपुंसक में सर्व शब्द के रूप अदन्त नपुंसक लिङ्गवाले शब्दों के समान चलते हैं ।

विश्व आदि सर्वादिगण के शब्दों के रूप इसी सर्व शब्द के रूपों के समान चलते हैं ।

विशेष—अपभ्रंश में सर्व के स्थान में साह आदेश होता है । अदन्त सर्वादि से पर में आनेवाले ङसि का 'हां' आदेश होता है । ङि के स्थान में केवल हिं आदेश ही होता है ।

पुंलिङ्ग में यद् शब्द के रूप :—

प्रथमा	जो	जे
द्वितीया	जं	जे
तृतीया	जेण, जिण	जेहिं
पञ्चमी	जत्तो, जदो, जम्हा, जाओ	जाहितो, जासुंतो. इत्यादि
षष्ठी	जस्स, जासं	जाणं, जेहिं ^२
सप्तमी	जस्सि, जम्मि, जहिं ^३ , जत्थ	जेसु

१. अपभ्रंश में पुंलिङ्ग में 'जासु' और स्त्रीलिङ्ग में 'जेहे' होता है ।
२. शौरसेनी में केवल जाणं और टक्कभाषा में 'जाहं' 'जाणं' ये दो रूप होते हैं ।

३ जब सप्तमी के एकवचन से समय का बोध कराना हो तब यद् शब्द का 'जाहे' और 'जाला' ये रूप हो जाते हैं ।

(४६) यद् शब्द से स्त्रीलिङ्ग में आम्वजित विभक्तियों के पर में रहने पर ऊा विकल्प से होता है। जैसे :—जी, जीया इत्यादि ।

पुंलिङ्ग में तद् शब्द के रूप :—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सो	तं, दे
द्वितीया	तं, णं	ते, दे
तृतीया	तेण, तिणो, शेण	तेहिं, शेहिं
पञ्चमी	तत्तो, तदो, ता, तम्हा, ताओ	ताहितो इत्यादि
षष्ठी	तास, से, तस्स	ताणं, तेसिं, सिं, दाणं
सप्तमी	तस्सि, तम्मि, तत्थ, तहि	तेसु इत्यादि

(४७) तद् शब्द का स्त्रीलिङ्ग में प्रथमा के एकवचन में 'सा' यह रूप होता है और नपुंसक लिङ्ग में 'त'। आम्वजित

१. हेमचन्द्र के अनुसार तद् शब्द के रूप निम्नलिखित हैं :—
 प्रथमा-एक० स, सो; बहु० ते, शे, द्वितीया-एक० तं, णं; बहु० ते, ता, शे, णा; तृतीया-एक० तेण, शेण, तिणा; बहु० तेहिं इत्यादि;
 पञ्चमी-एक० तम्हा; बहु० तेहिं इत्यादि; षष्ठी-एक० तस्स, ताम; बहु० तास, तेसिं; सप्तमी-एक० तस्सि, ताहे, ताला, तइआ; बहु० तेसु, शेसु, तेसुं, शेसुं ।

२. पेशाची में पुंलिङ्ग में 'नेन' और स्त्रीलिङ्ग में 'नाए' रूप होते हैं ।

३. शौरसेनी में इस् में तस्स, से और आम् में ताणं होते हैं ।

अपभ्रंश में इस् के पर में रहने पर पुंलिङ्ग में तह और स्त्रीलिङ्ग में तासु होते हैं। टक भाषा में आम् के पर में रहने पर 'ताहं' और 'ताणं' होते हैं ।

विभक्तियों में तद्शब्द से खीलिङ्ग में डी का भी प्रयोग किया जाता है। जैसे :—ती, तीआ इत्यादि।

पुंलिङ्ग में एतद् शब्द के रूप :—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एस, एसो	एते, एदे
द्वितीया	एत	एते, एदे
तृतीया	एदिणा, एदेण, एणं	एनेहिं, एदेहिं, एएहिं
पञ्चमी	एत्तो, एत्ताहो, एआओ, इ०	एतेहितो इत्यादि
षष्ठी	एअस्स, एदस्स, से	सिं, एएसिं, एदाणं
सप्तमी	अयम्मि, एत्थ, इअम्मि, एअम्मि, एअस्सि	एएसु, एदेसु इत्यादि

विशेष—(क) हेमचन्द्र (३, ८२) के अनुसार पञ्चमी के एकवचन में 'एत्तो' और 'एत्ताहे' रूप होते हैं और पक्ष में 'एआओ' 'एआउ' 'एआहि' 'एआहितो' और 'एआ' रूप होते हैं।

(ख) हेमचन्द्र (३, ८४) के अनुसार एतद् शब्द से सप्तमी के एकवचन में 'म्मि' के पर में रहने पर 'अयम्मि' ईयम्मि और पक्ष में एअम्मि रूप होते हैं।

(ग) अन्य रूपों के लिए देखिए हेमचन्द्र के ३. ६६, ८१, ८५.

पुंलिङ्ग में अदस् शब्द के रूप :—

प्रथमा	अमू	अमूणो
द्वितीया	अमुं	अमूणो
तृतीया	अमुणा	अमूहिं

	एकवचन	बहुवचन
पञ्चमी	अमूओ, अमूउ इत्यादि	अमूहितो इत्यादि
षष्ठी	अमुणो, अमुस्त	अमूणं
सप्तमी	अमुम्मि, अयम्मि, इअम्मि	अमूसु इत्यादि

विशेष—(क) हेमचन्द्र (३. ८७) के अनुसार नीनों लिङ्गों में अदस् शब्द के प्रथमा एकवचन में 'अह' रूप भी होता है ।

(ख) शौरसेनी में 'अह' रूप नहीं होता । साधारणतः स्त्रीलिङ्ग में अमू और नपुंसक में अमुं रूप प्रयुक्त होते हैं ।

पुंलिङ्ग में इदम् शब्द के रूप :—

प्रथमा	इमो, अअं	इमे
द्वितीया	इमं, णं	इमे
तृतीया	इभिणा, इमेण, शेण	एहि, इमेहिं, शेहिं
पञ्चमी	इदो, इमादो, इत्तो इत्यादि	इमेहितो इत्यादि
षष्ठी	अस्स, इमस्स, से	इमाणं, सिं
सप्तमी	अस्सि, इमस्सि, इह, शे	एसु

विशेष—(क) इदम् शब्द के स्त्रीलिङ्ग में 'सु' विभक्ति के पर में रहने पर 'इअं', 'इमिआ' और नपुंसक में सु और अन् के पर में रहने पर 'इदं' और 'इणं' रूप होते हैं ।

(ख) शौरसेनी में स्त्रीलिङ्ग इदम् शब्द के प्रथमा एकवचन में 'इअं' और नपुंसक में 'इदम्' 'इमम्' रूप

होते हैं। पुल्लिङ्ग-नपुंसक लिङ्ग में पष्ठी के बहुवचन में केवल 'इमाणं' यह रूप होता है।

पुल्लिङ्ग में किम् शब्द के रूप :—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	को	के
द्वितीया	कं	के
तृतीया	किणा, केण	केहि
पञ्चमी	कीणो, कीस, कम्हा, कत्तो, कदो	केहितो इत्यादि
षष्ठी	कास, कस्स	कास, केसिं, काणं
सप्तमी	(कहिं, कस्सि, कम्मि, कत्थ, काहे, काला, कइआ	केसु इत्यादि

विशेष—(क) अपभ्रंश में किम् के स्थान में 'काइ' और 'कवण' आदेश विकल्प से होते हैं।

(ख) स्त्रीलिङ्ग में 'का' और नपुंसक में 'किं' रूप होते हैं।

(ग) शौरसेनी में ङसि में 'कदो' और उसी विभक्ति में अपभ्रंश में 'कहाँ' रूप होते हैं।

(घ) स्त्रीलिङ्ग में ङस् के पर में रहने पर 'कस्सा' कीसे, किअ, कीआ, कीई, 'कीए' होते हैं। शौरसेनी में पुल्लिङ्ग में 'कास' नहीं होता है। अपभ्रंश में पुल्लिङ्ग किम् शब्द का ङस् में 'कासु' रूप होता है और स्त्रीलिङ्ग में 'कहं'।

युष्मद् शब्द के रूप :—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तुमं, तं, तुं, तुवं, तुह	{ ज्ञे, तुज्भ, तुज्भो, तुम्ह, तुम्हे उम्हे, तुह्ये ^१
द्वितीया	{ त, तुं, तुवं, तुमं, तुह, तुमे, तुवे ^२	वो तुज्ज्ञे, तुज्भ, तुम्हे, तुह्ये ^३
तृतीया	{ दे, ते, तइ, तुए, तुम तुमइ, तुमर, तुमे, तुमाइँ	तुम्हेहिं, तुह्येहिं, उम्हेहिं उज्ज्ञेहिं, तुज्ज्ञेहिं ^४ इत्यादि
पञ्चमी	{ तत्तो, तइत्तो, तुवत्तो, तुमत्तो, तुज्भत्तो, तुम्हत्तो, तुहत्तो, तुह्यत्तो, तदो, तुव, दुहि, तुमहितो ^५ इत्यादि	तुम्हाहितो, तुज्भाहितो, तुज्भत्तो, तुम्हत्तो, तेहितो दुहितो ^६ इत्यादि

१. हेमचन्द्र ३. ९१ के अनुसार भे, तुब्भे, तुज्भ, तुम्ह, तुग्हे, उग्हे रूप होते हैं ।

२. हेमचन्द्र ३. ९२ में तुए रूप बतलाया गया है ।

३. हेमचन्द्र ३. ९३ में वो, तुज्भ, तुब्भे, तुम्हे, उम्हे, भे, रूप वर्णित हैं ।

४. हेमचन्द्र ३. ९४ के अनुसार—भे, दि, दे, ते, तइ, तए, तुमं, तुमइ, तुमए, तुमे और तुमाइ रूप होते हैं ।

५. हेमचन्द्र ३. ९५ के अनुसार—भे, तुब्भेहिं, तुज्ज्ञेहिं, उज्ज्ञेहिं, उम्हेहिं, तुग्हेहिं, उग्हेहिं ये रूप होते हैं ।

६. हेमचन्द्र ३. ९६ और ९७ के अनुसार—तइत्तो, तुवत्तो, तुमत्तो, तुहत्तो, तुब्भत्तो, तुम्हत्तो, तुज्भत्तो, तत्तो, तुग्ह, तुब्भतहिन्तो, तुम्ह, तुज्भ इत्यादि रूप होते हैं ।

७. हेमचन्द्र ३. ६८ के अनुसार—तुब्भत्तो, तुग्हत्तो, उग्हत्तो, उम्हत्तो, तुम्हत्तो, तुज्भत्तो तथा दोदुहिहिंत्तो-सुंत्तो ये रूप होते हैं ।

	एकवचन	बहुवचन
पष्ठी	तुह, तुज्झ, तुम्म, तुइ, तु, तुम्ह, तुह, तुह, तुव, तुम, तमे, तुमाइ, दे, तुब्ब ^१	वो, भे, तुज्झ, तुह्याण तुम्हाण, तुमाण, तुहाण उम्हाण, तुवाण ^२ इत्यादि
सप्तमी	तइ, तए, तुमए, तुमे, तुमाई, तइ, तुम्मि, तुमम्मि, तुवम्मि, तुहम्मि, तुब्भम्मि ^३ इत्यादि	तुसु, तुम्हेसु, तुब्बेसु, तुहसु- तुमसु, तुइसु ^४ इत्यादि

शौरसेनी में युष्मद् शब्द के रूप :—

प्रथमा	तुमं	तुम्हे
द्वितीया	तुमं	तुम्हे

१. हेमचन्द्र ३. ९९ के अनुसार—तइ, तु, ते, तुम्हं, तुह, तुह, तुव-
तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुच्च, उच्च, उच्च, तुम्ह, तुज्झ,
उम्ह, उज्झ, रूप होते हैं ।

२. हेमचन्द्र ३. १०० के अनुसार—तु, वो, भे, तुच्च, तुच्चं,
तुच्चाण, तुवाण, तुमाण, तुहाण, उम्हाण, तुच्चाणं, तुवाणं, तुमाणं, तुहाणं,
उम्हाणं, तुम्ह, तुज्झ, तुम्हं, तुज्झं, तुम्हाण, तुम्हाण, तुज्झाण, तुज्झाणं
रूप होते हैं ।

३. हेमचन्द्र ३. १०१ के अनुसार—तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए,
तुम्मि, तुवम्मि, तुमम्मि, तुहम्मि, तुच्चम्मि, तुम्हम्मि, तुज्झम्मि रूप
होते हैं ।

४. हेमचन्द्र ३. १०३ के अनुसार—तुसु, तुवेसु, तुमेसु, तुहेसु,
तुब्बेसु, तुम्हेसु, तुज्जेसु, तुवसु, तुमसु, तुहसु, तुच्चसु, तुम्हसु, तुज्झसु,
तुच्चासु, तुम्हासु, तुज्झासु रूप होते हैं ।

	एकवचन	बहुवचन
तृतीया	तए	तुम्हेहि
पञ्चमी	तुम्हादो	तुम्हाहिंतो
षष्ठी	ते, दे, तह, तुम्ह	तुम्हाण
सप्तमी	तइ	तुम्हेसुं

अपभ्रंश में युष्मद् शब्द के रूप :—

प्रथमा	तुह	तुम्हे, तुम्हाइं
द्वितीया	तइं, पइं	तुम्हेहि
तृतीया	”	”
पञ्चमी	तउहोंत, तधुहोंत, तुछुहोंत	तुम्हं
षष्ठी	”	तुम्हहं
सप्तमी	”	तुम्हासुं

अस्मद् शब्द के रूप :—

प्रथमा	{ अहं, अहग्मि, अस्मि अम्हि, ह, अहअ, म्मिं	भे, वअं, अम्ह, अम्हे
		अम्हो, मो ^२
द्वितीया	{ शोण, मि, अस्मि, अम्ह मं, ममं, मिमं, अहं ^३	अम्हे, अम्हा, णो, शो, अम्ह ^४

१. हेमचन्द्र ३. १०५ के अनुसार—म्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अहं, अहयं रूप होते हैं ।

२. हेमचन्द्र ३. १०६ के अनुसार—अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं और भे रूप होते हैं ।

३. हेमचन्द्र ३. १०७ के अनुसार—शो, णं, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, मं, ममं, मिमं और अहं रूप होते हैं ।

४. हेमचन्द्र ३. १०८ के अनुसार—अम्हे, अम्हो, अम्ह और शो रूप होते हैं ।

	एकवचन	बहुवचन
तृतीया	{ मिमे, ममं, ममए, मए ममाइ, मइ, इणो, मर्आ	अम्हेहिं, अम्हाहिं अम्ह, अम्हो, रो ^२
पञ्चमी	{ मइत्तो, ममत्तो मत्तो महत्तो, मह्यत्तो, मइदो ममदुहि ^३ इत्यादि ।	ममत्तो, अम्हत्तो, ममाहितो, ममासुंतो, ममेसुंतो, अम्हे- हितो ^४ इत्यादि ।
षष्ठी	{ मे, मम, मइ, मह महं, मह्य, नह्यं, अम्हं । ^५	रो, णो, मह्य, अम्ह, अम्ह, अम्हे, अम्हो, मम, अम्हाणं महाणं, मह्याणं । ^६

१. हेमचन्द्र ३. १०९ के अनुसार—मि, मे, ममं, ममए, ममाइ, मइ, मए रूप होते हैं ।

२. हेमचन्द्र ३. ११० के अनुसार—अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, रो रूप होते हैं ।

३. हेमचन्द्र ३. १११. के अनुसार—मइत्तो, ममत्तो, महत्तो. मज्जत्तो. मत्तो रूप होते हैं । इसी प्रकार मइदो, मइदु, इत्यादि रूप बनते है । दो, दु, हि, हितो और लुक् पक्ष में भी रूपों का ऊह कर लेना चाहिए ।

४. हेमचन्द्र ३. ११२. के अनुसार—ममत्तो, अम्हत्तो, ममाहितो, अम्हाहितो, ममासुंतो, अम्हासुंतो, ममेसुंतो, अम्हेसुंतो रूप होते हैं ।

५. हेमचन्द्र ३. ११३. के अनुसार मे, मइ, मम, मह, महं, मज्ज, मज्जां, अम्ह, अम्हं रूप होते हैं ।

६. हेमचन्द्र ३. ११४. के अनुसार रो, णो, मज्ज, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण, ममाण, महाण, मज्जाण, अम्हाण, ममाण, महाणं, मज्जाणं रूप होते हैं ।

	एकवचन	बहुवचन
सप्तमी	मी, मइ, ममाइ, मए मे, अम्हम्मि, ममम्मि महम्मि	अम्हेसु, ममेसु, महेसु मएसु, अम्हसु, ममसु महसु ^२ इत्यादि

शौरसेनी में अस्मद् शब्द के रूप :—

प्रथमा	ही, अहं	अम्हे, वयं
द्वितीया	मं	अम्हे
तृतीया	मए	अम्हेहिं
पञ्चमी	मत्तो, ममादो	अम्हेहितो इत्यादि
षष्ठी	मे, मम, मह	अम्ह, अम्हाणं
सप्तमी	मइ, मए	अम्हेसु

(४८) मागधी में संस्कृत के अहं और वयं के स्थान में क्रमशः हगे और हके आदेश होते हैं ।

अपभ्रंश में अस्मद् शब्द के रूप :—

प्रथमा	हउ	अम्हे, अम्हइ
द्वितीया	मइ	अम्हे, अम्हइ
तृतीया	मइ	अम्हेहि
पञ्चमी	महु, मह्य	अम्हेहितो
षष्ठी	महु, मह्यु	अम्हहे
सप्तमी	मयि इत्यादि	अम्हासु

१. हेमचन्द्र ३. ११५. के अनुसार—मि, मइ, ममाइ, मए, मे, अम्हम्मि, ममम्मि, महम्मि, मज्जम्मि रूप होते हैं ।

२. हेमचन्द्र ३. ११७. के अनुसार—अम्मेसु, महेसु, महेसु, मज्जेसु, अम्हसु, ममसु, महसु, मज्जसु अम्हासु, रूप होते हैं ।

द्वि, त्रि और चतुर् शब्दों के रूप :—

	द्विशब्द	त्रिशब्द	चतुर्शब्द
प्रथमा	{ दो, दुवे, दोणि, वेणि, दुणि, विणि	तिण्ण	चत्तारो, चउरो. चत्तारि
द्वितीया	”	”	”
तृतीया	दोहिं, दोहि, विहि	तीहि	चऊहिं
पञ्चमी	दोहितो, वेहितो इ०	तीहितो	चऊहितो
षष्ठी	दोएहं, दोण्ण, वेण्ण	तिण्णं	चउएहं
सप्तमी	दोसु, वेसु	तीसु	चउसु

(४६) अन्य संख्यावाचक शब्दों के रूप अदन्त शब्दों के समान चलते हैं ।

(५०) लीलिङ्ग में पञ्चन शब्द से आप् प्रत्यय होता है । जैसे :—पञ्चा, पञ्चाहि इत्यादि ।

(५१) तादर्थ्य (उसके लिए) अर्थ में षष्ठी विभक्ति विकल्प से आती है ।

(५२) प्राकृत में विभक्तियों के व्यवहार का कोई विशेष नियम नहीं है । कहीं द्वितीया और तृतीया के स्थान में सप्तमी कहीं पञ्चमी के स्थान में तृतीया तथा सप्तमी और प्रथमा के बदले द्वितीया विभक्तियाँ व्यवहृत होती हैं ।

पञ्चम अध्याय

[अव्यय प्रकरण]

(१) वाक्योपन्यास अर्थ में 'तं' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे :—तं निव-पुच्छिअ-दोआरिएण (राजा से पूछे गये दौवारिक ने इस प्रकार वाक्य का उपन्यास किया ।) कुमापा. ४. १.

(२) अभ्युपगम (स्वीकार) अर्थ में आम अव्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे :—आम गिम्ह-सिरी (हाँ, यह सही है कि इस उद्यान में इन दिनों ग्रीष्म ऋतु की शोभा फैली है ।) कुमा. पा. ४. १.

(३) विपरीतता अर्थ में 'णवि' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे :—उणहेह सीअला णवि (गरम के विपरीत ठंडी अथवा गरम होती हुई भी ठंडी) कुमा. पा. ४. १.

(४) कृतकरण अर्थात् फिर से उसी क्रिया को करने अर्थ में 'पुणरुत्तं' अव्यय का प्रयोग होता है। जैसे :—पेच्छ पुणरुत्तम् (एक बार देख चुकने पर भी फिर से देखो ।) कुमा. पा. ४. १.

(५) विषाद, विकल्प, पश्चात्ताप, निश्चय और सत्य अर्थों में 'हन्दि' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। विषाद अर्थ में जैसे :—हन्दि विदेशो (दुःख है कि हमारे लिए यह विदेश है ?); विकल्प अर्थ में जैसे :—जीवइ हन्दि पिआ (पता नहीं मेरी प्रियतमा जीती है अथवा नहीं); पश्चात्ताप अर्थ में जैसे :—हन्दि किं पिआ मुक्का ? (क्या हमने विरह

दुःख का विना विचार किये ही प्रियतमा को छोड़ दिया ?); निश्चय अर्थ में जैसे :—हन्दि सरणं (मरना निश्चित है); सत्य अर्थ में जैसे :—हन्दि जमो गिम्हो (श्रीष्म यमराज है, यह बात सच है ।) कुमा, पा. ४. २.

(६) 'ग्रहण करो', 'लो' इस अर्थ में 'हन्द' और हन्दि अव्यय का भी प्रयोग होता है। जैसे :—हन्द महु हन्दि परिमल-मिमं (पुष्परस लो, यह गन्ध ग्रहण करो ।) कुमा. पा. ४. ३.

(७) इव के अर्थ में मिव, पिव, विव, व्व, व, विअ, इन अव्ययों का प्रयोग प्राकृत में विकल्प से होता है।

मिव—जणणिं मिव (माता के समान)

पिव—धूअं पिव (पुत्री के समान)

विव—सोअरं विव (सोदर बहन के समान)

व्व—साअरो व्व (सागर के समान)

व—सहि व (सखी के समान)

विअ—नत्ति विअ (पौत्री के समान)

पक्ष में इव जैसे :—

इव—मउलो इव

(८) लक्षण (लट्य करना) अर्थ में जेण और तेण अव्ययों का प्रयोग होता है। जैसे :—जेण अहुल्ला लवली (विना खिली लवली को लट्य करके); फुलं न म्पलिवम्बं तेण फुडा चेअ गिम्हसिरी (खिले हुए धूलि कदम्ब को लट्य करके श्रीष्म की शोभा स्फुट ही मालूम पड़ती है ।) कुमा० पा० ४. ४.

(९) अवधारण (अन्ययोग व्ययच्छेद) अर्थ में णइ, चेअ, चिअ और च अव्ययों का प्रयोग होता है। जैसे :—

णइ—बोलीणा णइ वसन्त-उउ-लच्छी (वसन्त ऋतु की शोभा वीत ही गई)

चैअ—स्फुटा चैअ गिम्ह-सिरी (व्रीष्म की शोभा स्फुट ही मालूम पड़ती है ।)

च्चिअ—ते च्चिअ धन्ना (वे ही धन्य हैं !)

च्च—स च्च सीलेण (स्वभाव से अच्छा-सत्-ही)

(१०) दो में एक के निर्द्धारण तथा निश्चय अर्थों में 'बले' अव्यय का प्रयोग होता है । निर्द्धारण में जैसे :—तयाण नान्नालिआ बले रम्मा (सभी लताओं में नवमल्लिका अथवा नवमालिका मन को आनन्द देनेवाली है ।); निश्चय में जैसे :—बले ते मयणवाणा (निश्चय ही वे मदन (कामदेव) के दाण हैं ।)

(११) 'किल' के अर्थ में किर, इर, हिर अव्ययों का विकल्प से प्रयोग होता है । पक्ष में किल ही प्रयुक्त होता है । जैसे :—

किर—जा किर मल्ली (संभावना करता हूँ कि जो मल्ली है)

इर—जा इर जवा (संभावना करता हूँ कि जो जपा है)

हिर—सुत्ते जणम्मि जो हिर सहो चीरीण (लोगों के सो जाने पर जो भीगुरों का शब्द)

पक्ष में किल—एवं किल तेन सिविणए भणिआ ।

विशेष—किल शब्द के अर्थ प्रसिद्ध, संभावना आदि हैं ।

(१२) केवल अर्थ में 'णवर' अव्यय का प्रयोग करना चाहिए । जैसे :—सहो चीरीण सुव्रण णवर (केवल भौगुरों का शब्द मुनाई पड़ता है ।

(१३) आनन्तर्य अर्थ में 'णवरि' अव्यय का प्रयोग होता है । जैसे :—गाअइ किल तस्स मिसा णवरि वसन्तस्स गिम्हसिरी । (भौगुरों की ध्वनि के बहाने वसन्त के बाद आनेवाली ग्रीष्म-शोभा हर्ष से मानो गान कर रही है) कुमा० पा० ४. ७.

(१४) निवारण अर्थ में 'अलाहि' अव्यय का प्रयोग करना उत्तम है । जैसे :—पहिआ, अलाहि गन्तुं (पथिको, जाना व्यर्थ है अर्थात् मत जाओ ।)

(१५) नञ् के अर्थ में 'अण' और 'णाइ' अव्ययों का प्रयोग किया जाता है । जैसे :—अण दइआण (कान्तारहित जनों का) । कुमलाइँ इह णाईं (यहाँ कुशल नहीं है) ।

(१६) मा के अर्थ में 'माइ' इस अव्यय का प्रयोग होता है । जैसे :—माइँ इह एध (यहाँ मत आओ ।)

(१७) 'हद्धी' यह अव्यय निर्वेद अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है । जैसे :—हद्धी, इअ व्व चीरीहि उल्लविअं

(१८) भय, वारण और विषाद अर्थों में वेव्वे का प्रयोग करना चाहिए । जैसे :—समुहं ट्ठिअम्मि ममरे वेव्वे त्ति मणेड मल्लिउच्चिणिरी । वारणखेअभएहिं भणिउं वेव्वे वयंसे त्ति (सम्मुखोत्थिते भ्रमरे वेव्वे इति भणति मल्लिकामुच्चेत्री । वारण-खेदभयैः भणित्वा वेव्वे 'वयस्ये' इति ।)

(१६) वेव्व और वेव्वे का भी आमन्त्रण अर्थ में प्रयोग किया जाता है। जैसे:—वेव्व सहि चिट्ठसु (हमारा आमन्त्रण है ! सखि, रुको)

विशेष—आमन्त्रण अर्थ में 'वेव्वे' का प्रयोग नियम १८ के मण्डितं वेव्वे वयंसेत्ति में देखा जाता है।

(२०) सखी द्वारा आमन्त्रण अर्थ में 'हला', 'मामि', और 'हले' अव्ययों का प्रयोग विकल्प से होता है। पक्ष में 'सहि' यह प्रयुक्त होता है। जैसे :—वेव्व सहि चिट्ठसु हला निसीद, मामि रम जामि कत्थ हले ? (हमारा आमन्त्रण है, सखि, रुको ! सखि बैठो ! सखि, क्रीडा करो ! जाती कहाँ हो सखि ?)
कुमा. पा. ४. १०.

(२१) सम्मुखीकरण अर्थ में और सखी के आमन्त्रण अर्थ में 'दे' इस अव्यय का प्रयोग करना चाहिए। सामान्य संबोधन में जैसे :—दे पसिअ ताव सुंदरि; सख्यामन्त्रण में जैसे :—दे पसिअ किमसि रुट्ठा ? (है सखि, प्रसन्न होओ, रुठी किस लिए हो ?)

(२२) दान, प्रश्न और निवारण अर्थों में 'हुं' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। दान में जैसे :—हुं, गिण्हसु कणय-भायणयं (मैंने दे डाला, अब तुम यह कनक-पात्र ले लो ?); प्रश्न में जैसे :—हुं, तुह पिओ न आओ ? (मैं पूछती हूँ अभी तक तेरा प्रियतम नहीं आया ?); निवारण में जैसे :—हुं, किं तेणज्ज (अरे इटाओ भी, उससे अब हमारा क्या मतलब ?)

(२३) निश्चय, वितर्क, संभावना और विस्मय अर्थों में हुं और खु का प्रयोग किया जाता है । निश्चय में जैसे :—सो हु अन्नरओ (यह निश्चित है कि यह दूसरी स्त्री में रम गया है ।), तुमयं खु माणइत्ता (यह निश्चित है कि तुम मानवती हो ।); वितर्क और संभावना अर्थों में जैसे :—तस्स हु जुग्ग सि सा खु न तं (मैं ऐसा अंदाज करता हूँ और यही संभव भी है कि वह दूसरी स्त्री उसके योग्य है और तुम उसके—प्रियतम के योग्य नहीं हो ।); विस्मय अर्थ में जैसे :—एसो खु तुब्भ रमणो (आश्चर्य है कि यह तुम्हारा रमण है ।) कुमा. पा. ४. १२.

(२४) गर्हा, आक्षेप, विस्मय और सूचन अर्थों में ऊ का प्रयोग किया जाता है । गर्हा में जैसे :—तुब्भ ऊ रमणो (तुम्हारा निन्दित रमण); आक्षेप में जैसे :—ऊ किं मए भणिअं (अरे मैंने क्या कह टाला ?); विस्मय अर्थ में जैसे :—ऊ अच्छरा मह सही (अहो, मेरी सखी अप्परा है); सूचन अर्थ में जैसे :—ऊ इअ हसेइ लोआं (तुम्हारे प्रियतम को दोष दे-देकर सखियाँ हँसती हैं ।) कुमा. पा. ४. १३.

(२५) कुत्सा अर्थ में 'थू' अव्यय का प्रयोग किया जाता है । जैसे :—थू रे निकिद्ध कलहसील (अरे अधम, भगड़ाख, तुझे थू है !)

(२६) 'रे' और 'अरे' क्रमशः संभाषण और रतिकलह अर्थों में प्रयुक्त होते हैं । संभाषण अर्थ में जैसे :—रे हियय

मडह—सरिआ; रतिकलह में अरे जैसे :—अरे मए समं मा करेसु उवहासं ।

२७) क्षेप, संभाषण और रतिकलह अर्थों में 'हरे' इस अव्यय का प्रयोग करना चाहिए । क्षेप में जैसे :—हरे णिलज्ज; संभाषण में जैसे :—हरे पुरिसा; रतिकलह में जैसे :—हरे वहुवल्लह ।

(२८) सूचना और पश्चात्ताप अर्थों में 'ओ' अव्यय का प्रयोग करना चाहिए । सूचना अर्थ में जैसे :—ओ सढो सि (मैं यह सूचित कर देना चाहता हूँ कि तुम शठ हो ।) पश्चात्ताप में जैसे :—ओ किमसि दिट्ठो ? (क्या तुम देख लिए गये ?) कुमा. पा. ४. १३.

(२९) सूचना, दुःख, संभाषण, अपराध, विस्मय, आनन्द, आदर, भय, खेद, विषाद, और पश्चात्ताप अर्थों में 'अव्वो' इस अव्यय का प्रयोग करना चाहिए ।

सूचना में जैसे :—अव्वो नओ तुह पियो (यह सूचित करता हूँ कि तुम्हारा प्रियतम नत हो गया ।); दुःख में जैसे :—अव्वो तम्मसि (खेद है कि तुम उदास हो ।); संभाषण में जैसे :—किं एसो अव्वो अन्नासत्तो (क्या यह दूसरी में आसक्त है ?); अपराध एवं विस्मय में जैसे :—अव्वो तुज्जेरिसो माणो (प्रणययुक्त प्रणयी में तुम्हारा ऐसा मान ?) इससे अपराध और आश्चर्य दोनों प्रकट होते हैं । आनन्द में जैसे :—अव्वो पिअस्स समओ (यह आनन्द की बात है कि प्रियतम के आने का यह समय है ।);

आदर में जैसे :—अव्वो सो एइ (मेरा प्रियतम यह आ रहा है ?); भय में जैसे :—रूसणो अव्वो (भय है कि वह थोड़े अपराध पर भी रुठ जानेवाला है ।); खेद और विषाद में जैसे :—अव्वो कट्टं (मैं खिन्न और विषण्ण हूँ ।); पाश्चात्ताप में जैसे :—अव्वो किं एसो सहि मए वरिओ (सखि, मैं तो पछता रही हूँ कि मैंने इसे बरा क्यों ?)

(३० संभावन अर्थ में 'अइ' अव्यय का प्रयोग करना चाहिये । जैसे :—अइ एसि रइ-घराओ (मेरी ऐसी संभावना है कि तुम रतिगृह से आ रही हो ।)

(३१) निश्चय, विकल्प, अनुकम्प्य और संभावन अर्थों में 'वणे' अव्यय का प्रयोग करना चाहिये । निश्चय में जैसे :—वणे देमि (निश्चय ही देता हूँ); विकल्प में जैसे :—होइ वणे न होइ (हो या न हो); अनुकम्प्य में जैसे :—दासो वणे न मुच्चइ (अनुकम्पा योग्य दास छोड़ा नहीं जाता); संभावन में जैसे :—नत्थि वणे जं न देइ विहिपरिणामो ।

(३२) विमर्श अर्थ में (कुछ के मत से संस्कृत मन्ये अर्थ में) मणे अव्यय का प्रयोग किया जाता है । जैसे :—मणे सूरु (मेरी ऐसी मान्यता है कि यह सूर्य है ।)

(३३) आश्चर्य अर्थ में अम्मो अव्यय का प्रयोग करना चाहिए । जैसे :—स अम्मो पत्तो खु अप्पणो (वह प्रियतम अपने आप प्राप्त हो गया । आश्चर्य है ?)

(३४) स्वयम् के अर्थ में अप्पणो का प्रयोग विकल्प से

करना चाहिए। देखिए ऊपर के ३३ वें नियम का उदाहरण। पक्ष में 'सयं' होता है।

(३५) प्रत्येकम् के अर्थ में पाडिकं, पाडिएकं और पक्ष में पत्तेअं का प्रयोग करना चाहिए। जैसे—पाडिकं दइआओ, वाण वयंसीओ पाडिएकं च। पत्तेअं मित्ताइं (प्रत्येक दयिताएं, उनकी प्रत्येक सखियाँ और प्रत्येक मित्र)

(३६) पश्य के अर्थ में 'उअ' का प्रयोग विकल्प से किया जाता है। जैसे :—उअ एसो एइ (देखो, यह आ रहा है।)

(३७) इतरथा के अर्थ में इहरा का प्रयोग विकल्प से किया जाता है। जैसे :—कहमिहरा पुलइआ सि दट्टुमिं (अन्यथा इसे देखकर तुम पुलकित क्यों हो ?)

(३८) भगिति और साम्प्रतम् के अर्थ में एकसरिअं का प्रयोग होता है। जैसे :—एकसरिअं भगिति साम्प्रतम् वा।

(३९) मुधा के अर्थ में मोरउल्ला का प्रयोग किया जाता है। जैसे :—मा तम्म मोरउल्ला ? (व्यर्थ उदास मत होओ ?)

(४०) अर्द्ध और ईपन् में 'दर' इस अव्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे :—दरविअसिअं (अर्ध विकसित अथवा ईषद्विकसित)

(४१) प्रश्न अर्थ में किणो अव्यय का प्रयोग करना चाहिए। जैसे :—किणो धुवसि ? (काँपते हो क्या ?)

(४२) पादपूर्ति के लिए इ, जे, र का प्रयोग करना चाहिए। जैसे :—वारविल्लया इ एआ; गिम्ह-सुहं माणिउं पयट्टा जे; पिअन्ति पिक्क-दक्ख-रसं।

विशेष—अहो, हंहो, हेहो, हा, नाम, अहह, ही, सि, अयि, अहाह, अरि, रि, हो, इत्यादि अव्ययों का प्रयोग प्राकृत में संस्कृत के समान करना चाहिए ।

(४३) अपि के अर्थ में पि और वि का प्रयोग करना चाहिए जैसे :—इअ जंपि तं पि लविराओ ।



षष्ठ अध्याय

[तिङन्त विचार]

(१) प्राकृत में क्यङ्, क्यष् आदि प्रत्ययों के विधान के कोई विशेष नियम नहीं हैं। केवल हेमचन्द्र के व्याकरण में एक सूत्र (३.१३८) है, जिससे य के लुक् के विषय में ज्ञात होता है। जैसे :—गरुआइ, गरुआअइ; दमदमाइ, दमदमाअइ; लोहिआइ, लोहिआअइ।

(२) प्राकृत में गणभेद (धातुओं के वर्गीकरण) की व्यवस्था नहीं की जाती है।

(३) प्राकृत में तिप् आदि तिङ् कहलानेवाले प्रत्ययों के वर्तमान काल में वक्ष्यमाण रूप होते हैं। तथा अदन्त धातुओं को छोड़कर शेष धातुओं में 'आत्मनेपदी' और 'परस्मैपदी' का भेद नहीं माना जाता^१।

वर्तमान काल के प्रत्यय

एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु० इ	न्ति, न्ते, इरे
मध्यम पु० सि	इत्था, ह
उत्तम पु० मि	मो, सु, मा

१. पाणिनि (३.४.३८) के अनुसार तिप्, तस्, फि, सिप्, थस्, थ, मिप्, वस्, मस्; त, आताम्, ऋ, थास्, आथाम्, ध्वम्, इ, वहिङ्, महिङ्, इनमें ति से ङ् तक तिङ् कहे जाते हैं।

२. शौरसेनी में सभी धातु परस्मैपदी होते हैं।

(४) अकारान्त आत्मनेपदी धातुओं के प्रथम-मध्यम पुरुषों के एकवचन के स्थान में क्रमशः 'ए' और 'से' आदेश विकल्प से होते हैं। जैसे :—तुवरए (त्वरते); तुवरसे (त्वरसे)

(५) अदन्त धातु से 'मि' के पर में रहने पर पूर्व के 'अ' का आत्व विकल्प से होता है। जैसे :—हसामि, हसमि इत्यादि।

(६) अकारान्त धातु से 'मो' 'मु' और 'म' पर में रहें तो पूर्व के अकार के स्थान में 'इ' और 'आ' होते हैं। कहीं कहीं ए भी होता है। जैसे :—हसिमो, हसामो, हसेमो; हसिमु, हसेमु इत्यादि।

वर्तमान में अकारान्त भण धातु के रूप :—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु०	भणइ, भणए	भणन्ति, भणन्ते. भणिरे
मध्यम पु०	भणसि, भणसे	भणह, भणित्था
उत्तम पु०	भणामि, भणमि	भणामो, भणिमो, भणेमो इत्यादि

विशेष—यों ही हस और पठ आदि सभी अकारान्त धातुओं के रूपों को जानना चाहिए। केवल अस धातु के रूप विशेष नियमानुसार सिद्ध होते हैं।

वर्तमान में अस धातु के रूप :—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु०	अच्छइ, अत्थि	अच्छन्ति, अत्थि
मध्यम पु०	सि, अच्छसि, अत्थि	अत्थि, अच्छित्था, अच्छह
उत्तम पु०	म्हि, अत्थि, अच्छामि	म्हो, म्हा, इत्यादि

(७) स्वरान्त धातु से भूत काल में सभी पुरुषों और वचनों में विहित प्रत्यय के स्थान में 'ही' 'सि' और 'हीअ' आदेश होते हैं। जैसे :—कासी, काही, काहीअ; ठासी, ठाही, ठाहीअ (अकार्षीत्, अकरोत्, चकार; तथा अस्थात्, अतिष्ठत्, तस्थौ)

विशेष—प्राकृतप्रकाश में ही और सी का विधान नहीं देखा जाता। उसके अनुसार एकाच धातु से केवल 'हीअ' आदेश होता है। देखिए—वर० ७. २४

(८) व्यञ्जनान्त धातु से भूतकाल में विहित सभी प्रत्ययों के स्थान में 'इअ' आदेश होता है। जैसे :—गणहीअ (अग्रहीत्, अगृह्णात्, जग्राह)

विशेष—(क) केवल अस धातु के साथ भूतार्थक कुल पुरुष और वचन के प्रत्ययों के स्थान में 'आसि' और 'अहेसि' आदेश होते हैं। जैसे :—सो, तुमे अहं वा आसि। एवं अहेसि। देखिए—तेनास्तेरास्यहासी। हेम० ३. ६४

(ख) प्राकृतप्रकाश के अनुसार, अस धातु का, केवल भूतार्थक एकवचन के साथ एकमात्र 'आसि' आदेश होता है। देखिए वर. ७. २५

भविष्यत् काल में तिवादि तिङ् प्रत्ययों के स्वरूप :—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु०	हिइ	हिनति, हिंन्ते, हिरे
मध्यम पु०	हिसि	हित्थ, हिरु
उत्तम पु०	{ हिमि, हामि, स्सामि, स्सम्	हिस्सा, हिहा

१. देखिए—सी-ही-हीअ भूतार्थस्य। हेम० ३. १६२.

भविष्यन् काल में भू धातु के रूप :—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु०	होहिइ ^१	होहिन्ति, होहिन्ते, होहिरे
मध्यम पु०	होहिसि ^२	होहित्थ, होहिह
उत्तम पु०	होस्सामि, होहामि	होहामो, होस्सामो
	होस्सामो, होहामो हो-	इत्यादि
	स्सामु, होहामु, होस्साम, होहाम, होहिमु, होहिम ^३	

भविष्यन् काल में कृ धातु के रूप :—

प्रथम पु०	काहिइ	काहिन्ति
मध्यम पु०	काहिसि	काहित्था
उत्तम पु०	काहं, काहिमि	काइमो

भविष्यत् काल में हस धातु के रूप :—

प्रथम पु०	हसिहि	हसिहिन्ति
मध्यम पु०	हसिहिसि	हसिहित्था
उत्तम पु०	हसिस्सं	हसिस्सामो, हसिहामो

१. प्राकृतप्रकाश के अनुसार प्रथम पुरुष के एकवचन में होहिइ, ह्वहिइ, होब्, होब्जा, होब्जहिइ, होब्जाहिइ, होसइ होही और प्रथम पुरुष के बहुवचन में होहिन्त, हुविहिन्ति रूप होते हैं ।

२. प्राकृतप्रकाश के अनुसार मध्यम पुरुष के एकवचन में—होहिहिसि, हुविहिदि, हुविहिसि, होहिहि तथा बहुवचन में होहित्था, होहिहु, हुवित्था, ह्विहिह रूप होते हैं ।

३. प्राकृतप्रकाश के अनुसार उत्तम पुरुष के एकवचन में होस्सामि, होस्सामो, होहामि, होहिमि, होस्स, होहिमो और बहुवचन में होहिस्सा, होहित्था, होहिओ, होहिमु, होहामो, होहिम, होस्सामो, होस्सामु, होस्साम रूप होते हैं ।

इसी प्रकार से भण, पठ आदि के रूप भी चलते हैं—

(६) कृ, दा, सं + गम, रुद, विद, दृश, वच, भिद बुध, श्रु, गम, मुच और छिद धातु भविष्यत् काल में, उत्तम पुरुष के एकवचन में, नीचे लिखे विशिष्ट रूपों को प्राप्त करते हैं। इतर (प्रथम और मध्यम) पुरुषों में श्रु धातु के रूपों के समान रूप प्राप्त करते हैं।

धातुओं के नाम

उत्तम पुरुष के एकवचन के रूप

कृ	काहं, काहिमि
दा	दाहं, दाहिमि
सं + गम	संगच्छं
रुद	रोच्छं
विद	वेच्छ
दृश	देच्छं
वच	वेच्छं
भिद	भेच्छं
बुध	भोच्छ
श्रु	सोच्छं, सोच्छिस्सं, सोच्छिमि इत्यादि
गम	गच्छं
मुच	मोच्छं
छिद	छेच्छं

भविष्यत् काल के प्रथम और मध्यम पुरुषों में श्रु धातु के रूप :—

एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु० सोच्छिइ, सोच्छिहिइ	सोच्छिन्ति, सोच्छिहन्ति

	एकवचन	बहुवचन
मध्यम पु०	सोच्छिसि, सोच्छिहिसि	सोच्छित्था इत्यादि
उत्तम पु०	सोच्छं	सोच्छिमो, सोच्छिहिमो इत्यादि

विध्याद्यर्थक तिङ् :—

प्रथम पु०	उ	न्तु
मध्यम पु०	सु, हि	ह
उत्तम पु०	मु	मो

हस धातु के विध्याद्यर्थ में रूप :—

प्रथम पु०	हसउ	हसन्तु, हसेन्तु
मध्यम पु०	{ हससु, हसहि, हस, हसेज्जसु, हसेज्जहि, हसेज्जे	हसह
उत्तम पु०	हसमु	हसामो

इसी प्रकार पठ आदि धातुओं के रूप जाने जा सकते हैं । किन्हीं आचार्यों के मत से विध्यादि में वर्तमान के तुल्य ही रूप होते हैं । जैसे :—जअइ' इत्यादि ।

(१०) वर्तमान, भविष्यत् और विध्यादि में उत्पन्न प्रत्यय के स्थान में ज्ज और ज्जा ये दोनों आदेश विकल्प से होते हैं । पक्ष में यथाप्राप्त होते हैं । जैसे :—हसेज्ज, हसेज्जा (हसति, हसिष्यति, हसतु, हसेत् इत्यादि)

विशेष—(क) हेमचन्द्र के मत से स्वरान्त धातुओं के विषय में ही उक्त नियम लागू होता है ।

(ख) शौरसेनी में उक्त नियम लागू नहीं होता ।

१. शौरसेनी में जि धातु के विध्यादि में 'जेदु' इत्यादि रूप होते हैं ।

(११) धातु से वर्तमान, भविष्यत् और विध्यादि अर्थवाले तिङ् यदि पर हों तो धातु और प्रत्यय के मध्य में भी उज और ज्जा विकल्प से होते हैं । होज्जइ, होज्जाइ (भवति, भविष्यति, भवतु, भूयात् इत्यादि)

(१२) शतृ और शानच् इन दोनों में एक-एक के स्थान में न्त और माण ये दो आदेश होते हैं । जैसे :—पढन्तो, पढमाणो; हसन्तो, हसमाणो (पठन् , हसन्)

(१३) स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान शतृ और शानच् के स्थान में ई, न्ती और माणा आदेश होते हैं । जैसे :—उवहसमाणि सरोरुहं विहसन्ति हसइ व कुमुइणि (उपहसन्ती; विहसन्तीम्; हसन्तीमिव) कुमा. पा. ५. १०६

(१४) वर्तमान, विध्यादि और शतृ प्रत्ययों के पर में रहने पर अकार के स्थान में एकार विकल्प से होता है । जैसे :—हसेइ, हसइ; हसेउ, हसउ; हसेतो, हसंतो (हसति, हसेत्, हसन्) कहीं पर नहीं भी होता है । जैसे :—जअइ । कहीं आत्व भी होता है । जैसे :—सुणाउ ।

विशेष—शौरसेनी में धातु और तिङ् के मध्य में अधिकतर ए और आ होते हैं ।

(१५) भाव और कर्म में विहित यक् के स्थान में 'इअ' और 'इज्ज' आदेश होते हैं । जैसे :—हसिअइ, हसिज्जइ (हस्यते)

विशेष—दृश और वच के भाव और कर्म में क्रमशः दीश और वुच्च रूप होते हैं । दीसइ (दृश्यते); वुच्चइ (उच्यते)

(१६) क्त्वा, तुम, तव्य और भविष्यत् काल में विहित प्रत्यय के पर में रहने पर धातु के अन्त्य अ के स्थान में 'ए'

और 'इ' होते हैं। जैसे :—हसेऊण, हसीऊण (हसित्वा); हसेउं, हसिउं (हसितुम्); हसेअब्बं, हसिअब्बं (हमितव्यम्); हसेहिइ, हसिहिइ (हसिष्यति)

विशेष—उक्त नियम अदन्त धातुओं को छोड़ अन्य धातुओं में लागू नहीं होता। जैसे :—काऊण (कृत्वा)

(१७) क्त प्रत्यय के पर में रहने पर धातु के अन्त्य 'अ' का 'इ' होता है। जैसे :—हसिअं, पठिअं (हसितम्, पठितम्)

(१८) ण्यन्त धातु के णि के स्थान में अत्, एत्, आव् और आवे ये चार आदेश होते हैं।

(१९) भाव और कर्म अर्थ में विहित क्त प्रत्यय के पर रहने पर णि का लुक और (पर्यायेण लुगभाव होने पर) 'अवि' आदेश होते हैं। णिच् के पर में रहने पर भ्रम धातु के स्थान में विकल्प से 'भमाड' आदेश होता है। जैसे :—कारिअं, कराविअं (कारितम्); सोसिअं, सोसविअं (शोषितम्); तोसिअं, तोसविअं (तोषितम्); कारीअइ, कराविअइ, कारिज्जइ, कराविज्जइ (कार्यते); भमाडइ, भमाडेइ, भामेइ, भमावइ (भ्रामयति)

धात्वादेशसंबंधी नियम—

(२०) व्यञ्जनान्त धातु के अन्त्य व्यञ्जन के आगे अ आकर मिलता है। जैसे :—हसइ (हसति) इत्यादि।

(२१) अकारान्त धातुओं को छोड़कर अन्य स्वरान्त धातु के अन्त में अकार का आगम विकल्प से होता है। जैसे :—पाइ, पाअइ इत्यादि।

(२२) चि, जि, हु, श्रु, सु, लू, पू और धू धातुओं के

अन्त में णकार का आगम होता है और इनके दीर्घ स्वर का ह्रस्व होता है। जैसे :—चिणइ, जिणइ, हुणइ, लुणइ इत्यादि।

(२३) भाव और कर्म अर्थ में वर्तमान च्यादि धातुओं के अन्त में द्विरुक्त व (व्व) का आगम विकल्प से होता है। जैसे :—चिव्वइ, चिणिज्जइ (चीयते) इत्यादि।

(२४) भाव और कर्म अर्थ में वर्तमान चिञ्, हन और खन धातुओं के अन्त में द्विरुक्त म (म्म) का आगम विकल्प से होता है एवं यक का लोप होता है। हन धातु के विषय में कर्ता अर्थ में भी द्विरुक्त म (म्म) होता है। जैसे :—चिम्मइ, हम्मइ (चीयते, हन्यते)

विशेष—शौरसेनी में यह नियम प्रवृत्त नहीं होता है।

(२५) भाव और कर्म अर्थ में वर्तमान दुह, लिह, वह और रुध धातुओं के अन्त्य में द्विरुक्त म (म्म अथवा किसी-किसी के मत से ष्म) विकल्प से होते हैं, यक का लोप भी होता है। जैसे :—दुब्भइ, दुहिज्जइ (दुह्यते) इत्यादि।

(२६) भाव और कर्म में वर्तमान गमादि धातुओं के अन्त्य वर्ण का द्वित्व विकल्प से होता और यक का लोप भी होता है। जैसे :—गम्मइ, गमिज्जइ, हस्सइ, हसिज्जइ (गम्यते, हस्यते)

विशेष—नीचे लिखे धातु नीचे लिखे अनुसार विशेष नियमों का अनुसरण करते हैं :—

सं० धातु	भावकर्म में प्रा०	भावकर्ममें सं०
दह	डह्यइ, डहिज्जइ	दह्यते
वध	वंह्यइ, वंधिज्जइ	वध्यते
सं + रुध	संरुब्भइ, संरुधिज्जइ	संरुध्यते
अनु + रुध	अण्णरुब्भइ, अण्णरुधिज्जइ	अनुरुध्यते

उ + रुध	उवरुह्यइ, उवरुधिज्जइ	उपरुध्यते
ह	हीरइ, हरिज्जइ	ह्रियते
कृ	कीरइ, करिज्जइ	क्रियते
तृ	तीरइ, तरिज्जइ	तीर्यते
जृ	जीरइ, जरिज्जइ	जीर्यते
अर्ज	विठप्पइ, विठविज्जइ, अजिज्जइ	अर्ज्यते
ज्ञा	णच्चइ, णज्जइ, जाणिज्जइ, णाइज्जइ	ज्ञायते
वि+आ+हृ	वाहिप्पइ, वाहरिज्जइ	व्याह्रियते
आ + रभ	आढप्पइ, आढवोअइ	आरभ्यते
स्निह	सिप्पइ	स्निह्यते
सिच	सिप्पइ	सिच्यते
ग्रह	घेप्पइ, गण्हिज्जइ	गृह्यते
स्पृश	स्त्रिप्पइ	स्पृश्यते

(२७) धातु के अन्त्य उवर्ण के स्थान में अव आदेश होता है । जैसे :—हुँ धातु का 'एहव' इत्यादि ।

(२८) धातु के अन्त्य ऋवर्ण के स्थान में 'अर' आदेश होता है । जैसे :—कृ का कर इत्यादि ।

विशेष—वृपादि के ऋकार का 'अरि' आदेश होता है । जैसे :—वृष का वरिस कृष का करिस इत्यादि ।

(२९) धातु के इवर्ण और उवर्ण का गुण होता है । जैसे :—नेइ (नयति), मोत्तुण (मुक्त्वा)

(३०) रुष आदि धातुओं के स्वर का दीर्घ होता है । जैसे :—रूसइ, पूसइ, सीसइ, तूसइ, दूसइ, (रुष्यति, पुष्णाति शिनष्टि, तुष्यति, दुष्यति)

(३१) धातुओं में स्वरों के स्थान में अन्य स्वर बाहुल्येन होते हैं । जैसे :—हवइ,^१ हिवइ (भवति); चिणइ,^२ चुणइ (चिनोति); सहहणं, सहहाण (श्रद्धानम्); धावइ, धुवइ (धावति); रुवइ, रोवइ (रोदिति)

विशेष—बाहुल्येन कहने से—देइ, लेइ, विहेइ नासइ आदि प्रयोगों में नित्य ही धातु के एकस्वर के स्थान में दूसरा स्वर हुआ ।

(३२) कुछ संस्कृत धातुओं के प्राकृत रूपान्तर नीचे लिखे अनुसार होते हैं :—

संस्कृत धातु

प्राकृत रूपान्तर

कथ	वज्जर, पज्जर, उप्पाल, पिसुण, संघ, बोल्ल, चव, जम्प, सीस, साह तथा दुःख अर्थ में णिठवर ।
जुगुप्स	झुण, दुगुच्छ, दुगुच्छ
बुभुक्ष	णीख पक्ष में बुहुक्ख
ध्या	म्हा
गै	गा
ज्ञा	जाण, मुण
उद् + ध्मा	धुमा
श्रद् + धा	दह (सहहइ)
पा (पीने में)	पिज्ज, डल्ल, पट्ट, घोट्ट
उद् + वा	ओरुम्वा, वसुआ
नि + द्रा	ओहीर, उड्ढ

१. देखिए—भुवेहोह्वहवाः । हेम. ४. ६०

२. देखिए—इसी पुस्तक का ६. ३२.

आ + घ्रा
 स्ना
 सम् + स्त्यै
 स्था
 उद् + स्था
 म्लै
 निर् + मा
 क्षि
 छादि

निवारि
 निपाति
 दू + णिच्
 धवलि
 तोलि
 विरेचि
 ताडि
 मिश्रि
 उद् + धूलि
 नश + णिच्
 भ्रम + णिच्

दश + णिच्
 उद् + घाटि
 स्पृह + णिच्

आङ्घ
 अब्भुत्त (कहीं कहीं अब्भुक्क)
 खा
 ठा, थक्क, चिट्ट, निरप्प
 ठ, कुक्कुर
 वा, पव्वाय
 निम्मण, निम्मव
 णिज्झर कहीं कहीं निब्भर और पक्ष में मिज्ज
 शुम, नू (णू) म, सन्नुम ढक्क, ओम्बाल
 पव्वाल
 णिहोड पक्ष में निवार
 णिहोड, पाड (पाडेइ)
 दूम
 दुम, दूम, धवल
 ओहाम
 ओलुण्ड, उल्लुण्ड, पल्हत्थ, पक्ष में-विरेअई
 ओहोड, विहोड
 वीसाल, मेलव
 गुण्ठ
 विउड, नासव, हारव, विप्पगाल, पलाव
 पक्ष में नास
 तालिअण्ट, तमाड पक्ष में भाम, भमाड,
 भमाव
 दाव, दंश, दक्खव पक्ष में दरिस
 उग्ग पक्ष में उग्घाड
 सिह

सं + भावि	आसंघ
उद् + नामि	उत्थघ (उत्थघ), उल्लाल, गुलुगुच्छ, उप्पेल, (किसी किसी के मत से उस्याव भी)
प्र + स्थापि	पट्टव, पेण्डव, पट्टाव
वि + ज्ञपि	बोक्क, आवुक्क (हेमचन्द्र के अनुसार अवुक्क), विण्णव
अर्पि	अल्लिव, चच्चुप्प, पणाम, अप्प
यापि	जव, जाव
प्लावि	उम्वाल, पंवाल, पाव
विकोशि(नामधातुण्यन्त)	पक्खोड (कसी २ के मत से परकोड)
रोमन्थि	उग्गाल (हेम०-ओग्गाल) वग्गोल, रोमंथ
कामि	णिहुव, काम
प्र + काशि	पुव्व, पआ (या) स
कम्पि	विच्छोल, कम्प
आ + रोहि (पि)	वल, रोव
दोलि	रङ्गोल, दोल (मतान्तर से ढोल भी)
रञ्जि	राव, रञ्ज
घट + णिच्	परिवाड, घड
वेष्टि	परिआल, वेड
क्री	किण
वि + क्री	क्के, क्किण, (विक्केइ, विक्कणइ)
भी	भा, बीह
आ + ली	अल्ली (अल्लियइ, अल्लीणो)
नि + ली	णिलीअ, णिलुक्क, णिरिग्घ, लुक्क, लिक्क, ल्हिक्क, निलिज्ज
वि + ली	विरा, विलिज्ज

रु	रुञ्ज, रुण्ट, रव
श्रु	हण, सुण
धु	धूव, धुण
भू	हो, हुव, हव, हु, ^१ णिब्बड, ^२ हू, ^३ हुप्प ^४
कृ	कुण, कर, णिआर, ^५ णिट्ठुह ^६ संदाण, ^७ वावम्फ, ^८ णिच्चोल या णिच्चोल, ^९ पयल्ल, ^{१०} पइल्ल, णील्लुच्छ ^{११} कम्म, ^{१२} गुलल

१. विद्वर्जित प्रत्यय के आने पर भू के स्थान में हु आदेश विकल्प से होता है। हेम. ४. ६१.

२. पृथक् होना और स्पष्ट होना अर्थ में णिब्बड आदेश होता है। हेम. ४. ६२.

३. क्त प्रत्यय के पर में रहने पर हू आदेश होता है। हेम. ४. ६४.

४. प्रभु होना अर्थ में प्र उपसर्ग पूर्व में रहने पर भू के स्थान में हुप्प विकल्प से होता है। हेम. ४. ६३.

५. कारोक्षित अर्थ में। देखो—‘कारोक्षिते णिआरः।’ हेम. ४. ६६.

६. निष्टम्भ और अवष्टम्भ अर्थों में क्रमशः णिट्ठुह और संदाण आदेश होते हैं। देखो—‘निष्टम्भावष्टम्भे’ हेम. ४. ६७.

७. श्रम अर्थ में। देखो—‘श्रमे वावम्फः।’ हेम. ४. ६८.

८. क्रोध से ओठ मलिन करने अर्थ में। देखो—‘मन्युनौष्ठमालिन्ये ...’ हेम. ४. ६९.

९. शिथिल होना या लम्बा पड़ना अर्थ में। देखो—‘शैथिल्यलम्बने....’ हेम. ४. ७०.

१०. निष्पात और आच्छोटन में। हेम. ४. ७१.

११. क्षौरकर्म में। हेम. ४. ७२

१२. चाटुकरण में। हेम. ४. ७३.

स्मृ	कर, कूर (हेमचन्द्र के मत से क्रर और झूर), भर, भल, लढ, विम्हर, सुमर, पयर, पम्हुह, सर
वि + स्मृ	पम्हुस, विम्हर, वीसर
वि + आ + हृ	कोक्क, पोक्क, वाहर
मुच	छड्डु, अवहेड, मेल्ल, (हेमचन्द्र के मत से उसिक्क भी) रे अव, णिल्लुञ्छ, धंसाड, णिव्वल ^१
चञ्च	वेहव, वेलव, जूख, उमच्छ
रच	रणह (हेम० के मत से उगगह) अवह, विडविडु, उवहत्थ ^२ सारव, समार और केलाय
सिच	सिञ्च, सिम्प । पच्च में सेअ
प्रच्छ	पुच्छ
गर्ज	बुक्क, ठिक्क ^३
राज	रग्घ, छह्य, सह, रीर, रेह, राय
प्र + स्तृ	पयल्ल, उवेल्ल, महमह ^४
नि + स्तृ	नीहर (हेम० के अनुसार णीहर), नील, घाड, वरहाड । पक्ष में नीसर
जागृ	जगग । पक्ष में जागर
वि + आ + पृ	आजडु । पक्ष में वावर

१. दुःखमोचन अर्थ में । देखो—‘दुःखे णिव्वलः ।’ हेम० ४. ९२.

२. उवहत्थ से केलाय तक जितने आदेश हैं सम् और आङ् पूर्वक रच के स्थान में विकल्प से होते हैं । देखो हेम० ४. ९५.

३. वृषभ के गर्जन अर्थ में । देखो—‘वृषे ठिक्कः ।’ हेम० ४. ९९.

४. गन्ध-प्रसार में ।

सं + वृ०	साहर, साहट्ट । पक्ष में संवर
आ + ह	सन्नाम । पक्ष में आदर
प्र + ह	सार । पक्ष में पहर
अव + तृ	ओह, ओरस । पक्ष में ओअर
शक	चय, तर, तीर, पार । पक्ष में सक
त्यज	चय
तृ	तर
पारि (पृ + णिच्)	पार
फक्क	थक्क । किसी के मत से छक्क
श्लाघ	सलह
खच	वेअड । पक्ष में खच
पच	सोल्ल, पडल अथवा पडल्ल । पक्ष में पअ
मस्ज	आउड्ड, णिउड्ड, तुड्ड, खुप
पुञ्ज	आरोल, वमाल । पक्ष में पुंज
लज्ज	जीह । पक्ष में लज्ज
उद् + विज	उव्विव
तिज	ओसुक्क
मृज	उग्घुस, लुब्ब, पुब्ब, पुंस, फुस, पुस, लुह, हुल, रोसाण
भञ्ज	वेमय, मुसुमूर, मूर, सूर, सूड, विर, पवि- रञ्ज, करञ्ज, नीरञ्ज
व्रज	वच्च
अनु + व्रज	पडिअग्ग, अणुवच्च
अज्ज	विढव, अज्ज
युज	जुञ्ज, जुज्ज, जुप्प
मुज	मुञ्ज, जिम, जेम, कम्म, अण्ह, समाण, चड्ड
उप + भुज	कम्मव

घट	गढ । पक्ष में घड
सं + घट	संगल । पक्ष में संघड
स्फुट	फुट्ट, फुंड, मुर ^१
मण्ड	चिञ्च, चिञ्चिअ, चिञ्चिल्ल, रीड, टिविडिक्क
तुड	तोड, तुट्ट, खुट्ट, खुड, उखुड, उल्लुक, गिलुक, लुक, उल्लूर
घूर्ण	घुल, घोल, घुल्ल, पहल्ल
नृत	नच्च
क्वथ	अट्ट, कढ
ग्रन्थ	गण्ठ
मन्थ	विरोल, घुसल
ह्लाद और ह्लाद	अवअच्छ
नि + सद	गुमज्ज
छिद्	दुहाव, णिच्छल्ल, णिञ्जोड, णिव्वर, णिल्लूर, लूर. छिन्द
आ + छिद्	ओअन्द, उद्दाल
विद्	विज्ज
मृद्	मल, मढ, परिहट्ट, खड्ड, चड्ड, मड्ड, पन्नाड अथवा परणाड
स्पन्द	चुलुचुलु, फन्द
निर् + पद	निव्वल, निप्पज्ज
वि, सं + वद	विअट्ट, विलोट्ट, फंस और पक्ष में विसंवय
शद्	भड, पक्खोड
आ + कन्द	णीहर । पक्ष में अक्कन्द
खिद्	जूर, विसूर । पक्ष में खिज्ज

१. हास से विकसने अर्थ में ।

रुघ	उत्थङ्ग या उत्तङ्ग । पक्ष में रुन्ध
नि + सिध	हक्क । पक्ष में निसेह
क्रुघ	जूर । पक्ष में कुञ्भ
जन	जा, जम्म
तन	तड, तडु, तडुव, विरल्ल और तण
वृप्र	थिप्प
उप + सृप	अल्लिअ । पक्ष में उवसप्प
सं + तप	भंख । पक्ष में सतप्प
वि + आप	ओधग्ग । पक्ष में वाव
सं + आप	समाण । पक्ष में समाव
क्षिप	गलत्थ, अडुक्ख, सोल्ल, पेल्ल, णोल्ल, छुह, हुल, परी, धत्त । पक्ष में खिव
उद् + क्षिप	गुलगुञ्छ, उत्थंघ, अल्लत्थ, उब्भुत्त, उस्सिक्क, हक्खुव । पक्ष में उक्खिव
आ + क्षिप	णीरव । पक्ष में अक्खिव
स्वप	कमवस, लिस, लोट्ट । पक्ष में सुञ्ज
वेप	आयम्ब, आयञ्भ । पक्ष में वेव
वि + लप	भंख, वडवड । पक्ष में विलव
लिप	लिम्प
गुप	विर, णड । पक्ष में गुप्प
कृप	अवहाव ^१
प्र + दीप	तेअव, सन्दुम, सन्धुक्क, अब्भुत्त और पक्ष में पलीव
लुभ	संभांव । पक्ष में लुब्भ
क्षुभ	खडर, पड्डुह । पक्ष में खुब्भ

१. अवहावेइ = कृपां करोतीत्यर्थः । हेम० ४. १५१.

आ + रभ	आरंभ, आढव । पक्ष में आरभ
उप, आ + लंभ	भख, पचार, वेलव । पक्ष में उवालम्भ.
जृम्भ	जम्भा ^१
नम	णिसुढ ^१ । पक्ष में णव
वि + श्रम	णिव्वा । पक्ष में वीसम
आ + क्रम	ओहाव, उत्थार, छुन्द । पक्ष में अक्कम
भ्रम	टिरिटिल्ल, दुण्डुल्ल, ढण्डल्ल, चक्कम्म, भम्मड, भमड, भमाड, तलअएट, भण्ट, भम्प, भुम, गुम, फुम, फुस, दुम, दुस, परी, पर, भम अई, अइच्छ, अण्णवज्ज, अवज्जस, उक्कुस, अक्कुस, पच्चड्डु, पच्छन्द, णिम्मह, णी, णीण, णीलुक्क, पदअ रंभ, परिअल्ल, वोल, परिअल, णिरिणास, णिवह, अवसेह, अवहर, गच्छ, अहिपच्चुअ, ^३ अब्भिड, ^४ सगच्छ, उम्मत्थ, ^५ अब्भागच्छ, पलोट्टु, ^६ पच्चागच्छ
गम	
शम	पडिसा, परिसाम । पक्ष में सम
रम	संखुड्डु, खेड्डु, उब्भाव, किलिकिञ्च, कोट्टुम, मोट्टाय, णीसर, वेल्ल और पक्ष में रम

१. वि पूर्व में रहने पर उक्त आदेश नहीं होते हैं । देखो—'अवेर्जम्भो जम्भा ।' हेम० ४. १५७ में अवेरिति किम् ? केलिपसरो विअम्मइ ।

२. भाराकान्त कर्ता में ।

३. आङ् पूर्वक गम का उक्त आदेश होता है ।

४. सम् पूर्वक गम का उक्त आदेश होता है ।

५. अभि और आङ् पूर्वक गम का उक्त आदेश होता है ।

६. प्रति और आङ् पूर्वक गम का उक्त आदेश होता है ।

पूर	अग्घाड, अग्घव, उद्दुम, अङ्गुम, अहिरेम पक्ष में पूर
त्वर	तुअर, जअड, तूर, ^१ तुर ^२
क्षर	खिर, मर, पञ्जर, पच्चड, णिच्चल, णिट्ठुअ
चल	चल्ल, चल
उच्छल	उत्थल
वि + गल	थिप्प, णिट्ठुह
दल	विसट्ट, दल
वल	वम्फ, वल
मील	मिल्ल, मील
भ्रंश	फिड, फिट्ट, फुड, फुट्ट, चुक्क, भुल्ल पक्ष में भस
नश	णिरणास, णिवह, अवसेह, पडिसा, सेह, अवहर । पच् में नस्स
अव + काश	ओआस
सं + दिश	अप्पाह
दश	निअच्छ, पेच्छ, अवयच्छ, अवयज्ज, वज्ज, सव्वव, देक्ख, ओअक्ख, अवअक्ख, पुलोअ, निअ, अवआस
स्पृश	फास, फंस, फरिस, छिव, छिह, आलुल्ल, आलिह
प्र + विश	रिअ । पक्ष में पविस
प्र + मृष	पम्हुस

१. त्यादि और शतृप्रत्ययों के पर में रहने पर तूर होता है ।
जैसे :—तूरई, तूरन्तो ।

२. त्यादि से भिन्न में तुर होता है । जैसे तुरिओ, तुरन्तो ।

प्र + मुष	पम्हुस
पिष	णिवह, णिरिणास, णिरिणज्ज, रोञ्च, चडु, पीस
भष	भुक, भस
कृष	कड्ढ, साअड्ढ, अञ्च, अणच्छ, आयञ्छ, आइञ्छ, करिस, अक्खोड ^१
गवेष	दुण्डुल्ल, ढण्ढोल, गमेस, घत्त, गवेस
श्लिष	सामग्ग, अवयास, परिअंत। पक्ष में सिलेस
म्रक्ष	चोण्पड, मक्ख
काङ्क्ष	आह, अहिलङ्ग, अहिलङ्ग, वच्च, वम्फ, मह, सिंह, विलुम्प
प्रति + ईक्ष	सामय, विहीर, विरमाल। पत्त में पडिक्ख
तक्ष	तच्छ, चच्छ, रम्प, रम्फ, तक्ख
वि + कस	कोआस, वोसट्ट, विअस
हस	गुञ्ज, हस
स्त्रस	ल्हस, डिम्भ, संस
त्रस	डर, बोज्ज, वज्ज
नि + अस	णिम, गुम
परि + अस	पलोट्ट, पल्लट्ट, पल्हत्थ
विर् + श्वस	भंख, नीसस
उद् + लस	ऊसल, ऊसुम्म, णिल्लस, पुल्लआअ, गुञ्जोल्ल, आरोअ, उल्लस
भास	भिस, भास
ग्रस	घिस, गस
अव + गाह	ओवाह (उगाह), ओगाह (उगाह)

१. म्यान से तलवार खीचने अर्थ में ।

आ + रुह	चड, बलग्ग, आरुह
मुह	गुम्म, गुम्मड, मुब्भ
दह	अहिऊल, आलुङ्ग, डह
ग्रह	बिण्ह, हर, पङ्ग, निरुवार, अहिपच्चअ, घेत् ^१
पच	वोत् ^२

(३३) क्त्वा, तुम और तव्य के पर में रहने पर रुद, भुज और मुच धातुओं के अन्त्य वर्ण का त होता है । जैसे :—रोत्तूण, रोत्तुं, रोत्तव्वं; भोत्तूण, भोत्तुं, भोत्तव्वं; मोत्तूण, मोत्तुं, मोत्तव्वं ।

(३४) भूत और भविष्यत् काल के प्रत्ययों एवं क्त्वा, तुम और तव्य के पर में रहने पर कृ धातु का 'का' आदेश होता है ।

(३५) कुछ संस्कृत धातुओं के निम्नलिखित प्राकृत आदेश होते हैं :—

संस्कृत	प्राकृत	संस्कृत	प्राकृत
इष	इच्छ	यम	जच्छ
अस	अच्छ	छिद	छिद
भिद	भिद	युध	जुध
बुध	बुध	गुध	गिध
क्रुध	कुध	सिध	सिध
सद	सड	पत	पड
वृध	बड	वेष्ट	वेड
संवेष्ट	संवेल्ल	उद् + वेष्ट	उव्वेल्ल, उव्वेढ

(३६) खाद और धाव धातुओं के अन्त्य वर्ण का लुक् होता है । जैसे :—खाइ, खाअइ; धाइ, धाअइ (खादति, धावति)

१. २. केवल क्त्वा, तुम और तव्य के पर में रहने पर उक्त आदेश होता है ।

(३७) मृज धातु के अन्त्य वर्ण का 'र' आदेश होता है ।
जैसे :—सिरइ (सृजति)

(३८) शक आदि धातुओं के अन्त्य अक्षर का द्वित्व होता है । जैसे :—सक, लग्ग, कुप्प, नस्स इत्यादि ।

(३९) क्त प्रत्यय के सहित तत्तद् सोपसर्ग अथवा निरुपसर्ग धातुओं के स्थान में नीचे लिखे अफुण्ण आदि आदेश होते हैं :—

संस्कृत	प्राकृत
आक्रान्तः	अफुण्णो
उत्कृष्टम्	उक्कोसं
स्पष्टम्	फुडं ^१
अतिक्रान्तः	वोलीणो
विक्रमितः	वीसहो (वोसट्टो)
रुग्णः	लुग्गो
नष्टः	विल्हक्को
प्रमृष्टः	पम्हट्टो
अर्जितम्	विढत्तं
स्पृष्टम्	छित्तं
त्यक्तम्	जढं
क्षिप्तम्	ह्वासिअं
आस्वादितम्	चक्खिअं
स्थापितम्	निमिअं इत्यादि



१. तुलना कीजिए—श्रवधी के 'फुरे' कहत हई' से ।

सप्तम अध्याय

[कुछ विशिष्ट पद]

प्राकृत के विशेष-विशेष पदों की सिद्धि के लिए विभिन्न प्राकृत व्याकरणों में विशेष-विशेष नियम दिये गये हैं। हम यहाँ उनके विशेष रूप बतला रहे हैं। पादटिप्पणी में विशेष सूत्रों का भी यथासम्भव उल्लेख किया जा रहा है।

प्राकृत	संस्कृत	
अगणी, अग्नी ^१	अग्निः	
अंकोल्लो ^२	अङ्कोलः	
अङ्गारो ^३	अङ्गारः	
अच्छेरं, अश्चरिअं अच्छरिअं, अच्छअरं अच्छरिअं, अच्छरीअं	आश्चर्यम्	
अलचपुर ^४		अचलपुरम्
अतसी ^५		अतसी

१. स्नेहान्योर्वा । हेम० २. १०२.

२. अङ्कोले लः । हेम० १. २००.

३. पक्वाङ्गारललाटे वा । हेम० १. ४७. से इ के अभाव पक्ष में ।

४. वल्ल्युत्करपर्यन्ताश्चर्ये वा । हेम० १. ५८. आश्चर्ये । हेम० २. ६६.

अतो रिश्चाइ-रिज्ज-रीश्च । हेम० २. ६७.

५. अचलपुरे चलोः । हेम० २. ११८.

६. अतसी-सातवाहने लः । हेम० १. २११.

अणिउँत्तयं, अणिउंतयं ^१	अतिमुक्तकम्
अन्तेउर ^२	अन्तःपुरम्
अन्तेआरी ^३	अन्तश्चारी
अन्नन्नं, अन्नन्नं ^४	अन्योन्यम्
अप्पा, अत्ता ^५	आत्मा
अम्बं ^६	आम्रम्
अज्जो ^७	आर्यः
अहिमज्जू, अहिमज्जू, अहिमन्नू ^८	अभिमन्युः
अट्टं, अट्टं ^९	अर्द्धम्
अण ^{१०}	ऋणम्
अरुहो, अरहो, अरिहो ^{११}	अर्हः
अरुहंतो, अरहतो, अरिहंतो ^{१२}	
अलाऊ, अलाउ ^{१३}	अलावुः

-
१. 'यमुनाचामुण्डा.....' हेम० १. १७८. क्वचिन्न भवति ।
 अइसुंतयं, अइसुत्तयं ।
- २-३. तोऽन्तरि । हेम० १. ६०.
४. 'ओतोऽद्वान्योन्य.....' हेम० १. १५६.
५. आत्मनि पः । वर० ३. ४८.
६. ताम्राग्ने म्बः । हेम० २. ५६. । ह्रस्वः संयोगे । हेम० १. ८४.
७. व-व्य-र्यां जः । हेम० २. २४. । ह्रस्वः संयोगे । हेम० १. ८४
८. अभिमन्यौ जज्जौ वा । हेम० २. २५.
९. श्रद्धिर्द्धिर्द्धोर्धेन्ते वा । हेम० २. ४१.
१०. ऋतोऽत् । हेम० १. १२६. ११. उच्चार्यति । हेम० २. १११.
१२. उच्चार्यति । हेम० २. १११.
१३. बालाव्वरण्ये लुक् । हेम० १. ६६.

अडो, अवडो ^१	अवटः
अवहड ^२	अवहृतम्
अट्टरह ^३	अष्टादश
अट्टी ^४	अस्थि
अल्ल, अह ^५	आर्द्रम्
आफंसो ^६	अस्पर्शः
आओ, आअओ ^७	आगतः
आइरिओ, आअरिओ ^८	आचार्यः
आओजं ^९	आतोद्यम्
आढिओ ^{१०}	आदृतः
आमेलो ^{११}	आपीडः
आढत्तो, आरद्धो ^{१२}	आरब्धः
आणाल ^{१३}	आलानम्

१ यावत्तावज्जीवितावर्तमानावटप्रावारकदेवकुलवमेवे वः । हेम० १. २२१

२. आर्ष प्रयोग है ।

३. ष्टयानुष्टेष्टासंदष्टे । हेम० २. ३४ । संख्यागद्गदे रः । हे० १. २१९

४. टोऽस्थिविसंस्थुले । हे० २ ३२ ५. उदोद्वादे । हेम० १. ८२.

६. 'स्पृशः फासफंस.....' हे० ४. १८२.

७. व्याकरणप्राकारागते कगोः । हेम० १. २६८.

८. आचार्ये चोऽच्च । हेम० १. ७३.

९. अद्य-यजः । हेम० २. २४. १०. आदृते ङिः । हेम० १. १६३.

११. एत्पीयूषापीडविभीतककीदृशो दृशे । हेम० १. १०५. आपेलो, आवेडो ये दो रूप भी देखे जाते हैं । देखो—नीपापीडे मो वा । हेम० १. २३४ आमेलो, आमेडो ।

१२. 'मलिनोभयशुक्तिछुमारब्ध' हेम० १. १३८,

१३. आलाने लनोः । हेम० २. ११७.

आली ^१	आली
आत्तमाणो, आवत्तमाणो ^२	आवर्तमानः
आसीसय (आसीसा) ^३	आशीः
आलिदुं, आलिदुं ^४	आशिलष्टम्
इङ्गालो ^५	अङ्गारः
इङ्गुअ ^६	इङ्गुदम्
ईसि ^७	ईषत्
इआणी	इदानीम्
इत्तिअं ^८	एतावत्
इड्ढी ^९	ऋद्धिः
इक्खू ^{१०}	इक्षुः
उच्चअं ^{११}	उच्चैस्
उक्करो, उक्करो ^{१२}	उत्करः

-
१. ओदाल्यां पङ्क्तौ । हेम० १. ८३ के अभाव में ।
२. 'तस्य धूर्तादौ । हेम० २. ३० । 'यावत्तावन्जीवितावर्तमान'...'
हेम० १. २७१.
३. गोणादयः । हेम० २. १७४
४. आशिलष्टे लघौ । हेम० २. ४९.
५. पक्काङ्गारललाटे वा । हेम० १. ४७.
६. शिथिलेऽङ्गुदे वा । हेम० १. ८९.
७. गौणस्य'...'
हेम० २. १२९. के अभाव पक्ष में ईसि होता है ।
८. यत्तदेतदोतोरित्तिअ एतल्लुक् च । हेम० २. १५६.
९. इत्कृपादौ । हे० १. १२८.
१०. प्रवासीक्षौ । हे० १. ९५ के अभाव में ।
११. उच्चैर्नाचैस्यैश्च । हेम० १. १५४.
१२. 'वल्ल्युत्कर'...'
हेम० १. ५८.

उच्छ्रवो ^१	उत्सवः
उत्थारो, उच्छ्राहो ^२	उत्साहः
ऊसुओ, उच्छुओ ^३	उत्सुकः
उम्बरो, उडम्बरो ^४	उदुम्बरः
उल्लखलं, ओकखलं ^५	उल्लखलम्
उव्वीढं, उव्वूढं ^६	उद्व्यूढम्
उवरि ^७	उपरि
उव्वं, उव्वं ^८	ऊद्व्वंम्
उसहो ^९	ऋषभः, वृषभः
उज्जू ^{१०}	ऋजुः
उऊ, उहू ^{११}	ऋतुः
उल्लं ^{१२}	आर्द्रम्
उल्लेइ ^{१३}	आर्द्रयति
ऊसारो ^{१४}	आसारः

-
१. सामर्थ्योत्सुकोत्सवे वा । हेम० २. २२
 २. वोत्साहे थो ह्रस्व रः । हेम० २. ४८.
 ३. सामर्थ्योत्सुकोत्सवे वा । हेम० २. २२.
 ४. 'दुर्गादेव्युदुम्बर' हेम० १. २७०.
 ५. 'न वा मयूख' हेम० १. १७१. ६. ईवोद्व्यूढे । हेम० १. १२०
 ७. वोपरौ । हेम० १. १०८. अवरिं भी होता है । पकाव ।
 ८. वोव्वं । हेम० २. ५९.
 ९. उद्वत्वादौ । हेम० १. १३१. । वृषभे वा । हेम० १. १३३.
 १०-११. उद्वत्वादौ । हेम० १. १३१ । रि का अभाव । देखो
 हेम० १. १४१.
 १२-१३. उदोद्वार्द्रं । हेम १. ८२.
 १४, ऊद्वसारं । हेम० १. ७६.

उच्छू ^१	इक्षुः
ऊसवो ^२	उत्सवः
एकारो ^३	अयस्कारः
एङ्गि, एताहे ^४	इदानीम्
एरिसो ^५	ईदृशः
एआरह	एकादश
एकसि, एकसिअं, एकईआ, एगआ ^६	एकदा
एरावणो ^७	ऐरावतः
ऐ ^८	अयि
ओल्लेइ ^९	आर्द्रयति
ओसढं, ओसहं, ^{१०}	औषधम्
ओली ^{११}	आली (लिः)
कउहं, ककुधं ^{१२}	ककुदम्
ककुहा ^{१३}	ककुप्
कण्डुअणं ^{१४}	कण्डूयनम्

-
१. प्रवासीक्षौ । हेम० १. ९५.
 २. छ का अभाव । देखो-सामर्थ्योत्सुकोत्सवे वा । हेम० २. २२.
 ३. 'न्धबिरविचकिलायस्कार' हेम० १. ६६.
 ४. एङ्गि एताहे इदानीमः । हेम० २. १३८.
 ५. 'एत्पीयूष' १. १०५.
 ६. बैलाहः सि सिअं इआ । हेम० २. १६२.
 ७. ऐतः एत् । हेम० १. १४८. ८. अयौ वेत् । हेम० १. १६९.
 ९. उदोद्वाद्दे । हेम० १. ८२. १०. वौपधे । हेम० १. २२७.
 ११. ओदान्यां पंतौ । हेम० १. ८३. १२. ककुदे हः । हे० १. २२५.
 १३. ककुभो हः । हेम० १. २१. । 'कउहा' भी देखा जाता है ।
 १४. उर्ध्वहनुमत्कण्डूयवात्ले । हेम० १. १२१.

कइमे ^१	कतमः
कइवाहं, कइअव ^२	कतिपयम्
कडणं, कअणं ^३	कदनम्
कलम्बो, कअम्बो ^४	कदम्बः
कवट्टिअ ^५	कदर्थितम्
कअलं, केलं, केली, करली ^६	कदलम्, कदली
कण्डलिआ ^७	कन्दरिका
कमंधो, कअंधो ^८	कबन्धः
कणवीरो ^९	करवीरः
करोरू ^{१०}	करेरू
कणरो, कण्णारो ^{११}	कर्णिकारः
काउंओ ^{१२}	कामुकः
• काहावणो, कहावणो ^{१३}	कार्पापणः

१. मध्यमकतमे द्वितीयस्य । हेम० १. ४८.

२. डाहवौ कतिपये । हेम० १. २५०.

३. दशन-दष्ट दग्ध दोला-दण्ड-दर-दाह-दम्भ दर्भ-कदन-दोहदो दो वा डः । हेम० १. २१७.

४. कदम्बे वा । हेम० १. २२२. ५. कदर्थिते वा । हेम० २२४.

६. कदल्पामहुमे । हेम० १. २२०. । वा कदले । हेम० १. १६७.

७. कन्दरिकाभिन्दिपाले णः । हेम० २. ३८.

८. कबन्धे मयौ । हेम० १. २३९. ९. करवीरे णः । हेम० १. २५३.

१०. करेरूवारणस्योः । हेम० २. ११६

११. वेतः कर्णिकारे । हेम० १. १६८. कर्णिकारे वा । हेम० २. ९५.

१२. 'यमुनाचामुण्डा ...' हेम० १. १७८.

१३. कार्पापणो । हेम० २. ७१; हरव' संयोगे । हेम० १. ८४.

कालासं, कालाअसं ^१	कालायसम्
कम्हारो ^२	काश्मीरः
कंसुअं, केसुअं, किसुअं, किमुअं ^३	किंशुकम्
करिआ ^४	क्रिया
किसलं, किसलअं ^५	किसलयम्
किलिणं ^६	क्लिन्नम्
केरिसो ^७	कीदृशः
कोहलं, कोऊहलं, कोउहलं, कुऊहलं ^८	कुतूहलम्
कुब्जं ^९ (पुष्प अर्थ में)	कुब्जम्
कोहण्डी, कोहली, कोहडी ^{१०}	कुष्माण्डी
कोप्परं ^{११}	कूर्परम्
किञ्ची ^{१२}	कृत्तिः

१. 'किसलयकालायस...' हेम० १. २६९.
२. आत्काश्मीरे । हेम० १. १००.
३. किंशुके वा । हेम० १. ८६ । मांसादेर्वा । हेम० १. २९.
४. 'हृश्रीहोक्तस्त्र...' हेम० २. १०४.
५. 'किसलयकालायस...' हे० १. २६९. । ६. लात् । हेम० २. १०६.
७. दृशःक्लिप्तकसकः । हेम० १. १४२. । 'एत् पीयूषापीड ...' हे० १. १०५.
८. कुतूहले वा ह्रस्वश्च । हेम० १. ११७. । 'न वा मयूख...' हेम० १. १७१. । हेम० २. ९९.
९. कुब्जकर्परकीले कः खोऽपुष्पे । हे० १. १८१. अपुष्पे पर्युदास से ख का अभाव ।
- १० 'ओत्कुष्माण्डी...' हेम० १. १२४. । 'कुष्माण्ड्यां ...' हेम० २. ७२.
११. ओत्कुष्माण्डीतूणीरकूर्पर...' हेम० १. १२४.
१२. कृत्तित्तवरे चः । हे० २. १३.

किसं, कसं ^१	कृशम्
कसिणो, कसणो (रंग में)	}२ कृष्णः
कण्हो (वासुदेव में)	
कसिणं (णो) ^३	कृत्स्नम्
किसरं, केसरं ^४	केसरम्
केढवो ^५	कैटभः
कुच्छेअअं, कौच्छेअअं ^६	कौत्सेयकम्
कन्दो ^७	स्कन्दः
खन्दो ^८	स्कन्दः
खणो (समय में) ^९	क्षणः
खप्परं ^{१०}	कर्परम्
खमा ^{११}	क्षमा, क्षमा
खंभो ^{१२}	स्तम्भः
खित्तं ^{१३}	क्षित्तम्

१. इत्कृपादौ । हेम० १२८. तथा ऋतोऽत् । हेम० १. १२६.
२. कृष्णे वर्णे वा । हेम० २. ११०. ३. 'हृश्रीही...' हेम० २. १०४.
४. 'एत इद्वा वेदना...' हेम० १. १४६.
५. कैटभे भो वः । हेम० १. २४०. ऐतः एत् । हेम० १. १४८.
'सटाशकटकैटभे...' १. १९६.
६. कौत्सेयके वा । हेम० १६१. ७. शुक्लस्कन्दे वा । हेम० २. ५.
८. षकृकयोर्नात्ति । हेम० २. ४. पक्ष में 'कन्दो' होगा ।
९. 'क्षः खः...' हेम० २. ३. १०. 'कुब्जकर्पर...' हेम० १. १८१.
११. क्षमायां कौ । हेम० २. १८.
१२. स्तम्भे स्तो वा । हेम० २. ८. पक्ष में थम्भो होगा ।
१३. क्ष=ख । देखो—हेम० २. २.

खारू ^१	स्थाणुः
खासत्रो, खइओ ^२	खचितः
खुडिओ, खण्डिओ ^३	खण्डितम्
खल्लीडो ^४	खल्वाटः
खासिअ ^५	कासितम्
खीलओ ^६	कीलकः
खुज्जो ^७	कुब्जः
खेडओ ^८	द्वेटकः
खेडिओ ^९	स्फेटिकः
गेंदुअं ^{१०}	कन्दुकः
गग्गरं ^{११}	गद्गदम्
गड्डो ^{१२}	गर्तः
गड्डहो, गदहो ^{१३}	गर्दभः
गन्भिणं ^{१४}	गर्भितम्

-
१. स्थाणावहरे । हेम० २. ७. २. 'खचित' हेम० १. १९३.
 ३. 'वन्द्रखण्डिते' हेम० १. ५३.
 ४. ईः स्त्यानखल्वाटे । हेम० १. १७४.
 ५. 'कुब्जकर्परकीले' हेम० १. १८१. में देखो—आर्षेऽन्यत्रापि
 खासिअं ।
 ६, ७. 'कुब्जकर्परकीले' हेम० १. १८१.
 ८, ९. द्वेटकादौ । हेम० २. ६.
 १०. एच्छय्यादौ । हेम० १. ५७ तथा 'मरकतमदकले' हेम०
 १. १८२.
 ११. संख्यागद्गदे रः । हेम० १. २१९.
 १२. गर्ते डः । हेम० २. ३५. , १३. गर्दभे वा । हेम० २. ३७.
 १४. गर्भितातिमुक्तके णः । हेम० १. २०८.

गउओ ^१	गवयः
गंभिरीअं	गाम्भीर्यम्
गोह्यं ^२	ग्राह्यम्
गलोई ^३	गुड्डी
गह्वई ^४	गृहपतिः
गोला, गोआवरी ^५	गोदा, गोदावरी
गोणो, गउओ, गावो, } गउआ, गावीओ, गावी } गारवं, गउरवं ^६	गौः (पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में)
घरं ^७	गौरवम्
चविलो, चविडो ^८	गृहम्
चविडा, चवेडा ^९	चपेटः
चंदिमा ^{११}	चपेटा
चाउंडा ^{१२}	चन्द्रिका
	चामुण्डा

१. गवये वः । हेम० १. ५४.
 २. एद् ग्राह्ये । हेम० १. ७८. ३. 'ओत्कुभाण्डो' हेम० १. १२४.
 ४. गृहस्य घरोऽपतौ । हेम० २. १४४. में देखो—अपतौ पर्युदास ।
 ५. गोला, गोआवरी इति तु गोदागोदावरीभ्यां सिद्धम् । देखो—
 गोणादयः । हेम० २. १७४.
 ६. गव्यउ आग्रः । हेम० १. १५८. तथा गोणादयः । हेम० २. १७४.
 ७. आच्च गौरवे । हेम० १. १६३.
 ८. गृहस्य घरोऽपतौ । हेम० २. १४४. पा० घरो ।
 ९, १०. चपेटापाटौ वा । हेम० १. १९८ तथा 'एत इद्वा वेदना
 चपेटा' हेम० १. १४६.
 ११. चन्द्रिकायां मः । हेम० १. १८५.
 १२. 'यमुनाचामुण्डा' हेम० १. १७८.

चइत्तं ^१	चैत्यम्
चोरिअं ^२	चौर्यम्
चोग्गुणो, चउग्गुणो ^३	चतुर्गुणः
चोट्टो (त्थो), चउट्टो (त्थो) ^४	चतुर्थः
चोट्टी (त्थी), चउट्टी (त्थी) ^५	चतुर्थी
चोदह, चउदह ^६	चतुर्दश
चोदसी, चउदसी ^७	चतुर्दशी
चोव्वारं, चउव्वारं ^८	चतुर्वारम्
चच्चरं ^९	चत्वरम्
चिहुरं ^{१०}	चिकुरः
चुच्छं ^{११}	तुच्छम्
चिलाओ ^{१२}	किरातः
चिन्धं, चिह्वं ^{१३}	चिह्वम्
छणो (उत्सव में) ^{१४}	क्षणः

१. त्योऽचैत्ये । हेम० २. १३ के अभाव में ।
२. 'स्याद्भूय' हेम० २, १०७.
३. 'न वा मयूख' हेम० १. १७१.
- ४, ५. 'न वा मयूख' हेम० १. १७१ तथा स्त्यानचतुर्थ्यै वा ।
हेम० २. ३३.
- ६, ७, ८. 'न वा मयूख' हेम० १. १७१.
९. कृत्तिचत्तरे चः । हेम० २. १२.
१०. निकषफटिकचिकुरे हः । हेम० १. १८६.
११. तुच्छे तश्चछौ । हेम० १. २०४.
१२. किराते चः । हेम० १. १८३ तथा वरिद्रादौ लः । हेम० १. २५४.
१३. चिह्वे न्धो वा । हेम० २. ५०. १४. क्षण उत्सवे । हेम० २. २०.

छमा (पृथिवी में) ^१	क्षमा, दमा
छूढ ^२	क्षितम्
छीअं ^३	क्षुतम्
छुहा ^४	क्षुधा
छुत्तं, छिकं ^५	क्षुतम्
छालो (ली) ^६	छागः (गी)
छाहा (अनातप में) } छाआ (कान्ति में) } ^७	छाया
छउमं, छम्मं ^८	छद्य
छड्ढिओ ^९	छर्दिकः
छुच्छं ^{१०}	तुच्छम्
छमी ^{११}	शमी
छंमुहो ^{१२}	षण्मुखः
छट्टो ^{१३}	षष्ठ
छट्टी ^{१४}	षष्ठी

१. क्षमायां कौ । हेम० २. १८. २. 'वृक्षक्षिप्तयो...' हेम० २. १२७.

३. ईः क्षुते । हेम० १. ११२.

४, ५. छोऽद्दयादौ । हेम० २. १७. तथा क्षुधो हा । हेम० १. १७.

६. छागे लः । हेम० १. १९१

७. छायायां होऽकान्तौ वा । हेम० १. २४९,

८. पञ्चछमूर्खद्वारे वा । हेम० २. ११२.

९. 'संमर्द्...' हेम० २. ३६. १०. तुच्छे तश्चछौ । हेम० १. २०४.

११. 'षट्शमी...' हेम० १. २६५.

१२. 'कञ्जणो...' हेम० १. २५. तथा हेम० १. २६५.

१३, १४. 'षट्शमीशाव...' हेम० १. २६५.

छत्तिवण्णो, छत्तवण्णो ^१	सप्तपर्णः
छिरा ^२	शिरा
छुहा ^३	सुधा
छिहा ^४	स्पृहा
जडिलो ^५	जटिलः
जम्मण, जम्मो ^६	जन्म
जिब्भा, जीहा ^७	जिह्वा
जुण्णं, जिएणं ^८	जीर्णम्
जीअं ^९	जीवितम्
जीविअं ^{१०}	जीवितम्
जीआ ^{११}	ज्या
जह, जहा ^{१२}	यथा
जउणा ^{१३}	यमुना

-
१. सप्तपर्णे वा । हेम० १. ४९. तथा हेम० १. २६५.
 २. शिरायां वा । हेम० १. २६६. पक्ष में 'शिरा' ।
 ३. षट्शमीशावसुधासप्तपर्णेष्वादेश्छः । हेम० १. २६५.
 ४. स्पृहायाम् । हेम० २. २३.
 ५. जटिले जो फो वा । हेम० १. १९४.
 ६. न्मो मः । हेम० २. ६१. तथा 'अन्त्य'... हेम० १. ११.
 ७. 'ईर्जिह्वा'... हेम० १. ९२. तथा ह्यो भो वा । हेम० २. ५७.
 ८. उज्ज णे । हेम० १. १०२. जुण्णसुरा । जिण्यो भोअण-मत्ते
 - ९, १०. 'यावत्तावज्जीविता'... हेम० १. २७१.
 ११. ज्यायामीत् । हेम० २. ११५.
 १२. 'वाव्ययोत्खाता'... हेम० १. ६७.
 १३. 'यमुनाचामुंडा'... हेम० १. १७८.

जा, जाव, जित्तिअ ^१	यावत्
जहुट्टिलो, जहिट्टिलो ^२	युधिष्ठिरः
झडिलो ^३	जटिलः
झओ ^४	ध्वजः
झुणि ^५	ध्वनिः
टगरं ^६	तगरम्
टसरो ^७	त्रसरः
ठंभो ^८	स्तम्भः
ठीणं ^९	स्त्यानम्
ठहो ^{१०}	स्तब्धः
डोलो ^{११}	दोलः
डोहलो ^{१२}	दोहदः
डाहो ^{१३}	दाहः

-
१. 'यावत्तावज्जीवितावर्तमाना ...' हेम० १. २७१. तथा हेम० १.११
२. युधिष्ठिरे वा । हेम० १. ९६. तथा उतो मुकुलादिष्वत् । हेम० १. १०७.
३. जटिले जो झो वा । हेम० १. १९४.
४. त्वश्वद्वध्वां चछजझाः क्वचित् । हेम० २. १५.
५. 'त्वश्वद्वध्वां ...' हेम० २. १५ तथा ध्वनिविश्वचो ऋः । हेम० १. ५२.
- ६, ७. तगरत्रसरतूवरे टः । हेम० १. २०५.
८. थठावस्पन्दे । हेम० २. ९.
९. ईः स्त्यानखल्वाटे । हेम० १. ७४.
- १०, ११. स्तब्धे ठहौ । हेम० २. ३९.
- १२, १३. दशन-दष्ट-दग्ध-दोला-दृण्ड-दर-दाह-दम्भ-दर्भ-कदन-दोहदे दो वा डः । हेम० १. २१७.

डट्टो ^१	दष्टः
डसनं ^२	दशनम्
डरो (भय में) ^३	दरः
डंभो ^४	दम्भः
डंडो ^५	दण्डः
डट्टं (डट्टो) ^६	दग्धम्
णिवुत्तं, णिउत्तं, णिअत्तं ^७	निवृत्तम्
णिसीढो, णिसीहो ^८	निशीथः
णिच्चलो ^९	निच्चलः
गुमण्णो, णिसण्णो ^{१०}	निषण्णः
णडालं, णिडालं, णलाडं ^{११}	ललाटम्
तविअं, तत्तं ^{१२}	तप्तम्
तम्बं ^{१३}	ताम्रम्
तम्बोलं ^{१४}	ताम्बूलम्
ता, ताव, तित्तिअं ^{१५}	तावत्

-
१. २. ३. ४. ५. ६. वही. ७. निवृत्तवृन्दारके वा । हेम० १. १३२.
 ८. निशीथपृथिव्योर्वा । हेम० १. २१६.
 ९. दुःखे णिच्चलः । हेम० ४. ९२ की पादटिप्पणी ५ देखो.
 १०. उमो निषण्णो । हेम० १. १७४.
 ११. ललाटे लडोः । हेम० २. १२३ तथा पक्काङ्गारललाटे वा । हेम०
 १. ४७.
 १२. शर्षपसत्रजे वा । हेम० २. १०५.
 १३. ह्रस्वः संयोगे । हेम० १. ८४. तथा ताम्रात्रे म्बः । हेम० २. ५६.
 १४. 'ओत्कुष्माण्डी...' हेम० १. १२४.
 १५. 'यावत्तावज्जीविता...' हे० १. २७१. तथा 'यत्तदेतदो...' हेम०
 २. १५६. एवं १. ११.

तित्तिरो ^१	तित्तिरिः
तिरिच्छी ^२	तिर्यक्
तिक्खं, तिह्णं ^३	तीक्ष्णम्
तेहं, तूहं, तिथं ^४	तीर्थम्
तोणं, तूणं ^५	तूणम्
तोणीरं ^६	तूणीरम्
तूरं ^७	तूर्यम्
तेरहं ^८	त्रयोदश
तेवीसा ^९	त्रयोविंशतिः
तेत्तीसां ^{१०}	त्रयस्त्रिंशत्
तीसां ^{११}	त्रिंशत्
तेवण्णा ^{१२}	त्रिपञ्चाशत्
तंबो ^{१३}	स्तम्बः

१. तित्तिरौ रः । हेम० १. ९०. २. तिर्यचस्तिरिच्छः । हे० २. १४३.
 ३. 'सूक्ष्मश्न...' हेम० २. ७५. तथा तीक्ष्णो णः । हेम० २. ८२.
 ४. तीर्थे हे । हे० १. १०४. ह्रस्वः संयोगे । हेम० १. ८४ तथा दुःख-
 दक्षिणतीर्थे वा । हेम० २. ७२.
 ५. स्थूणातूरो वा । हेम० १. १२५.
 ६. 'श्रोत्रकुष्माण्डी...' हेम० १. १२४.
 ७. 'ब्रह्मचर्यतूर्य...' हेम० २. ६३.
 ८. 'एत्रयोदशादौ...' हेम० १. १६५. सख्यागद्गदे रः । हेम०
 १. २१९ तथा हेम० १. २६२.
 ९, १०. वही ।
 ११. विशत्यादेर्लुक् । हेम० १. २८. १२. गोणादयः । हेम० २. १७४.
 १३. 'स्तस्य थो...' हेम० २. ४५ के असमस्तस्तम्बे इत्यपर्युदास
 से तंबो होता है ।

तवो ^१	स्तवः
थेणो, थूणो ^२	स्तेनः
थंभो ^३	स्तम्भः
थवो ^४	स्तवः
थी ^५	स्त्री
थेरो ^६	स्थविरः
थीण ^७	स्त्यानम्
थाण ^८	स्थाणुः
थोणा, थूणा ^९	स्थूणा
थोरं, थूलं (थुल्लो) ^{१०}	स्थूलम्
थेरिञ्च ^{११}	स्थैर्यम्
दुवरो ^{१२}	तूवरः
दाढा ^{१३}	दंष्ट्रा

-
१. स्तवे वा । हेम० २. ४६. से थ के अभाव में ।
 २. उः स्तेने वा । हेम० १४७. ३. 'स्तस्य थो...' हेम० २. ४५.
 ४. स्तवे वा । हेम० २. ४६.
 ५. स्त्रिया इत्थी । हेम० २. १३०. से 'इत्थी' के अभाव में ।
 ६. स्थविरविचक्रितायस्कारे । हेम० १. १६६.
 ७. स्त्यानचतुर्थार्थे वा । हेम० २. ३३. से ठ के अभाव में थीणं होता है । तथा ईः स्त्यान-खल्वाटे । हेम० १०. ७४.
 ८. स्थाणावहेर । हेम० २. ७. से हर अर्थ में ख के अभाव में थाणु होता है । ९. स्थूणातूणौ वा । हेम० १. १२५.
 १०. थुल्लो, थोरो (थेरो A.) सेवादौ वा । हेम० २. ९९.
 ११. स्याद्भव्यचैत्यचौर्यसमेषु यात् । हेम० २. १०७.
 १२. हेमचन्द्र के अनुसार दुवरो रूप नहीं होता है ।
 १३. दंष्ट्राया दाढा । हेम० २. १३९.

दडढं ^१	दग्धम्
दंढो ^२	दण्डः
दिण्णं ^३	दत्तम्
दगुवहो, दगुअ-वहो ^४	दनुजवधः
दंभो ^५	दम्भः
दरो (अल्प में) ^६	दरः
दस, दह ^७	दश
दसणं ^८	दशनम्
दहमुहो, दसमुहो ^९	दशमुखः
दट्टो ^{१०}	दष्टः
दाहिणो, दक्खिणो ^{११}	दक्षिणः
दाहो, दाघो ^{१२}	दाहः
दिवहो, दिवसो ^{१३}	दिवसः

१. 'दशनदष्टदग्ध...' हेम० १. २१७ से ड के अभाव में । २. वही ।
 ३. इः स्वप्नादौ । हेम० १. ४६. तथा पञ्चाशत्पञ्चदशदत्ते ।
 हेम० २. ४३. ४. लुग्भाजनदनुज...' हेम० १. २६७.
 ५. दशनदष्टदग्ध...' हेम० १. २१७, से ड के अभाव में ।
 ६. वही । ७. दशपाषाणो हः । हेम० १. २६२.
 ८. दशनदष्टदग्ध...' हेम० १. २१७ से ड के अभाव में ।
 ९. श का वैकल्पिक ह । देखो—दशपाषाणो हः । हेम० १. २६२.
 १०. हेम० १. २१७. के अभाव में ।
 ११. वैकल्पिक ह । दुःखदक्षिणतीर्थे वा । हेम० २. ७२. तथा दीर्घ—
 दक्षिणो हे । हेम० १. ४५.
 १२. हो घोऽनुस्वारात् । क्वचिदननुस्वारादपि-दाघो । पक्षे दाहो ।
 हेम० १. २६४. ।
 १३. स का वैकल्पिक ह । दिवसे षः । हेम० १. १६३.

दिग्धो, दीहो ^१	दीर्घः
दुहं, दुक्खं ^२	दुःखम्
दुअल्लं, दुऊलं, दुगुल्लं ^३	दुकूलम्
दुग्गावी, दुग्गा-एवी ^४	दुर्गादेवी
दूहवो, दुहओ ^५	दुर्भगः
दुक्कडं ^६	दुष्कृतम्
दुहिआ ^७	दुहिता
दरिओ ^८	दृप्तः
दिअरो, देअरो ^९	देवरः
देउलं, देवउलं ^{१०}	देवकुलम्
देव्वं, दइव्वं, दइवं ^{११}	दैवम्
दोहलो ^{१२}	दोहदः

१. हेम० २. ७९. तथा दीर्घे वा । हेम० २९१.
२. वैकल्पिक ह । दुःखदक्षिणतीर्थे वा । हेम० २. ७२.
३. ऊकार का वैकल्पिक अत्व और लकार का द्वित्व । देखो-दुकूले वा लक्ष द्विः । हेम० १. ११९ । आर्ष प्राकृत में दुगुल्लं होता है ।
४. दुर्गादेव्युदुम्बरपादपतनपादपीठेऽत्तर्दः । हेम० १. २७०.
५. लुकिं दुरो वा । हेम० १. ११५. और ऊत्वे दुर्भगसुभगे वः । हेम० १. १९२.
६. प्रत्यादौ डः । आर्षे दुक्कडं । हेम० १. २०६.
७. 'दुहितृभगिन्यो....' हेम० २. १२६ इससे 'धूआ' आदेश के अभाव में ।
८. अरिहते । हेम० १. १४४.
९. एत इद्वा वेदनाचपेटादेवरकेसरे । हेम० १. १४६.
१०. 'यावत्तावत्....' हेम० १.२७१. ११. एच्च दैवे । हेम० १. १५३.
१२. प्रदीपिदोहदे लः । हेम० १. ३२१.

दोला ^१	दोला
देरं, दुआरं, दारं, दुवार ^२	द्वारम्
दिही ^३	धृतिः
धूआ ^४	दुहिता
धगुहं, धगू ^५	धनुः
धत्ती, धाई, धारी ^६	धात्री
धिइ	धिक्
धिरत्थु ^७	धिगस्तु
धिई ^८	धृतिः
धिडो, धडो ^९	धृष्टः
धट्टज्जणो ^{१०}	धृष्टद्युम्नः
धीरं, धिज्जं ^{११}	धैर्यम्
नत्तिओ, नत्तुओ ^{१२}	

१. 'दशनदष्टदग्धदोला....' हेम० १. २१७. से ड के अभाव में ।
२. द्वारे वा । हेम० १. ७९. पञ्चलमूर्खद्वारे वा । हेम० २. ११२.
३. धृतेर्दिहिः । हेम० २. १३१.
४. धूआ, दुहिया । 'दुहितृभगिन्योः....' हेम० २. १२६.
५. धनुषो वा । हेम० १. २२.
६. धान्याम । हे० २. ८१. ह्रस्व मे पहले ही रलोप होने पर धाई और पक्ष में धारी ये रूप होते हैं ।
७. गोणादयः । हेम० २. १७४.
८. धृतेर्दिहिः । हेम० २. १३१. द्पसे 'दिहि' के अभाव में ।
९. मसृणमुगाङ्कमृत्युशृङ्गवृष्टे वा । हेम० १. १३०. तथा हेम० २. ३४.
१०. धृष्टद्युम्ने णः । हेम० २. ९४.
११. ईधैर्ये । हेम० १. १५५. तथा धैर्ये वा । हेम० २. ६४.
१२. 'इदुतौपृष्ठवृष्टि....' हेम० १. १३७.

नोहलिआ ^१	नवफलिका
निहसो ^२	निकषः
निम्बो ^३	निम्बः
निसढो ^४	निषधः
नेड्डं, नीडं ^५	नीडम्
नीमो, नीवो ^६	नीपः
नीमी, नीवी ^७	नीविः
नेरइओ ^८	नैरयिकः
नारइओ ^९	नारकिकः
नेउरं, निउरं, नूउरं ^{१०}	नूपुरम्
नापिओ ^{११}	नापितः
निउम्फरो ^{१२}	निर्भरः

१. ओत्पूतर... हेम० १. १७०.
२. निकषस्फटिकचिकुरे हः । हेम० १. १८६.
३. निम्बनापिते लण्हं वा । हेम० १. २३०. इसके अभाव में ।
४. निषधे घो ढः । हेम० १. २२६.
५. नीडपीठे वा । हेम० १. १०६.
६. नीपापीडे मो वा । हेम० १. २३४.
७. स्वप्ननीव्योर्वा । हेम० १. २५९,
८. ९. कथं नेरइओ, नारइओ ? नैरयिक-नारकिकशब्दयोर्भावविष्यति ।
देखो—द्वारे वा । हेम० १. ७९.
१०. इदेतौ नूपुरे वा । हेम० १. १२३.
११. निम्बनापिते लण्हं वा । हेम० १. २३० से ण्ह के अभाव में ।
तथा हेम० १. १७७.
१२. द्वितीयतुर्ययोरुपरि पूर्वः । हेम० २. ९०.

नमोक्कारो ^१	नमस्कारः
नीचञ्च ^२	नीचैः
नावा ^३	नौः
पक्कं, पिक्कं ^४	पक्कम्
पम्ह ^५	पद्म
पण्णरह ^६	पञ्चदश
पञ्चावण्णा, पण्णणा ^७	पञ्चपञ्चाशत्
पण्णासा ^८	पञ्चाशत्
पडाया ^९	पताका
पट्टणं ^{१०}	पत्तनम्
पाइक्को, पाआई ^{११}	पदातिः
पोम्मं, पडम्मं, पम्मं ^{१२}	पद्मम्
पहो ^{१३}	पन्था

१. 'नमस्कार' हेम० १. ६२.

२. उच्चैर्नीचैस्यै अः । हेम० १. १५४.

३. नाव्यावः । हेम० १. १६४.

४. पक्काञ्जारललाटे वा । हेम० १. ४७.

५. पद्म-रम-ष्म-स्म-द्वां म्हः । हेम० २. ७४.

६. पञ्चाशत्पञ्चदशदत्ते । हेम० २. ४३.

७. गोणादयः । हेम० २. १७४. ८. पञ्चाशत्पञ्चदशदत्ते । २. ४३.

९. प्रत्यादौ ङः । हेम० १. २०६.

१०. 'श्रुत्प्रवृत्त' हेम० २. २९.

११. 'मलिनोभय शुक्ति' हेम० २. १३८.

१२. श्रोत्पद्मे । हेम० १. ६१. 'पद्म-छद्म' हेम० २. ११२.

१३. 'पथि पृथिवी' हेम० १. ८८.

परोत्परं ^१	परस्परम्
पारकं, पारिकं, पारकरं, पाराकरं ^२	परकीयम्
पेरन्तो, पज्जन्तो ^३	पर्यन्तः
पल्लट्टं, पल्लत्थं ^४	पर्यस्तम्
पल्लाणं, पडायाणं ^५	पर्याणम्
पल्लिअं, पल्लिलं ^६	पलितम्
पल्लङ्को, पल्लिअंको ^७	पल्यङ्कः
पाअवडणं, पावडणं ^८	पादपतनम्
पावीडं, पाअवीडं ^९	पादपीठम्
पहिहो ^{१०}	पान्थः (पथिकः)
पारद्धी ^{११}	पापद्धिः

१. 'नमस्कारपरस्परे...' हेम० १. ६२.
२. 'परराजभ्यां...' हेम० २. १४८.
३. एतः पर्यन्ते । हेम० २. ६५.
४. पर्यस्ते थठौ । हेम० २. ४७ तथा 'पर्यस्तपर्याण...' हेम० २. ६८.
५. पर्याणौ डा वा । हेम० १. २५२. 'पर्यस्तपर्याण...' हेम० २. ६८
६. पल्लिते वा । हेम० १. २१२.
७. पल्लङ्को इति च पल्यङ्कशब्दस्य यलोपे द्वित्वे च । पल्लिअंको इत्यपि चौर्यसमत्वात् । देखो—पर्यस्तपर्याणसौकुमार्ये क्लः । हेम० २. ६८.
८. 'दुर्गादेव्युदुम्बरपादपतन...' हेम० १ २१०
९. 'दुर्गादेव्युदुम्बरपादपतन ...' हेम० १ २७०.
१०. पयोणस्येकट्-पहिश्चो । हेम० २. १५२.
११. पापद्धौ र । हेम० १. २३५.

पारेवओ, पारावओ ^१	पारावतः
पाहाणो, पासाणो ^२	पाषाणः
पिहढो, पिढरो ^३	पिठरः
पिउसिआ, पिउच्छ्रा ^४	मितृष्वसा
पिसल्लो, पिसाओ ^५	पिशाचः
पेढं, पीढं ^६	पीठम्
पीअं ^७	पीतम्
पीवलं, पीअलं ^८	पीतलम्
पेउसं ^९	पीयूषम्
पुण्णामो ^{१०}	पुन्नागः
पुरिसो ^{११}	पुरुषः
पोपपलं ^{१२}	पूगफलम्
पोपपली ^{१३}	पूगफली

-
१. पारावते रो वा । हेम० १. ८०.
 २. दशपाषाणो हः । हेम० १. २६२.
 ३. पिठरे हो वा रश्च डः । हेम० १. २०१.
 ४. मातृपितुः स्वसुः सिआल्लौ । हेम० २. १४२.
 ५. 'खचितपिशाचयोः...' हेम १. १९३.
 ६. नीडपीठे वा । हेम० १. १०६.
 ७. ल इति किम् ? पीअं । देखो—पीते वो ले वा । हेम० १. २१३.
 ८. पीते वो ले वा । हेम० १. २१३. तथा विद्युत्पत्रपीतान्धाक्त् ।
 हेम० २. १७३.
 ९. 'एत्पीयूष...' हेम० १. १०५.
 १०. पुन्नागभागिन्योर्गो मः । हेम० १. १९०.
 ११. पुरुषे रोः । हेम० १. १११.
 १२. 'श्रोत्पूतरवदर...' हेम० १. १७०. १३. वही ।

पोरो ^१	पूतरः
पुरिमं, पुव्व ^२	पूर्वम्
पिधं, पिहं, पुधं, पुहं ^३	पृथक्
पुहई, पुहवी, पुहवी ^४	पृथिवी
पउरिसं ^५	पौरुषम्
पवट्टो, पउट्टो ^६	प्रकोष्ठः
पइण्णा ^७	प्रतिज्ञा
पइट्ठा ^८	प्रतिष्ठा
पडंसुआ ^९	प्रतिश्रुत्
पईवं ^{१०}	प्रतीपम्
पच्चुहो, पच्चुसो ^{११}	प्रत्यूषः
पडुमं, पदुमं, पढमं, पढमं ^{१२}	प्रथमम्

१. वही । २. पूर्वस्य पुरिमः । हेम० २. १३५.
३. 'इदुतौवृष्टवृष्टि...' हेम० १. १३७. तथा पृथकि धो वा । हेम० १. १८८.
४. 'पथिपृथिवी...' हेम० १. ८८. तथा उदत्त्वादौ । हेम० १. १३१. एवं निशीथपृथिव्योर्वा । हेम० १. २१६
५. अउः पौरादौ वा । हेम० १. १६२.
६. 'ओतोऽद्वान्योन्यप्रकोष्ठ...' १. १५६.
७. ८. प्रायः कथन से ङ नहीं हुआ । देखो-प्रत्यादौ ङः । हेम० १. २०६.
९. प्रत्ययादौ ङः । हेम० १. २०६. 'पथिपृथिवी...' हेम० १. ८८. तथा वकादावन्तः । हेम० १. २६.
- १० प्रायः कथन से ङ नहीं हुआ । देखो-प्रत्यादौ ङः । हेम० १. २०६.
११. प्रत्यूषे षश्च हो वा । हेम० २. १४.
१२. प्रथमे पथोर्वा । हेम० १. ५५. तथा 'मेथिशिथिर...' हेम० १. २१५.

पावासू ^१	प्रवासी
पअट्टं. पउत्तं ^२	प्रवृत्तम्
पसदिलं, पसिदिलं ^३	प्रशिथिलम्
पारो, पाआरो ^४	प्राकारः
पाहुडं ^५	प्राभृतम्
पांगुरणं, पाउरणं. पावरणं ^६	प्रावरणम्
पावारओ, पारओ ^७	प्रावारकः
पलक्खो ^८	पुल्लः
फणसो ^९	पनसः
फलिहा ^{१०}	परिखा
फलिहो ^{११}	परिघः
फरुसो ^{१२}	परुषः
फालिहद्दो ^{१३}	पारिभद्रः

१. प्रवासीक्षौ । हेम० १. ९५. अतः समृद्धयादौ वा । हेम० १. ४४ ।
 २. उदत्त्वादौ । हेम० १. १३१. तथा 'वृत्तप्रवृत्त....' हेम० २. २९.
 ३. शिथिलेङ्गुदे वा । हेम० १. ८९.
 ४. 'व्याकरणप्राकारागते....' हेम० १. २६८.
 ५. उदत्त्वादौ । हेम० १. १३१. तथा प्रत्यादौ ङः । हेम० १. २००.
 ६. प्रावरणो अङ्गवाऊ । हेम० १. १७५.
 ७. 'यावत्तावन्जीविता ...' हेम० १. २७१.
 ८. प्लक्षे लात् । हेम० २. १०३. ९. 'पाटिपरुष....' हेम० १. २३२.
 १०. वही तथा हरिद्रादौ लः । हेम० १. २५४. ११. वही ।
 १२. 'पाटिपरुष....' हेम० १. २३२.
 १३. वही तथा हरिद्रादौ लः । हेम० १. २५४.

फलिहं ^१	स्फटिकम्
भइणी ^२	भगिनी
भरहो ^३	भरतः
भविअं ^४	भव्यम्
भवन्तो ^५	भवान्
भस्सं, भप्पं ^६	भस्म
भामिणी ^७	भागिनी
भाअणं, भाणं ^८	भाजनम्
भारिआ ^९ (पैशाची में)	भार्या
भिण्डिवालो ^{१०}	भिन्दिपालः
भिप्फो ^{११}	भीष्मः
भेडो ^{१२}	भेरः
भसरो, भसलो ^{१३}	भ्रमरः
भिडडी ^{१४}	भ्रुकुटिः

१. स्फटिके लः हेम० १. १९७. तथा 'निकषस्फटिक ...' हेम०
 १. १८६. फलिहो भी देखा जाता है ।
२. 'दुहितृभगिन्योः...' हेम० २. १२६. बहिणी के अभाव में.
३. 'वितस्तिवसतिभरत...' हेन० १. २१४.
४. 'स्याद्भव्य...' हेम० २. १०७. ५. गोणादयः । हेम० २. १७४.
६. भस्मात्मनोः पो वा । हेम० २. ५१.
७. पुत्रागभागिन्योर्गो मः । हेम० १. १६०
८. 'लुगभाजनदनुज...' हेम० १. २६७.
९. 'र्यस्नष्टां...' हेम० ४. ३१४.
१०. कन्दरिकाभिन्दीपाले षडः । हेम० २. ३८.
११. भीष्मे षमः । हेम० २. ५४. १२. किरिभेरे रो डः । हेम० १. २५१.
१३. भ्रमरे सो वा । हेम० १. २४४. १४. इर्धुकुटौ । हेम० १. ११०.

भुलया ^१	भ्रूलता
भिब्भलो ^२	विह्ललः
भयप्फइ, भयस्सई ^३	बृहस्पतिः
मघोणो ^४	मघवान्
मअगलो ^५	मदकलः
मज्झिमो ^६	मध्यमः
मज्जह्लो, मह्यह्लो ^७	मध्याह्नः
महुअं, महूअं ^८	मधूकम्
मणोहरं, मणहरं ^९	मनोहरम्
मल्लू (न्तू), मण्णू (न्तू) ^{१०}	मन्युः
मोहो, मऊहो ^{११}	मयूखः
मोरो, मउरो, मयुरो ^{१२}	मयूरः

१. उर्ध्वं हन्मत्कण्डूयवातूले । हेम० १. १२१.
२. वा विह्लले वौ वक्ष । हेम० २. ५८ पक्ष में विब्भलो, विह्लो ।
३. बृहस्पतौ बहो भयः । हेम० २. १३७. तथा बृहस्पतिवन्स्पत्योः
सो वा २. ६९. ध्रस्पयोः फः । हेम० २. ५३.
४. गोणादयः । हेम० २. १७४.
५. मरकतमदकले गः । हेम १. १८२.
६. मध्यमकतमे द्वितीयस्य । हेम० १. ४८.
७. मध्याह्ने हः । हेम० २. ८४. तथा ह्रस्वः संयोगे । हेम० १. ८४.
८. मधूके वा । हेम० १. १२२.
९. 'ओतोद्धान्योन्य' हेम० १. १५६.
१०. मन्यौ न्तो वा । हेम० २. ४४.
११. 'न वा मयूख' हेम० १. १७१.
१२. मोरो मउरो इति तु मोरमयूरशब्दाभ्यां सिद्धम् । देखो—
हेम० १. १७१.

मरगञ्ज ^१	मरकतम्
मड्डिञ्ज ^२	मर्हितम्
मड्डलं, मलिणं ^३	मलिनम्
मसिणं, मसणं ^४	मसृणम्
महन्तो ^५	महान्
मरहड्ड ^६	महाराष्ट्रम्
मयन्दो ^७	माकन्दः
माउसिआ, माउच्छा ^८	मातृष्वसा
महुरिअ ^९	माधुर्यम्
मञ्जरो, मज्जारो ^{१०}	मार्जारः
मेरा ^{११}	मिरा (मर्यादा अर्थ में)
मुक्कं, मुत्तं ^{१२}	मुक्तम्
मूसलं, मुसलं ^{१३}	मुसलम्

-
१. 'मरकतमदकले' हेम० १. १८२.
 २. 'संमर्दवितर्दि' हेम० २. ३६.
 ३. 'मलिनोभयशुक्ति' हेम० २. १३८.
 ४. 'मसृणमृगाङ्क' हेम० १. ३०.
 ५. गोणादयः । हेम० १. १७४. (मत्तूण महन्ता तवस्सन्ति । कुमा० पा० ७. ५१)
 ६. महाराष्ट्रे । हेम० १. ६९. ७. गोणादयः । हेम० २. १७४.
 ८. मातृषितुः स्वसुः सिआ-छौ । सेम० २. १४२.
 ९. खयथधभाम् । हेम० १. १८७.
 १०. मार्जारस्य मञ्जरवञ्जरौ । हेम० २. १३८.
 ११. मिरायाम् । हेम० १. ८७.
 १२. 'शक्तमुक्तदष्ट' हेम० २. २.
 १३. उत्सुभगमुसले वा । हेम० १. ११३.

मुरुखो, मुखो ^१	मूर्खः
मुड्ढा, मुद्धा ^२	मूर्धा
मोल्लं ^३	मूल्यम्
मूसओ ^४	मूसिकः
मिअंको, मअंको ^५	मयङ्कः
मडअ ^६	मृतकम्
मट्टिआ ^७	मृत्तिका
मिच्चू, मच्चू ^८	मृत्युः
मिअंगो, मुइंगो ^९	मृदङ्गः
माउअं, मउअं, माउकं ^{१०}	मृदुकम्
माउत्तणं, मउत्तणं, माउकं ^{११}	मृदुत्वम्
मुसा, मूसा, मोसा ^{१२}	मृषा

१. षट्मञ्जुदममूर्खद्वारे वा । हेम० १. ११२.
२. अद्धद्धिमूर्धोऽर्धेन्ते वा । हेम० २. ४१.
३. 'ओत्कुष्माण्डी...' हेम० १. १२४.
४. 'पथिपृथिवी...' हेम० १. ८८.
५. 'मसृणमृगाङ्क...' हेम० १. १३०.
६. प्रत्यादौ ङः । हेम० १. २०६ । मडअं
७. 'वृत्तप्रश्नमृत्तिका...' हेम० २. २९.
८. 'मसृणमृगाङ्कमृत्यु...' हेम० १. १३०.
९. इः स्वप्रादौ । हेम० १. ४६. तथा 'इदुतौ वृष्टवृष्टि...' हेम० १. १२७.
१०. आत्कशामृदुकमृदुत्वे वा । हेम० १. १२७. तथा 'शक्तमुक्तदष्ट...' हेम० २. २.
११. वही । १२. उदूदोन्मृषि । हेम० १. १३६.

मुसावाआ ^१	मृषावाक्
मेढी ^२	मेथिः
मंस्सू ^३	श्मश्रु
मसाण ^४	श्मशानम्
रणं, रत्त ^५	रक्तम्
रअण ^६	रत्नम्
राइक्कं, राअकेरं, रायक्क ^७	राजकीयम्
राउलं, राअउलं ^८	राजकुलम्
राई, रत्ती ^९	रात्रिः
रुण ^{१०}	रुदितम्
रुक्खो ^{११}	वृक्षः
रण ^{१२}	अरण्यम्
रिच्छो, रिक्खो ^{१३}	ऋक्षः

१. वही । २. 'मेथिशिथिर'... हेम० १. २१५.
 ३. वक्रादावन्तः । हेम० १. २६. तथा 'आदेः श्मश्रु'... हेम० २. ८६.
 ४. वर० ३. ६. तथा आदेः श्मश्रुश्मशाने । हेम० २. ८६.
 ५. क्तेन दिण्णादयः । वर० ८. ६२.
 ६. रयणं । 'क्त्माश्लाघा'... हेम० २. १०१ तथा रअणं । 'क्लिष्ट-
 शिष्ट'... वर० ३. ६०.
 ७. परराजभ्यां कडिकौ च । हेम० २. १४८.
 ८. 'लुग्भाजनदनुजराजकुले'... हेम० १. २६७.
 ९. रात्रौ वा । हेम० २. ८८ तथा हेम० २. ८९.
 १०. क्तेन दिण्णादयः वर० ८. ६२.
 ११. वर० १. ३२; ३. ३१.; हेम० २. १२७.
 १२. वालाव्वरण्ये लुक् । हेम० १. ६६.
 १३. रिः केवलस्य । हेम० १. १४० तथा ऋक्षे वा । हेम० २. १९.

रिज् ^१	ऋजुः
रिऊ ^२	ऋतुः
रिडही, रिद्धी ^३	ऋद्धिः
रिणं ^४	ऋणम्
रिसहो ^५	ऋषभः
रिसी ^६	ऋषिः
लहुअं ^७	लघुकम्
लुक्को, लुगो ^८	रुगणः
लोण, लअणं ^९	लवणम्
लाहलो ^{१०}	लाहलः
लांगलो ^{११}	लाङ्गलः
लट्टी ^{१२}	यष्टिः
लिम्बो ^{१३}	निम्बः

-
१. 'ऋणज्वृषभ' हेम० १. १४१. २. वही ।
 ३. रिः केवलस्य । हेम० १४०.
 ४. 'ऋणज्वृषभ' हेम० १. १४१. ५. वही ।
 ६. 'ऋणज्वृषभ' हेम० १. १४१.
 ७. लघुके लहोः । हेम० २. १२२.
 ८. 'शक्तमुक्तदष्टरुगण' हेम० २. २.
 ९. न वा मयूख' हेम० १. १७१.
 १०. लाहललाङ्गललाङ्गले वार्देणः । हेम० १. २५६. इससे ण के अभाव में
 ११. वही ।
 १२. छस्यानुष्टेष्टासंदष्टे । हेम० २. ३४. तथा यष्ट्यां लः । हेम०
 १. २४७.
 १३. निम्बनापिते लणहं वा । हेम० १. २३०.

लाऊ^१
लाङ्गूलो^२

अलाबुः
लाङ्गूलः

व एवं व

वारं^३

द्वारम्

वारह^४

द्वादश

बइल्लो^५

बलीवर्दः

वम्हचेरं, वम्भचेरं, बह्वचरिअं^६

ब्रह्मचर्यम्

बहिणी^७

भगिनी

वम्महो^८

मन्मथः

वइरं, वज्ज^९

वज्रम्

वुद्रं, वंद्रं^{१०}

वन्द्रम्

वोरं^{११}

वदरम्

वोरी^{१२}

वद्री

१. बालाव्वरप्ये लुक् । हेम० १. ६६.
२. लाहललाङ्गललाङ्गुले वादेर्णः । हेम० १. २५६. इससे ण के अभाव में ।
३. उत्वाभाव । देखो—हेम० २. ११२. उत्त्वपक्ष में दुवारं होता है.
४. पशपाषाणो हः । हेम० १. २६२. तथा हेम० १. २१९.
५. गोणादयः । हेम० २. १७४.
६. 'स्याद्भव्य...' हेम० २. १०७. हेम० २. ९३. हेम० २. ७४.
हेम० २. ६३.
७. दुहितृभगिन्योर्ध्वआ-बहिण्यौ । हेम० २. १२६.
८. मन्मथे वः । हेम० १. २४२.
९. शर्षतप्तवज्रे वा । हेम० २. १०५.
१०. वन्द्रखण्डिते णा वा । हेम० १. ५३.
११. 'श्रोतपूतरवदर...' हेम० १. १७६. १२. वही.

वणस्सई, वनप्फई ^१	वनस्पतिः
विलया, वणिदा ^२	वनिता
वरिअं ^३	वर्यम्
वेल्ली, वल्ली ^४	वल्ली
वसही ^५	वसतिः
वाहिं, वाहिर ^६	वहिष्
वाउलो ^७	वातूलः
वाणारसी ^८	वाराणसी
वाहो (नेत्र जल में) } वाप्पो (धूम में) } ^९	वाष्प
वीसा ^{१०}	विंशतिः
वेइल्लं, विअइल्लं ^{११}	विचकिल्लं
विच्छड्डो ^{१२}	विच्छर्दः

१. वृहस्पतिवनस्पत्योः सो वा । हेम २. ६९. तथा षस्पत्योः फः ।
हे० २. ५३.
२. वनिताया विलया । हेम २. १२८.
३. 'स्याद्भव्यचैत्य' हेम० २. १०७.
४. 'वल्ल्युत्कर' हेम० १. ५८.
५. वितस्तिवसति' हेम० १. २१४.
६. वहिषो वाहिं-वाहिरौ । हेम० २. १४०.
७. उर्ध्व-हनूमत्कण्डयवातूले । हेम० १. १२६.
८. 'करेणुवाराणस्यो' हेम० २. ११६.
९. वाष्पे द्वोऽश्रुणि । हेम० २. ७०.
१०. 'ईजिह्वा' हेम० १. ९२. तथा हेम० १. २८.
११. 'स्थविरविचकिला' हेम० १. १६६.
१२. 'संमर्दवितर्दिविच्छर्द' हेम० २. ३६.

विभङ्गी ^१	वितर्हिः
विभङ्गो ^२	विदग्धः
वहेङ्गो ^३	विभीतकः
वीसंभो ^४	विश्रम्भः
वीसुं ^५	विष्वक्
वीसत्थो ^६	विश्वस्तः
विसढो, विसमो ^७	विषमः
विसंटुलं ^८	विसंष्टुलं
विहूणो, विहीणो ^९	विहीनः
विभलो, विहलो ^{१०}	विह्वलः
वीरिअ ^{११}	वीर्यम्
वच्छो ^{१२}	वृक्षः
वट्टं (ट्टो) ^{१३}	वृत्तम्

- १ वही । २. 'दग्धविदग्ध...' हेम० २. ४०.
 ३. 'एत्पीयूषापीडविभीतक...' हेम० १. १०५; १. ८८; १. २०६.
 ४. सर्वत्र लघुरामवन्दे । हेम० २. ७९. तथा हेम० १. ४३.
 ५. 'लुप्तयरव...' हेम० १. ४३. वा स्वरे मश्च । हेम० १. २८. तथा
 'ध्वनि...' हेम० १. ५२.
 ६. 'लुप्तयरव...' हेम० १. ४३.
 ७. विषमे मो ढो वा । हेम० १. २४१.
 ८. ठोऽस्थिविसंस्थुले । हेम० २. ३२.
 ९. ऊर्हीनविहीने वा । हेम० १. १०३.
 १०. वा विह्वले वौ वृक्ष । हेम० २. ५८.
 ११. 'स्याद्भव्य...' हेम० २. १०७.
 १२. रुक्ख आदेश का अभाव । देखो—हेम० २. १२७.
 १३ 'वृत्तप्रवृत्त...' हेम० २. २९.

वुडढो ^१	वृद्धः
वुडढी ^२	वृद्धिः
वेण्टं, वोण्टं, विण्टं ^३	वृत्तम्
वुन्दारओ ^४	वृन्दारकः
विञ्छुओ, विच्छुओ, विंचुओ, } विञ्छिओ ^५	वृश्चिकः
वसहो ^६	वृषभः
विट्टं, वुट्टं ^७	वृष्टम्
विट्टी, वुट्टी ^८	वृष्टिः
वडुयर ^९	बृहत्तरम्
विहप्फई, वुहप्फई, वहप्फई } वहस्सई, वुहस्सई } ^{१०}	बृहस्पतिः
वेळ ^{११}	वेणुः
वेडिसो ^{१२}	वेतसः
विअणा, वेअणा ^{१३}	वेदना

१. उदत्वादौ । हेम० १. १३१. तथा हेम २. ४०.
 २. वही । ३. इदेदोद्वृन्ते । हेम० १. १३९.
 ४. वृश्चिके श्रेष्ठुर्वा । हेम० २. १६. तथा हेम० १. १२८.
 ६ वृषभे वा वा । हेम० १. १३३. तथा हेम० १. १२६.
 ७. 'इदुतौ वृष्टवृष्टि...' हेम० १. १३७. ८. वही ।
 ९ गोणादयः । हेम० २. १७४.
 १०. वा बृहस्पतौः । हेम० १. १३८., २. १३७., २. ६९. २. ४३.
 ११. वेणौ णो वा । हेम० १. २०३.
 १२. इःस्वप्नादौ । हेम० १. ४६. इत्वे वेतसे । हेम० १. २०.७
 १३. 'एत इद्वा वेदना...' हेम० १. १६६.

वेरुलिञ्चं ^१	वैदूर्यम् (वैडूर्यम्)
वारणं, वाञ्चरणं ^२	व्याकरणम्
वावडो ^३	व्यापृतः
विउस्सगो ^४	व्युत्सर्गः
वोसिरणं ^५	व्युत्सर्जनम्
सअडं ^६	शकटम्
सक्को, सत्तो ^७	शक्तः
सणिअरो ^८	शनैश्चरः
समरो ^९	शवरः
सुवओ	शावकः
सारंगं ^{१०}	शाङ्गम्
सिडिलं, सडिलं ^{११}	शिथिलम्
सिरोवेअणा, सिरविअणा ^{१२}	शिरोवेदना
सीभरो, सीहरो, सीअरो ^{१३}	शीकरः

-
१. वैदूर्यस्य वेरुलिञ्चं । हेम० २. १३३.
 २. व्याकरणप्राकारागते कगोः । हेम० १. २६८.
 ३. प्रत्यादौ डः । हेम० १. २०६.
 ४. गोणादयः । हेम० २. १७४. ५. वही ।
 ६. 'कगचजतदप' हेम० १. १७७. सयडं । 'सटाशकट' हेम० १. १९६.
 ७. 'शक्तमुक्त' हेम २. २.
 ८. इत्संन्धवशनैश्चरे । हेम० १. १४९. सणिच्छरोभी देखा जाता है ।
 ९. शवरे वो मः हेम० १. २५८. १०. शाङ्गे हेम० २. १००.
 ११. शिथिलेड्डुदे वा । हेम० १. ८९. तथा हेम० १. २१५.
 १२. ओतोटा-ओन्य हेम० १. १५६.
 १३. शीकरे भहौ वा । हेम० १. १८४.

सिष्पी ^१	शुक्तिः
सुङ्गं, सुक्कं ^२	शुक्तं, शुल्कम्
सिंगं, संगं ^३	शृङ्गम्
संकलं ^४	शृङ्खलम्
सोडीरं ^५	शौण्डीर्यम्
सोरिञ्चं ^६	शौर्यम्
सा, साणो ^७	श्वा
सीआणं, सुसाणं ^८	श्मशानम्
सामओ ^९	श्यामाकः
सलाहा ^{१०}	श्लाघा
सेलिफो, सेलिम्हो ^{११}	श्लेषमा
सटा ^{१२}	सटा

१. मलिनोभयशुक्तिं... हेम० २. १३८.
२. शुक्ते ङो वा । हेम० २. ११.
३. 'मसृणसृगाङ्कमृत्युशृङ्गं...' हेम० १. १३०.
४. शृङ्खले खः कः । हेम० १. १८९.
५. 'ब्रह्मचर्यतूर्यसौन्दर्यशौण्डीर्यं...' हेम० २. ६३.
६. स्याद् भव्यचैत्यचौर्यसमेषु यात् । हेम० २. १०७.
७. श्वन्शब्दस्य तु सा साणो इति प्रयोगौ भवतः । देखो—ध्वनि विष्वचो रुः । हेम० १. ५२.
८. आर्षे श्मशानशब्दस्य सीआणं सुसाण इत्यपि भवति । देखो— हेम० २. ८६.
९. श्यामाके मः । हेम० १. ७१.
१०. 'ह्माश्लाघा...' हेम० २. १०१.
११. लात् । हेम० २. १०६; सेफो, सिलिम्हो २. ५५.
१२. सटाशकटकैटभे ङः । हेम० १९६.

सत्तरी ^१	सप्ततिः
सत्तरह ^२	सप्तदश
समत्थो ^३	समर्थः
संमड्डो ^४	संमर्दः
समस्त ^५	समस्तम्
सररुहं, सरोरुहं ^६	सरोरुहम्
सठ्वर्गिओ ^७	सर्वाङ्गीणः
सक्खिणो ^८	साक्षी
सालवाहनो ^९	सातवाहनः
सब्भसं ^{१०}	साध्वसम्
सामच्छ, सामत्थं ^{११}	सामर्थ्यम्
सुण्हा ^{१२}	सास्त्रा
सीहो, सिंघो ^{१३}	सिंहः

-
१. सप्तती रः । हेम० १. २१०.
 २. संख्यागद्गदे रः । हेम० १. २१९. ३. हेम० २. ७९
 ४. 'संमर्दीवतर्दि'... हेम० २. ३६.
 ५. असमस्तस्तम्ब इति किम् ? समतो, तंबो । देखो—हेम० २. ४५.
 ६. 'ओतोद्वान्योन्य'... हेम० १. १५६.
 ७. सर्वाङ्गादौनस्येकः । हेम० २. १५१.
 ८. गौणादयः । हेम० २. १७४.
 ९. अतसीसातवाहने लः । हेम० १. २११.
 १०. साध्वसभ्यह्यां भः । हेम० २. २६.
 ११. सामर्थ्योत्सुकोत्सवे वा । हेम० २. २२.
 १२. डः सास्नास्तावके । हेम० १. ७५.
 १३. मासादेर्वा । हेम० १. २९, १. ९२, तथा १. २६४.

सिंहदत्तो ^१	सिंहदत्तः
सिंहराओ ^२	सिंहराजः
सोमालो, सुउमालो, सुकुमालो ^३	सुकुमारः
सुकडं (आर्ष में) ^४	सुकृतम
सुहवो, सुहवो ^५	सुभगः
सुणहं, सणहं, सुहमं (आर्ष में) ^६	सूक्ष्मं
सूरिओ ^७	सूर्यः
सूआसो ^८	सोच्छ्रासः
सिधवं ^९	सैन्धवम्
सिण्णं, सेण्णं ^{१०}	सैन्यम्
सणिद्धं, सिणिद्धं ^{११}	स्निग्धम्
सुण्हा, सुसा ^{१२}	स्नुपा
सिआ ^{१३}	स्यात्

१. बहुलाधिकारात्कञिञ भवति । देखो—हेम० १ ९२

२. वही । ३. 'न वा मयूख...' हेम १. १७१.

४. प्रत्यादौ डः । हेम० १. २०६.

५. 'ऊत्वे दुर्भगन्सुभगे...' हेम० १. १९२ तथा हेम० १. ११३.

६. श्रद्धतः सूक्ष्मे वा । हेम० १. ११८. तथा २. ७५.

७. 'स्याद्भव्यवैत्य...' हेम० २. १०७.

८. ऊत्सोच्छ्रासे । हेम० १. १५७.

९. इत्सैन्धवशनैश्चरे । हेम० १. १४९.

१०. सैन्ये वा । हेम० १. १५० तथा अइदँत्यादौ च । हेम० १. १५१

साइर्ञ भी होता है ।

११. स्निग्धे वादितौ । हेम० २. १०९.

१२. स्नुषार्यां ष्हो न वा । हेम० १. २६१.

१३. स्याद् भव्य...' हेम० २. १०७.

सिविणो, सिमिणो ^१	स्वप्नः
हृणुमन्तो ^२	हनूमान्
हीरो, हरो ^३	हरः
हडडई, इरडई ^४	हरीतकी
हलिआरो, हरिआलो ^५	हरितालः
हलही, हलिही, हलहा ^६	हरिद्रा
हरिअदो ^७	हरिश्चन्द्रः
हूणो, हीणो ^८	हीनः
हिअं, हिअअ ^९	हृदयम्

—४००—

-
१. डः स्वप्नादौ । हेम० १. ४६, हेम० १. २५९. तथा स्वप्ने नात्
हेम० २. १०८
 २. उर्भूहनूमत्कण्डूयवातूले । हेम० १२१. तथा हेम० २. १५९.
 ३. ईर्हरे वा । हेम० १. ५१.
 ४. हरीतक्यामीतोऽत् । हेम० १. ९९.
 ५. 'हरिताले.....' हेम० २. १२१
 ६. हरिद्रायां विकल्प इत्यन्ये । देखो 'पथिपृथिवी....' हेम० १. ८८.
 ७. श्वो हरिश्चन्द्रे हेम० २. ८७.
 ८. ऊर्हीनविहीने वा । हेम० १. १०३.
 ९. इत्कृपादौ । हेम० १. १२८. तथा किसलयकालायसहृदये यः ।
हेम० १. २६९.

अष्टम अध्याय

[शौरसेनी]

(१) 'प्रकृतिः संस्कृतम्'^१ इस उक्ति के अनुसार शौरसेनी में जितने भी शब्द आते हैं, उनकी प्रकृति संस्कृत है ।

(२) शौरसेनी में अनादि में वर्तमान असंयुक्त त का द आदेश होता है । जैसे :—मारुदिणा मन्तिदो (त का द); एदाहि, एदाधो (एतस्मात्)

विशेष—(क) संयुक्त होने के कारण अज्जउत्त और सउन्तले में त का द नहीं हुआ ।

(ख) आदि में होने के कारण 'तधा करेध जधा तस्स राइणो अणुक्म्पणीआ भोमि' में तधा और तस्स के तकारों का द नहीं हुआ ।

(३) लक्ष्य के अनुरोध से शौरसेनी में वर्णान्तर के अधः (बाद में) वर्तमान त का द होता है । जैसे :—महन्दो, निश्चिन्दो, अन्दे-उरं (महान्तः, निश्चिन्तः, अन्तःपुरम्) ।

विशेष—उक्त नियम संयुक्त त के विषय में काचित्क है ।

(४) शौरसेनी में तावत् शब्द के आदि तकार का दकार विकल्प से होता है । जैसे :—दाव, ताव (तावत्) ।

(५) शौरसेनी में इन्नन्त शब्द से आमन्त्रण (सम्बोधन की प्रथमा विभक्ति) के सु के पर में रहने पर पूर्व के 'इन्' के

१. देखो—हेम० १. १. की वृत्ति तथा वर० १२. २.

न का आकार विकल्प से होता है। जैसे :—भो कञ्चुइआ (भो कञ्चुकिन्); सुहिआ (सुखिन्) अन्यत्र भो तवस्सि (भो तपस्विन्); भो मणस्सि (भो मनस्विन्) ।

(६) शौरसेनी में आमन्त्रणवाले सु के पर में रहने पर पूर्ववाले नकारान्त शब्द के न के स्थान में विकल्प से म होता है। जैसे :—भो रायं (भो राजन्); भो विअयवम्मं (भो विजयवर्मन्) अन्यत्र भयव हुदवह (भगवन् हुतवह) होता है ।

(७) शौरसेनी में भवत् और भगवत् शब्दों से सु विभक्ति के पर में रहने पर पूर्व के नकार का मकार होता है। जैसे :—एदु भवं, समणो भगवं महावीरे । पज्जलितो भयवं हुदासणो ।

(८) शौरसेनी में र्य के स्थान में य्य आदेश विकल्प से होता है। जैसे :—अय्यउत्त पय्याकुली कदम्हि (आर्यपुत्र पर्याकुलीकृताम्भि); सुय्यो (सूर्यः) पक्ष में अज्जो (आर्यः); पज्जाउलो (पर्याकुलः); कज्जपरवमो (कार्यपरवशः) ।

(९) शौरसेनी में थ के स्थान में ध विकल्प से होता है। जैसे :—णाधो, णाहो, कधं, कहं; राजपधो, राजपहो (नाथः, कथं, राजपथः) ।

(१०) शौरसेनी में 'इह' और 'हच्' आदेश के हकार के स्थान में ध विकल्प से होता है। जैसे :—इध (इह); होध (होह = भवथ); परित्तायध (परित्तायह = परित्रायध्वे) ।

(११) शौरसेनी में भू धातु के हकार का भ आदेश विकल्प से होता है। जैसे :—भोदि, होदि (भवति) ।

१. मध्यम पुरुष के बहवचन में इत्था और ह अथवा ह्य होते हैं ।
दे० इम पुस्तक के छठे अध्याय के वर्तमानकाल के प्रत्ययों में मध्यम पुरुष तथा हेम० ३. १४३.

(१२) शौरसेनी में पूर्व शब्द का 'पुरव' यह आदेश विकल्प से होता है। जैसे :—अपुरवं नाड्यं; अपुरवागदं (अपूर्वं नाट्यम् अपूर्वागतम्); पक्ष में अपुव्वं पदं, अपुव्वागदं (अपूर्वं पदम्, अपूर्वागतम्)।

(१३) शौरसेनी में त्त्वा प्रत्यय के स्थान में इप और दूण ये आदेश विकल्प से होते हैं। जैसे :—भविय, भेदूण; हविय, होदूण; पढिय, पढिदूण; रमिय, रन्दूण। पक्ष में—भोत्ता, होत्ता, पढित्ता, रन्ता।

विशेष—वररुचि (१२. ६) के अनुसार केवल इय होता है।

(१४) शौरसेनी में कृ और गम धातुओं से पर में आनेवाले त्त्वा प्रत्यय के स्थान में अडुअ (किसी-किसी पुस्तक के अनुसार अदुअ) आदेश विकल्प से होता है। और धातु के टि का लोप हो जाता है। जैसे :—कडुअ, गडुअ। पक्ष में—करिय, करिदूण; गच्छिय, गच्छिदूण।

विशेष—वररुचि (१२. १०.) के अनुसार दुअ होता है।

(१५) शौरसेनी में त्यादि के आदेश^१ इ और ए के स्थान में दि आदेश होता है। जैसे :—नेदि, देदि, भोदि, होदि।

(१६) अकार से पर में यदि नियम १५ वाले इ और ए हों तो उनके स्थान में दे और दि ये दोनों आदेश होते हैं। जैसे :—अच्छदे, अच्छदि; गच्छदे, गच्छदि; रमदे, रमदि; किज्जदे, किज्जदि।

१. देखो—इसी पुस्तक के छठे अध्याय के वर्तमान काल के प्रथम पुरुष के एकवचन तथा इसी अध्याय का नियम ४।

(१७) शौरसेनी में भविष्यत् अर्थ में विहित प्रत्यय के पर में रहने पर स्सि होता है। जैसे :—भविस्सिदि करिस्सिदि, गच्छिस्सिदि ।

विशेष—धातु और प्रत्ययों के बीच में आने के कारण 'स्सि' विकरण है ।

(१८) शौरसेनी में अत् से पर में आनेवाले डसि के स्थान में आदो और आदु ये आदेश होते हैं और शब्द के टि (अ) का लोप होता है। जैसे :—दूरादो, दूरादु (दूरात्) ।

(१९) शौरसेनी में इदानीम् के स्थान में दाणिं यह आदेश होता है। जैसे :—अनन्तर करणीयं दाणिं त्राणोवदु अय्यो ।

विशेष—उक्त नियम साधारण प्राकृत में भी लागू होता देखा जाता है ।

(२०) शौरसेनी में तस्मात् के स्थान में ता आदेश होता है। जैसे :—ता जाव पविसामि । ता अलं एदिणा माणेण ।

(२१) शौरसेनी में इत् और एत् के पर में रहने पर अन्त्य मकार के आगे णकार का आगम विकल्प से होता है। इकार के पर में जैसे :—जुत्तंणिमं, जुत्तमिमं; सरिसंणिमं, सरिसमिमं; एकार के पर में जैसे :—किणोदं, किमेदं; एवंणोदं, एवमेदं ।

(२२) शौरसेनी में एव के अर्थ में य्येव यह निपात प्रयुक्त होता है। जैसे :—मम य्येव बम्भणस्स; सो य्येव एसो ।

(२३) चेटी के आह्वान अर्थ में शौरसेनी में हञ्जे इस निपात का प्रयोग किया जाता है। जैसे :—हञ्जे चटुरिके ।

(२४) विस्मय और निर्वेद अर्थों में शौरसेनी में हीमाण्हे इस निपात का प्रयोग किया जाता है। विस्मय में जैसे :—

हीमाण्णे जीवन्तवच्छा मे जणणी । निर्वेद में जैसे :—हीमा-
ण्णे पत्तिस्सन्ता हणे एदेण निपविधिणो दुब्बवसिदेण ।

(२५) शौरसेनी में ननु के अर्थ में णं यह निपात प्रयुक्त होता है । जैसे :—णं अफलोदया; णं अय्यमिस्सेहिं पुढमं य्येव आणत्तं, णं भवं मे अग्गदो चत्तदि ।

विशेष—आर्ष में णं का वाक्यालङ्कार में भी प्रयोग होता है । जैसे :—नमोत्थु णं जयाणं ।

(२६) शौरसेनी में हर्ष प्रकट करने के लिए अम्महे इस निपात का प्रयोग किया जाता है । जैसे :—अम्महे एआए सुम्मिलाए सुपत्तिगद्धो भवं ।

(२७) शौरसेनी में विदूपक के हर्ष श्रोतन में 'हीही' इस निपात का प्रयोग किया जाता है । जैसे :—हीही भो, संपन्ना मणोरधा पियवयस्सस्स ।

(२८) शौरसेनी में व्यापृत शब्द के त का तथा कहीं-कहीं पुत्र शब्द के त का भी ड होता है । जैसे :—वावडो; पुडो पुत्तो (व्यापृतः, पुत्रः) ।

(२९) शौरसेनी में गृद्ध जैसे शब्दों के ऋकार का इकार होता है । जैसे :—गिद्धो (गृध्रः) ।

(३०) ब्रह्मण्य, विज्ञ, यज्ञ, और कन्या शब्दों के ण्य, झ और न्य के स्थान में झ आदेश विकल्प से होता है । किन्तु पैशाची में यही कार्य नित्य ही होता है । जैसे :—ब्रह्मञ्जो, विञ्जो, जञ्जो और कञ्जा । पक्ष में बह्मण्णो, विण्णो, कण्णा (ब्रह्मण्यः, विज्ञः, कन्या) ।

(३१) शौरसेनी में सर्वज्ञ और इङ्गितज्ञ शब्दों के अन्त्य झ के स्थान में ण होता है । जैसे :—सव्वण्णो, इङ्गिअण्णो (सर्वज्ञः, इङ्गितज्ञः) ।

(३२) शौरसेनी में नपुंसक लिङ्ग में वर्तमान शब्दों से पर में आनेवाले जस् और शस् के स्थान में णि आदेश और पूर्व स्वर का दीर्घ भी होता है। जैसे :—वणाणि, घणाणि (वनानि, घनानि)।

(३३) शौरसेनी में तिङ् प्रत्ययों के पर में रहने पर भूधातु के स्थान में भो आदेश होता है। जैसे :—भोमि।

विशेष—लृट् (अर्थात् भविष्यत् काल के तिङ्) के पर में रहने पर उक्त नियम लागू नहीं होता। जैसे :—भविस्सिदि।

(३४) शौरसेनी में तिङ् के पर में रहने पर दा धातु के स्थान में दे आदेश होता है और केवल लृट् के पर में रहने पर दइस्स आदेश। सामान्यतः तिङ् में जैसे :—देमि। लृट् के पर में रहने पर जैसे :—दइस्स।

(३५) शौरसेनी में कृञ् धातु के स्थान में कर आदेश होता है। जैसे :—करेमि।

(३६) शौरसेनी में तिङ् के पर में रहने पर स्था धातु के स्थान में चिट्ठ आदेश होता है। जैसे :—चिट्ठिदि।

(३७) शौरसेनी में तिङ् के पर में रहने पर स्मृ, इश और अस धातुओं के स्थान में क्रमशः सुमर, पेक्ख और अच्छ आदेश होते हैं। जैसे :—सुमरदि, पेक्खदि, अच्छन्ति (स्मरति, पश्यति, सन्ति)।

विशेष—(क) तिप् के साथ अस धातु के सकार के स्थान में अत्थि आदेश होता है। अत्थि। जैसे :—पसंसिदं गात्थि में वाआ-विहवो।

(ख) भविष्यत् काल में मिप्-सहित अस के स्थान में विकल्प से स्सं आदेश होता है। पक्ष में धातु के स्वर का दीर्घत्व भी होता है। स्सं; आस्सं।

(३८) शौरसेनी में स्त्री शब्द के स्थान में 'इत्थी' आदेश होता है। जैसे :—इत्थी (स्त्री)।

(३९) शौरसेनी में इव के स्थान में विअ आदेश होता है। जैसे :—विअ।

(४०) जस् सहित अस्मद् के स्थान में वअं और अम्हे ये दोनों रूप शौरसेनी में होते हैं। जैसे :—वअं और अम्हे (वयम्)।

(४१) शौरसेनी में सर्वनाम शब्दों से पर में आनेवाली (सप्तमी-एकवचन की) छि विभक्ति के स्थान में सित्वा आदेश होता है। जैसे :—सव्वसित्वा, इवरसित्वा (सर्वस्मिन्, इतरस्मिन्)।

(४२) शौरसेनी से भावकर्म और कर्ता अर्थों में धातु से परस्मैपद के ही प्रत्यय होते हैं। भाव में जैसे :—किं दाणि दासीएपुत्ता ? दुभित्त्वरुठरङ्क विअ उद्धकं सासाअसि एसा सा सेत्ति। कर्ता में जैसे :—अज्ज वन्दामि। कर्म में जैसे :—अदो-ज्जेव कामीअदि।

(४३) आश्चर्य शब्द का अच्चरिअ रूप शौरसेनी में होता है। जैसे :—अह्ह, अच्चरिअ अच्चरिअं।

(४४) शेष शब्दों के साधन प्राकृत अथवा महाराष्ट्री के अनुसार किये जाते हैं।

प्राकृतभ्रवस्व के अनुसार शौरसेनी के शब्द :—

शौरसेनी	संस्कृत	विशेष निर्देश्य
अउव्वं	अपूर्वेम्	
अगिम्मि	अग्नौ	
अङ्गारो	अङ्गारः	इत् का अभाव
अहिमण्णू	अभिमन्युः	ञ्ज का अभाव
अव्वह्वाणं	अब्रह्मण्यम्	
अव्वह्वल्लं (झं)		

अअ रुक्खो
अमु जणो
अमु वहू
अमु वणं
अदो कारणादो

अहं
अम्हे
अम्हं, अम्हाणं
इदो
इअ बाला
इणं धणं
इदं वणं
इङ्गिअज्जो (ज्जो)
ईदिसं
उल्लहलो
उवरि
उत्थिदो
एसो जणो
कध
कत्थ, कस्सि, कहि
कण्णआ
कज्ज (ज्ज) आ }
कबन्धो
किसुओ
किरातो

अयं वृक्षः
असौ जनः
असौ वधूः
अदो वनम्
एतस्मात् (अमुष्मात्)
कारणात्

अहम्
वयं, अस्मान्
अस्माकम्
इतः
इयं बाला
इदं धनम्
इदं वनम्
इङ्गित्तन्नः
ईदृशम्
उल्लखलः
उपरि
उत्थितः
एष जनः
कथम्
कस्मिन्

कन्यका
कबन्धः
किशुकः
किरातः

एत् का अभाव
ओत् का अभाव
अत् का अभाव
ठ का अभाव

म्मि नहीं हुआ

ओत्व का अभाव
च का अभाव

कीदिसं	कीदृशम्	एत् का अभाव
कुमारी	कुमारी	ह्रस्व का अभाव
कुदो	कुतः	
कुम्हण्डो	कुष्माण्डः	ह्र का अभाव
केसुओ	किंशुकः	ओत्व का अभाव
कोदूहलं	कौतूहलम्	द्वित्व का अभाव
खणो	क्षण .	छ्र का अभाव
खीरं	क्षीरम्	छ्र का अभाव
गहहो	गर्दभः	उ का अभाव
चउट्टी	चतुर्थी	ओत् का अभाव
चउह्ही	चतुर्दशी	ओत् का अभाव
चिण्हं	चिह्नम्	न्ध का अभाव
जघा	यथा	ह्रस्व का अभाव
जण्णसेणो	यज्ञसेनः	
जादिसं	यादृशम्	
जुहुट्टिरो	युधिष्ठिरः	अत् का अभाव
दुञ्ज्माणो	दह्यमानः	
णईओ	नद्यः	
णूणं	नूनम्	
तत्थ, तहि, तस्सि	तस्मिन्	म्मि का अभाव
तए	त्वया, त्वयि	
तधा	तथा	ह्रस्व का अभाव
तादिसं	तादृशम्	
तुण्डं	तुण्डम्	ओत्व का अभाव
तुमं	त्वं अथवा त्वाम्	
तुम्हे	यूयम् , युष्मान्	
तुम्हेहि	युष्माभिः	

तुम्हेहिन्तो	युष्मभ्यम्	
तुम्हाणं	युष्माकम्	
तुम्हेसु	युष्मासु	
तुमोदा	त्वत्	
तुम्ह, ते	तव	
थूलं	स्थूलम्	द्वित्व का अभाव
दस, दह	दश	
दसरहो	दशरथः	
दे	तव	
देअरो	देवरः	इत् का अभाव
देव्वं	दैवम्	अइ का अभाव
नइए	{ नद्या, नद्याः, नद्याः, नद्याम्	
पओट्टो	प्रकोष्ठः	षत्व का अभाव
पासाणो	पाषाणः	प, ह का अभाव
पावो	पापः	
पिण्डं	पिण्डम्	एत्व का अभाव
पिदणा	पृतना	
पुरुसो	पुरुषः	इत्व का अभाव
पोक्खरं	पुष्करम्	
पोक्खरणी	पुष्करिणी	
फोडओ	स्फोटकः	ख का अभाव
भिन्दिवालो	} भिन्दिपालः	
भिण्डवालो		
भागुओ, भाणओ	भानवः	
मए	मया	
मंसं	मांसम् *	

मइ	मयि	
मऊरो	मयूरः	ओत् का अभाव
मत्	मत्	
मह, मम	मम	
महूसो	मधूकः	ओत् का अभाव
मत्तो, ममादो	मत्	
मादरं	मातरम्	
मालाओ	मालाः	
मिओ	मृतः	
मे	माम्	
मे	मम	
मोत्ती	मुक्ता	
रुक्खो	वृत्तः	ओत् का अभाव
लावणं	लवणम्	ओत् का अभाव
लावण्यं	लावण्यम्	ओत् का अभाव
वअरं	वदरम्	ओत् का अभाव
वळफो	वाष्पः	
वअ	वयम्	
वहुए	{ वध्वा, वध्वाः, वध्वाः, वध्वाम्	
वहूओ	वध्वः	
वालाए	{ वालया, बालायाः, बालयाः, बालायाम्	
वाउम्मि	वायौ	
विहण्फदी	बृहस्पतिः	भ आदि का अभाव
वेअणा	वेदना	इत् का अभाव
वेदसो	वेतसः	इत् का अभाव

वो	वः (युष्मान् , युष्माकम्)	
सहलं	सफलम्	
सरिक्खं	सदृक्षम्	छ का अभाव
सम्मदो	सम्मर्दः	उ का अभाव

प्राकृत सर्वस्व के अनुसार शौरसेनी में तिङन्त रूपों के नियम

- (४५) (क) धातुओं से परस्मैपद ही होते हैं ।
 (ख) तीनों कालों में प्रायः लट् लकार ही होता है ।
 (ग) त्यादि के तकार का दकार होता है ।
 (घ) बहुवचन में तकार का घकार होता है ।
 (ङ) उत्तम पुरुष में म्ह होता है ।
 (च) उत्तम पुरुष में मिप् के साथ स्सम् ही होता है ।
 (छ) ज, ज्ञ, हा, सोच्छं वोच्छं ये सब नहीं होते हैं ।

प्राकृतसर्वस्व के अनुसार शौरसेनी धातु

संस्कृत	शौरसेनी	सिद्ध क्रियापद
भू	भो और हो	भोदि, होदि, क्त में भूदं
दृश	पेच्छ ^१	पेच्छदि
ब्रू	वुच्च	वुच्चदि
कथ	कघ	कघेदि
घ्रा	जिग्घ	जिग्घदि
भा	भाअ	भाआदि
मृज	फुंस	फुंसादि
घूर्ण	घुम्म	घुन्मादि

१. हेमचन्द्र के अनुसार पेक्ख आदेश होता है । देखो अष्टम अध्याय का नियम ३७ ।

ष्टु	थुण	थुणदि
भी	भा	भादि
सृज	पस	पसदि
चर्च	चव्व	चव्वदि
ग्रह	गेण्ड	गेण्डदि
गृह्य	गेष्म, घेप्प	गेष्मदि, घेप्पदि
शक	सक्कुण, सक्क	सक्कुणादि, सक्कादि
म्लै	मिआअ	मिआअदि
उद् + स्था	उत्थ	उत्थेदि
स्वप	सुअ	सुअदि
शीङ्	सुआ	सुआदि
रुध	रोव	रोवदि
रुद्	रोद	रोददि
मस्ज	बुड्	बुड्दि
दुह्य	दुहीअ	दुहीअदि
उह्य	वहीअ	वहीअदि
लिह्य	लिहीअ	लिहीअदि

प्राकृतसर्वस्व के अनुसार नीचे लिखे शब्दों को भा शौरसेनी में जानना चाहिये ।

भिफफो (भीष्मः), सत्तुग्घो (शत्रुघ्नः), जेत्तिकं (यावत्), तेत्तिकं (तावत्), एत्तिकं (एतावत्), भट्टा (भर्ता) धूदा, दुहिदिआ (दुहिता), इत्थी (स्त्री), भादा, भदुओ (भ्राता, भ्रातरः), जामादा, जामादुओ (जामाता, जामातरः) ।

द्राक् अर्थ में दत्तत्ति, निश्चय अर्थ में व्खु और खु; इव के अर्थ में व्व; एव के अर्थ में ज्जव और जेव तथा ननु के अर्थ में णं प्रयुक्त होते हैं ।

नवम अध्याय

[मागधी]

(१) प्रकृति: शौरसेनी (वर० ११. २.) इस वररुचि सूत्र के अनुसार मागधी की प्रकृति शौरसेनी मानी गई है । साथ ही साधारण प्राकृत के शब्द भी मागधी के मूल माने जाते हैं ।

(२) मागधी में अदन्त पुंलिङ्ग शब्दों का प्रथमा के एकवचन में ओकारान्त रूप न होकर एकारान्त रूप होता है । जैसे :—एशे मेरो; एशे पुलिशे (एष मेवः, एष पुरुषः); करोमि भन्ते (करोमि भदन्त) ।

(३) भागधी में रेफ के स्थान में लकार और दन्त्य सकार के स्थान में तालव्य शकार होते हैं । रेफ का जैसे :— नले, कले (नरः करः), स का श जैसे :—हंशे (हंसः); दोनों का जैसे :—शालशे, पुलिशे (सारसः, पुरुषः) ।

(४) मागधी में यदि सकार और षकार (अलग-अलग) संयुक्त हों तो उनके स्थान में स होता है । ग्रीष्म शब्द में उक्त आदेश नहीं होता । संयुक्त सकार में जैसे :—पस्खलदि हस्ती (प्रस्खलति हस्ती) बुहस्पदी (बृहस्पतिः) मस्कली (मस्करी), विस्त्रये (विस्त्रयः); संयुक्त षकार में जैसे :—शुष्कदालुं (शुष्कदारु), कस्टं (कष्टम्), विस्नुं (विष्णुम्), उस्मा (ऊष्मा), निस्कलं (निष्कलम्) धनुस्खण्डं (धनुस्खण्डम्)

विशेष—(क) उक्त नियम जहाँ लगता है, वहाँ संयोग के आगे-पीछे के वर्णों का लोप नहीं होता ।

(ख) ग्रीष्म शब्द में उक्त नियम के लागू नहीं होने से गिम्ह्वाशले (ग्रीष्मवासरः) होता है ।

(५) द्विरुक्त ट (ट्ट) और पकार से आक्रान्त (युक्त) ठकार के स्थान में मागधी में नृ आदेश होता है । ट्ट में जैसे :—पस्टे (पट्टः), भस्टालिका (भट्टारिका), भमृणी (भट्टिनी), ष्ट में जैसे :—गुस्टु कर्त्त (सुष्टु क्तम्) कोस्टागालं (कोष्टागारम्) ।

(६) स्थ और र्थ इन दोनों के स्थान में मागधी में सकार से संयुक्त गकार होता है । स्थ में जैसे :—उवस्तिदं (उपस्थितः), सुस्तिदं (सुस्थितः); र्थ में जैसे :—अरत्तवर्द (अर्थवती), शरत्तवाहे (साथवाहः) ।

(७) मागधी में ज, घ और य के स्थान में य आदेश होता है । ज का जैसे :—यणघो (जनपदः), अण्युरो (अर्जुनः), दुण्यरो (दुर्जनः), गण्यदि (गर्जनि); घ का जैसे :—मण्यं (मघन्), अण्य किल विद्यातं आगदं (अघ किल विद्याहर आगतः ।); य का जैसे :—याति (याति) ।

विशेष—इसी पुस्तक के दूसरे अध्याय के चौदहमें नियम के बाधनार्थ य के स्थान में पुनः य का विधान किया जाता है ।

(८) मागधी में न्य, ण्य, झ और ञ्य इन संयुक्ताक्षरों के

स्थान में द्विरुक्त अ होता है। न्य का जैसे :—अहिमञ्जु-
कुमाले, (अभिमन्युकुमारः) कञ्चकावलणं (कन्यकावर्णम्);
ण्य का जैसे :—अवम्हञ्चं (अब्रह्मण्यम्), पुञ्चाहं (पुण्या-
हम्); झ का जैसे :—पञ्चाविशाले (प्रज्ञाविशालः) शवञ्जे
(सर्पज्ञः), अवञ्जा (अवज्ञा); झ्र का जैसे :—अञ्जली
(अञ्जलि.), धणञ्जए (धनञ्जयः), पञ्जले (पञ्जरः) ।

(६) मागधी में ब्रज धातु के जकार का ङ्ङ् आदेश होता है। जैसे :—वञ्जदि (ब्रजति) ।

विशेष—उक्त नियम इसी अध्याय के सातवे नियम का अपवाद है। अन्यथा य आदेश हो जाता है।

(१०) मागधी में अनादि में वर्तमान छ के स्थान में शकार से संयुक्त चकार अ होता है। जैसे :—गश्च, गश्च (गच्छ, गच्छ), उश्चत्ति (उच्छलति), पिश्चित्ते (पिच्छित्ते); तिरिश्चि पेस्कदि^१ (तिरिच्छि पेच्छइ = तिर्यक् प्रेक्षते) ।

(११) मागधी में अनादि में वर्तमान क्ष के स्थान में जिह्वाभूतीय ऋके^२ आदेश होता है। जैसे :—यऋके (यक्षः), लऋकशे (रक्षसे) ।

(१२) मागधी में प्रेक्ष और आचक्ष के क्ष के स्थान में स्क आदेश होता है। जैसे :—पेस्कदि (प्रेक्षते), आचस्कदि (आचक्षते) ।

विशेष—पूर्व नियम (ग्यारहवें) का यह नियम अपवाद है ।

१. देखो—अगला नियम (१२) ।

२ प्राकृत-प्रकाश के अनुसार स्क आदेश होकर उसके और लक्ष्णे रूप होते हैं। दे०—वर० ११. ८.

(१३) मागधी में स्था धातु के तिष्ठ के स्थान में चिष्ट आदेश होता है । जैसे :—चिष्टादि (तिष्ठति) ।

विशेष—किसी-किसी पुस्तक के अनुसार चिद्ध आदेश होकर चिद्धि रूप भी होता है ।

(१४) मागधी में अवर्ण से पर में आनेवाले ङस् (षष्ठी के एकवचन) के स्थान में आह आदेश विकल्प से होता है । आह के पूर्ववर्ती टि का लोप होता है । जैसे :—हगे न ईदिशाह कम्माह काली (अहं न ईदृशस्य कर्मणः कारी); पक्ष में—भीमशेणस्स पश्चादो हिण्डीअदि ।

(१५) मागधी में अवर्ण से पर में विद्यमान आम के स्थान में आहँ आदेश विकल्प से होता है और पूर्व के टि का लोप हो जाता है । जैसे :—जाहँ (येपाम्); पक्ष में—जाण (येपाम्) ।

(१६) मागधी में अहम् और वयम् के स्थान में हगे आदेश होता है । जैसे :—हगे शक्कावदालतिस्तणिवाशी धीवले (अहं शक्कावतारतीर्थनिवासी धीवरः) ।

विशेष—प्राकृतप्रकार के अनुसार अहं के स्थान पर हके और अहके भी होते हैं ।

प्राकृत-प्रकाश के अनुसार मागधी के विशेष शब्द ।

संस्कृत	मागधी	प्रा. प्र. अ.	सूत्र
माषः	माशे	११	३
विलासः	विलाशे	११	३
जायते	यायदे	११	४
परिचयः	पलिचये	११	५
गृहीतच्छलः	गहिदच्छले	११	५

विजलः	वियले	११	५
निर्भरः	णिञ्भले	११	५
हृदये	हृदके	११	६
आदरः	आलले		
कार्यम्	कय्ये	११	७
दुर्जनः	दुय्ययो	११	७
राक्षसः	लस्कशे	११	८
दक्षः	दस्के	११	८
अहम्	हके, अहके, हगे	११	९
एष राजा	एशि लाआ	११	१०
एष पुरुषः	एशे पुलिशे	११	१०
हमिनः	हशिदु, हशिदि, हशिद	११	११
पुरुषस्य	पुलिशाह, पुलिशश	११	१२
तिष्ठति	चिष्ठदि	११	१४
कृतः	कडे	११	१५
मृतः	मडे	११	१५
गतः	गडे	११	१५
सोढ्वा	सहिदाणि	११	१६
कृत्वा	कारिदाणि		
शृगालः	शिआले, शिआलके	११	१६



दशम अध्याय

[पैशाची]

(१) पैशाची की प्रकृति शौरसेनी है ।

(२) पैशाची में झ के स्थान में ङ्ग होता है । जैसे :—
पङ्गा (प्रजा), मङ्गा (संज्ञा), सक्कजो (सर्वज्ञः), ङ्गानं
(ज्ञानम्), विङ्गानं (विज्ञानम्) ।

(३) राजन शब्द के रूपों में जहाँ-जहाँ झ रहता है, उस
झ के स्थान में चिञ् आदेश विकल्प से होता है । जैसे —
राचिञ्जा लपितं, रङ्गञ्जा लपितं (राज्ञा लपितम्), राचिञ्जो धनं
रङ्गञ्जो धनं (राज्ञो धनम्) ।

(४) पैशाची में न्य और ण्य के स्थान में ङ्ग आदेश
होता है । जैसे :—कङ्गका अभिमङ्ग (कङ्कका, अभि-
मन्युः) । पुङ्गकम्मो, पुङ्गगाळं (पुण्यकर्मा, पुण्याहम्) ।

(५) पैशाची में णकार का नकार हो जाता है । जैसे :—
गुनगनयुत्तो (गुणगणयुक्तः), गुनेन (गुणेन) ।

(६) पैशाची में तकार और दकार के स्थान में तकार हो
जाता है । जैसे :—भगवती, पव्वती (भगवती, पार्वती) ।
मतनपरवसो (मदनपरवशः), सतनं (सदनम्), नामोदरो
(दामोदरः), होतु (होदु शौ०) ।

(७) पैशाची में लकार के स्थान में लकार हो जाता है ।
जैसे :—सळिळं, कमळं (सलिलं कमलम्) ।

(८) पैशाची में श और ष के स्थान में म होता है ।
जैसे:—सोभति, सोभनं, ससी (शोभते, शोभन, शशी) ।
विसमो, विसानो (विषमः, विषाणः) ।

(९) पैशाची में हृदय शब्द के यकार के स्थान में पकार हो जाता है । जैसे:—हितपक (हृदयकम्) ।

(१०) पैशाची में टु के स्थान तु आदेश विकल्प से होता
जैसे:—कुतुम्बकं, कुटुम्बक (कुटुम्बकम्) ।

(११) पैशाची में त्त्वा प्रत्यय के स्थान में तून आदेश होता है । जैसे:—गन्तून, हसितून, पठितून (गत्वा, हसित्वा, पठित्वा) ।

(१२) पैशाची में ष्ट्रा के स्थान में ढून और त्थून आदेश होते हैं । जैसे:—नढून, नत्थून; तढून, तत्थून (नष्ट्रा, तष्ट्रा) ।

(१३) पैशाची में कहीं कहीं र्च, स्त्र और ष्ट्र के स्थानों में क्रमशः रिय, सिन और सद आदेश होते हैं । जैसे:—भारिया, सिनातं, कसटं (भार्या, स्नातम्, कष्टम्) ।

विशेष—(क) प्राकृतप्रकाश (१०. ७.) के अनुसार स्त्र के स्थान में सन आदेश होता है । जैसे:—सनानं, सनेहो (स्नानम्, स्नेहः) ।

(ख) नियम १३ में 'कहीं-कहीं' कहने से सुजो (सूर्यः), सुनुसा और तिट्टो (दिष्टः) में उक्त नियम नहीं लगा ।

(१४) पैशाची में भाव-कर्मवाले यक् के स्थान में इय्य आदेश होता है । जैसे:—रभिय्यते, पठिय्यते (रम्यते, पठ्यते) ।

(१५) पैशाची में कृ धातु से पर में आये हुए भाव-कर्मवाले यक् के स्थान में ईर आदेश होता है और धातु के टि (ऋ) का लोप हो जाता है । जैसे:—कीरते (क्रियते) ।

(१६) पैशाची में यादृश, तादृश आदि के दृ के स्थान में

ति आदेश होता है। जैसे:—यातिसो, तातिसो, भवातिसो, अब्जातिसो, युम्हातिसो, अम्हातिसो (यादृशः, तादृशः, भवादृशः, अन्यादृशः, युष्मादृशः, अस्मादृशः)।

(१७) पैशाची में इच् और एच् (देखो छठे अध्याय में वर्तमान काल के प्रत्यय) के स्थान में ति आदेश होता है। जैसे:—वसुआति, भोति, नेति, तेति।

(१८) पैशाची में अकार से पर में आनेवाले इच् और एच् के स्थान में ते और ति दोनों आदेश होते हैं। जैसे:—लपते, लपति; अच्छते, अच्छति; गच्छते, गच्छति; रमते, रमति।

(१९) पैशाची में इच् और एच् के स्थान में, भविष्यन् काल में, सिस् न होकर एय्य आदेश ही होता है। जैसे:—हुवेय्य^१ (भविष्यति)।

(२०) पैशाची में अकार से पर में आनेवाले ङसि के स्थान में आतो और आतु ये दो आदेश होते हैं। जैसे:—तुमातो, तुमातु; ममातो, ममातु।

(२१) पैशाची में टा के साथ तद् और इदम् शब्दों के स्थान में नेन और छीलिङ्ग में नाए आदेश होते हैं। जैसे:—नेन कतरिनानेन (तेन कृतस्नानेन अथवा अनेन इत्यादि); पूजितो च नाए (पूजितश्चानया)।

प्राकृत-प्रकाश के अनुसार पैशाची के विशेष शब्द—

संस्कृत	पैशाची	प्रा. प्र. अ.	सत्र
मेघः	मेखो	१०	२
गगनम्	गकनं	१०	२
राजा	राचा	१०	२

१. तं तद्धून चिन्तितं रब्जा का एसा हुवेय्य (तां दृष्ट्वा चिन्तितं राजा का एषा भविष्यति !)

निर्भरः	णिच्छरो	१०	२
वडिशम्	वटिशं	१०	२
दशवदनः	दसवत्तनो		
माचवः	माथवो	१०	२
गोविन्दः	गोविन्तो	१०	२
केशवः	केसवो	१०	२
गरभसं	सरफसं	१०	२
शलभः	सलफो	१०	२
संग्रामः	सगामो	१०	२
इव	पिव	१०	४
तरुणी	तलुनी	१०	५
कष्टम्	कसठं	१०	६
स्नानम्	सनानं	१०	७
स्नेहः	सनेहो	१०	७
भार्या	भारिआ	१०	८
विज्ञातः	विज्ञातो	१०	८
सर्वज्ञः	सर्वज्ञो	१०	९
कन्या	कञ्जा	१०	९
कार्यम्	कच्चं	१०	११
राज्ञा	राचिना, रञ्जा	१०	१२
राज्ञः	राचिनो, रञ्जो	१०	१०
दत्त्वा	दातूनं	१०	१३
गृहीत्वा	घेतूनं	१०	१३
हृदयकम्	हितअकं	१०	१४



एकादश अध्याय

[अपभ्रंश]

(१) अपभ्रंश में किसी एक स्वर के स्थान में कोई एक दृभरा स्वर प्रायः हो जाता है। जैसे :—कश्चिन् के लिए अपभ्रंश में कश्च और काश्च; वेणी के लिए वेण और वीण; बाहु के लिए बाद् और बाहा; पद्म के लिए पद्धि, पिद्धि और पुद्धि; तृण के लिए तरण, तिणु और तृणु; सुकृतम् के लिए सुकितु, सुकित्त और सुकृदु; क्लिन्न के लिए क्लिन्नत्त, क्लिन्नत्तत्त; लेखा के लिए ललत्त, लीह और लेह तथा गौरी के लिए गउरी और गोरी ये रूप विभिन्न स्वरों के आने से होते हैं।

(२) अपभ्रंश में स्वादि विभक्तियों के आने पर प्रायः कभी नो प्रातिपदिक के अन्त्य स्वर का दीर्घ और कर्मा ह्रस्व हो जाता है। सु विभक्ति में जैसे :—ढोह्ला, सामला (वित्त, श्यामला, इत्ये स्वर का दीर्घ); वण, सुवणरेह (धण सस्कृत का धन्या है। कुछ लोग प्रिया शब्द के स्थान में धण आदेश मानते हैं। सुवणरेखा। इनमें दीर्घ स्वर का

१-१. ढोह्ला सामला धण चम्पावर्णा ।

णाइ सुवणरेह करणदृइ दिष्णा ॥

(वित्तः श्यामल. धन्या चम्पकवर्णा ।

इव सुवणरेखा कपपद्के दत्ता ॥)

ह्रस्व हुआ है ।) स्त्रीलिङ्ग में जैसे :—विट्टीए (पुत्रि । यहाँ ह्रस्व का दीर्घ हुआ है), पइट्टि (प्रत्रिष्ठा । यहाँ दीर्घ का ह्रस्व हुआ है ।), निसिआं खग्ग (निशिताः खड्गा । यहाँ दीर्घ का ह्रस्व हुआ है ।), घोडा (अश्वाः । यहाँ ह्रस्व स्वर का दीर्घ हो गया है ।)

(३) अपभ्रंश में सु (प्रथमा के एकवचन) और अम् विभक्तियों के आने पर शब्द के अन्तिम अ के स्थान में उहो जाता है । जैसे :—दहमुहु^३, तोसिअ-संकर, चउमुहु, छमुहु (दशमुखः, तोषित शंकरः, चतुर्मुख, षण्मुखम्) ।

(४) अपभ्रंश में पुल्लिङ्ग में वर्तमान शब्द (प्रातिपदिक) के अन्त्य अ के स्थान में ओ विकल्प से होता है, जब कि उन

१. विट्टीए मइ भणिय तुहँ मा कर वक्की दिट्ठि ।

पुत्ति सकण्णी भल्लि जिव मारइ हिअइ पइंठु ॥

(पुत्रि मया भणिता त्वं 'मा कुरु वक्त्रां दृष्टिम्' ।

पुत्रि सकर्णा भल्लिर्यथा मारयति हृदये प्रविष्टा ॥)

२. एइ ति घोडा एह थलि एइ ति निसिआ खग्ग ।

एत्थु सुणीसम जाणिअइ जो न वि वालड वगा ॥

(एते ते अश्वाः एषा स्थली एते ते निशिताः खड्गाः ।

अत्र मनुष्यत्वं ज्ञायते यः नापि चालयति बल्गाम् ॥)

३. दहमुहु भुवण-भयंकर तोसिअ-संकरु णिग्गउ रहुवरि चडिअउ ।

चउमुहु छंमुहु माइवि एकहिं लाइवि णावइ दइबे घडिअउ ॥

(दशमुखः भुवनभयंकरः तोषितशङ्करः निर्गत रथवरे आरूढ-

चतुर्मुख षण्मुख ध्यात्वा एकस्मिन् लगित्वा इव दैवेन घाटतः) ।

अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों से पर में सु विभक्ति आई हुई हो ।
जैसे :—जो^१, भो (यः, सः) ।

विशेष—पुंलिङ्ग में कहने से 'अङ्गहिं अङ्गु न मिलउ हलि' (अङ्गैः अङ्गं न मिलितं सखि) में नपुंसक अङ्गु और मिलिउ में ओ नहीं हुआ ।

(५) अपभ्रंश में टा विभक्ति के आने पर शब्द के अन्तिम अ के स्थान में ए हो जाता है । जैसे :—पवसन्तेण^२ (प्रवसता), नहेण (नखेन) ।

(६) अपभ्रंश में शब्द के अन्त्य अकार और डि (सप्तमी एकवचन) के स्थान में इकार और एकार होते हैं । जैसे :—तलि घल्लइ^३, तले घल्लइ (तले क्षिपत्ति) ।

(७) अपभ्रंश में शब्द के अन्त्य अ के स्थान में, भिसु (तृतीया के बहुवचन) के पर में रहने पर, एकार आदेश विकल्प

१. अगलिअ नेह—निवट्टाहं जोअण-लक्खु वि जाउ ।

वरिस-मएण वि जो मिलइ सहि सोक्खहं सो ठाउ ॥

(अगलितस्नेहनिर्मुत्तानां योजनलक्षमपि जायताम् ।

वर्षशतेनापि यः मिलति सखि भौख्यानां स स्थानम् ॥)

२. जेमहु दिण्णा दिअहवा दइए पवसन्तेण ।

ताण गणन्तिएं अङ्गुलिउ जज्जरिआउ नहेण ॥

(ये मम दत्ताः दिवसाः दयितेन प्रवसता ।

तान् गणयन्त्याः अङ्गुल्यः जर्जरिताः नखेन ॥)

३. सागरु उप्परि तणु धरइ तलि घल्लइ रयणाइं ।

सामि सुभिच्चु वि परिहरइ संमारोइ खलाइं ॥

(सागरः उपरि तृणानि धरति तले क्षिपति रत्नानि ।

स्वामी सुभृत्यमपि परिहरति संमानयति खलान् ॥)

से होता है। जैसे :—लक्खेहि^१ (लक्षैः); पक्ष में गुणहिँ (गुणैः)।

(८) अपभ्रंश में अकारान्त शब्द से पर में आने वाले डसि विभक्ति के स्थान में हे और हु आदेश होते हैं। जैसे :—वच्छहे^२ गृण्हइ, वच्छहु गृण्हइ (वृक्षात् गृह्णाति)।

(९) अपभ्रंश में अदन्त शब्द से पर में आने वाले भ्यस् (पञ्चमी बहुवचन) के स्थान में हुं आदेश होता है। जैसे :—गिरि-सिङ्गहुं^३, (गिरिशृङ्गेभ्यः)।

(१०) अपभ्रंश में अदन्त शब्द से पर में आने वाले डस् (षष्ठी एकवचन) के स्थान में सु, हो और स्सु ये तीन आदेश होते हैं। जैसे :—तसु^४ (तस्य), दुल्लहहो (दुर्लभस्य) सुभणस्सु (सुजनस्य)।

१ गुणहिँ न संपड कति पर फल लिहिँआ भुजन्ति ।

कमरि न लहइ बोडिडअ विगय लक्खोहिँ वेप्पन्ति ॥

(गुणैः न सपत् कीर्ति परं फलानि लिखितानि भुजन्ति ।

केसरी न लभते कपर्दिकामपि गजाः लक्षै गृह्यन्ते ॥)

२. वच्छहेँ गृण्हइ फलईं जणु कडु पल्लव वज्जेइ ।

तो वि महद्दुसु सुअणु जिवँ ते उच्छङ्गि धरेइ ॥

(वृक्षात् गृह्णाति फलानि जनः कटुपल्लवान् वर्जयति ।

तथापि महाहुमः सुजन इव तान् उत्तमङ्गे धरति ॥)

३ दूरुह्णो पडिउ खलु अप्पणु जणु मारेइ ।

जिह गिरिसिङ्गहुँ पडिअ सिल अणु विचूरु करेइ ॥

(दूरोह्णो न पतितः खलः आत्मानं जनं मारयति ।

यथा गिरिशृङ्गेभ्यः पतितः शिला अन्यदपि चूर्णीकरोति ॥)

४. जो गुण गोवइ अप्पणा पयडा करइ परस्सु ।

तसु हउं कल्लुगि दुल्लहहो बैलि किल्लउं सुअणस्सु ॥

(११) अपभ्रंश में अदन्त शब्द से पर में आने वाले आम के स्थान में हं आदेश होता है । जैसे :—तणहं^३ (तृणानाम्) ।

(१२) इदन्त और उदन्त शब्दों से पर में आने वाले आम के स्थान में, अपभ्रंश में हुं और हं दोनों आदेश होते हैं । जैसे '—सउणिहं' (शकुनीनाम्) इत्यादि ।

विशेष—उक्त नियम सुष् सप्तमी-बहुवचन) में भी लागू होता है । जैसे :—दुहुँ^३ (द्वयोः) ।

(१३) अपभ्रंश में इदन्त, उदन्त शब्दों से पर में आने वाले डसि, भ्यस् और डि के स्थान में क्रमशः हे, हुं और हि आदेश होते हैं । जैसे :—गिरिहे^३, तरुहे (गिरिः, तरोः) भ्यस् का

(सः शुणान गोपयति आत्मीयान् प्रकटान् करोति परस्थ ।

तस्य अतः कलियुगे दुर्लभस्य बाल करोमि सृजनस्य ॥)

१. तणहं तदज्ज भङ्गि न वि ते अवड-यदि वसन्ति ।

अह अणु लग्गिदि उत्तरद अट्ट सद सइ मज्जन्ति ॥

(तृणानां तृतीया भङ्गी नापि तानि अवटतटे वसन्ति ।

अथ जनः लगित्वा उत्तरति अथ सह स्वयं मज्जन्ति ॥)

२. दइवु घटायइ वणि तरुहुँ सउणिहँ पक्क फलाइं ।

सो वरि सुक्खु पइट्टण वि कण्णहिं खलवयणहिं ॥

(देवः घटयति वने तरुण शकुनीना (कृते) पक्कफलानि ।

तद् वरं सौख्यं प्रविष्टानि नापि कर्णयोः खलवचनानि ॥)

३. धवल्लु विसूरइ सामिअहो, गरुआ भरु पिक्खेवि ।

हउं कि न जुत्तउ दुहुँ दिसिहिं, सण्डहं दोणिण करेवि ॥

(धवलः खिद्यति स्वामिनः गुरुं भारं प्रेक्ष्य ।

अहं किं न युक्तः द्वयोर्दिशोः खण्डे द्वे कृत्वा ॥)

४. गिरिहँ सिलायल्लु तरुहँ फलु धेप्पइ नोसावन्नु ।

घरु मेल्लेप्पिणु माणुसहं तो वि न रुच्चइ रन्नु ॥

का हुंः—तरुहुं^१ (तरुभ्यः); डि का हि जैसे :—
कलिहि^२ (कलौ) ।

(१४) अपभ्रंश में अदन्त शब्द से पर में आने वाले टा के स्थान में ण और अनुस्वार आदेश होते हैं । जैसे :—दइएँ (दयितेन), पवसन्तेण (प्रवसता) । देखो—इसी अध्याय में नियम ५ की पाद टिप्पणी ।

(१५) अपभ्रंश में इकारान्त, उकारान्त शब्दों से पर में आने वाले टा के स्थान में एं, ण और अनुस्वार आदेश होते हैं । जैसे :—अग्गिएँ (अग्निना); अग्गिणँ (अग्निना); अग्गि (अग्निना) ।

(गिरेः शिलातलं तरोः फलं गृह्यते निःसामान्यम् ।

गृहं मुक्त्वा मनुष्याणां तथापि न रोचते अरण्यम् ॥)

१ तरुहुँ वि वक्लु फलु मुणिवि परिहणु असणु लहन्ति ।

सामिहुँ एत्ति अगगलड आयरु भिच्चु गृहन्ति ॥

(तरुभ्यः अपि वक्कल फलं मुनयः अपि परिधानम् अशानं लभन्ते स्वामिभ्यः, इयद् अधिकारं भृत्या गृह्णन्ति ।)

२. अह विरल पहाउ जि कलिहि धम्मु ।

(अथ विरलप्रभाव एव कलौ धर्मः ।)

३ अग्गिएँ उण्हउ होइ जगु वाए सीअलु तेवं ।

जो पुणु अग्गि सीअला तसु उण्हत्तणु केवं ॥

(अग्निना उष्णं भवति जगत् वातेन शीतलं तथा ।

गः पुनः अग्निना शीतलः तस्य उष्णत्वं कथम् ?)

४. विप्पिअ-आरउ इइ वि पिउ तो वि तं आणहि अज्जु ।

अग्गिण दड्ढा जइ वि घरु तो तँ अग्गि कज्जु ॥

(विप्रियकारकं यद्यपि प्रियः तदपि तमानय अद्य ।

अग्निना दग्धं यद्यपि गृहं तदपि तेन अग्निना कार्यम् ॥)

(१६) अपभ्रंश में सु, अम्, जम् और शस् विभक्तियों का लोप हो जाता है। देखो इसी अध्याय के नियम २ की पादटिप्पणी ३ में 'एह ति घोड़ा' इत्यादि में सु, अम्, जस् का लोप।

(१७) अपभ्रंश में षष्ठी विभक्ति का प्रायः लुक् हो जाता है। जैसे:—गय^१ (गजानाम्)।

(१८) अपभ्रंश में यदि किसी शब्द से संबोधन में जस् विभक्ति आई हो तो उसके स्थान में हो आदेश होता है। जैसे:—तरुणहो, तरुणिहो^२ (हे तरुणाः हे तरुण्यः)।

विशेष:—यद् नियम पूर्वोक्त स्रोतहर्षे नियम का अपवाद है।

(१९) अपभ्रंश में भिस् और सुप् के स्थान में हि आदेश होता है। जैसे:—गुणहि (गुणः); मग्गेहि^३ तिहि (मार्गेषु त्रिषु)।

(२०) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान शब्द से पर में आनेवाले जस् और शस् (प्रत्येक) के स्थान में उ और आ आदेश होते हैं। जैसे:—अङ्गुलिउ (अङ्गुल्यः । जस् = उ); सव्व-

१. संगर—सएहिं जु वणिअइ देक्खु अम्हारा कन्तु ।
अइमत्तहं चत्तङ्कसहं गय कुम्भइं दारन्तु ॥
(संगरशतेषु यो वर्ण्यते परय अम्माकं कान्तम् ।
अतिमत्तानां त्यक्ताङ्गुशाना गजानां कुम्भान् दारयन्तम् ॥)
२. तरुणहो तरुणिहो सुणिउ मइ करहु म अप्पहों घाउ ।
(हे तरुणाः, हे तरुण्यः (च) ज्ञातं मया आत्मनः धातं मा कुरुत ।)
३. भाईरहिं जिवें भारइ मग्गेहिं तिहिं वि पयइइ ।
(भागीरथी यथा भारती मार्गेषु त्रिषु प्रवर्तते ।)

ज्ञाउ^१ (सर्वाङ्गीः । शस्=उ) ; विलासिणीओ^२ (विलासिनीः । शस्=ओ) ।

(२१) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान शब्द से पर में आनेवाले टा (तृतीया-एकवचन) के स्थान में ए आदेश होता है । जैसे :—ससिमण्डल-चन्दिमए^३ (शशिमण्डलचन्द्रिकया) ।

(२२) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान शब्द से पर में आनेवाले डस् (षष्ठी-एकवचन) और डसि (पञ्चमी-एकवचन) के स्थान में हे आदेश होता है । जैसे :—मञ्भहे,^४ तहे,^५ धणहे^६ इत्यादि (मध्यायाः, तस्याः, धन्यायाः इत्यादि) ; बालहे^७ (बालायाः) ।

१-२, सुन्दर-सव्वज्ञाउ विलासिणीओ पेच्छन्तरण ।

(सुन्दरमर्वाङ्गीः विलासिनीः प्रेक्षमाणानाम् ॥)

३ निअ-मुह-करहिं वि मुद्ध कर अन्वारड पडिपेक्खइ ।

ससि-मण्डल-चन्दिमए पुणु काई न दूरे देख्खइ ॥

(निजमुखकरैः अपि मुग्धा करमन्धकारे प्रतिप्रेक्षते ।

शशिमण्डलचन्द्रिकया पुनः किं न दूरे पश्यति ?)

४-७. फोडेन्ति जें हियडडं अप्पणडं ताहं पराई कवण वृण ।

रक्खेज्जहु लोअहो अप्पणा बालहे जाया विसम थण ॥

(स्फोटयतः यौ हृदयमात्मीयं तयोः परकीया का वृणा ?

रक्षत लोकाः आत्मानं बालायाः जातौ विपमौ स्तनौ ॥)

तुच्छ मञ्भहे तुच्छ-जम्पिरेहे ।

तुच्छच्छरोमावलिहे तुच्छरायतुच्छयरदास हे ।

पियवयणु अलहन्तिअहे तुच्छकाय-वम्मह-निवासहे ॥

अनुजु तुच्छडं तहे धणहे तं अक्खणह न जाइ ।

कटरि थणंतरु मुद्धडहे जें मणु विक्कि ण माइ ॥

(तुच्छमध्यायाः तुच्छजल्पनशीलायाः ।

(२३) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान शब्द से पर में आनेवाले भ्यम् (पञ्चमी-बहुवचन) और आम् (षष्ठी बहुवचन) के स्थान में हु आदेश होता है । जैसे :—वर्यासअहु' (वयस्याभ्यः अथवा वयस्यानाम्) ।

(२४) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान शब्द से पर में आनेवाले छि (सप्तमी-एकवचन) के स्थान में हि आदेश होता है । जैसे :—महिहि (मह्याम्) ।

(२५) अपभ्रंश में नपुंसक लिङ्ग में वर्तमान शब्द से पर में आनेवाले जस् (प्रथमा-बहुवचन) और शस् (द्वितीया-बहुवचन) के स्थान में इं आदेश होता है । जैसे :—कमलइं' अलिउलइं (कमलानि, अलिकुलानि) ।

तुच्छाच्छरोमावल्याः तुच्छरागायाः तुच्छतरहासायाः ।
 प्रियवचनमलभमानायाः तुच्छकायमन्मथनिवासायाः ॥
 अन्यद् यत्तच्छं तस्याः धन्यायाः तदाख्यातुं न याति ।
 आश्रयं स्तनान्तरं सुग्धायाः येन मनो वर्त्मनि न माति ॥)

१. भह्ना हुआ जु मारिआ बहिणि महारा कन्तु ।
 लज्जेन्तु वर्यासअहु जइ भगगा घर एन्तु ॥
 (भव्यं भूतं यत् मारितः भगिनि अस्मदीयः कान्तः ।
 अलाज्जथत वयस्याभ्यः (नाम्) यदि भग्नः गृहं ऐष्यत् ॥)

२. वायसु उड्ढावन्तिअए पिउ दिट्ठउ सहस ति ।
 अद्धा वलया महिहि गम अद्धा फुट्ट तडत्ति ॥
 (वायसं उड्ढापयन्त्याः प्रियो दृष्टः सहसेति ।
 अर्द्धानि वलयानि मह्या गतानि अर्द्धानि स्फुटितानि तटिति ॥)

१. कमलइं मेह्वि अलिउलइं करि-गण्डाई महन्ति ।
 असुलह-मेच्छण जाहं भलि ते ण वि दूर गणयन्ति ॥

(२६) अपभ्रंश में नपुंसक लिङ्ग में वर्तमान कान्त (जिसके अन्त में असहित क हो) शब्द से पर में आनेवाले सु (प्रथमा-एकवचन) और अम् (द्वितीया-एकवचन) के स्थान उं आदेश होता है। जैसे :—इसी अध्याय के नियम २२ की पाद टिप्पणी २ में तुच्छउं (तुच्छम्) है। और भग्गउं^१ (भग्गम्) इत्यादि को भी देखना चाहिए।

(२७) अपभ्रश में अकारान्त सर्वादि से पर में आनेवाले डसि (पञ्चमी-एकवचन) के स्थान में हाँ आदेश होता है। जैसे :—जहाँ होन्तउ आगदो, तहाँ होन्तउ आगदो (यस्मात् भवान् आगतः, तस्मात् भवान् आगतः) एवं कहाँ (कस्मात्)।

(२८) अपभ्रश में अकारान्त किम् (क) से पर में आनेवाले डसि के स्थान में इहे आदेश और क के अकार का लोप विकल्प से होता है। जैसे :—किहे^२ (कस्मात्), कहाँ (कस्मात्)।

(२९) अपभ्रंश में अकारान्त सर्वादि शब्दों से पर में आने वाले सप्तमी के एकवचन डि के स्थान में हि आदेश होता है।

(कमलानि मुक्त्वा अलिकुलानि करिगण्डान् कांक्षन्ति ।

असुलभम् एष्टु येषा निर्वन्धः ते नापि दूरं गणयन्ति ॥)

१. भग्गउं देखिखवि निअय-बलु, बलु पसरिअउं परस्सु ।

उम्मिल्लइ ससिरेह जिवं करि-करवालु पियस्सु ॥

(भग्गकं द्वा निजकं बलं बलं प्रसृतकं परस्सु ।

उन्मीलति शशिलेखा यथा करे करवालः प्रियस्सु ॥)

२. जइ तहें तुट्टउ नेहडा मइ सहुँ न वि तिल-तार ।

तं किहें वड्ढेहिं लोअणोहि जोइज्जउं सय-वार ॥

(यदि तस्याः श्रुत्वा तु स्नेहः मया सह नापि तिलतारः ।

तत् कस्मात् वक्राभ्यां लोचनाभ्यां दृश्ये (अहं) शतवारम् ॥)

जैसे:—जहि^१, तहि, एकहि (यस्मिन् , तस्मिन् , एकस्मिन्)

(३०) अपभ्रंश में अकारान्त यद्, तद् और किम् (य, त, क) से पर में आनेवाले षष्ठी के एकवचन डम् के स्थान में आसु आदेश विकल्प से होता है। और शब्द के टि (अ) का लोप भी होता है। जैसे:—जासु, तासु, कासु^२ (यस्य, तस्य, कस्य)।

(३१) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान यद्, तद्, किम् (या, ता, का) से पर में आनेवाले षष्ठी के एकवचन डम् के स्थान में विकल्प से अहे आदेश और टि (आ) का लोप भी होता है। जैसे:—जहे केरउ, तहे केरउ, कहे केरउ (गम्याः कृते, तस्याः कृते, कस्याः कृते)।

(३२) अपभ्रंश में सु और अम् (प्रथमा—द्वितीया के एकवचन) के पर में रहने पर यद् और तद् शब्दों के स्थान में

१. जहिं कप्पिज्जइ सरिण मरु छिज्जइ खविगण खवगु ।
तहिं तेहइ भड-घड-निवहिं कन्तु पयासठ मग्ग ॥
(यस्मिन् कल्प्यते शरेण शरः छियते खद्वेन खड्गः ।
तस्मिन् तादृशे भट घटा-निवहे कान्तः प्रकाशयति मार्गम् ॥)
२. कन्तु महारउ हलि सडिह निच्छइ रूसइ जासु ।
अत्थिहिं, सत्थिहिं हत्थिहिं वि ठाउ फेडड तासु ॥
(कान्तः अस्मदीयः हला सखिके निश्चयेन रुप्यति यस्य ।
अन्नैः शन्नैः हस्तैरपि स्थानमपि स्फोटयति तस्य ॥)
जीविउ कास न वल्लहडँ धणु पुणु कासु न इट्टु ।
दोणिण वि अवसर-निवडिअडँ, तिण सम गणइ विसिट्टु ॥
जीवितं कस्यै न वल्लभकं धन पुनः कस्य नेष्टम् ।
द्वे अपि अवसर-निपतितं तृणसमे गणयति विशिष्टः ॥

क्रमशः ध्रुं और त्रं आदेश विकल्प से होते हैं। जैसे:—प्रज्ञाण चिद्धिदि नाहु ध्रुं त्रं रणि करदि न भ्रान्ति (प्राज्ञणे तिष्ठति नाथः यत् गद् रणे करोति न भ्रान्तिम्); पक्ष में तं बोल्लिअइ जु निव्वहइ (तत् जल्पयते यन्निर्वहति) ।

(३३) अपभ्रंश में नपुंसक-लिङ्ग में वर्तमान इवम् शब्द के स्थान में सु और अम् के पर में रहने पर इषु आदेश होता है। जैसे:—इमु कुलु तुह तणउ; इमु कुलु देवखु (इव कुलु इत्यादि) ।

(३४) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया के एकवचनों में एतद् शब्द के स्त्रीलिङ्ग में एह, पुंलिङ्ग में एहो और नपुंसक में एहु रूप होते हैं। जैसे:—एह कुमारी, एहो नरु, एहु मणोरह-ठाणु (एषा कुमारी, एष नरः, एतन्मनोरथः स्थानम् ।)

(३५) अपभ्रंश जस्-शम् के आने पर एतद् शब्द के स्थान में एउ आदेश होना है। देखो—इसी अध्याय के नियम २ तथा ३ की पाइटिप्पणी एउ पेच्छ (एताउ प्रेक्षस्व) ।

(३६) अपभ्रंश में जस्-शम् के आने पर अदस् शब्द के स्थान में ओइ आदेश होता है। जैसे:—ओइ^१ ।

(३७) अपभ्रंश में इहा शब्द के स्थान में आय आदेश स्वादि विभक्तियों के पर में रहने पर होता है। जैसे:—आयइ (इमानि), आयेण (एतेन), आयहो (अस्य) इत्यादि ।

(३८) अपभ्रंश में सर्व शब्द के स्थान में साहु आदेश विकल्प से होता है। जैसे:—साहु वि लोउ; सव्वु विलोउ (सर्वोऽपि लोकः) ।

१ जउ पुच्छह घर वडाई तो वडा घर ओइ ।

विहलिअ-जण-अव्वुद्धरणं कन्तु कुडीरइ जोइ ॥

(यदि पृच्छथ गृहाणि महान्ति तद् महान्ति गृहाणि अमूनि ।

विदलितजनाभ्युद्धरणं कान्तं कुडीरके पश्य ॥)

(३६) अपभ्रंश में किम् शब्द के स्थान में काइं और कवण आदेश विकल्प से होते हैं । जैसे:—इसी अध्याय के नियम २१ की पादटिप्पणी एक में देखो—‘काइं न दूरे देखखइ’ (किं न दूरे पश्यति ?) और नियम २२ की पादटिप्पणी दो में ‘ताहँ पराई कवण घुण’ (तयोः परकीया का घुणा ?); ‘किं गज्जहि खल मेह’ (किं गर्जसि खल मेघ) ।

(४०) अपभ्रंश में युष्मद्, अस्मद्-विषयक नियमों को न लिख कर यहाँ हम उनके रूप ही लिख रहे हैं । ये रूप हेमचन्द्र के अनुसार हैं । नियमों के लिए उन्हीं के ४. ३६८ से ४. ३८१ तक सूत्रों को देखना चाहिए ।

अपभ्रंश में युष्मद् शब्द के रूप:—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तुहं	तुम्हे, तुम्हट
द्वितीया	पइं, तइं	तुम्हे, तुम्हइ
तृतीया	पइं, तइं	तुम्हेहि
पञ्चमी	तउ, तुज्झ, तुध्र (तुहु)	तुम्हहं
षष्ठी	” ” ” ”	तुम्हहं
सप्तमी	पइं, तइं	तुम्हासु

अपभ्रंश में अस्मद् शब्द के रूप:—

प्रथमा	हइं	अम्हे, अम्हइं
द्वितीया	मइं	अम्हे, अम्हइं
तृतीया	मइं	अम्हेहि
पञ्चमी	महु, मज्जु	अम्हहं
षष्ठी	महु, मज्जु	अम्हहं
सप्तमी	मइं	अम्हासु

(४१) अपभ्रंश में धातु से वर्तमान काल के प्रथम पुरुष के बहुवचन में तिङ् का आदेश 'हि' विकल्प से होता है । जैसे :—धरहि, करहिं, सहहिं^१ (धरतः, कुरुतः, शोभन्ते)

(४२) अपभ्रंश में धातु से, वर्तमान काल के मध्यम पुरुष के एकवचन में, तिङ् के स्थान में 'हि' आदेश विकल्प से होता है । जैसे :—रुअहि (रोदिषि), लहहि^२ (लभसे); पक्ष में रुअसि इत्यादि ।

(४३) अपभ्रंश में धातु से, वर्तमान काल के मध्यम पुरुष के बहुवचन में, आनेवाले तिङ् के स्थान में हु आदेश विकल्प से होता है । जैसे :—इच्छहु^३ (इच्छथ); पक्ष में—इच्छह ।

१. सुह-कवरि-बन्ध तहें सोह धरहि ।
नं मल्ल-जुज्झु ममिराह करहि ॥
(सुखकवरीबन्धौ तस्याः शोभां धरतः ।
ननु मल्ल युद्धं शशिराहू कुरुतः ॥)
तहें सहहिं कुरल भमर-उल-तुलिअ ।
नं तिमिर डिम्भ खेलन्ति मिलिअ ॥
(तस्याः शोभन्ते कुरलाः भ्रमरकुलतुलिताः ।
ननु भ्रमरडिम्भाः क्रीडन्ति मिलिताः ॥)
२. वप्पीहा पिउ पिउ भणवि कित्तिउ रुअहि ह्यास ।
तुह जलि महु पुणु वल्लहइ विहुँ वि न परिअ आस ॥
चातक (पपीहा) पिबामि पिबामि (प्रियः प्रियः)
भणित्वा कियत् रोदिपि हताश
तव जले मम पुनर्वल्लभे द्वयोरपि न पूरिता आशा ॥)
३. वलि-अचभत्थणि महु-महणु लहुईहुआ सोइ ।
जइ इच्छहु वट्ठणउ देहु भे मग्गहु कोइ ॥

(४४) अपभ्रंश में धातु से पर में आनेवाले वर्तमानकालिक उत्तम पुरुष के एकवचन तिङ् के स्थान में उं आदेश विकल्प से होता है । जैसे:—कडढउं (कर्षामि); पक्ष में कडढाम (कर्षामि)

(४५) अपभ्रंश में धातु से पर में आनेवाले वर्तमानकालिक उत्तम पुरुष के बहुवचन तिङ् के स्थान में हुं आदेश विकल्प से होता है । जैसे:—लहहुं^३, लभामहे^३); जाहुं (यामः); वलाहुं (वलामहे) ।

(४६) अपभ्रंश में हि और स्व के स्थान में इ, उ और ए ये तीनों आदेश विकल्प से होते हैं । इ जैसे:—सुमरि^३, मेळि (स्मर, मुञ्च); विलम्बु^३ (विलम्बस्त्र); करे^३ (करु) पक्ष में—सुमरहि इत्यादि ।

(बले: अर्धमर्थनं मधुमथनो लघुकीभूतः, मीऽपि ।

यदि इच्छथ मतत्त्वं दन मा मार्गयत कमपि ।।)

२. विहि विणउउ पीडन्तु गह मं धणि करहि बिसाउ ।

संपइ कहुँ वैम जिवं छुडु अग्घड ववसाउ ॥

(विधिर्विनाटयतु प्रहा पीडयन्तु मा धन्ये कुऽ विपादम् ।

संपदं कर्षामि वेषभिव यदि अर्षति व्यवसायः ॥)

३. खग्ग-विसाहिउ जहिं लहहुं पिय तहिं देसहिं जाहुं ।

रण दुब्भिवसें भग्गाडं विणु जुज्जे न वलाहुं ॥

(खड्ग-विसाधितं यत्र लभामहे तत्र देशे यामः ।

रणदुर्भिक्षेण भग्नाः विना युद्धेन न वलामहे ॥)

१. २. ३. कुजर सुमरि म सल्लहउ सरला सास म मेळि ।

कवल जि पाविय विहि-वसिण ते चरि माणु म मेळि ॥

भमरा एत्थु वि लिम्बडड के वि दियहडा विलम्बु ।

धण-पत्तलु छाया.बहुलु फुल्लइ जाम कयम्बु ॥

(४७) अपभ्रंश में भविष्यत्कालिक तिङ्-सवन्धी 'स्य' के स्थान में स आदेश विकल्प से होता है। जैसे :—'होसइ'; पक्ष में—'होहिइ (भविष्यति) ।

(४८) संस्कृत के 'क्रिये' इस क्रियापद के स्थान में अपभ्रंश में कीसु यह आदेश विकल्प से होता है। जैसे :—'तसु कन्तहों बलि कीसु (तस्य कान्तस्य बलि क्रिये) ।

संस्कृत धातुओं के अपभ्रंश में आदेश :—

धातु	आदेश	उदाहरण
भू (पर्याप्ति में)	हुच्च	अहरि पहुच्चइ ^३ नाहु (अधरे प्रभवति नाथः)
व्रू	व्रुव	व्रुवह ^३ सुहासिउ किपि (व्रूत सुभापित किञ्चिन्)
”	व्रोप्प	व्रोप्पिणु ^५ (उक्त्वा)

प्रिय एम्बहि करेँ स्ल्लु करि छडुहि तुहुँ करवालु ।

ज कावालिय बप्पुडा लेहिँ अभागु कवालु ॥

(कुञ्जर स्मर मा सल्लकीः सरलान् श्वासान् मा मुच्च ।

कवला ये प्राप्ता विधिवशेन तांश्वर मानं मा मुच्च ॥

अमर अत्रापि निम्बके कति दिवसान् विलम्बम्ब ।

घनपत्रवान् छायाबहुलः फुल्लति यावत्कदम्ब ॥

प्रिय एवमेव कुरु भल्लं करे त्यज त्व करवालम ।

येन कापालिका वराका लान्ति अभयं कपालम् ॥)

१. दिश्रहा जन्ति म्मडप्पडहिँ पडहिँ मनोरह पच्छि ।

ज अच्छइ तं माणिअइ होसइ करतु म अच्छि ॥

(दिवसाः यान्ति वेगैः पतन्ति मनोरथाः पश्चात् ।

यदस्ति तन्मान्यते भविष्यति कुर्वन् मा आस्व ॥)

२. हेम० ४. ३९०. ३ हेम० ५. ३९१. ४. हेम० ४. ३९१.

व्रज	वुञ	वुञइ, वुञेप्पि, वुञेप्पिणु ^१
दृश	प्रस्स	प्रस्सदि ^२
प्रह	गृण्ह	पढ, गुण्हेप्पिणु, ^३ व्रनु (पठगृहीत्वाव्रतम्)
तक्ष	छाल्ल	ससि छोल्लिज्जन्नु ^४ (शशी अतक्षिष्यत)
तापि	भलक्क	भासानलजाल भलक्किअउ ^५ (श्वासा- नलज्वालासन्तापितम् ।)
शल्ल्याय	खुडुक्क	हिअइ खुडुक्कइ ^६ (हृदये शल्ल्यायते)
गर्ज	घुडुक्क	घुडुक्कइ ^७ मेहु (गर्जति मेघः)

(४६) अपभ्रंश में पद के आदि में अवर्तमान किन्तु स्वर से पर में आनेवाले और असंयुक्त क, ख, त, थ, प, फ, वर्णों के स्थान में प्रायः ग, घ, द, ध, ब और भ क्रम से ही होते हैं । जैसे:—पिअमाणुसविच्छोह-गरु (प्रियमनुष्यवित्तोभकरम्); सुधिँ चिन्तिज्जइ माणु (सुखं चिन्त्यते मानः); कधिदु (कथितम्); सबधु (शपथम्); सभलउ (सफलम्) ।

(५०) अपभ्रंश में पद के आदि में अवर्तमान असंयुक्त मकार के स्थान में अनुनासिक वकार विकल्प से होता है । जैसे:—कवँलु, भवँरु (कमलम्, भ्रमरः); जिवँ, तिवँ (जिम, तिम) ।

(५१) अपभ्रंश में संयोग के बाद में आनेवाले रेफ का लुक् विकल्प से होता है । जैसे:—जइ केवँइ पावीसु पिउ (यदि

१. हेम० ४. ३९२.

२. हेम० ४. ३९३.

३. हेम० ४. ३९५.

४. हेम० ४. ३९५.

५. तुलना कीजिए—भोजपुरी के 'भ्ररकना' से । हेम० ४. ३९५.

६. 'काँटे जैसा आचरण करना' इस अर्थ में । हेम० ४. ३९५.

७. तुलना कीजिए—हिन्दी के 'घुडकना' से । हेम० ४. ३९५.

कथञ्चित् प्राप्स्यामि प्रियम्); पक्ष में—जइ भग्गा पारकडा तो सहि मञ्जु प्रियेण (यदि भग्नाः परकीयास्तत्सखि मम प्रियेण ।)

(५२) अपभ्रंश में कहीं-कहीं सर्वथा अविद्यमान रेफ भी होता देखा जाता है। जैसे:—ब्रासु महारिसि एंड भणइ (व्यासः महर्षिः एतद् भणति); 'कहीं-कहीं' ऐसा कहने से 'वासेण वि भारहखम्भि बद्ध (व्यासेनापि भारतस्तम्भे बद्धम् ।) में नियम लागू नहीं हुआ।

(५३) अपभ्रंश में आपद्, विपद्, और संपद् के अन्त्य ड् के स्थान में कहीं-कहीं इ हो जाता है। जैसे:—अणउ करन्तहा पुरिसहो आवइ आवइ (अनयं कुर्वतः पुरुषस्य आपद् आयाति); विवइ (विपद्); संपइ (संपद्); 'कहीं-कहीं' कहने से 'गुणहि' न संपय कित्ति पर' (उपर्युक्त नियम ७ की पादटिप्पणी ४) में संपइ न होकर सपय हुआ।

(५४) अपभ्रंश में कथं, यथा और तथा के थादि अवयवों के स्थान में हर एक के एम, इम, इह और इध ये चार आदेश होते हैं और पूर्व के टि का लोप होता है। जैसे:—'केम^१ (केव^२) समप्पउ दुट्ठु दिणु किध रयणी छुडु होय' (कथं समाप्यतां दुष्टं दिनं कथं रात्रिः शीघ्रं भवति ?) एवं किह; जेम (वँ), जिम (वँ), जिह, जिध, तेम (वँ), तिम (वँ), तिह तिध होते हैं।

(५५) अपभ्रंश में याट्श्, ताट्श्, कीट्श् और ईट्श् शब्द क्रमशः जेहु, तेहु, केहु और एहु रूप प्राप्त करते हैं। जैसे:—जेहु, तेहु, केहु, एहु^३ (याट्क्, ताट्क्, कीट्क्, ईट्क्)

१. तुलना कीजिए—गुजराती के केम, जेम और तेम से।

२. तुलना कीजिए—हिन्दी के क्यों, ज्यों और त्यों से।

३. मइं भणिअउ बलिराय तुहुं केहुड मग्गण एहु।

(५६) अकारान्त यादृश, तादृश, कीदृश और ईदृश के स्थान में जइस, तइस, कइम और अइस रूप होते हैं । जैसे:— जइसो, तइसो, कइसो और अइसो (यादृशः, तादृशः इत्यादि)

(५७) अपभ्रंश में यत्र के रूप जेत्यु और जत्तु तथा तत्र के रूप में तेत्थु और तत्तु होते हैं । जैसे:—जेत्यु, जत्तु (यत्र); तेत्थु, तत्तु (तत्र) ।

(५८) अपभ्रंश में यावत् के रूप जाम (जावँ), जाड, जामहि और तावत् के रूप ताम (तावँ), ताड, तामहि (तावत्) ।

जेहु तेहु न वि होइ बढ सइं नारायण एहु ॥

(मया भणितः बलिराज त्वं कीदृग् मार्गणः एव ।

यादृक् तादृक् जापि भवति मूर्त्त स्वयं नारायणः इदृक् ॥)

१ जड सो बलदि प्रयावदी केतु वि लेपिणु सिक्खु ।

जेत्थु वि तेत्थु वि एत्थु जणि भण तो तहि सारिक्खु ॥

(यदि स घटयति प्रजापतिः कृत्रापि लात्वा शिक्षाम् ।

यत्रापि तत्रापि अत्र जगति भण तदा तस्याः सदृशीम् ॥)

२. जाम न निबडड कुम्भ-यडि सीह-अवेड-चडक्क ।

ताम समत्तहें मयगलहें पद पइ बजद ढक्क ॥

(यावन्न निपतति कुम्भ-तटे सिंहचपेटाचटात्कारः ।

तावत्प्रमस्तानां मदकलानां पदे पदे वायते टक्का ॥)

तिलहें तिलत्तणु ताउं पर जाउं न नेह गलन्ति ।

जामहिं विसमी कज्ज-गइ जीवहे मज्जे एइ ॥

(तिलानां तिलत्वं तावत् परं यावत् न स्नेहा गलन्ति ।

यावत् विपमा कार्यगतिः जीवानां मध्ये आयाति ॥)

तामहिं अच्छउ इयर जणु सुअणु वि अन्तर देइ ।

(तावत् आस्तामितरः जनः सुजनोऽप्यन्तरं ददाति ॥)

(५६) अपभ्रंश में कुत्र के स्थान में केत्थु और अत्र के स्थान में एत्थु रूप होते हैं । जैसे:—केत्थु (कुत्र) ; एत्थु^१ (अत्र)

(६०) अपभ्रंश में (परिमाणार्थक) यावद् और तावद् के स्थान में जेवड और तेवड रूप विकल्प से होते हैं । इसी प्रकार (परिमाणार्थक) इयत् और कियत् के स्थान में एवड और केवड रूप विकल्प से होते हैं । जैसे:—जेवडु अन्तरु रावण रामहँ तेवडु अन्तरु पट्टण-गामहँ (यावदन्तरं रावणरामयोः तावदन्तरं पत्तन (पट्टण)-ग्रामयोः) एवं एवडु अन्तरु (इयत् अन्तरम्) ; केवडु अन्तरु (कियत् अन्तरम्) ।

(६१) अपभ्रंश में परस्पर के स्थान में 'अवरोप्पर' रूप होता है । जैसे:—अवरोप्परु जोअन्ताहं सामिउ गञ्जिउ जाहं (परस्परं युद्धच्यमानानां स्वामी पीडितः येषाम्) ।

(६२) अपभ्रंश में कादि (क + आदि) व्यञ्जनों में स्थित ए और ओ एवं पदान्त में वर्तमान उं, हुं, हिं ओर हं का लघु उच्चारण किया जाता है । जैसे:—अत्रु जु तुच्छुँ तहँ धणहे; बलि किजुँ सुअणस्सु; दइउ घडावइ वणि तरुहुं; तरुहुं वि वक्कलु; खग्ग विसाहिउ जहिं लहहुं; तणहँ तइज्जी भङ्गि न वि ।

(६३) प्राकृत के नियमानुसार जहाँ म्ह हुआ हो उसका (म्ह का) अपभ्रंश में म्भ होता है । जैसे:—संस्कृत में श्रीष्मः, प्राकृत में गिम्हो और अपभ्रंश में गिम्भो रूप होते हैं ।

(६४) अपभ्रंश में अन्यादृश शब्द के स्थान में अन्नाइस और अवराइस ये आदेश होते हैं । जैसे:—अन्नाइसो, अवराइसो (अन्यादृशः) ।

१. इन उदाहरणों के लिए इसी अध्याय के नियम ५७ की पाद-टिप्पणी २ देखो ।

नीचे कुछ अन्य संस्कृत शब्दों के अपभ्रंश रूप मात्र ही दिये जा रहे हैं। विशेष जानकारी के लिए हेमचन्द्र के व्याकरण का अवलोकन करना चाहिए।

संस्कृत	अपभ्रंश	हेम० सूत्र संख्या
प्रायः	प्राउ, प्राइव, प्राइम्ब, पग्गिम्ब	४. ४१४.
अन्यथा	अनु, अन्नह	४. ४१५.
कुतः	कउ, कहन्तिहु	४. ४१६.
ततः, तदा	तो	४. ४१७.
एवं	एम्ब	४. ४१८.
परम्	पर	” ”
समम्	समाणु	” ”
ध्रुवम्	ध्रुव	” ”
मा	मं	” ”
मनाक्	मणाउ	” ”
किल	किर	४. ४१९.
अथवा	अहवइ	” ”
दिवा	दिवे	” ”
सह	सहुं	” ”
नाहि	नाहि	” ”
पश्चात्	पच्छइ	४. ४२०.
एवनेय	एम्बइ	” ”
एव	जि	” ”
इदानीम्	एम्बहिं, एम्बाहि	” ”
प्रत्युत	पच्चलिउ	” ”
इतः	एत्तहे	” ”
विषण्णः	वुन्नउ	४. ४२१
उक्तम्	उत्तउं	” ”

वर्त्मनि	विच्चि	४. ४२१., ३५०.
शीघ्रम्	वहिल्लउ	४. ४२२.
कलहकारी	घञ्जल	" "
अस्पृश्यसंसर्ग	विट्टाल	" "
भयं	द्रवक्क	" "
आत्मीयम्	अत्पणं	" "
दृष्टि	द्रेहि	" "
गाढ	निच्चट्टु	" "
साधारण	सड्डल	" "
कौतुक	कोडु	" "
क्रीडा	खेडु	" "
रम्य	खण्ण	" "
अद्भुत	ढक्करि	" "
हे सखि	हेल्लि	" "
पृथक् पृथक्	जुअ जुअ	" "
मूढ	नालिउ, वढ	" "
नव	नवख	" "
अवस्कन्द	दडवड	" "
यदि	खुडु	" "
संबन्धी	केर, तण	" "
मा भैषीः	मब्भीसा	" "
यद् यद् दृष्टम्	जाइट्टिआ	" "
	हुहु ^१	४. ४२३.
	घुग्घ ^२	" "

१. शब्दानुकरण अर्थ में ।

२. चेषानुकरण अर्थ में ।

	घइं ^१	४. ४२४.
	खाइं ^२	” ”
	केहिं ^३	४. ४२५.
	तेहिं ^४	” ”
	रेसिं ^५	” ”
	रेसिं ^६	” ”
	तयोणं ^७	” ”
पुनः	पुणु	४. ४२६.
विना	विणु	” ”
अवश्यम्	अवसें अवस	४. ४२७.
एकशः	एकसि	४. ४२८.

(६५) अपभ्रंश में नाम (प्रातिपदिक) के आगे स्वार्थ में अ, अड, और उल्ल प्रत्यय होते हैं। और स्वार्थिक क प्रत्यय का लुक् भी होता है। जैसे:—वे दोसडा (द्वौ दोषी) कुडुळी (कुटी)।

विशेषः—जहाँ अड और उल्ल प्रत्यय होते हैं, वहाँ पूर्व के टि का लोप भी हो जाता है।

(६६) पूर्वोक्त नियमानुसार जो प्रत्यय किये जाते हैं तदन्त नाम से स्त्रीत्व अर्थ के द्योतन में ई प्रत्यय हो जाता है और टि का लोप भी हांता है। जैसे:—गोरड + ई = गोरडी।

(६७) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग के द्योतन करने वाले अ प्रत्ययान्त से पर में आने वाले प्रत्यय से पुनः आ प्रत्यय होता है। जैसे:—धूलि = धूल = धूलड = धूलडिआ (धूलिः)।

विशेषः—स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान नहीं रहने पर यह नियम लागू नहीं होता। जैसे:—कमडइ (कर्णे)।

(६८) अपभ्रंश में युष्मदादि शब्दों से पर में आने वाले ईय प्रत्यय का आर आदेश होता है । और उसके पूर्व के टि का लोप भी होता है । जैसे:—तुहारेण (युष्मदीयेन); अन्हारा (अस्मदीयम्); महारा (अस्मदीयः) ।

(६९) अपभ्रंश में इदम्, किम्, यद्, तद् और एतद् शब्दों से पर में आने वाले अतु प्रत्यय के स्थान में एत्तुल आदेश होता है और पूर्व के टि का लोप होता है । जैसे:—एत्तुलो, केत्तुलो, जेत्तुलो, तेत्तुलो ।

(७०) अपभ्रंश में सप्तम्यन्त सर्वादि से पर में आने वाले त्र प्रत्यय के स्थान में एत्तहे आदेश होता है । पूर्व के टि का लोप होता है । जैसे:—एत्तहे, तेत्तहे (अत्र, तत्र) ।

(७१) अपभ्रंश में त्व और तल प्रत्ययों के स्थान में प्रायः ष्पण आदेश होता है । जैसे:—बडुष्पणु (महत्त्वम्); पक्ष में—वडुत्तणहो (महत्त्वस्य) ।

(७२) अपभ्रंश में तव्य प्रत्यय के स्थान में इएव्वउं, एव्वउं और एवा ये तीन आदेश होते हैं । जैसे:—करिएव्वउ, मरिएव्वउं (कर्तव्यम्, मर्तव्यम्); सहेव्वउं (सोढव्यम्); सोएवा, जग्गेवा (स्वपितव्यम्, जागरितव्यम्) ।

(७३) अपभ्रंश में त्त्वा प्रत्यय के स्थान में इ, इउ, इवि, अवि, एप्पि, एप्पिणु, एवि और एविणु आदेश होते हैं । इ जैसे:—मारि (मारयित्वा); इउ जैसे:—भज्जिउ (भङ्क्त्वा), इवि जैसे:—चुम्बिवि (चुम्बित्वा); अवि जैसे:—विञ्छोडवि (विच्छोड्य); एप्पि जैसे:—जेप्पि (जित्वा); एप्पिणु जैसे:—चएप्पिणु (त्यक्तत्वा); एवि जैसे:—पालेवि (पालयित्वा); एविणु जैसे:—लेविणु (लात्वा) ।

(७४) अपभ्रंश में 'नुम्' प्रत्यय के स्थान में एव, अण, अणहं, अणहिं, एप्पि, एप्पिणु, एवि और एविणु ये आठ आदेश होते हैं । एवं जैसे:—देवं (दातुम्); अण जैसे:—करण (कर्तुम्); अणहं और अणहिं जैसे:—भुञ्जणहं, भुञ्जणहिं (भोक्तुम्); एप्पि, एप्पिणु, एवि और एविणु जैसे:—जेप्पि, चएप्पिणु, पालेवि और लेविणु (जेतुं, त्यक्तुं, पालयितुं और लातुम्) ।

विशेष:—गम धातु से एप्पिणु आने पर गम्पिणु और गमेप्पिणु रूप होते हैं । उसी तरह एप्पि के रहने पर गम्पि और गमेप्पि रूप होते हैं ।

(७५) अपभ्रंश में तृन् प्रत्यय के स्थान में अणअ आदेश होता है । जैसे:—मारणउ (ओ); बोल्लणउ (मारयिता, कथयिता) ।

(७६) अपभ्रंश में इव (उत्प्रेक्षा में) के अर्थ में नं, नउ, नाइ, नाइव, जणि, जणु ये छः रूप होते हैं ।

नं जैसे:—नं मल्ल जुञ्जु ससिराट्टु करहिं (ननु मल्लयुद्धं शशिराट्टु कुरुतः) नउ जैसे:—नउ जीवगलु दिण्णु । (ननु जीवार्गलो दत्तः) नाइ जैसे:—थाह गवेसइ नाइ । (स्तोवं गवेषयतीव) नावइ जैसे:—नावइ गुरु-मच्छर भरिउ । (ननु गुरु-मत्सर-भरितम्) जणि जैसे:—सोहइ इन्द्रनीलु जणि कणइ बइट्टु (शोभते इन्द्रनीलः ननु कनके उपवेशितः) जणु जैसे:—निरुवम-रसु पिपं पिएवि जणु । (निरुपमरसं प्रियेण पीत्तेव) ।

(७७) अपभ्रंश में लिङ्ग प्रायः बदलते रहते हैं। जैसे:—
गय-कुम्भइं (गजकुम्भानि । कुम्भ शब्द पुल्लिङ्ग है, किन्तु नपुंसक
के रूप में व्यवहृत हुआ है) ।

(७८) अपभ्रंश के शेष कार्य सौरसेनी के अनुसार किये
जाते हैं ।

इति शुभम् ।





परिशिष्ट

अक्षरानुक्रम शब्दसूची

अअं स्वस्वो शौ. ८. ४४.
 अइसुतयं १. ३३.
 अहसरिअं १. ८९.
 अहसो अप. ११. ५६.
 अउव्वं शौ. ८. ४४., पा. २. ९.
 अह्वंवलं १. २.
 अह्वो (वि.) २. १, ३. ३.
 अकखह (वि.) २. ३.
 अगणी ७. अ.
 अगरू (वि.) पा. २. १.
 अगिम्मि शौ. ८. ४४.
 अगुरू (वि.) २. १.
 अगगओ १. ४६.
 अग्गिअं अप. ११. १५.
 अग्गिण अप. ११. १५.
 अग्गिणी १. २.
 अग्गिअं अप. ११. १५.
 अग्गी ७. अ.
 अग्गो ३. ७., (वि.) २. १.
 अह्वो १. ३.
 अंकोल्ल तेह्लं (वि.) ३. ४०.
 अंकोल्लो ७. अ.
 अङ्गण १. ३७.
 अंगणं १. ३७.
 अङ्गारो शौ. ८. ४४ ७. अ.
 अङ्गु अप. (वि.) ११. ४.

अङ्गुलिअ अप. ११. २०.
 अङ्गुरिअं शौ. ८. ४३, ७. अ.
 अच्छअरं ७. अ., पा. १. ५७.
 अच्छह ६. ६.
 अच्छति पै. १०. १८.
 अच्छते पै. १०. १८.
 अच्छदि शौ. ८. १६.
 अच्छदे शौ. ८. १६.
 अच्छन्ति शौ. ८. ३७.
 अच्छति ६. ६.
 अच्छरसा (वि.) १. २०, १. २५.
 अच्छरा ३. २२, १. २५, १, २०.
 अच्छरा वावार ७ पा. १. २०.
 अच्छरिअ पा. १. ५७, ७. अ.
 अच्छरिअ ७. अ., पा. १. ५७.
 अच्छरीअ पा. १. ५७, ७. अ.
 अच्छरेहि पा. १. २५.
 अच्छ १. ४२.
 अच्छसि ६. ६.
 अच्छह ६. ६.
 अच्छामि ६. ६.
 अच्छामि ६. ६.
 अच्छिस्था ६. ६.
 अच्छो ३. १४; पा. १. ४१, १. ४२
 अच्छीहं १. ४१, पा० १. ४१.
 अच्छेर ७. अ., ३. २२, १. ५७. पा.
 १. ५७.

अजसो (वि.) २. १.
 अजिज्जइ ६. २६.
 अजोगो (वि.) २. १४.
 अज्ज-उत्त शौ. (वि.) ८. २.
 अज्जा १. ६५. ३. ५.
 अज्जो ७. अ., शौ. ८. ८
 अज्जाओ ३. २४.
 अज्जलीइ पा. १. ४४.
 अज्जली मा. ९. ८.
 अज्जातिसो पै. १०. १६.
 अटइ (वि.) २. ४.
 अट्टरइ ७. अ.
 अट्टाए दण्डो अर्द्ध. पा. १. ६.
 अट्टी ७. अ.
 अट्टो ७. अ.
 अट्टइ ७. अ.
 अणं ७. अ.
 अणित्तयं ७. अ.
 अणित्तयं १. ३३.
 अणुरुधिज्जइ ६. २६.
 अणुधा शौ. पा. २. ३.
 अणुणा पा. ३. ५.
 अणुणारिसो १. ८७.
 अणुरुद्धइ ६. २६.
 अणुणावअणुक्कण्ठो पा. १. १५.
 अणुलं (वि.) २. १.
 अत्ता ७. अ.
 अरिथि ६. ६, शौ. (वि.) ८. ३७.
 अदीहाउसमाणी पा. १. २५.
 अदो कारणादो शौ. ८. ४४.

अहं ७. अ.
 अहो ३. ३.
 अहं ७. अ.
 अधणो (वि.) २. ३.
 अधम्माय कुज्जइ अर्द्ध. पा. १. ६.
 अधीरो (वि.) २. ३.
 अनु अप. ११. ६४.
 अनुत्तेन्तो (वि.) पा. १. १९.
 अनुवत्तन्तो (वि.) पा. १. १९.
 अन्तरं १. ३७.
 अन्तरप्पा १. १९.
 अन्तरिदा १. १९.
 अन्ते-आरी ७. अ.
 अन्ते-उरं ७. अ.
 अंतरं १. ३७.
 अन्तावेइ १. ७.
 अन्दे-उरं शौ. ८. ३.
 अंधलो स्वा. प्र. ३. ४५.
 अन्तलं ७. अ.
 अन्तइ अप. ११. ६४.
 अन्नाइसो अप. ११. ६४.
 अन्नुअं ७. अ.
 अपारो (वि.) २. १.
 अपुरवं शौ. ८. १२.
 अपुरवागइ शौ. ८. १२.
 अपुव्व शौ. ८. १२.
 अपुव्वागइ शौ. ८. १२.
 अप्पज्जो ३. ५.
 अप्पणइआ (वि.) ४. ४१.
 अप्पणा ४. ४१.
 अप्पणिआ (वि.) ४. ४१.

अप्पणो ४. ४१.
 अप्पणं अप. ११. ६४.
 अप्पण्णू ३. ५.
 अप्पमत्तो (वि.) २. ९.
 अप्पं ४. ४१.
 अप्पा ४. ४१., ७. अ.
 अप्पाओ ४. ४१.
 अप्पाणम्मि ४. ४१.
 अप्पाणा ४. ४१.
 अप्पाणाओ ४. ४१.
 अप्पाणाण ४. ४१.
 अप्पाणाहितो ४. ४१.
 अप्पाणे ४. ४१.
 अप्पाणेण ४. ४१.
 अप्पाणेषु ४. ४१.
 अप्पाणेहि ४. ४१.
 अप्पाणो ४. ४१.
 अप्पाणं ४. ४१.
 अप्पाणस्स ४. ४१.
 अप्पाद्धो ४. ४१.
 अप्पाहितो ४. ४१.
 अप्पिअं १. ५८.
 अप्पुल्ल (वि.) ३. ४४.
 अप्पे ४. ४१.
 अप्पेह् १. ५८.
 अप्पेसुं ४. ४१.
 अप्पेहि ४. ४१.
 अप्फणो ६. ३९.
 अप्पञ्जं मा. ९. ८.
 अभिमञ्जू पै. १०. ४.
 असुगो (वि.) २. १.

असुजणो शौ. ८. ४४.
 असुणा ४. ४७.
 असुणो ४. ४७.
 असुम्मि ४. ४७.
 असु वणं शौ. ८. ४४.
 असु वहु शौ. ८. ४४.
 असुस्स ४. ४७.
 असु ४. ४७.
 अमू ४. ४७.
 अमूउ ४. ४७.
 अमूओ ४. ४७.
 अमूणे ४. ४७.
 अमूणो ४. ४७.
 अमूणं ४. ४७.
 अमूसु ४. ४७.
 अमूहि ४. ४७.
 अमूहितो ४. ४७.
 अम्बं ७. अ.
 अंबं १. ६७.
 अम्महे शौ. ८. २६.
 अम्मि हेरू., पा. ४. ४७., ४. ४७.
 अम्ह हेरू., पा. ४. ४७. शौ. ४. ४७.
 अम्हं हेरू., पा. ४. ४७. शौ. ४. ४७.
 अम्हह् अप. ४. ४८.
 अम्हह् अप. ११. ४०.
 अम्हकरं ३. १२.
 अम्हकेरो ३. ३७.
 अम्हकरं ३. १२.
 अम्हत्तो ४. ४७., हेरू., पा. ४. ४७.
 अम्हम्मि ४. ४७., हेरू., पा. ४. ४७.

अम्हसु ४. ४७. हेरू., पा. ४. ४७.
 अम्हं अप. ११. ४०.
 अम्हहे अप. ४. ४८.
 अम्हा ४. ४७.
 अम्हाण हेरू., पा. ४. ४७.
 अम्हाणं ४. ४७., शौ. ४. ४७., ८. ४४.,
 हेरू. पा. ४. ४७.
 अम्हातिसोपै . १०. १६.
 अम्हारा अप. ११. ६८.
 अम्हारिसो १. ८७., ३. २९.
 अम्हारो अप. (वि.) ३. ३८.
 अम्हासु अप. ११. ४०., हेरू., पा.
 ४. ४७.
 अम्हासुंतो हेरू. पा. ४. ४७.
 अम्हाहि हेरू. पा. ४. ४७.
 अम्हाहिं ४. ४७.
 अम्हाहितो हेरू. पा. ४. ४७.
 अग्निह ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 अग्ने ४. ४७., शौ. ८. ४४., ८. ४०.,
 ४. ४७., अप. ११. ४०., ४. ४८.,
 हेरू. पा. ४. ४७.
 अग्नेपृथ्व १. ४८.
 अग्नेष्वयं ३. ३८.
 अग्नेष्व १. ४८.
 अग्नेसु हेरू. पा. ४. ४७., शौ. ४. ४७.
 अग्नेसुंतो हेरू. पा. ४. ४७.
 अग्नेहि अप. ११. ४०, ४. ४७.
 शौ. ४. ४७.
 अग्नेहि अप. ४. ४८, हेरू. पा.
 ४. ४७.
 अग्नेहितो अप. ४. ४८, शौ. ४. ४७.

अग्नेहो ४. ४७. हेरू. पा. ४. ४७.
 अयम्मि ४. ४७, (वि.) ४. ४७.
 अया (वि.) ४. २९.
 अय्य मा. ९. ७.
 अय्यउत्त शौ. ८. ८.
 अय्युणे मा. ९. ७.
 अरहतो ७. अ.
 अरहो ७. अ.
 अरिहतो ७. म.
 अरिहो ७. अ.
 अरुहतो ७. अ.
 अरुहो ७. अ.
 अलचपुरं ७. अ.
 अलसी ७. अ.
 अल्लिभं १. ७३.
 अल्लिउल्लं अप. ११. २५.
 अलीभं (वि.) १. ७३.
 अलाउं ७. अ.
 अलाऊ २. १२, ७. अ.
 अलावू २. १२.
 अल्लं ७. अ.
 अवभवो (वि.) २. १४.
 अवभासो १. ९४.
 अवगभं (पि.) १. ९४.
 अवजसो (वि.) २. १४.
 अवज्जं ३. २३
 अवञ्जा मा. ९. ८.
 अवडो ७. अ.
 अवरणहो ३. २८.
 अवराहसो अप. ११. ६४.
 अवरिहो स्वा. प्र. ३. ४५.

अवरुचं शौ. पा. २. ९.
 अवरोप्परु अप. ११. ६१.
 अवस अप. ११. ६४.
 अवसदो (वि.) १. ९४.
 अवसरह १. ९४.
 अवसं अप. ११. ६४.
 अवहड ७. अ.
 अव्वह्ज्जं शौ. ८. ४४.
 अव्वह्ज्जणं शौ. ८. ४४.
 अव्वह्ज्ज शौ. ८. ४४.
 अस्तवदी मा. ९. ६.
 अस्मासु अप. ४. ४८.
 अस्स ४. ४७.
 अस्सि ४. ४७.
 अस्सो १. ५२.
 अस्सं १. ६७.
 अह (वि.) ४. ४७.
 अहअं ४. ४७.
 अहके मा. प्रा. प्र. ९. १६, मा. (वि.)
 ९. १६.
 अहरिम ४. ४७.
 अहयं हेरु., पा. ४. ४७.
 अहरुट्ट १. ६७.
 अहव १. ६१.
 अहवह अप. ११. ६४
 अहवा १. ६१.
 अहं ४. ४७, हेरु., पा. ४. ४७, शौ.
 ४. ४७, ८. ४४.
 अहाजाअ (वि.) २. १४.
 अहिअं २. ३.
 अहिआई १. ५२.

अहिजाई पा. १. ५२.
 अहिजो ३. ५., (वि.) १. ५६.
 अहिण्णू १. ५६., ३. ५.
 अहिमज्जू ७. अ.
 अहिमज्जू ७. अ.
 अहिमज्जूकुमाले मा. ९. ८.
 अहिमण्णू शौ. ८. ४४.
 अहिमण्णू ७. अ.
 अहिमुंको १. ३३.
 अहेसि (वि.) ६. ८.
 अंसुं १. ३३.
 अंसो १. ३२.

आ

आअओ ७. आ.
 आअदो २. ६.
 आअरिओ ७. आ
 आहदी २. ६.
 आहरिओ ७. आ.
 आउण्टणं आ. (वि.) २. १.
 आउदी २. ६.
 आपण अप. ११. ३७.
 आओ ७. आ.
 आओज ७. आ.
 आगमण्णू १. ५६.
 आगरिसो (वि.) २. १.
 आगारो (वि.) २. १.
 आचस्कादि मा. ९. १२.
 आढत्तो ७. आ.
 आढप्पह ६. २६.

आठवीअह ६. २६.
 आठिओ ७. आ.
 आणा ३. ५.
 आणालं ७. आ.
 आणिअं १. ७३.
 आत्तमाणो ७. आ.
 आदरो (वि.) २. १.
 आफंसो ७. आ.
 आमेलो ७. आ.
 आयइं अप. ११. ३७.
 आयहो अप. ११. ३७.
 आयासं (वि.) १. ६७.
 आरद्धो ७. आ.
 आरम्भो १. ३७.
 आरंभो १. ३७.
 आलले मा., प्राप्र. ९. १६.
 आलिट्टं ७. आ.
 आलिद्धं ७. आ.
 आलिहिदा २. ३.
 आली ७. आ.
 आवह अप. ११. ५३.
 आवत्तओ (वि.) ३. २१.
 आवत्तणं (वि.) ३. २१.
 आवत्तमाणो ७. आ.
 आसि (वि.) ६. ८.
 आसीसा ७. आ.
 आसीसय ७. आ.
 आसो १. ५१., १. ५२.
 आस्सं शौ. (वि.) ८. ३७.
 आहरणं २. ३.
 आहिजाई १. ५२.

आहिजाई पा. १. ५२.

इ

इ हेरू., पा. ४. ४७.
 इअ (वि.) १. ५०.
 इअ ठअह० १. ६९.
 इअ जं० १. ६९.
 इअमि ४. ४७.
 इअं (वि.) ४. ४७.
 इअ बाला शौ. ८. ४४.
 इआणि १. ३६.
 इआणिं १. ३६.
 इआणीं ७. इ.
 इङ्गालो १. ३., ७. इ.
 इङ्गिअजो ३. ५., शौ. ८. ४४.
 इङ्गिअजो शौ. ८. ४४.
 इङ्गिअणू ३. ५.
 इङ्गिअणो शौ. ८. ३१.
 इङ्गुअं ७. इ.
 इङ्गुदी-पुसं ३. ४०.
 इङ्गुह अप. ११. ४३.
 इङ्गुहु अप. ११. ४३.
 इट्टाखुणं व्व (वि.) ३. १८.
 इट्टी १. ८१., ७. ई.
 इणो ४. ४७.
 इणं (वि.) ४. ४७.
 इणं धणं शौ. ८. ४४.
 इत्तिअं ३. ४१, ७. इ.
 इत्तो ४. ४७.
 इत्थी शौ. ८. ३८, प्रास. ८. ४५.
 इदरसित्वा शौ. ८. ४१

इक्षहणू २. ३.
 इक्षो ४. ४७, शौ. ८. ४४.
 इदं (वि.) ८. ४७.
 इदं वणं ८. ४४.
 इध शौ. ८. १०.
 इन्ध (वि.) २. १.
 इमस्स ४. ४७.
 इमस्सि ४. ४७.
 इम ४. ४७.
 इमादो ४. ४७.
 इमाणं (वि.) ४. ४७, ४. २९.
 इमाए ४. २९
 इमिभा (वि.) ४. ४७.
 इमिणा ४. ४७.
 इमिप ४. २९.
 इमीणं ४. २९.
 इसु अप. ११. ३३.
 इमे ४. ४७.
 इमेण ४. ४७.
 इमेहिं ४. ४७
 इमेहितो ४. ४७.
 इमो ४. ४७.
 इसि १. ५४, पा. १. ५४.
 इसी १. ८१, १. ८६.
 इह ४. ४७.
 इहं १. ३१.
 ईक्खू ७. ई.
 ईदिशाह मा. ९. १४.
 ईदिसं शौ. ८. ४४.
 ईयग्मि (वि.) ४. ४७.
 ईसरो ३. ८, (वि.) १. ६७.

ईसि ७. इ.
 ईसालू ३. ४४.

उ

उइदं २. १.
 उऊ ७. उ., (वि.) २. ६.
 उक्कत्तिओ (वि.) ३. २१.
 उक्करो पा. १. ५७, ७. उ.
 उक्कण्ठा (वि.). १. १९, १. ३७.
 उक्कंठा १. २, १. ३७., १. ३२.
 उक्का ३. ३., १. २.
 उक्किट्टं ८. ८१.
 उक्केरो. ५. ५७, ७ उ., पा. १. ५७.
 उक्को पा. ३. ६.
 उक्कोस ६. ३९.
 उक्खअं १. ६१.
 उक्खअं १. ६१.
 उच्चअं ७. उ.
 उच्छण्णो (वि.) १. ७७.
 उच्छवो ७. उ.
 उच्छाहो ३. २२. (वि.) १. ७७. ७. उ.
 उच्छुओ ७. उ.
 उच्छू ३. १४., ७. उ.
 उजू १. ८३.
 उज्जू १. ८६., ७, उ, ३. ११.
 उज्ज हेरू., पा. ४. ४७.
 उज्जेहिं ४. ४७. हेरू. पा. ४. ४७.
 उट्टो (वि.) ३. १८.
 उट्टवरो ७. उ.
 उण्णयं १. १७.
 उण्णीसं ३. २८.

उत्तिमो १. ५४.
 उत्थारो ७. उ.
 उत्थिदो शौ. ८. ४४.
 उत्थेदि शौ., प्रास. ८. ४५.
 उदू ७. उ., १. ८३, १. ८६, २. ६
 उद्धं ७. उं.
 उपसगो २. ८.
 उपपलं ३. १.,
 उपपाओ (वि.) पा. १. १९, ३. १.
 उबुरुज्जह ६. २६.
 उबुरुह ६. २६.
 उबभ हेरू. पा. ४. ४७.
 उबभं ७. उ.
 उम्बरं १. ३.
 उम्बरो ७. उ.
 उम्ह हेरू. पा. ४. ४७.
 उम्हत्तो हेरू. पा. ४. ४७.
 उम्हाण हेरू. पा० ४. ४७.
 उम्हाणं हेरू. पा० ४. ४७.
 उम्हे ४. ४७.
 उम्हेहिं ४, ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 उम्हं ३. २९.
 उरह हेरू. पा. ४. ४७.
 उरहत्तो हेरू. पा. ४. ४७.
 उम्हं हेरू. पा. ४. ४७.
 उम्हेहिं हेरू. पा. ४. ४७.
 उल्लखलं ७. ३.
 उल्लहलो शौ. ८. ४४.
 उल्लेह ७. उ.
 उल्लं ७. उ.
 उवज्जाओ ३. २४.

उवणिभं १ ७३.
 उवणीओ १. ७३.
 उवमा २. ९.
 उवरं (वि.) पा. १. १९.
 उवरि शौ. ८. ४४.
 उवरिं १. ३३; ७. उ.
 उवस्तिदे मा. ९. ६.
 उवहसमाणि ६. १३.
 उविवगो (वि.) ३. ३.
 उव्वीढं ७. उ.
 उव्वुं ७. उ.
 उव्वल्लदि मा. ९ १०.
 उसहो १. ८३., ७. उ., १८६.
 उसमा मा. ९. ४.
 उभासो १ ९५.
 उच्छुओ १. ७७.
 उज्जा १. ६५.
 उजओ १. ७७.
 उजसवो (वि.) १. ६७., ७. उ.
 उजसरो ३. ३५.
 उजसरो ७. उ.
 उजसारिओ (वि.) ३. २२.
 उजसित्तो १. ७७.
 उजसुओ १. ७७., ७. उ.
 उजसो १. ५१.
 उहसिभं १. ९५.
 ऋ
 ऋणं १. ८६.
 ए
 ए हेरू. पा. ४. ४७.
 एअ (वि.) पा. १. १९.

एअग्नि (वि.) ४. ४७.

एअस्स ४. ४७

एअरिंस ४. ४७.

एअं (वि.) पा. १. १९., वि. २. ६.

एआ (वि.) ४. ४७.

एआउ (वि.) ४. ४७.

एआप् ४. २९.

एआओ ४. ४७., (वि.) ४. ४७.

एआणं ४. २९.

एआरह ७. ए.

एआरिसो १. ८७.

एआहि (वि.) ४. ४७.

एआहितो (वि.) ४. ४७.

एह पेच्छ अप. ११. ३५.

एईप् ४. २९.

एईणं ४. २९.

एएसि ४. ४७.

एएसु ४. ४७.

एएहि ४. ४७.

एओ ३. १२.

एओ एस्थ १. १२.

एकसि ७. ए.

एकल्लो स्वाप्र. ३. ४५.

एकईआ ७. ए.

एकल्लो स्वाप्र. ३. ४५.

एकसिअं ७. ए.

एकसि अप. ११. ६४.

एकहि अप. १. २९.

एकारो ७. ए.

एको ३. १२.

एगभा ७. ए.

एगत्तणं (वि.) २. १.

एगो (वि.) २. १.

एण ४. ४७.

एपिंह ७. ए.

एते ४. ४७.

एतेहिं ४. ४७.

एतेहितो ४. ४७.

एतं ४. ४७

एत्तहे अप. ११. ७०., ११. ६४.

एत्ताहे ७. ए. (वि.) ४. ४७.

एत्ताहो ४. ४७.

एत्तिअमत्तं १. ६६.

एत्तिअमेत्तं १. ६६.

एत्तिअं ३. ४२.

एत्तिकं शौ., प्रास. ८. ४५.

एत्तिलं ३. ४२.

एत्तुलो अप. ११. ६९.

सत्तो ४. ४७. (वि.) ४. ४७.

एस्थ पा. १. ५७., ४. ४७.

एस्थु अप. ११. ५९.

एदस्स ४. ४७.

एदाओ शौ. ८. २.

एदाणं ४. ४७.

एदाहि शौ. ८. २.

एदिणा ४. ४७.

एदे ४. ४७.

एदेण ४. ४७.

एदेसु ४. ४७.

एदेहिं ४. ४७.

*एदहं ३. ४२.

एद्व अप. ११. ६४.

एम्बह् अप. ११. ६४.
 एम्बहि अप. ११. ६४.
 एम्बहिं अप. ११. ६४.
 एयाए महिमाए पा. १. ४४.
 एरावणो १. ८८., ७. ए.
 एरिसो १. १७., ७. ए.
 एलया (वि.) ४. २९.
 एव १. ३६.
 एवहु अप. ११. ६०.
 एवमेदं शौ. ८. २१.
 एवं १. ३६.
 एवं णेदं शौ. ८. २१.
 एव्व (वि.) पा. १. १९.
 एव्वं (वि.) पा. १. १९.
 एणे मा. (वि.) ४. ५., मा. ९. २.
 एशे पुल्लिंशे मा. प्राप्र. ९. १६.
 एशि लाभा मा. प्राप्र. ९. १६.
 एस ४. ४७.
 एसा अच्छी १. ४१.
 एसा अंजली १. ४४.
 एसा गरिमा १. ४४.
 एसा बाहा १. ४५.
 एसा महिमा १. ४४.
 एसु ४. ४७.
 एसो ४. ४७.
 एसो अजली १. ४४.
 एसो गरिमा १. ४४.
 एसो जणो शौ. ८. ४४.
 एसो बाहू १. ४५.
 एसो महिमा १. ४४.
 एह अप. ११. ३४.

एहिं ४. ४७.
 एहु अप. ११. ३४., ११. ५५.
 एहो अप. ११. ३४

ऐ ७. ऐ.

ओ

आआसो १. ९४., १. ९५.
 ओह् अप. ११. ३६.
 ओक्खलं ७. उ.
 ओप्पिअं १. ५८.
 ओप्पेह् १. ५८.
 ओमालं १. ४७.
 ओमल्लं १. ४७.
 ओली ७. ओ.
 ओल्लेह् ७. ओ.
 ओसठ ७. ओ.
 ओसरह् १. ९४.
 ओसहं ७. ओ.
 ओसिअन्तो १. ७३.
 ओहणं १. ९४.
 ओहसिअं १. ९५.

क

कअगाहो १. २., २. १.
 कअणं ७. क.
 कअं १. ८०., (वि.) २. ६.
 कअंओ ७. क.
 कअम्बो ७. क.
 कअलं ७. क.
 कहअवं ७. क.
 कहआ ४. ४७.

कहमे ७. क.
 कहरवं १. ९०.
 कहलासो १. ९०.
 कहवाहं ७. क.
 कहसो अप. ११. ५६.
 कई २. १.
 कउ अप. ११. ६४.
 कउक्खेअओ १. ९३.
 कउरओ १. ९३.
 कउला १. ९३.
 कउह ७. क.
 कउहा० पा. १. २६., १. २६.
 ककुध ७. क.
 ककुहा ७. क.
 कंकोडो १. ३३.
 कच्च पै. प्राप्र. १०. २१.
 कच्चु अप. ११. १.
 कज्जभा शौ. ८. ४४.
 कज्जपरवसो शौ. ८. ८.
 कज्ज ३. २३.
 कञ्चुओ १. १.
 कञ्चुइभा शौ. ८. ४.
 कञ्चुओ १. ३७.
 कंत्तुओ १. ३२., १. ३७.
 कञ्जभा शौ. ८. ४४.
 कञ्जा पै. प्राप्र. १. २१., शौ. ८. ३०.
 कञ्जका पै. १०. ४.
 कञ्जकावलणं मा. ९. ८.
 कट्टं ३. १८.
 कडणं ७. क.
 कडुअ शौ. ८. १४.

कडे मा प्राप्र. ९. १६.
 कड्डउं अप. ११. ४४.
 कड्डामि अप. ११. ४४.
 कणअं २. ८.
 कणवीरो ७. क.
 कणेरू ७. क.
 कण्टओ १. ३७.
 कंटओ १. ३७.
 कण्डं १. ३७.
 कण्डुअणं ७. क.
 कंड १. ३७.
 कणभा शौ. ८. ४४.
 कण उर (वि.) १. २.
 कण्णा शौ. ८. ३०.
 कण्णिआरो ७. क.
 कण्णोरो ७. क.
 कण्हो ७. क., ३. २८, (वि.) १. ८१.
 कत्तरी (वि.) ३. २१.
 कत्तिओ (वि०) ३. २१.
 कत्तो ४. ४७.
 कत्थ शौ. ८. ४४, ४. ४७.
 कदो शौ. (वि.) ४. ४७, ४. ४७.
 कधं शौ. ८. ४४, ८. ९.
 कधिहु अप. ११. ४९.
 कधेदि शौ प्रास. ८. ४५.
 कंधा (वि.) २. ३.
 कन्दो ७. क.
 कन्नडइ अप. (वि.) ११. ६७.
 कबन्धो शौ. ८. ४४.
 कमढो २. ४.
 कमंधो ७. क.
 कमळइं अप. ११. २५.

कमळं पै. १०. ७.
 कम्पो (वि.) ३. ३२.
 कम्पह् (वि.) २. ९, १. ३७.
 कम्पह् १. ३७.
 कम्मसं (वि.) ३. ३.
 कम्माह मा. ९. १४.
 कम्मि ४. ४७.
 कम्मो १. ३९.
 कम्हा ४. ४७.
 कम्हारो ३. २९, ७. क.
 कयग्गहो पा. २. १.
 कय्ये मा. प्राप्र. ९. १६.
 कर ६. २८.
 करण अप. ११. ७४.
 करणिज्जं २. १५.
 करळा ७. क.
 कररुहो १. ४३.
 कररुहं १. ४३.
 करहि अप. ११. ४१.
 कराविअह् ६. १९.
 कराविज्जह् ६. १९.
 कराविअं ६. १९.
 करिण्णवउ अप. ११. ७२.
 करिणी (वि.) ४. २९.
 करिज्जह् ६. २६.
 करिदूण शौ. ८. १४.
 करिय शौ. ८. १४.
 करिस (वि.) ६. २८.
 करिसो १. ७३.
 करिसिदि शौ. ८. १७.
 करीसो (वि.) १. ७३.

करे अप. ११. ४६.
 करेमि शौ. ८. ३५.
 कळभो १. ६१.
 कळम्बो १. ३७, ७. क.
 कळंबो १. ३७.
 कळाभो २. ९.
 कळिहि अप. ११. १३.
 कळे मा. ९. ३.
 कल्हारं ३. ३१.
 कवण अप. (वि.) ४. ४७. ११ ३९
 कवँल्लु अप. ११. ५०.
 कवट्टिअं ७. क.
 कवोळो २. ९.
 कववं (वि.) ३. ३.
 कसटं पै. १०. १३, प्राप्र. १०. २१.
 कसणो ७ क.
 कसं ७. क.
 कसिणो ७. क., पा. ३. ६.
 कसिणं ७. क.
 कसटं मा. ९. ४.
 कस्स ४. ४७.
 कस्सि ४. ४७.
 कस्सि शौ. ८. ४४.
 कह १. ३६.
 कहन्तिहु अप. ११. ६४.
 कहमवि १. ४९.
 कहं २. ३. शौ. ८. ९., १. ३६., अप
 (वि.) ४. ४७.
 कहं पि १. ४९.
 कहावणो ३. ९., ७. क.
 कहां अप. ११. २७., ११. २८.

कहां अप. (वि.) ४. ४७.
 कहि शौ. ८. ४४.
 कहिं ४. ४७.
 कहे अप. ११. ३१.
 कहेहि २. ३.
 कं ४. ४७.
 कम १. ६३, १. ३६.
 कंमो १. ३२.
 कंसिओ १. ६३.
 कंसुभं ७. क.
 का (वि.) ४. ४७.
 काइ अप. (वि.) ४. ४७.
 काइमो ६. ८.
 काइ अप. ११. ३९.
 काउणं १. ३४.
 काउणो ७. क.
 काऊण ३. ३६., (वि.) ६. १६.,
 १. ३४.
 काए ४. ३२.
 काओ ४. ३२.
 काख अप. ११. १.
 काणं ४. ४७.
 कामीअदि शौ. ८. ४२.
 कारिदाणि मा. प्राप्र. ९. १६.
 कारिअं ६. १९.
 कारिज्जइ ६. १९.
 कालओ १. ६१.
 काला ४. २०., ४. ४७.
 कालाअसं ७. क. (वि.) पा. १. १९.
 कालासं (वि.) पा. १. १९., ७. क.
 काली ४. २९.

कालो (वि.) २. १.
 कास ४. ४७.
 कासइ १. ५१.
 कासओ १. ५१.
 कासवो १. ५१., २. ९.
 कासी ६. ७.
 कासु अप. (वि.) ४. ४७., अप.
 ११. ३०., ४. ३२.
 कासं १. ३६.
 काहं ६. ८, ६. ९.
 काहावणो ७. क.
 काहिइ ६. ८
 काहिस्था ६. ८.
 काहिमि ६. ८., ६. ९.
 काहिसि ६. ८.
 काहिंति ६. ८.
 काही (वि.) १. ९., ६. ७.
 काहीअ ६. ७.
 काहे ४. ४७.
 कि १. ३६.
 किअ (वि.) ४. ४७.
 किअ २. १.
 किई १. ८१.
 किअं १. ८१.
 किअी ७. क., पा. ३. ६.
 किअळं १. ८१.
 किअदि ८. १६.
 किअदे शौ. ८. १६.
 किणा ४. ४७.
 किणहो (वि.) १. ८१.
 किन्ती (वि.) ३. २१.

किञ्च अप. ११. ५४.
 किञ्चत अप. ११. १.
 किंति १. ५०.
 किमवि १. ४९.
 किमेदं शौ. ८. २१.
 किर अप. ११. ६४.
 किरातो शौ. ८. ४४.
 किरिभा ७. क.
 किलिट्ट ३. ३२.
 किलिण्णं ३. ३२., ७. क.
 किलिञ्चल अप. ११. १.
 किलिस्सह ३. ३२.
 किलेमो ३. ३२.
 किषणो १. ८१.
 किवा १. ८१.
 किवाणं १. ८१.
 किविणो १. ५४.
 किवो १. ८१.
 किसरं ७. क.
 किसरो १. ८१.
 किसलअं ७. क.
 किमलं ७. क.
 किमाण् १. ८१.
 किसिओ १. ८१.
 किमो १. ८१.
 किसं ७. क.
 किसुअं ७. क.
 किह अप. ११. ५४.
 किहे अप. ११. २८.
 किं अप. ११. ३९., (वि.) ४. ४७.,
 १. ३६.

किं षोदं शौ. ८. २१.
 किंपि १. ४९.
 किसुअं १. ३६., ७. क.
 किसुओ शौ. ८. ४४., (वि.) १. ३७.
 किस्सा (वि.) ४. ४७.
 कीप् (वि.) ४. ४७., ४. ३२.
 कीआ (वि.) ४. ४७.
 कीई (वि.) ४. ४७.
 कीओ ४. ३२.
 कीदिसं शौ. ८. ४४.
 कीणो ४. ४७.
 कीरह् ६. २६.
 कीरते पै. १०. १५.
 कीलह् २. ४.
 कीम ४. ४७.
 कीसु अप. ११. ४८., ४. ३२.
 कीसे (वि.) ४. ४७.
 कुऊहलं ७. क.
 कुक्खेअओ १. ९३.
 कुच्छेअअं ७. क.
 कुट्टम्बकं पै. १०. १०.
 कुड्ढुह्णी अप. ११. ६५.
 कुढारो २. ४.
 कुतुम्बकं पै. १०. १०.
 कुदो (वि.) १. ४६., शौ. ८. ४४.
 कुप्प ६. ३८.
 कुप्पलं ३. १६.
 कुब्जं ७. क.
 कुमरो १. ६१.
 कुमारो १. ६१.
 कुमारी शौ. ८. ४४., (वि.) ४. २९.

कुम्हण्डो शौ. ८. ४४.

कुरुचरा ४. २८.

कुरुचरी ४. २८.

कुलभं (वि.) पा. १. १९.

कुलं १. ४१., ४. ४१.

कुलाईं ४. ३९, ४. ४१.

कुलाईं ४. ३९.

कुलाणि ४. ४१., ४. ३९.

कुलदाहिपो १. ११.

कुलो १. ४१.

कुल्ला (वि.) ३. ३.

कुत्रलभं (वि.) पा. १. १९.

कुसुम पयरो ३. १०.

कुसुम पयरो ३. १०.

कुसो २. १९.

कुंपलं १. ३३.

के ४. ४७.

केढवो ७. क., १. ८८.

केण ४. ४७.

केणवि १. ४९.

केणावि १. ४९.

केत्तिभं ३. ४२.

केत्तिलं ३. ४२.

केत्तुलो अप. ११. ६९.

केत्थु अप. ११. ५९.

केद्दह ३. ४२.

केम अप. ११. ५४.

केर अप. ११. ६४.

केरवं १. ९०.

केरिसो १. ८७., ७. क.

केलं ७. क.

केलासो १. ८८., १. ९०.

केली ७. क.

केवट्टो ३. २१.

केवड्डु अप. ११. ६०.

केवं अप. ११. ५४.

केसरं ७. ६.

केसवो पै. प्राप्र. १०. २१.

केसि ४. ४७.

केसु ४. ४७.

केसुभं १. ३६., ७. क.

केसुओ शौ. ८. ४४.

केहिं अप. ११. ६४., ४. ४७.

केहितो ४. ४७.

केहु अप. ११. ५५.

कैअवं पा. १. १., १. ८९.

को ४. ४७.

कोउहलं ३. १२.

कोउहल्ल ७. क., ३. १२.

कोऊहलं ७. क.

कोट्टिमं १. ७९.

कोंढं (वि.) २. ४.

कोत्थुहो १. ९१.

कोदूहल शौ. ८. ४४.

कोन्तलो १. ७९.

कोंचा १. ९१.

कोड्डु अप. ११. ६४.

कोप्परं ७. क.

कोमुई १. ९१.

कोसलो (वि.) १. ९३.

कोसंबी १. ८१.

*कोसिओ १. ९१.

कोस्तागालं मा. ९. ५.
 कोहडी ७. ६.
 कोहणडी ७. क.
 कोहलं ७. क.
 कोहली ७. क.
 कौच्छेअअं ७. ६.
 कौरवा पा. १. १.
 कखु शौ. ८. ४५.
 ख
 खहअं १. ६१.
 खहभो ७. ख.
 खभो ३. १३.
 खगं १. ४३.
 खगो १. २., ३. १., १. ४३.
 खन्दो ७. ख.
 खंधावारो ३. १७.
 खंभो ३. १७.
 खट्टा (वि.) २. ४.
 खट्टगो (वि.) २. ४.
 खणौ ३. १५., ७. ख. शौ. ८. ४४.
 खण्डिभो ७. ख.
 खण्ण अप. ११. ६४.
 खण्णू ३. १२.
 खप्परं ७. ख.
 खमा ७. ख.
 खमभो पा. ३. ६.
 खंभो ७. ख.
 खलिअं पा. ३. ६., ३. १., पा. ३. १.
 खल्लीडो ७. ख.
 खसिभो ७. ख.
 खाभइ ६. ३६.

खाइ ६. ३६.
 खाइअं १. ६१.
 खाइं अप. ११. ६४.
 खाणू ३. १२., ७. ख.
 खासिअं ७. ख.
 खित्तं ७. ख.
 खिद्यति ३. १३.
 खीणं ३. १३.
 खीरं शौ. ८. ४४.
 खीलभो ७. ख.
 खु शौ. ८. ४५.
 खुज्जो ७. ख.
 खुडिभो ७. ख.
 खुडुक्कइ अप. ११. ४८.
 खेडभो ७. ख.
 खेडिभो ७. ख.
 खेडु अप. ११. ६४.

ग

गभा २. १.
 गउभा ७. ग.
 गउभो ७. ग.
 गउडो १. ९३.
 गउरवं ७. ग.
 गउरी अप. ११. १.
 गभो २. १., (वि.) २. ६.
 गकनं पै. प्राप्र. १०. २१.
 गग्गरं ७. ग.
 गच्छति पै. १०. १८.
 गच्छते पै. १०. १८.
 गच्छदि शौ. ८. १६.

गच्छदे शौ. ८. १६.
 गच्छ ६. ९.
 गच्छिदूण शौ. ८. १७.
 गच्छिय शौ. ८. १४.
 गच्छिस्मिदि शौ. ८. १७.
 गज्जह (वि.) २. ३.
 गज्जतो (वि.) २. ३.
 गहुभ शौ. ८. १४.
 गहे मा. प्राप्र. ९. १६.
 गड्डुहो ७. ग.
 गड्डो ७. ग.
 गंडी १. ४४.
 गण्हिज्जह ६. २६.
 गहहो शौ. ८. ४४., ७. ग.
 गन्वून पै. १०. ११.
 गन्ध उडिं १. १३.
 गन्धो (वि.) २. १.
 गन्धिणं शौ. (वि.) पा. २. १.,
 ७. ग.
 गमिज्जह ६. २६.
 गमेप्पि अप. (वि.) ११. ७४.
 गमेप्पिणु अप. (वि.) ११. ७४.
 गम्पि अप (वि.) ११. ७४.
 गम्पिणु अप. (वि.) ११. ७४.
 गंभिरीअ ७. ग.
 गम्मह ६. २६.
 गय अप. ११. १७.
 गयकुम्मह अप. ११. ७७.
 गया पा. २. १.
 गय्यदि मा. ९. ७.
 गरुआअह ६. १.

गरुआह ६. १.
 गरुई १. ७५.
 गरुओ १. ७६.
 गरुलो २. ४.
 गरुोई १. ७५., ७. ग.
 गश्च मा. ९. १०.
 गहवई ७. ग.
 गहिअं १. ७३.
 गहिदच्छले मा. प्राप्र. ९. १६.
 गहिरं १. ७३.
 गहो ३. ३.
 गाई ४. ३७.
 गाढजोव्वणा (वि.) २. १४.
 गारवं ७. ग.
 गावी ४. ३७., ७. ग.
 गावीओ ७. ग.
 गावो ७. ग.
 गाहा २. ३.
 गिट्ठी १. ८१.
 गिद्धी १. ८१.
 गिंठी १. ३३.
 गिद्धो शौ. ८. २९.
 गिम्हो ३. २९.
 गिरउ हेरू. ४. १९.
 गिरोअ हेरू. ४. १९.
 गिरवो हेरू. ४. १९.
 गिरा १. २१., पा. १. २१.
 गिरि ४. १९., हेरू. ४. १९.
 गिरि ४. १९., हेरू. ४. १९., १. २८.
 गिरिण ४. १९.
 गिरिणं ४. १९.

गिरिणा ४. १९., हेरू. ४. १९.
 गिरिणो ४. १९., हेरू. ४. १९.
 गिरित्तो ४. १९. हेरू. ४. १९.
 गिरिमि ४. १९. हेरू. ४. १९.
 गिरि-सिङ्गहु अप. ११. ९.
 गिरि सुंतो ४. १९.
 गिरि-हितो ४. १९.
 गिरिस्स ४. १९., हेरू. ४. १९.
 गिरिहे अप. ११. १३.
 गिरी ४. १९. हेरू. ४. १९.
 गिरीउ हेरू. ४. १९.
 गिरीओ हेरू ४. १९.
 गिरीओ ४. १९.
 गिरीग हेरू. ४. १९.
 गिरीण हेरू. ४. १९.
 गिरीस ४. १९., हेरू. ४. १९.
 गिरीसुं ४. १९. हेरू. ४. १९.
 गिरीसुतो हेरू. ४. १९.
 गिरीहिं ४. १९.
 गिरीहि ४. १९., हेरू. ४. १९.
 गिरीहितो हेरू. ४. १९., हेरू. ४. १४.
 गिरभो अप. ११. ४३.
 गिरभ-वाशले मा. (वि.) ९. ४.
 गुज्जं ३. ३०
 गुडो (वि.) २. ४.
 गुणहिं अप. ११. ७.
 गुणहिं अप. ११. १९.
 गुणाइं पा. १. ४३.
 गुणो १. ४३.
 गुणं १. ४३.
 गुण्टी १. ३३.

गुत्तो ३. १.
 गुनगनयुत्तो पै. १०. ५.
 गुनेन पै. १०. ५.
 गुम्फह (वि.) २. ११.
 गुरुउ हेरू. ४. १९.
 गुरुओ हेरू. ४. १९.
 गुरुवो हेरू. ४. १९.
 गुरु ४. १९., हेरू. ४. १९.
 गुरुईं ३. ३३.
 गुरुउ हेरू. ४. १९.
 गुरुओ १. ७६., हेरू. ४. १९.
 गुरुण ४. १९.
 गुरुण ४. १९.
 गुरुणा ४. १९., हेरू. ४. १९.
 गुरुणो ४. १९., हेरू. ४. १९.
 गुरुत्तो ४. १९., हेरू. ४. १९.
 गुरुम्मि ४. १९. हेरू. ४. १९.
 गुरुञ्जावा १. ४७.
 गुरुवी ३. ३३.
 गुरुस्स ४. १९., हेरू. ४. १९.
 गुरुहितो ४. १९.
 गुरुं ४. १९., हेरू. ४. १९.
 गुञ्जं १. ३३.
 गुरु ४. १९., हेरू. ४. १९.
 गुरुउ हेरू. ४. १९.
 गुरुओ हेरू. ४. १९.
 गुरुण हेरू. ४. १९.
 गुरुणं हेरू. ४. १९.
 गुरुसु ४. १९., हेरू. ४. १९.
 गुरुसुं ४. १९., हेरू. ४. १९.
 गुरुसुंतो हेरू. ४. १९.

गुरुहिँ ४. १९., हेरू. ४. १९.

गुरुहिँ ४. १९., हेरू. ४. १९.

गुरुहितो हेरू. ४. १९.

गुलो (वि.) २. ४.

गृहपिपणु अप. ११. ४८.

गेजझदि शौ., प्रास. ८. ४५.

गेण्डदि शौ., प्रास. ८. ४५.

गेंडुअ (वि.) १. ५७.

गेण्हीअ ६. ८.

गेन्दुअ पा. १. ५७., ७. ग.

गेह्य ७. ग.

गोआवरी ७. ग.

गोट्टी ३. १.

गोणो ७. ग.

गोदमो १. ९१.

गोरङ्गी अप. ११. ६६.

गोरी (वि.) ४. २९., अप. ११. १.

गोळा ७. ग.

गोविन्तो पै., प्रास. १०. २१.

गोवेह २. ९.

घ

घअं १. ८०.

घइं अप. ११. ६४.

घङ्गल अप. ११. ६४.

घडह २. ४.

घडो २. ४.

घंटा (वि.) २. ४.

घरं ७. घ.

घिणा १. ८१.

घुगघ अप. ११. ६४.

घुडुकइ अप. ११. ४८.

घुम्मदि शौ., प्रास. ८. ४५.

घुसिण १. ८१.

घेत्तण ३. ३६.

घेत्तूनं पै., प्रास. १०. २१.

घेप्पह ६. २६.

घेप्पदि शौ., प्रास. ८. ४५.

घांडा अप. ११. २.

च

चइत्तं (वि.) ३. १९., ७. च.

चइत्तो १. ९०.

चउगुणो ७. च.

चउट्टो ७. च., शौ. ८. ४४.

चउट्टो ७. च.

चउण्ह ४. ४८.

चउत्थो ७. च.

चउत्थो ७. च.

चउहसी ७. च.

चउहह ७. च.

चउहही शौ. ८. ४४.

चउमुट्टु अप. ११. ३.

चउरो ४. ४८.

चउम्बारं ७. च.

चउसु ४. ४८.

चऊहि ४. ४८.

चऊहितो ४. ४८.

चएपिणु अप. ११.७४., अप. ११.७३.

चकं ३. ३.

चकाओ (वि.) १. १३.

चक्खिअ ६. ३९.

चक्खू १. ४१.

- चकख्हं १. ४१.
 चखरं ७. च.
 चहु पा. १. ६१.
 चत्तारि ४. ४८.
 चत्तारो ४. ४८.
 चन्दो १. ३७.
 चन्दो (वि.) ३. ३.
 चन्दिमा ७. च.
 चन्दो १. ३७., (वि.) ३. ३.
 चमरं १. ६१.
 चम्रं (वि.) १. ४०., (वि.)
 पा. १. ४०.
 चविडा ७. च.
 चविहो ७. च.
 चविलो ७. च.
 चवेडा ७. च.
 चव्वदि शौ., प्राप्. ८. ४५.
 चाउण्डा ७. च.
 चाहु पा. १. ६१.
 चामर १. ६१.
 चिट्टह (वि.) २. ४.
 चिट्टदि मा०, (वि.) ९. १३., शौ.
 ८. ३६.
 चिणह ६. २२., ६. ३१.
 चिणिजह ६. २३.
 चिणहं १. ६८., शौ. ८. ४४.
 चिन्धं ७. च.
 चिम्मह ६. २४.
 चिलाभो ७. च.
 चिव्वह ६. २३.
 चिष्टदि मा., प्राप्. ९. १६., मा. ९. १३.
- चिहुरं ७. च.
 चिह्लं ७. च.
 चुअह ३. १., पा. ३. १.
 चुक्खं ७. च.
 चुणह ६. ३१.
 चुण्णो १. ६७.
 चुम्बि अप. ११. ७३.
 चेण्हं १. ६८.
 चेत्तो १. ९०.
 चोग्गुणो ७. च.
 चोट्टो ७. च.
 चोट्टो ७. च.
 चोस्थी ७. च.
 चोस्थो ७. च.
 चोह्मा ७. च.
 चोह्म ७. च.
 चोरिअं ७. च.
 चोरिआ १. ४४.
 चोरिभो १. ४४.
 चोरो (वि.) २. १.
 चोव्वारं ७. च.
 छ
 छहअ (वि.) ३. १४.
 छउमं ७. छ.
 छट्टो ७. छ.
 छट्टो ७. छ.
 छट्टिओ ७. छ.
 छणा ३. १५., ७. छ.
 छत्तवणो ७. छ.
 छत्तिवणो ७. छ.
 छुमा ७. छ.

छर्मा ७. छ.
 छर्ममं ७. छ.
 छाभा ७. छ.
 छाली ७. छ.
 छालो ७. छ.
 छाहा, २. १७., ७. छ., ४. ३०.
 छाही ४. ३०.
 छिन्नकं ७. छ.
 छित्तं ६. ३९.
 छिप्पइ ६. २६.
 छिरा ७. छ.
 छिहा ७. छ.
 छीअं ७. छ.
 छीणं ३. १३.
 छुच्छं ७. छ.
 छुहु अप. ११. ६४.
 छुत्तं ७. छ.
 छुहा १. २२., ७. छ.
 छुहं ७. छ.
 छुढो पा. ३. ८.
 छेच्छं ६. ९.
 छोल्लिजन्तु अप. ११. ४८.
 छुमुहु अप. ११. ३.
 छुमुहो ७. छ.
 ज
 जअह ६. ९., ६. १४.
 जह अह १. ४८.
 जइ १. ६४., २. १.
 जइसा अप. (वि.) १. ८७.
 जइसो अप. ११. ५६.

जइहं १. ४८.
 जउंणा ७. ज.
 जओ (वि.) २. ६.
 जक्खो पा. ३. ६.
 जग्गोवा अप. ११. ७२.
 जजो ३. २३.
 जज्जो शौ. ८. ३०.
 जडालो ३. ४४.
 जडिलो ७. ज.
 जढं ६. ३९.
 जणि अप. ११. ७६.
 जणु अप. ११. ७६.
 जणवक्केण १. २.
 जणसेणो शौ. ८. ४४.
 जण्हू ३. २८.
 जत्तु अप. ११. ५७.
 जत्तो ४. ५५.
 जस्थ ४. ४५.
 जस्थल्लिणा पा. १. ४४.
 जदो ४. ४५.
 जधा शौ., पा. २. ३., शौ. पा. १.
 ६१., शौ. ८. ४४.
 जमलं स्वाप्र. ३. ४५.
 जमो २. १४.
 जम्परो ३. ३५.
 जम्मणं ७. ज.
 जम्मो ३. २६., ७. ज., १. ३९., पा.
 १. ३९.
 जम्मि ४. ४५.
 जग्गहा ४. ४५.

जरिज्जह् ६. २६.
 जलभरो (वि.) २. १.
 जलचरो (वि.) २. १.
 जलं १. २८.
 जसो १. ३९., पा. १. ३९., १. १४.,
 १. १६.
 जस्स ४. ४५.
 जस्सि ४. ४५.
 जह् १. ६१., ७. ज.
 जहट्टिअं १. ७.
 जहणं २. ३.
 जहा १. ६१., ७. ज.
 जहाँ अप. ११. २७.
 जहिट्टिलो १. ७५., ७. ज.
 जहि अप. ११. २९., ४. ४४.
 जहुट्टिलो १. ७५., ७. ज.
 जहे अप. ११. ३१., अप. पा. ४. ४५.
 जा (वि.) पा. १. १९., ७. ज.
 जाह् २. १४.
 जा इट्टिआ अप. ११. ६४.
 जाउं अप. ११. ५८.
 जाओ ४. ३२., ४. ४५.
 जाणं शौ., पा. ४. ४५.
 जाणं मा. ९. १५., ३. ५., ४. ४५.
 जाणिज्जह् ६. २६.
 जातिसं पै. (वि.) १. ८७.
 जादिसं शौ. (वि.) १. ८७., शौ.
 ८. ४४.
 जाम अप. ११. ५८.
 जामहि अप. ११. ५८.
 जामाडओ १. ८३.

जामाडओ १. ८३.
 जारो (वि.) २. १.
 जाला पा. ४. ४५.
 जाव (वि.) पा. १. १९., ७. ज., १.
 १६.
 जावँ अप. ११. ५८.
 जास ४. ४५.
 जासु अप. पा. ४. ४५., अप. ११. ३०.
 जासुतो ४. ४५.
 जाहितो ४. ४५.
 जाहँ मा. ९. १५.
 जाहँ ट. पा. ४. ४५.
 जाहुँ अप. ११. ४५.
 जाहे पा. ४. ४५.
 जि अप. ११. ६३.
 जिअह् १. ७३.
 जिअउ १. ७३.
 जिग्वदि शौ. प्रास. ८. ४५.
 जिण ४. ४५.
 जिणह् ६. २२.
 जिणधम्मो (वि.) २. ३.
 जिण्णं ७. ज.
 जित्तिअं ३. ४१., ७. ज.
 जिअ अप. ११. ५४.
 जिअभा ७. ज.
 जिअ अप. ११. ५४.
 जिअँ अप. ११. ५४., ११. ५०.
 जिअ अप. ११. ५४.
 जी ४. ४६.
 जीअह् (वि.) १. ७३.
 जीअं (वि.) पा. १. १९., ७. ज.

जीआ ७. ज.
 जीओ २. १., ४. ३२.
 जीया ४. ४६.
 जीरइ ६. २६.
 जीविअं (वि.) पा. १. १९., ७. ज.
 जीहा ७. ज.
 जु अप. ११. ३२.
 जुगुच्छइ २. २२.
 जुगं ३. २.
 जुणं ७. ज.
 जुत्तणिमं शौ. ८. २१.
 जुत्तमिमं शौ. ८. २१.
 जुवइ.अणो (वि.) १. ८.
 जुहुट्टिरो शौ. ८. ४४.
 जे ४. ४५.
 जेण ४. ४५.
 जेत्तिअं ३. ४२.
 जेत्तिकं शौ. प्रास. ८. ४५.
 जेत्तिलं ३. ४२.
 जेत्तुलो अप. ११. ६९.
 जेत्थु अप. ११. ५७.
 जेहु शौ. पा. ६. ९.
 जेहहं ३. ४२.
 जेपि अप. ११. ७३., ११. ७४.
 जेम अप. ११. ५४.
 जेव शौ. ८. ४५.
 जेवहु अप. ११. ६०.
 जेवं अप. ११. ५४.
 जेसिं ४. ४५.
 जेसु ४. ४५.
 जेहु अप. ११. ५५.

जेहि ४. ४५.
 जो ४. ४५., अप. ११. ४.
 जोगो १. २.
 जोणहा ३. २८.
 जोणहालो ३. ४४.
 जोव्वणं १. ९१., ३. १.
 जजेव शौ. ८. ४५.
 जं १. ३१., ४. ४५.

झ

झओ ७. झ.
 झडिलो ७. झ.
 झलक्किअउ अप. ११. ४८.
 झाणं ३. २४.
 झिज्जइ ३. १३.
 झुणि ७. झ.
 झे ४. ४७.

ञ

ञ्जानं पे. १०. २.

ट

टगरं ७. ट.
 टकः (वि.) २. ४.
 टसरो ७. ट.

ठ

ठड्हो ७. ठ.
 ठभो ७. ठ.
 ठविअं १. १६., पा. १. ६१.
 ठाई (वि.) २. ४.
 ठाविअं १. ६१.
 ठासी ६. ७.
 ठाही ६. ७.

टीणं ७. ७.

ड

डञ्जमानो शौ. ८. ४४.

डट्टो ७. ड.

डड्हो ७. ड.

डद्वं ७. ड.

डडो ७. ड.

डंभो ७. ड.

डरो ७. ड.

डसइ २. ७.

डसनं ७. ड.

डहइ २. ७.

डहिजइ ६. २६.

डछइ ६. २६.

डहो ७. ड.

डिभो (वि.) २. ४.

डोलो ७. ड.

डोहलो ७. ड.

ढ

ढकरि अप. ११. ६४.

ढोन्ना अप. ११. २.

ण

णअणं १. ४१., २. १.

णअणो १. ४१.

णअरं २. १.

णहसोत्तं १. ८.

णई २. ८.

णईओ शौ. ८. ४४.

णईसोत्त २. ८.

णउण १. ६०.

णउणा १. ६०.

णउणाइ १. ६०.

णउला ४. ६.

णउलेसु ४. ९.

णउलेहि ४. ९., ४. १०.

णउलेहि ४. १०.

णउलेहिँ ४. १०.

णउलो २. १.

णउलं ४. ७.

णउले ४. १४.

णउलेमि ४. १४.

णउलस्स ४. १३.

णओ २. १.

णक्कचरो (वि.) २. १., १. २.

णक्कइ ६. २६.

णक्का ३. २०.

णउजइ ६. २६.

णट्टइ ३. २१.

णट्टओ ३. २१.

णडालं ७. ण.

णडो २. ४.

णडं (वि.) २. ४.

णस्थि (वि.) १. १५.

णराओ १. ६१.

णरो २. ८.

णलाउ ७. ण.

णलं (वि.) २. ४.

णहं पा. १. ४०., १. १६., २. ३.

णा हेरू. पा. ४. ४६.

णाहउजइ ६. २६.

णाणं ३. ५., ३. २४.

णाधो शौ. ८. ९.
 णाराधो १. ६१.
 णाली (वि.) २. ४.
 णाहो शौ. ८. ९.
 णिभक्तं ७. ण.
 णिटथ १. ८३.
 णितक्कण्ठं (वि.) १. १९.
 णित्तत्तं ७. ण.
 णिच्चलो ७. ण.
 णिच्चलो (वि.) ३. २२.
 णिच्छुरो पै. प्राप्र. १०. २१.
 णिडिक्कले मा. प्राप्र. ९. १६.
 णिडालं ७. ण.
 णिहा १. ६८., शौ. (वि.) १. ६८.
 णिहालू ३. ४४.
 णिरधो (वि.) १. ७०.
 णिराबाध १. १९.
 णिरुत्तरं १. १९.
 णिवडह १. ७१.
 णिवुत्तं ७. ण.
 णिवुअं १. ८३.
 णिवुई १. ८३.
 णिवुदी २. ६.
 णिसण्णो ७. १.
 णिसिअरो १. ६४.
 णिसीदो ७. ण.
 णिसीहो ७. ण.
 णिस्सहो (वि.) १. ७०.
 णिहुअ १. ८३.
 णिहुदं १. ८३.
 णीसहो १. ७०.

णीसासो १. ७०.
 णीडं (वि.) २. ४.
 णुमज्जह १. ७१.
 णुमण्णो १. ७१., ७. ण.
 णूणं शौ. ८. ४४.
 णे ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४६., हेरू.
 पा. ४. ४७.
 णेहा १. ६८.
 णेण ४. ४६. हेरू. पा. ४. ४६., ४. ४७.
 णेणं ४. ४७.
 णेसु हेरू. पा. ४. ४६.
 णेसुं हेरू. पा. ४. ४६.
 णेहि ४. ४६., ४. ४७.
 णेहो ३. १., पा. ३. १.
 णो ४. ४७.
 णोआ २. १.
 ण हेरू. पा. ४. ४६., ४. ४७.
 ण ४. ४६. शौ. ८. २५. (वि.) ८. २५.
 शौ. ८. ४५.
 णहव ६. २७.
 णहाऊ ३. २८.
 णहाणं ३. २८.
 त
 तइ १. ६४., ४. ४७., हेरू., पा. ४.
 ४७., शौ. ४. ४७.
 तइअं १. ७३.
 तइआ हेरू. पा. ४. ४६.
 तइत्तो हेरू. पा. ४. ४७., ४. ४७.
 तइशं अप. (वि.) १. ८७.
 तइसो अप. ११. ५६.
 तइं अप. ४. ४७., अप. ११. ४०.

तठ अप. ११. ४०.
 तउहोत अप. ४. ४७.
 तए शौ. ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.,
 शौ. ८. ४४.
 तओ (वि.) २. ६.
 तख आ. (वि.) ३. २२.
 तण अप. ११. ६४.
 तणहं अप. ११. ११.
 तणु अप. ११. १.
 तणुई ३. ३३.
 तणेण अप. ११. ६४.
 तणं १. ८०.
 तत्तु अप. ११. ५७.
 तत्तो ४. ४६., ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तत्तं ७. त.
 तत्थं शौ. ८. ४४., ४. ४६.
 तस्थून पै. १०. १२.
 तत्थं आ. (वि.) ३. २२.
 तदो ४. ४६., ४. ४७.
 तद्भून पै. १०. १२.
 तधा शौ. (वि.) ८. २., शौ. पा.
 २. ३०., शौ. ८. ४४., शौ. पा.
 १. ६१.
 तध्रुहोत अप. ४. ४७.
 तमवि १. ४९.
 तमे ४. ४७.
 तमेण पा. १. ३९.
 तमो १. ३९.
 तंपि १. ४९.
 तम्बोलं ७. त.
 तम्बं ७. त.

तंबं १. ६७.
 तंबो (वि.) ३. २५., ७. त.
 तम्भि ४. ४६.
 तम्हा ४. ४६., हेरू. पा. ४. ४६.
 तयाणि १. ७३.
 तरणी १. ३८., पा. १. ३८.
 तरिज्जइ ६. २६.
 तरुणहो अप. ११. १८.
 तरुणिहो अप. ११. १८.
 तरुहुं अप. ११. १३.
 तरुहे अप. ११. १३.
 तरू (वि.) २. १.
 नल्लवेण्टं १. ६१.
 तलावो २. ४.
 नलि अप. ११. ६.
 तलुनी पै. प्राप्र. १०. २१.
 तवइ २. ९.
 तवस्मि शौ. ८. ५.
 तविअ ७. त.
 तवो ७. त.
 तसु अप. ११. १०.
 तस्स शौ. (वि.) ८. २., ४. ४६.
 हेरू. पा. ४. ४६.
 तस्मि शौ. ८. ४४.
 तस्सि ४. ४६., हेरू. पा. ४. ४६.
 तह १. ६१., शौ. ४. ४७., अप. पा.
 ४. ४६.
 तहत्ति १. ५०.
 तहाँ अप. ११. २७.
 तहि. शौ. ८. ४४.
 तहिं अप. ११. २९., ४. ४६.

तहितो हेरू. पा. ४. ४७.
 तहे अप. ११. २२., अप. ११. ३१.
 ता (वि.) पा. १. १९. शौ. ८. २०.,
 ४. ४६., हेरू. पा. ४. ४६., ७. त.
 ताउं अप. ११. ५८.
 ताओ (वि.) २. ६., ४. ३२., ४. ४६
 ताणं ४. ४६., शौ. पा. ६. पा. ४.
 ४६., ४. ४६.
 तातिसं पै. (वि.) १. ८७.
 तातिसो पै. १०. १६.
 तादिसं शौ. ८. ४४., शौ. (वि.)
 १. ८७.
 ताम अप. ११. ५८.
 तामहि अप. ११. ५८.
 तामोतरो पै. १०. ६.
 तारिसो १. ८७.
 तालवेणं १. ३.
 तालवेणं १. ६१.
 ताला हेरू. पा. ४. ४६.
 ताव १. १६., (वि.) पा. १. १९.,
 शौ. ८. ४., ७. त.
 तावँ अप. ११. ५८.
 तास हेरू. पा. ४. ४६.
 तासु अप. ११. ३०., अप., पा. ४. ४६.
 नाहितो ४. ४६.
 ताहे हेरू. पा. ४. ४६.
 ताहं ट. पा. ४. ४६.
 तिअस-ईसो १. १५.
 तिअसीसो १. १५.
 तिक्खं ७. त.
 तिट्ठो पै. (वि.) १०. १३.

तिणा हेरू. पा. ४. ४६.
 तिणु अप. ११. १.
 तिणुवी ३. ३३.
 तिण्णि ४. ४८.
 तिण्णं ४. ४८.
 तिण्हं ३. २८.
 तित्तिअ ३. ४१., ७. त.
 तित्तिरो ७. त.
 तिस्थ १. ७४., ७. त., १. ६७.
 तिथ अप. ११. ५४.
 तिप्प १. ८१.
 तिम अप. ११. ५४.
 तिरिच्छी ७. त.
 तिरिश्चि मा. ९. १०.
 तिवँ अप. ११. ५०., अप. ११. ५४.
 तिह अप. ११. ५४.
 तिहिं अप. ११. १९.
 तिह्लं ७. त.
 ती ४. ४७.
 तीआ ४. ४७.
 तीओ ४. ३२.
 तीरइ ६. २६.
 तीसा १. ३५., ७. त.
 तीसु ४. ४८.
 तीहिं ४. ४८.
 तीहितो ४. ४८.
 तु ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुइ ४. ४७.
 तुप् ४. ४७.
 तुच्छुं अप. ११. २६.
 तुज्ज ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.,
 अप. ११. ४०.

तुज्जत्तो ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुज्जम्मि ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुज्जं हेरू. पा. ४. ४७.
 तुज्जसु हेरू. पा. ४. ४७.
 तुज्जाण हेरू. पा. ४. ४७.
 तुज्जाणं हेरू. पा. ४. ४७.
 तुज्जासु हेरू. पा. ४. ४७.
 तुज्जाहितो ४. ४७.
 तुज्जेसु हेरू. पा. ४. ४७.
 तुज्जेहि हेरू. पा. ४. ४७., ४. ४७.
 तुज्जे शौ. ४. ४७.
 तुण्ड शौ. ८. ४४.
 तुण्हो ३. १२.
 तुण्हो ३. १२.
 तुध अप. ११. ४७.
 तुधम हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधमत्तो हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधम्मि हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधमसु हेरू. ४. ४७.
 तुधमाण हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधमाणं हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधमासु हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधमे हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधमेसु हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधमेहि हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधमं हेरू. पा. ४. ४७.
 तुध ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधं हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधइ ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधप् ४. ४७., हेरू. पा. ४७.
 तुधत्तो ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.

तुध ४. ४७., शौ. ४. ४७., ८. ४४.
 तुधहितो ४. ४७.
 तुधम्मि ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधसु ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधाइ ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधाण. ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधाणं हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधासु पै. १०. २०.
 तुधात्तो पै. १०. २०.
 तुधात्तो शौ. ८. ४४.
 तुधे ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधेसु हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधो हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधम ४. ४७.
 तुधम्मि ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधमं अप. ११. ४०.
 तुध ४. ४७., शौ. ४. ४७. शौ.
 ८. ४४. हेरू. पा. ७. ४७.
 तुधकेरो ३. ३७.
 तुधत्तो ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधम्मि हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधसु हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधमं अप. ४. ४७., अप. ११. ४०.
 तुधं अप. ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधाइ अप. ४. ४७.
 तुधाण ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधाणं शौ. ४. ४७., शौ. ८. ४४.
 हेरू. पा. ४. ४७.
 तुधादो शौ. ४. ४७.
 तुधारिसो १. ८७., २. १६.
 तुधासु अप. ११. ४०., अप. ४. ४७.
 हेरू. पा. ४. ४७.

तुम्हाहितो शौ. ४. ४७., ४. ४७.
 तुम्हे शौ. ४. ४७., शौ. ८. ४४., अप.
 ४. ४७., अप. ११. ४०.
 तुम्हेच्छयं ३. ३८.
 तुम्हेसु ४. ४७., शौ. ८. ४४., हेरू.
 पा. ४. ४७.
 तुम्हेसु शौ. ४. ४७.
 तुम्हेहि अप. ११. ४०. ४. ४७., शौ.
 ४. ४७., ८. ४४.
 तुम्हेहिन्तो शौ. ८. ४४.
 तुयहत्तो हेरू. पा. ४. ४७.
 तुयह हेरू. पा. ४. ४७.
 तुयहे हेरू. पा. ४. ४७.
 तुयहेहि हेरू. पा. ४. ४७.
 तुव ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुवत्तो हेरू. पा. ४. ४७., ४. ४७.
 तुवम्मि ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुवरप ६. ४.
 तुवरसे ६. ४.
 तुवसु हेरू. पा. ४. ४७.
 तुवाण हेरू. पा. ४. ४७., ४. ४७
 तुवाणं हेरू. पा. ४. ४७.
 तुवे ४. ४७.
 तुवेसु हेरू. पा. ४. ४७.
 तुवं ४. ४७.
 तुसु ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुह ४. ४७. अप. ४. ४७., हेरू. पा.
 ४. ४७.
 तुहत्तो हेरू. पा. ४. ४७., ४. ४७.
 तुहम्मि ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुहसु ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.

तुहाण ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुहाणं हेरू. पा. ४. ४७.
 तुहारेण अप. ११. ६८.
 तुहु अप. ११. ४०.
 तुहुं अप. ११. ४०.
 तुहेसु ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुहं ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 तुम्हेहिं ४. ४७.
 तुह्य ४. ४७.
 तुह्यत्तो ४. ४७.
 तुह्याण ४. ४७.
 तुह्युहोत अप. ४. ४७.
 तुह्ये ४. ४७.
 तुह्येसु ४. ४७.
 तु ४. ४७.
 तूणं ७. त.
 तूरं ७. त.
 तूसह ६. ३०.
 तूह ७. त., १. ७४.
 तृणु अप. ११. १.
 ते ४. ४६ शौ. ८. ४४., हेरू. पा. ४.
 ४६., ४. ४७., शौ. ४. ४७.
 तेअस्स पा. १. ३९., पा. १. ३१.
 तेओ १. ३९.
 तेति पै. १०. १७.
 तेत्तहे अप. ११. ७०.
 तेत्तिअं ३. ४२.
 तेत्तिकं शौ. प्रास. ८. ४५.
 तेत्तिलं ३. ४२.
 तेत्तीसा ७. त.

तेत्तुलो अप. ११. ६९.
 तेत्थु अप. ११. ५७.
 तेदहं ३. ४२.
 तेण ४. ४६., हेरू. पा. ४. ४६.
 तेम अप. ११. ५४.
 तेरह ७. त.
 तेरहो १. ५७.
 तैलोकं (वि.) ३. १०.
 तैल्लं ३. ११.
 तैल्लकं १. ८८.
 तैल्लोक (वि.) ३. १०.
 तेवहु अप. ११. ६०.
 तेवं अप. ११. ५४.
 तेवण ७. त.
 तेवीसा ७. त.
 तेसिं ४. ४६., हेरू. पा. ४. ४६.
 तेसु ४. ४६., हेरू. पा. ४. ४६.
 तेसु हेरू. पा. ४. ४६.
 तेह ७. त.
 तेहिं ४. ४६., हेरू. पा. ४. ४६., अप.
 ११. ६४.
 तेहितो ४. ४७.
 तेहु अप. ११. ५५.
 तं ४. ४६., ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४६.
 १. ३१., अप ११. ३२.
 तंसं १. ३३., पा. ३. ८.
 तो ४. ४७., अप. ११. ६४.
 तोणं ७. त.
 तोणीरं ७. त.
 तोण्ह १. ७९.
 तोसविअं ६. १९.

तोसिअ-संकरु अप. ११. ३.
 तोसिअं ६. १९.
 त्र अप. ११. ३२.

थ

थवो ७. थ.
 थंभो ७. थ.
 थाणू ७. थ.
 थिण्णं ३. १२
 थो ७. थ.
 थोणं ३. १२., ७. थ.
 थुई ३. २५.
 थुणदि झौ. प्रास. ८. ४५.
 थुल्लो ७. थ., ३. १२.
 थूणा ७. थ.
 थूणो ७. थ.
 थूलं झौ. ८. ४४., ७. थ.
 थेणो ७. थ.
 थेरिअं ७. थ.
 थेरो पा. ३. ६., ७. थ.
 थोअं ३. २५.
 थोणा ७. थ.
 थोत्तं ३. २५.
 थोरो ३. १२.
 थोरं ७. थ.

द

दभाल्ल २. १.
 दहपं अप. ११. १४.
 दहवअं १. ८९.
 दहव्णं १. ८९.

दहवज्जो ३. ५.
 दहवणं १. ८९.
 दहवण्णु ३. ५.
 दहवं ७. द., ३. १२.
 दहव्वं ३. १२., ७. द.
 दहस्स शौ. ८. ३४.
 दउत्ति शौ. ८. ४५.
 दक्खिणो (वि.) १. ५३., ७. द.
 दट्ठो ७. द.
 दढवड अफ. ११. ६४.
 दढ्हं ७. द.
 दणुअ वहो ७. द.
 दणु इन्दरुहिर० १. १०.
 दणुवहो ७. द.
 दंढो ७. द.
 दत्तं (वि.) १. ५४.
 दद्धं ३. ३६.
 दमदमाअह् ६. १.
 दमदमाह् ६. १.
 दभो ७. द.
 दयाल्लु पा. २. १.
 दरिओ ७. द.
 दरो ७. द.
 दलिहो २. १८.
 दवग्गी पा. १. ६१.
 दवो (वि.) २. १.
 दस ७. द., शौ. ८. ४४.
 दसणं ७. द.
 दसरहो शौ. ८. ४४.
 दसवत्तनो पै. प्राप्र. १०. २१.
 दसमुहो ७. द.

दस्के मा. प्राप्र. ९. १६.
 दह शौ. ८. ४४., ७. द.
 दहमुहु अफ. ११. ३.
 दहमुहो ७. द.
 दहि ४. ४१.
 दहि ईसरो १. ९.
 दहिं ४. ४१.
 दहीइं ४. ४१.
 दहीइं ४. ४१.
 दहीणि ४. ४१.
 दहीसरो १. ९.
 दहो ३. ४., पा. ३. ४.
 दाव शौ. ८. ४.
 दावग्गी पा. १. ६१.
 दाघो (वि.) २. २०., ७. द.
 दात्तुं पै. प्राप्र. १०. २१.
 दाडिमं (वि.) २. ४.
 दाढा ७. द.
 दाणवो (वि.) २. १.
 दाणिं शौ. ८. १९.
 दाणं ४. ४६.
 दामं १. ४०.
 दारं ७. द., (वि.) ३. ३.
 दालिमं (वि.) २. ४.
 दाहिणो १. ५३.
 दाहिणो ७. द.
 दाहिमि ६. ९.
 दाहो ७. द.
 दाहं ६. ९.
 दि. हेरू. पा. ४. ४७.
 दिअरो ७. द.

दिभहो २. १.
 दिउओ १. ७१.
 दिउणो १. ७१.
 दिभो १. ७१., (वि.) ३. ३.
 दिग्घो ७. ६.
 दिट्टा ३. ६., १. ८१., ३. १८.
 दिट्टं १. ८१.
 दिट्ट ति १. ५०.
 दिण्णं ७. ६., १. ५४.
 दिप्पह् २. ७.
 दिवसो ७. ६.
 दिवहो ७. ६.
 दिवे अप. ११. ६४.
 दिसा० पा. २. २४.
 दिसा १. २४.
 दिहा गयं (वि.) १. ७२.
 दिही ७. ६.
 दीभो २. १५.
 दीजो २. १५.
 दीसह् (नि.) ६. १५.
 दीहरं स्वाप्र. ३. ४५.
 दीहाउसो १. २५.
 दीहाऊ १. २५., पा. १. २५.
 दीहो ७. ६.
 दुअसं ७. ६.
 दुआई (वि.) ३. ३.
 दुआरं ७. ६.
 दुह्वं १. ७३.
 दुह्वो १. ७१.
 दुउणो १. ७१.
 दुऊलं ७. ६.

दुऊढं ७. ६.
 दुऊरं (वि.) ३. १७.
 दुखं ७. ६.
 दुगुल्ल ७. ६.
 दुग्गा-प्वी ७. ६.
 दुग्गावी ७. ६.
 दुइं ३. १.
 दुणि ४. ४८.
 दुब्भह् ६. २५.
 दुय्यणे मा. ९. ७., मा. प्राप्र. ९. १६.
 दुरागव् १. १९.
 दुरुत्तरं १. १९.
 दुल्लह्वो अप. ११. १०.
 दुल्लहो २. ३.
 दुवभणं १. ७१.
 दुवरो ७. ६.
 दुवाइं १. ७१.
 दुवारिभो १. ९२.
 दुवारं ७. ६.
 दुवे १. ७१., ४. ४८.
 दुसहो १. ७८.
 दुस्सहो १. १८.
 दुस्सहो विरहो (वि.) १. ७८,
 दुहभो १. ७८., ७. ६.
 दुहा इअं १. ७२.
 दुहा किज्जदि १. ७२.
 दुहा वि० (वि.) १. ७२.
 दुहि ४. ४७.
 दुहिआ ४. ३१., ७. ६.
 दहिज्जह् ६. २५.
 दुहिदिआ शौ. प्रास. ८. ४५.

दुहितो ४. ४७.
दुहीअदि शौ. प्रास. ८. ४५. ७
दुहुँ अप. (वि.) ११. १२.
दुह ७. द.
दूरादु शौ. ८. १८.
दूरादो शौ. ८. १८.
दूसह ६. ३०.
दूमहो १. १८., १. ७८.
दूसासणो १. ५१.
दूहओ १. ७८.
दूहवो ७. द.
दं ४. ४६., ४. ४७., हेरू. पा. ४.
४७., शौ. ४. ४७., शौ. ८. ४४.
देअरो ७. द., शौ. ८. ४४.
देह (वि.) ६. ३१.
देउलं ७. द.
देउळं ६. ९.
देदि शौ. ८. १५.
देमि शौ. ८. ३४.
देरं ७. द.
देव ४. १४.
देव-उलं ७. द.
देवत्तो ४. १४., ४. ११., ४. १२.
देव-थुई ३. १०.
देव-थुई ३. ११.
देवदत्त (वि.) १. ५४.
देवस्स ४. १३., ४. १४.
देवा ४. १४., १. ४३., ४. ६., पा.
४. ११.
देवाउ ४. ११., ४. १४., ४. १२.
देवाओ ४. ११., ४. १२., ४. १४.

देवाण ४. ८., ४. १४.
देवाणि १. ४३.
देवाणं ४. १४., ४. ८.
देवासुंतो ४. १४
देवाहि ४. ११., ४. १२., ४. १४.
देवाहितो ४. १४., ४. ११.
देवाहितो ४. १२., ४. १४.
देवीए एथ १. १२.
देवे ४. १४.
देवेण ४. ८., ४. १४.
देवेणं ४. १४.
देवेम्मि ४. १४.
देवेसु ४. ९., ४. १४.
देवेसु ४. १४.
देवेसुतो ४. १२.
देवेहि ४. १०., ४. १२., ४. १४.
देवेहिं ८. ९., ४. १४., ४. १०.
देवेहिं ४. १४., ४. १०.
देवेहितो ४. १४.
देवो (वि.) २. १., ४. १४., ४. ५.
देवं ४. १४., ४. ७., अप. ११. ७४.
देववं ७. द., शौ. ८. ४४.
दो ४. ४८.
दोणि ४. ४८.
दोणं ४. ४८.
दोणहं ४. ४८.
दोदुहिसुंतो हेरू. पा. ४. ४७.
दोदुहिहितो हेरू. पा. ४. ४७.
दोला ७. द.
दोवअणं १. ७१.
दोसडा अप. ११. ६५.

दोसु ४. ४८.
 दोहगं १. ९१.
 दोहलो ७. ८.
 दोहा ह्रं १. ७२.
 दोहा किञ्जदि १. ७२.
 दोहि ४. ४८.
 दोहि ४. ४८.
 देहितो ४. ४८.
 दोहो ३. ४.
 दंसणं १. ३३.
 द्रवक्क अप. ११. ६४.
 द्रहो ३. ४., पा. ३. ४,
 द्रेहि अप. ११. ६४.
 द्रोहो ३. ४.
 द्विरओ १. ७१.
 ध
 धट्टज्जणो ७. ४.
 धट्टो ७. ४.
 धण अप. ११. २.
 धणवन्तो ३. ४४.
 धणहे अप. ११. २२.
 धणाणि शौ. ८. ३२.
 धणिरो (वि.) ३. ४४.
 धणुहधरो पा. १. २७.
 धणुहं ७. ४., १. २७.
 °धणू पा. १. २७.
 धणू १. २७., ७. ४.
 धणंजओ (वि.) २. १.
 धणज्जण मा. ९. ८.
 धत्ती ७. ४.
 धत्थं ३. ३.

धनुस्खण्डं मा. ९. ४.
 धम्मिस्स १. ६८., शौ. (वि.) १. ६८.
 धम्मोस्सं १. ६८.
 धरहिं अप. ११. ४१.
 धाअह ६. ३६.
 धाह ६. ३६.
 धाई ७. ४.
 धारी ७. ४.
 धावह ६. ३१.
 धिह ७. ४.
 धिई ७. ४.
 धिई १. ८१.
 धिज्जं ७. ४.
 धिट्ठो ७. ४.
 धिप्पह २. ७.
 धिरत्थु ७. ४.
 धीरं ३. ९.; ७. ४.
 धुत्तो (वि.) ३. २१.
 धुरा १. २१.
 °धुरा पा. १. २१.
 धुवह ६. ३१.
 धूआ ७. ४.
 धूदा शौ. प्रास. ८. ४.
 धूलद्धिआ अप. ११. ६७.
 धेणु ४. ३७.
 धेणुं ४. ३७.
 धेणू ४. ३३., ४. ३७.
 धेणूअ ४. ३७.
 धेणूआ ४. ३७.
 धेणूह ४. ३७.
 धेणूठ ४. ३३., ४. ३७.

धेणूप् ४. ३७.
 धेणूओ ४. ३३., ४. ३७.
 धेणूण ४. ३७.
 धेणूणं ४. ३७.
 धेणूदो ४. ३७.
 धेणूसु ४. ३७.
 धेणूसु ४. ३७.
 धेणूसुंतो ४. ३७.
 धेणूहि ४. ३७.
 धेणूहिं ४. ३७.
 धेणूहितो ४. ३७.
 ध्रुवु अप. ११. ६४.
 ध्रुं अप. ११. ३२.
 न
 नह ४. ३७.
 नह-गामो ३. १०.
 नह गामो ३. १०.
 नहं ४. ३७.
 नह् २. १.; २. ८., ४. ३७.
 नह्भ ४. ३७.
 नह्भा ४. ३७.
 नह्वू ४. ३७.
 नह्वृ ४. ३७., शौ. ८. ४४.
 नह्ओ ४. ३७.
 नह्ण ४. ३७.
 नह्ण ४. ३७.
 नह्दो ४. ३७.
 नह्सु ४. ३७.
 नह्सु ४. ३७.
 नह्सुंतो ४. ३७.

नईहि ४. ३७.
 नईहिं ४. ३७.
 नईहिं ४. ३७.
 नईहितो ४. ३७.
 नउ अप. ११. ७६.
 नओ पा. २. १.
 नकरं पै. (वि.) पा. २. १.
 नक्कचरो (वि.) पा. २. १.
 नक्खा ३. १२.
 नगो ३. २.
 न जुत्त ति १. ५०.
 नणन्दा ४. ३१.
 नत्तिओ ७. न.
 नत्तुओ ७. न.
 नत्तंचरो (वि.) पा. २. १.
 नत्थून पै. १०. १२.
 नत्थून पै. १०. १२.
 नमोकारो ७. न.
 नम्म० पा. १. ३९.
 नम्मो १. ३९.
 नयणा पा. १. ४१.
 नयणाहं पा. १. ४१.
 नयणं पा. २. १.
 नयरं पा. २. १.
 नरिन्दो १. ६७.
 नरो २. ८.
 नले मा. ९. ३.
 नवख अप. ११. ६४.
 नवह्लो स्वाप्र. ३. ४५.
 नस्स ६. ३८.
 नहा ३. १२.

नहुस्त्रिहणे आवन्धस्त्रीर् १. १२.

नहेण अप. ११. ५.

नहं १. ४०.

नह्य ४. ४७.

नाइ अप. ११. ७६.

नाप पै., पा. ४. ४६., पै. १०. २१.

नाडी (वि.) २. ४.

नापिओ ७. न.

नारह्यो ७. न.

नालिउ अप. ११. ६४.

नावइ अप. ११. ७६.

नावा ७. न.

नासइ (वि.) ६. ३१.

नाहि अप. ११. ६४.

नाहो २. ३.

निउरं ७. न.

निष्कामं (वि.) ३. १७.

निक्खं ३. १७.

निष्कट्ट अप. ११. ६४.

निष्कलो ३. १.

निष्किन्दो शो. ८. ३.

निष्कं ३. १९.

निउझरो ७. न.

निट्ठुरो ३. १.

निण्ण ३. २४.

निप्फेसो ३. २७.

निमिअं ६. ३२.

निम्बो ७. न.

निम्मल्लं १. ४७.

निरुत्तरं १. १९.

निवत्तओ ३. २१.

निवत्तणं (वि.) ३. २१.

निविडं (वि.) २. ४.

निवो १. ८१.

निसडो ७. न.

निसाअरो १. १३.

निसिआ अप. ११. २.

निस्फलं मा. ९. ४.

निस्सहं १. १८.

निहसो ७. न.

निहिओ ३. १२.

निहित्तो ३. १२.

निही १. ४४.

°निही पा. १. ४४.

नीअओ ७. न.

नीडं ३. १२., ७. न.

नीमी ७. न.

नीमो ७. न.

नीला ४. २९.

नीली ४. २९.

नीलुप्पलं १. ६७.

नीवी ७. न.

नीवो ७. न.

नीसहो १. ५१.

नीसह १. १८.

नीसासो पा. ३. ८.

नीसो १. ५१.

नूउरं ७. न.

नूण १. ३६.

नूणं १. ३६.

नेइ ६. २९.

नेउरं ७. न.

नेत्रं ३. १२.

नेत्रं ३. १२., ७. न.

नेति पै. १०. १७.

नेदि शौ. ८. १०.

नेन पै., पा. ४. ४६, पै. १०. २१.

नेरहओ ७. न.

नोहलिआ ७. न.

नं. अप. ११. ७६.

न्यायः (वि.) २. ८.

प

°पभं पा. १. ३९.

पभट्टं ७. प.

पभटं १. ५२.

पभरो १. ६२.

पभारो १. ६२.

पभावई २. १.

पइटा १. ४७., ७. प., (वि.) २. ५.

पइटाणं (वि.) २. ५.

पइट्टि अप. ११. २.

पइट्टिअं १. ४७.

पइण्णा (वि.) २. ५., ७. ५.

पइवं (वि.) २. ५.

पइं अप. ४. ४७., अप. ११. ४०.

पइं (वि.) १. ९.

पइंवो २. ९.

पइंव ७. प.

पउअं १. ६१.

पउट्टो ७. प.

पउत्तं ७. प.

पउत्ती १. ८३.

पउम ७. प.

पउरिसं १. ९३., ७. प.

पओ १. ३९.

पओट्टो शौ. ८. ४४.

पवकं ७. प.

पखलो (वि.) २. ३.

पविगम्ब अप. ११. ६४.

पङ्को १. १., १. ३७.

पको १. ३७.

पंत्ती १. ३२.

पण्णो ३. १९.

पण्णं ३. १९.

पण्णल्लिअ अप. ११. ६४.

पण्णुसो ७. प.

पण्णुहो ७. प.

पण्णह अप. ११. ६४.

पण्ण्णा ३. २२.

पण्णमं ३. २२.

पण्ण ३. २२.

पण्णन्तो पा. १. ५७.

पण्णत्तं ३. १.

पण्णन्तो ७. प.

पण्णन्तं ३. २३.

पण्णा ३. ५.

पण्णाउलो शौ. ८. ८.

पण्णाओ ३. २३.

पण्णुणो ३. २४.

पण्णा ४. ५०.

पण्णावण्णा ७. प.

पण्णाहिं ४. ५०.

पण्णले मा. ९. ८.

- पञ्जा पै. १०. २.
 पञ्जाविशाले मा. ९. ८.
 पट्टणं ७ प.
 पट्टि अप. ११. १.
 पट्टे १. ८२.
 पठिञं ६. १७.
 पठितून पै. १०. ११.
 पठियते पै. १०. १४.
 पडाभा शौ. (वि.) पा. २. १.
 पडाया ७. प.
 पडायाणं ७. प.
 पडिफ्फही ३. २७.
 पडिफ्फही १. ५२.
 पडिमा २. ५.
 पडिवभा १. ५२.
 पडिवणं २. ५.
 पडिवही २. ६.
 पडिसरो २. ५.
 पडिसिद्धी १. ५२.
 पडिसुभा १. ३३.
 पडिसुद्धं १. ३३.
 पडंसुभा ७. प.
 पडई (वि.) २. ९.
 पडित्ता शौ. ८. १३.
 पडिट्ठण शौ. ८. १३.
 पडन्तो ६. १२.
 पडमाणो ६. १२.
 पडमं ७ प.
 पडिय शौ. ८. १३.
 पडुम पा. २. ३.
 पडुमं ७. प.
 पणरह ७. प.
 पण्णा ३. ५., ३. २४.
 पण्णावण्णा ७. प.
 पण्णासा ७. प.
 पण्णो (वि.) १. ५६.
 पण्हा १. ४२.
 पण्हो १. ४२., ३. २८.
 पत्तलं स्वाप्र. ३. ४५.
 पत्थरो पा. १. ६१., ३. २५.
 पत्थारो पा. १. ६१.
 पन्थो १. ३७.
 पंथो १. ३७.
 पमुहेण २. ३.
 पमुक्कं (वि.) ३. १०.
 पम्मुक्कं (वि.) ३. १०.
 पम्मं ७. प.
 पम्ह ७. प.
 पम्हट्टो ६. ३९.
 पयावई पा. २. १.
 पय्याकुलीकदग्धि शौ. ८. ८.
 पर अप. ११. ६४.
 परहुभो १. ८३.
 परासुट्टो १. ८३.
 परिट्टा १. ४७.
 परिट्टिञं १. ४७.
 परिठविञं १. ६१.
 परिठाविञं १. ६१.
 परित्तायध शौ. ८. १०.
 परोपपरं ७. प.
 परोहो १. ५२.
 परंसुहो १. ३२.

पलकखो ७. प.
 पलंभघणो (वि.) २. ३.
 पलिअंको ७. प.
 पलिअं ७. प.
 पलिचये मा. प्राप्र. ९. १६.
 पलित्तो २. ७.
 पलिलं ७. प.
 पलिविअं १. ७३.
 पलीवेह २. ७.
 पल्लङ्को ७. प.
 पल्लस्थं ७. प.
 पल्लट्टं ७. प.
 पल्लाण ७. प.
 पलहाओ ३. ३१.
 पवट्टो ७. प.
 पवत्तओ (वि.) ३. २१.
 पवत्तणं (वि.) ३. २१.
 पवसन्तेण अप. ११.५., अप. ११.१४.
 पबहो १६२., पा. १. ६१.
 पश्वतीं पै. १०. ६.
 पवासू १. ५२.
 पवाहो १. ६२., पा. १. ६१.
 पवो (वि.) ३. ३२.
 पसदिलं ७. प.
 पसदि शौ. प्रास. ८. ४५.
 पसिअ १. ७३.
 पसिदिलं ७. प.
 पसिद्धी १. ५२.
 पसुत्त १. ५२.
 पस्टे मा. ९. ५.
 पहरो पा. १. ६१.

पहारो पा. १. ६१.
 पहिहो ७. प.
 पहुच्चह अप. ११. ४८.
 पहुदि १. ८३.
 पहुवी पा. २. ३.
 पहो ७. प.
 पाअह ६. २१.
 पाअउं १. ५२.
 पाअवडणं ७. प.
 पाअवीडं ७. प.
 पाआई ७. प.
 पाआरो ७. प.
 पाइ ६. २१.
 पाइक्को ७. प.
 पाउअ १. ६१., १. ८३.
 पाउरणं ७. प.
 पाउसं पा. १. २४.
 पाउसो १. २४., १. ३८., १. ८३.,
 पा. १. ३८.
 पाओ (वि.) १. ९.
 पांगुरणं ७. प.
 पाडिप्फद्धी १. ५२.
 पाडिविआ १. ५२.
 पाडिवया (वि.) १. २०.
 पाडिसिद्धी १. ५२.
 पाणिअं १. ७३.
 पाणिणीआ (वि.) ३. ३७.
 पाणीअं (वि.) १. ७३.
 पारओ ७. प.
 पारकेरं ७. प.
 पारकं (वि.) ३. ३७., ७. प.
 पारद्धी ७. प.

पाराओ (वि.) पा. १. १९.
 पाराकेरं ७. प.
 पारावओ (वि.) पा. १. १९., ७. प.
 पारिकं ७. प.
 पारेवओ ७. प.
 पारो ७. प.
 पारोहो १. ५२.
 पालेवि अप. ११. ७३., अप. ११. ७४.
 पावउणं ७. प.
 पावरणं ७. प.
 पावारओ ७. प.
 पावासू ७. प., १. ५२.
 पावीड ७. प.
 पावीसु अप. ११. ५१.
 पावो शौ. ८. ४४.
 पावं (वि.) २. १., २. ९.
 पासह १. ५१.
 पासणो शौ. ८. ४५., ७. प.
 पासिद्धी १. ५२.
 पासुत्तं १. ५२.
 पासू १. ३६.
 पासं पा. ३. ८.
 पाहाणो ७. प.
 पाहुडं ७. प.
 पाहुदं १. ८३.
 पिअ हेरू. ४. २३.
 पिअउ हेरू. ४. २३.
 पिअओ हेरू. ४. २३.
 पिअरम्मि ४. २३.
 पिअरस्स ४. २३.
 पिअरहितो ४. २३.

पिअरा हेरू. ४. २३., ४. २३.
 पिअराणं ४. २३.
 पिअरादो ४. २३.
 पिअरे हेरू. ४. २३., ४. २३.
 पिअरेण ४. २३., हेरू. ४. २३.
 पिअरेणं हेरू. ४. २३.
 पिअरेसु ४. २३.
 पिअरेहि हेरू. ४. २३.
 पिअरेहिं हेरू. ४. २३.
 पिअरेहिं ४. २३.
 पिअरो ४. २३., हेरू. ४. २३.
 पिअरं ४. २३., हेरू. ४. २३.
 पिअवो हेरू. ४. २३.
 पिआ ४. २३., हेरू. ४. २३.
 पिआपिअं १. ८.
 पिउ अप. ११. ५१.
 पिउओ १. ८३.
 पिउळ्ळा ७. प.
 पिउणा हेरू. ४. २३.
 पिउणो हेरू. ४. २३.
 पिउ वणं १. ८४.
 पिउ सिआ ७. प.
 पिऊ हेरू. ४. २३.
 पिऊहिं हेरू. ४. २३.
 पिऊहिं हेरू. ४. २३.
 पिऊहि हेरू. ४. २३.
 पिओत्ति १. ५०., (वि.) १. ६९.
 पिक्क पा. १. ५४., १. २., ३. ३.,
 ७. प.
 पिच्छी ३. २०.
 पिट्ट १. ६८., १. ८२.

पिष्टि अप. ११. १.
 पिढरो ७. प.
 पिण्ड १. ६८., शौ. ८. ४४., शौ.
 (वि.) १. ६८.
 पिस्थी १. ८१.
 पिदणा शौ. ८. ४४., ४. २३.
 पिदुणो ४. २३.
 पिदुणं ४. २३.
 पिदुम्भि ४. २३.
 पिदुसुं ४. २३.
 पिदुहितो ४. २३.
 पिध ७. प.
 पियगमण (वि.) २. १.
 पिल्लट्टं ३. ३२.
 पिव पै. प्राप. १०. २१.
 पिश्चिले मा. ९. १०.
 पिसल्लो ७. प.
 पिसाओ ७. प.
 पिसाजी (वि.) २. १.
 पिहडो ७. प.
 पिहं १. ३१., ७. प.
 पीअलं स्वा. प्र. ३. ४५., ७ प.
 पीअं ७. प.
 पीआपीअं १. ८.
 पीडिअं (वि.) २. ४.
 पीढं ७. प.
 पीणभा (पा.) (वि.) ३. ३९.
 पीणत्तणं ३. ३९.
 पीणिमा ३. ३९.
 पीवलं स्वाप्र. ३. ४५.; ७. प.
 पुंछं १. ३३.

पुञ्जकम्मो पै. १०. ४.
 पुञ्जाहं मा. ९. ८., पै. १०. ४.
 पुष्टि अप. ११. १.
 पुट्टो १. ४२.
 पुट्टो ३. १८.
 पुट्ट १. ४२.; १. ८३.
 पुडो शौ. ८. २८.
 पुढमं ७. प.
 पुढवी ७. प.
 पुढुमं ७. प.
 पुणु अप. ११. ६४.
 पुण्णमतो (वि.) ३. ४४.
 पुण्णामो ७. प.
 पुत्तो शौ. ८. २८.
 पुधं ७. प.
 पुफं (वि.) २. ११.; ३. २७.
 पुरओ १. ४६.
 पुरंदरो (वि.) २. १.
 पुरा १. २१.
 पुरिम ७. प.
 पुरिल्ल (वि.) ३. ४४.
 पुरिसो ७. प.
 पुरिसो त्ति (वि.) १. ६९., १. ५०.
 पुरुषो शौ. ८. ४४.
 पुलिवाश्श मा. प्राप्र. ९. १६.
 पुलिशाह मा. प्राप्र. ९. १६.
 पुल्लिशे मा. ९. ३.
 पुल्लोमी १. ९२.
 पुव्वण्हो १. ६१., ३. २८.
 पुव्वाण्हो १. ६१.
 पुव्वं ७. प.

पुहह १. ८३.
 पुहई ७. प.
 पुहवी ७. प.
 पुहवीसो १. ११.
 पुहुवी १. ८३., ३. ३३.
 पुहं ७. प.
 पूसह ६. ३०.
 पूसो १. ५१.
 पेअं २. १५.
 पेडसं ७. प.
 पेक्खदि शौ. ८. ३७.
 पेक्खदि शौ. प्रास. ८. ४५.
 पेजं २. १५.
 पेट्टं १. ६८.
 पेहं ७. प.
 पेणहं १. ६८.
 पेम्मं ३. ११.
 पेरन्तो पा. १. ५७., ७. प.
 पेरन्तं १. ५७.
 पेस्कदि मा. ९. १२.
 पोक्खरणी शौ. ८. ४४.
 पोक्खरिणी ३. १७.
 पोक्खरं शौ. ८. ४४., ३. १७., १. ७९.
 पोत्थअं १. ७९.
 पोप्पली ७. प.
 पोप्पलं ७. प.
 पोम्मं ७. प.
 पोरो ७. प.
 पंसनो १. ६३.
 पंसुरं पा. १. ६१.
 पंसू १. ३६., १. ६३.

प्रयाग-जलं (वि.) २. १.
 प्रस्सदि अप. ११. ४८.
 प्राह्म्व अप. ११. ६४.
 प्राह्व अप. ११. ६४.
 प्राउ अप. ११. ६४.
 प्रियेण अप. ११. ५१.

फ

फकवती पै. (वि.) पा. २. १.
 फणसो ७. प.
 फणी (वि.) २. ११.
 फन्दनं १. ३.
 फन्दणं ३. २७.
 फरुसो ७. फ.
 फलमवहरह १. ३०.
 फलिहो ७. फ.
 फलिठं ७. फ.
 फलिहा ७. फ.
 फलं १. २८.
 फलं अवहरह १. ३०.
 फाबेह (वि.) २. ४., २. २०.
 फाळिहहो ७. फ.
 फालेह (वि.) २. ४., २. १०.
 फामो पा. ३. ८.
 फुहं ६. ३९.
 फुंसदि शौ. प्रास. ८. ४५.
 फोडओ शौ. ८. ४४.
 फंसो १. ३३., ३. २७.

ब

बहक्को ७. ब.
 बडुत्तणहो अप. ११. ७१.
 बडुप्पणु अप. ११. ७१.

बंधवो १. ३७.
 बन्धवो १ ३७.
 बन्धिज्ज ह. २६.
 बम्भचेर (वि.) ३. २९.
 बम्हचेरं ३. २९.
 बम्हणो १. ६१., ३. २९.
 बम्हा ३. २९.
 बहिणां ७. ब.
 बह्मणो शो. ८. ३०.
 वारहणो १. ६१.
 वारह ७. ब.
 वालहे अप. ११. २२.
 वालाए शौ. ८. ४४.
 वाह अप. ११. १.
 बाहा अप. ११. १.
 वाहाए पा. १. ४५.
 बाहूसु पा. १. ४५.
 बीआ (वि.) १. ९.
 बुझ्जा ३. २०.
 बुद्धि शो. प्रास. ७. ४५.
 बुद्धी १. ८३.
 बुद्धि हेरू. ४. ३७.
 बुद्धिअ ४. ३७.
 बुद्धितो हेरू. ४. ३७.
 बुद्धि ४. ३७., हेरू. ४. ३७.
 बुद्धी ४. ३७., हेरू. ४. ३७., ४. ३४.
 बुद्धीअ ४. ३४. हेरू. ४. ३७.
 बुद्धीआ ४. ३७. हेरू. ४. ३७., ४. ३४.
 बुद्धीइ ४. ३७., हेरू. ४. ३७., ४. ३४.
 बुद्धीउ ४. ३३., ४. ३७., हेरू. ४. ३७.
 बुद्धीए ४. ३४., ४. ३७., हेरू. ४. ३७.

बुद्धीओ ४. ३३., ४. ३७., हेरू. ४. ३७.
 बुद्धीण ४. ३७., हेरू. ४. ३७.
 बुद्धीणं ४. ३७., हेरू. ४. ३७.
 बुद्धीसु ४. ३७., हेरू. ४. ३७.
 बुद्धीसु ४. ३७., हेरू. ४. ३७.
 बुद्धीसुतो हेरू. ४. ३७.
 बुद्धीहितो हेरू. ४. ३७.
 बुधो १. ३३.
 बुहस्पदी मा. ९. ४.
 बौद्धणठ अप. ११. ७५.
 ब्रह्मज्ञो शौ. ८. ३०
 ब्रुवह अप. ११. ४८.
 ब्रोपिणु अप. ११. ४८.,

भ

भअवं ४. ४२
 भहणी ७. भ.
 भहरवो १. ८९.
 भगवती पे. १०. ६.
 भगवं शौ. ८. ७
 भग्गठ अप. ११. २६.
 भग्गो ३. २.
 भज्जा ३. २३.
 भज्जिठ अप. ११. ७३.
 भट्टा शौ. प्रास. ८. ४५.
 भढो २. ४.
 भणइ द. ६.
 भणए द. ६.
 भणह द. ६.
 भणन्ति द. ६.
 भणन्ते द. ६.

भणमि द. द.
 भणसि द. द.
 भणसे द. द.
 भणित्था द. द.
 भणिमो द. द.
 भणिरे द. द.
 भणेमो द. द.
 भणामो द. द.
 भणामि द. द.
 भत्तउ हेरू. घ. २३.
 भत्तओ हेरू. घ. २३.
 भत्तारग्भि घ. २३., हेरू. घ. २३.
 भत्तारस्स घ. २३. हेरू. घ. २३.
 भत्तारहितौ घ. २३.
 भत्तारा घ. २३., हेरू. घ. २३.
 भत्ताराउ हेरू. घ. २३.
 भत्ताराओ हेरू. घ. २३.
 भत्ताराण हेरू. घ. २३.
 भत्ताराणं घ. २३. हेरू. घ. २३.
 भत्तारादो घ. २३.
 भत्तारासुंतो हेरू. घ. २३.
 भत्ताराहि हेरू. घ. २३.
 भत्ताराहितो हेरू. घ. २३.
 भत्तारे घ. २३., हेरू. घ. २३.
 भत्तारेण घ. २३., हेरू. घ. २३.
 भत्तारेसु घ. २३. हेरू. घ. २३.
 भत्तारेसुंतो हेरू. घ. २३.
 भत्तारेहि घ. २३. हेरू. घ. २३.
 भत्तारेहि हेरू. घ. २३.
 भत्तारेहितो हेरू. घ. २३.
 खत्तारं घ. २३. हेरू. घ. २३.

भत्तारो घ. २३. हेरू. घ. २३.
 भत्तिघन्तो द. घ. ४.
 भत्तुणा घ. २३. हेरू. घ. २३.
 भत्तुणो घ. २३. हेरू. घ. २३.
 भत्तुण घ. २३.
 भत्तुग्मि घ. २३. हेरू. घ. २३.
 भत्तुसु घ. २३.
 भत्तुस्स हेरू. घ. २३.
 भत्तुहि घ. २३.
 भत्तुहितो घ. २३.
 भत्तु हेरू. घ. २३.
 भत्तुओ हेरू. घ. २३.
 भत्तुणं हेरू. घ. २३.
 भत्तुण हेरू. घ. २३.
 भत्तुसु हेरू. घ. २३.
 भत्तुसुंतो हेरू. घ. २३.
 भत्तुहि हेरू. घ. २३.
 भत्तुहि हेरू. घ. २३.
 भत्तुहितो हेरू. घ. २३.
 भत्तु घ. १.
 भद्दु घ. ४.
 भद्दु घ. ४.
 भन्ते मा. १. २.
 भणपं ७. भ.
 भमया स्वाप्र. ३. ४५.
 भमाडह व. १९.
 भमाडह व. १९.
 भमावह व. १९.
 भमिअ ३. ३६.
 भमिरो ३. ३५.
 भयफह ७. भ.

भयव शौ. ८. ६.
 भयवं शौ. ८. ७.
 भयस्सई ७. भ.
 भरघो शौ. (वि.) पा. २. १.
 भरहो ७. भ.
 भवओ (वि.) १. ४६.
 भवन्तो (वि.) १. ४६.; ७. भ.
 भवँरू अप. ११. ५०.
 भवात्तिसो पै. १०. १६.
 भविञं ७. भ.
 भविय शौ. ८. १३.
 भविस्सिदि शौ. ८. १७. शौ. (वि.)
 ८. ३३.
 भवं ४. ४२. शौ. ८. ७.
 भसरो ७. भ.
 भसलो ७. भ.
 भस्टालिका मा. ९. ५.
 भस्टिणी मा. ९. ५.
 भस्सं ७. भ. (वि.) पा. १. १९.
 भाभदि शौ. प्रास. ८. ४५.
 भाइरही २. १.
 भाउओ १. ८३.
 भाणओ शौ. ८. ४४.
 भाणुओ शौ. ८. ४४.
 भाणं (वि.) पा. १. १९.; ७. भ.
 भादा शौ. प्रास. ८. ४५.
 भादि शौ. प्रास. ८. ४५.
 भाटुओ शौ. प्रास. ८. ४५.
 भामिणी ७. भ.
 भामेई ६. १९.
 भारिभा पै. प्रास. १०. २१. पै. ७. भ.

भारिया पै. १०. १३.
 भिउडी ७. भ.
 भिऊ १. ८१.
 भिंगारो १. ८१.
 भिंगो १. ८१.
 भिण्डवालो ७. भ. शौ. ८. ४४.
 भिन्द्यालो शौ. ८. ४४.
 भिण्फो ७. भ. शौ. प्रास. ८. ४५.
 भिवमलो ७. भ.
 भिसभ १. २३.
 भिसिणी २. १३.
 भीमशेणस्स मा. ९. १४.
 भुई १. ८३.
 भुञ्जणहं अप. ११. ७४.
 भुञ्जणहिं अप. ११. ७४.
 भुत्त ३१.
 भुमया स्वाप्र. ३. ४५.
 भुक्तया ७. भ.
 भूदं शौ. प्रास. ८. ४५.
 भे हेरू. पा. ४. ४७. हेरू. ४. ४७.
 भेच्छं ६. ९.
 भेडो ७. भ.
 भेत्तुआण पा. ३. ३६.
 भोअणमेमं (वि.) १. ६६.
 भोच्चा ३. २०.
 भोच्छ ६. ९.
 भोत्ति पै. १०. १७.
 भोत्तव्वं ६. ३३.
 भोत्ता शौ. ८. १३.
 भोत्तुआण ३. ३६.
 भौत्तं ६. ३३.

भोत्तण ६. ३३.

भोदि शौ. ८. ११., शौ. ८. १५.

शौ. प्रास. ८. ४५.

भोदी ४. ४३.

भोदूण शौ. ८. १३.

भोमि शौ. ८. ३३.

म

मअगलो ७. म.

मअकू २. १.

मअंको (वि.) १. ८३.

मअणो २. १.

मआ ४. ४७.

मह शौ. ८. ४४., ४. ४७. शौ. ४.

४७., हेरू. पा. ४. ४७., अफ.

४. ४८.

महत्तो ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.

महदु हेरू. पा. ४. ४७.

महदो ४. ४७. हेरू. पा. ४. ४७.

महलं ७. म.

महं अफ. ११. ४०.

महंअ-पक्खे (वि.) ३. ३७.

मउअं ७. म.

मउडं १. ७५.

मउणं १. ९३.

मउत्तणं ७. म.

मउली १. ९३.

मउलो २. १.

मउलं १. ७५.

मऊरो शौ. ८. ४४.

मऊरो ७. म.

मऊहो ७. म.

मए ४. ४७. शौ. ८. ४४., शौ. ४.

४७., हेरू. पा. ४. ४७.

मएसु ४. ४७.

मओ १. ८०., २. १.

मगगओ १. ४६

मगगू ३. १.

मगोहि अफ. ११. १९.

मगगो (वि.) २. १.

मघोणो ७ म

मक्चू, ७. म.

मक्छुरो ३. २२.

मज्जारो पा. १. ६१.; ७. म.

मज्जं ३. २३.

मज्ज हेरू. पा. ४. ४७.

मज्जत्तो हेरू. पा. ४. ४७.

मज्जम्मि हेरू. पा. ४. ४७.

मज्जसु हेरू. पा. ४. ४७.

मज्जहे अफ. ११. १२.

मज्जहो ७. म.

मज्जाण हेरू. पा. ४. ४७.

मज्जाणं हेरू. पा. ४. ४७.

मज्झिमो ७. म.

मज्जु अफ. ११. ४०.

मण्णसु हेरू. पा. ४. ४७.

मज्ज हेरू. पा. ४. ४७.; ३. २४.

मज्ज ३. ३०.

मज्जरो ७. म.

मट्टिआ ७. म.

मडअं ७. म.

मडे मा. प्राप्र. ९. १६.

मड्डिअं ७. म.
 मढा २. ४.
 मणअं स्वा. प्र. ३. ४५.
 मणस्सि शौ. ८. ५.
 मणहरं ७. म.
 मणाउ. अप. ११, ६४.
 मणासिला १. ५१.
 मणिअं स्वाप्र. ३. ४५.
 मणोज्जं ३. ५.
 मणोणं ३. ५.
 मणोरहो २. ३., ७. म.
 मणंसिणी १. ३३. १. ५२.
 मणंसिला १. ३३.
 मणंसी १. ५२.
 मण्डलगं १. ४३.
 मण्डलगो १. ४३.
 मंडुक्को ३. ११.
 मण्णू ७. म.
 मतन-परवसो पै. १०. ६.
 मत् शौ. ८. ४४.
 मत्तौ हेरू. पा. ४. ४७.; ४. ४७.;
 शौ. ४. ४७. शौ. ८. ४४.
 मथुरीअं पा. १. ६१.
 मनूसो १. ५१.
 मन्तिदो शौ. ८. २.
 मन्तू ७. म.
 मढभीसा अप. ११. ६४.
 मम ४. ४७. शौ. ८. ४४.
 हेरू. पा. ४. ४७. शौ. ४. ४७.
 ममए ४. ४७.
 हेरू. पा. ४. ४७.

ममत्तो ४. ४७.
 हेरू. पा. ४. ४७.
 ममडुहि ४. ४७.
 ममम्मि ४. ४७.
 हेरू. पा. ४. ४७.
 ममसु हेरू. पा. ४. ४७. ४. ४७.
 ममाइ ४. ४७. हेरू. पा. ४. ४७.
 ममाण हेरू. पा. ४. ४७.
 ममाणं हेरू. पा. ४. ४७.
 ममात्तु पै. १०. २०.
 ममात्तो पै. १०. २०.
 ममादो शौ. ८. ४४. शौ. ४. ४७.
 ममासुंतो ४. ४७. हेरू. पा. ४. ४७.
 ममाहितो हेरू. पा. ४. ४७., ४. ४७.
 ममेसु ४. ४७, हेरू. पा. ४. ४७.
 ममेसुंतो ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 ममं ४. ४७.
 मग्महो ३. २६.
 मयङ्को पा. २. १.
 मयणो पा. २. १.
 मयन्दो ७. म.
 मयि अप. ४. ४८.
 मयुरो ७. म.
 मय्यं मा. ९. ७.
 मरगअं ७. म.
 मरलो पा. १. ६१.
 मरहद् ७. म.
 मरालो पा. १. ६१.
 मरिण्डुअं अप. ११. ७२.
 मलिणं ७. म.
 मत्तू ७. म.

मखलं (वि.) ३. ३.	महुणि ४. ४१.
मसणं ७. म.	महेसु हेरू. पा. ४. ४७., ४. ४७
मसणं ७. म.	महो २. ३.
मसिणं ७. म.	महं हेरू. पा. ४. ४७., ४. ४७.
मस्कली मा. ९. ४.	मद्य ४. ४७., अप. ४. ४८.
मह हेरू. पा. ४. ४७., शौ. ४. ४७., ४. ४७., शौ. ८. ४४.	मद्यत्तो ४. ४७.
महत्तो ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.	मद्याणं ४. ४७.
महन्तो ७. म.	मद्यु अप. ४. ४८.
महन्दो शौ. ८. ३.	मद्यत्तो ७. म.
महम्मि ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.	माअ ४. ३७.
महसु हेरू. पा. ४. ४७., ४. ४७.	माअं ४. ३७.
महाण हेरू. पा. ४. ४७.	माआ ७. ३७.
महाणं ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.	माआअ ४. ३७.
महारा अप. ११. ६८.	माआइ ४. ३७.
महिमा पा. १. ४४.	माआण ४. ३७.
महिवालो २. ९.	माआण ४. ३७.
महिविट्ठं (वि.) १. ८२.	माआदो ४. ३७.
महिहि अप. ११. २४.	माआसु ४. ३७.
महु ४. ४१., अप. ११. ४०. अप. ४. ४८.	माआसुं ४. ३७.
महुं ४. ४१.	माआसुतो ४. ३७.
महुअरो २. ३.	माआहित्तो ४. ४७.
महुअं ७. म.	माइणो (वि.) १. ८५.
महुइ १. १०.	माइ मण्डल १. ८५.
महुरिअ ७. म.	माउअं ३. १२. ७. म.
महुव्व ३. ४५.	माउआ १. ८३.
महुअं ७. म.	माउव्वकं ३. १२.; ७. म.
महुइ ४. ४१.	माउव्वा ७. म.
महुइ ४. ४१.	माउत्तणं ७. म.
महुओ ८. ४४.	माउ मण्डलं १. ८५., १. ८४.
	माउ-सिआ ७. म.
	माउहरं १. ८५., १. ८४.

माऊ १. ८३.
 माए ४. ३७.
 माएहि ४. ३७.
 माएहिँ ४. ३७.
 माएहिँ ४. ३७.
 माज्जारो पा. १. ६१.
 माणुसो २. ८.
 माणंसिणी १. ५२.
 माणंसी १. ५२.
 माथवो पै. प्राप्र. १०. २१.
 मादु १. ८३.
 मादरं शौ. ८. ४४.
 मादुहरं १. ८५.; १. ८४.
 मादुमण्डल ९. ८४., १. ८५.
 मारणउ अप. ११. ७५.
 मारणओ अप. ११. ७५.
 मारि अप. ११. ७३.
 मारुदिणा शौ. ८. २.
 माला ४. ३३.
 मालाउ ४. ३३.
 मालाओ शौ. ८. ४४.
 मालाओ ४. ३३.
 माशे मा. प्राप्र. ९. १६.
 मामलं १. ३६.
 मास १. ३६.
 माहवीलदा २. ३.
 माहप्पो १. ४१.
 माहप्प १. ४१.
 माहो २. ३.
 मि ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
 मिअंको ७. म.

मिअंगो ७. म.
 मिआअदि शौ. प्रास. ८. ४१.
 मिइङ्गो पा. १. ५४.
 मिओ शौ. ८. ४७.
 मिच्चू ७. म.
 मिच्छा ३. २२.
 मिट्ठं १. ८१.
 मिमे ४. ४७.
 मिमं हेरू. पा. ४. ४७.
 मिरिअं १. ५४.
 मिलाणं ३. ३२.
 मि लउ अप. (वि.) ११. ४.
 मिलिच्छो १. ६७.
 मिसालिअ स्वाप्र. ३. ४५.
 मिहुणं २. ३.
 मी ४. ४७.
 मुअको (वि.) १. ८३.
 मुइंगो १. ५४.; ७. म.
 मुक्को ३. १२.
 मुक्कं ७. म.
 मुक्खो ७. म.
 मुग्गरो ३. १.
 मुग्गो ३. १.
 मुज्जाय (अ) णो १. ९२.
 मुट्ठी ३. १८.
 मुढाल १. ८३.
 मडढा ७. म.
 मुंढे १. ३३.
 मुंढा १. ३३.
 मुत्ताहलं २. ११.
 मुत्ती (वि.) ३. २१.

मुत्तो (वि.) ३. २१.
 मुत्तं ३. १.; ७. म.
 मुद्दा ७. म.
 मुद्दाअ ४. ३४.
 मुद्दाइ ४. ३४.
 मुद्दाए ४. ३४. (वि.) १. ९.
 मुद्दं ३. १.
 मुनिंदो १. ६७.
 मुरुखो ७. म.
 मुसलं ७. म.
 मुसा ७. म.
 मुसावावा ७. म.
 मुहत्तो (वि.) ३. २१.
 मुहं २. ३.
 मूओ ३. १२.
 मूमओ ७. म.
 मूसलं ७. म.
 मूसा ७. म.
 मे शौ. ८. ४४. ४. ४७.; हेरू. पा.
 ४७. शौ. ४. ४७.
 मेखो पै. प्राप्र. २. २१.
 मेढी ७. म.
 मेरा ७. म.
 मेस्त्रि. अप. ११. ४६.
 मेहला २. ३.
 मेहो २. ३.
 मेसे मा. (वि.) ४. ५.
 मा. ८. २.
 मो हेरू. पा. ४. ४७.
 मोच्छ ६. ९.
 मोण्डं १. ७९.

मोडं (वि.) २. ४.
 मोत्तव्वं ६. ३३.
 मोत्ता १. ७९.
 मोत्ती शौ. ८. ४४.
 मोत्तुण ६. २९.
 मोत्तुं ३. ३६.; ६. ३३.
 मोत्तूण ६. ३३.
 मोरो ७. म.
 मोल्लं ७. म.
 मोसा. ७. म.
 मोहो ७. म.
 मं हेरू. पा. ४. ४७.; ४. ४७.
 शौ. ४. ४७.; अप. ११. ६४
 मंजारो १. ३३.
 मंसलं १. ३६.
 मंसुओ ३. ४४.
 मंसं १. ६३., शौ. ८. ४४., १. ३६.
 मंस्सू ७. म.
 भिम हेरू. पा. ४. ४७.,
 ४. ४७.
 म्हा ६. ६.
 मिह ६. ६.
 म्ही ६. ६.
 य
 यणवदे मा. ९. ७.
 यद्धि मा. ९. ७.
 यंति १. ५०.
 यस्के मा. पा. ९. ११.
 यस्के मा. ९. ११.
 णातिसो पै. १०. १६.
 याद्धि मा. ९. ७.

यायदे मा. प्राप्र. ९. १६.
युम्हातिम्यो पै. १०. १६.
य्येव शौ. ८. २२.

र

रभञं (वि.) २. ६.
रभञो २. १.
रभद् २. १. ; २. ६.
रभणं ७. २. २. १.
रगो पा. ३. ६.
रच्छा ३. २२.
रञ्जा पै. प्राप्र. १०. २१.
रञ्जो पै. प्राप्र. १०. २१.
रञ्जा पै. १०. ३.
रञ्जो पै. १०. ३.
रणं ७. ६.
रण्णा हेरू. ४. ४१. ; ४. ४१.
रणो ४. ४१.
रणो हेरू. ४. ४१.
रणं ७. २.
रन्ती ७. २. ; ३. ३.
रत्तं ७. २.
रन्ता शौ. ८. १३.
रन्दूण शौ. ८. १३.
रमणिञ्ज २. १५.
रमणीञं २. १५.
रमति पै. १०. १८.
रमते पै. १०. १८.
रमदि शौ. ८. १६.
रमदे शौ. ८. १६.
रभिञ ३. ३६.

रमिय शौ. ८. १३.
रमियते पै. १०. १५.
रयणीभरो १. १३.
रसा-अलं २. १.
रसा-यलं पा. २. १.
रसालो ३. ४४.
रस्ती ३. २. (वि.) ३. २२.
राभ-उलं १. १५., ७. ७.
राभफेरं ७. २.
राभमि ४. ४१.
राभस्स ४. ४१
राञं ४. ४१.
राभा ४. ४१.
राभाणो ४. ४१.
राभाणं ४. ४१.
राभाण्ण ४. ४१.
राभाद् ४. ४१.
राभादो ४. ४१.
राभाहितो ४. ४१.
राइकं (वि.) ३. ३७., ७. २.
राइणा हेरू. ४. ४१., ४. ४१.
राइणो ४. ४१. हेरू. ४. ४१.
राइणं ४. ४१. हेरू. ४. ४१.
राइत्तो हेरू. ४. ४१.
राइम्मि हेरू. ४. ४१., ४. ४१.
राइहितो ४. ४१.
राई ७. २.
राईण हेरू. ४. ४१.
राईणं हेरू. ४. ४१.
राईसु हेरू. ४. ४१.
राईसुं हेरू. ४. ४१.

राईहि हेरू. ४. ४१.
 राईहि हेरू. ४. ४१.
 राईहि हेरू. ४. ४१.
 राउलं १. १५. ७. २.
 राए ४. ४१.
 राएण हेरू. ४. ४१.
 राएणं हेरू. ४. ४१.
 राएसु हेरू. ४. ४१., ४. ४१.
 राएसु हेरू. ४. ४१., ४. ४१.
 राएहि हेरू. ४. ४१.
 राएहि हेरू. ४. ४१., ४. ४१.
 राओ (वि.) १. ६२.
 राओ पै. प्राप्र. १०. २१.
 राचिआ पै. १०. ३.
 राचिओ प. १०. ३.
 राचिना पै. प्राप्र. १०. २१.
 राचिनो पै. प्राप्र. १०. २१.
 राजपघो शौ. ८. ९.
 राजपहो शौ. ८. ९.
 राय हेरू. ४. ४१.
 रायकं ७. २.
 रायत्तो हेरू. ४. ४१.
 रायम्मि हेरू. ४. ४१.
 रायस्स हेरू. ४. ४१.
 राया हेरू. ४. ४१.
 रायाण हेरू. ४. ४१.
 रायाणो हेरू. ४. ४१.
 रायाणं हेरू. ४. ४१.
 राये हेरू. ४. ४१.
 रायं हेरू. ४. ४१., शौ. ८. ६.

राहा २. ३.
 रिज २. १., १. ८६., (वि.) २. ९.,
 ७. २.
 रिक्खो ७. २.
 रिक्खो ७. २.
 रिज्जू १. ८६., ७. २.
 रिड्डी ७. २.
 रिणं १. ८६., ७. २.
 रिद्धी १. ८६., ७. २.
 रिसहो १. ८६., ७. २.
 रिमी १. ८६., ७. २.
 रुअसि अप. ११. ४२.
 रुअहि अप. ११. ४२.
 रुक्खा १. ४३.
 रुक्खाइं १. ४३.
 रुक्खो शौ. ८. ४४., ७. २.
 रुक्खे मा. (वि.) ४. ५.
 रुक्मी (वि.) ३. १६.
 रुद्धो ३. ४.
 रुद्धो ३. ५.
 रुणं ७. २.
 रुण्णिणी ३. १६.
 रुण्णी पा. ३. ६.
 रुणं ३. १६.
 रुवह ६. ३१.
 रुसह ६. ३०.
 रेओ २. ११.
 रेसि अप. ११. ६४.
 रेसि अप. ११. ६४.
 रोअदि २. १.
 रोचिरो ३. ३५.

रोच्छं ६. ९.
 रोत्तम्बं ६. ३३.
 रोत्तुं ६. ३३.
 रोत्तण ६. ३३.
 रोददि शौ. प्रास. ८. ४५.
 रोवद् ६. ३१.
 रोवति शौ. प्रास. ८. ४५.

ल

लक्षणं ७. ल.
 लक्ष्मेहि अप. ११. ७.
 लखणं ३. १३.
 लग्ग ६. ३८.
 लग्गं ३. २.
 लङ्गणं १. ३७.
 लंघणं १. ३७.
 लज्जिरो ३. ३५.
 लम्ब्युणं १. ३७.
 लट्टी ३. १८.; ७. ल.
 लदत्तो हेरु. ४. ३७.
 लदाहितो ४. ३७.
 लदा ४. ३७., हेरु. ४. ३७.
 लदाऊ ४. ३७., हेरु. ४. ३७.
 लदाह ७. ३७., हेरु. ४. ३७.
 लदाठ ४. ३७., हेरु. ४. ३७.
 लदाप् ४. ३७., हेरु. ४. ३७.
 लदाओ ४. ३७., हेरु. ४. ३७.
 लदाण ४. ३७., हेरु. ४. ३७.
 लदाणं ४. ३७., हेरु. ४. ३७.
 लदादो ४. ३७.
 लदासु ४. ३७., हेरु. ४. ३७.
 लदासुं ४. ३७., हेरु. ४. ३७.

लदासुंतो हेरु. ४. ३७.
 लदाहि ४. ३७., हेरु. ४. ३७.
 लदाहिं ४. ३७., हेरु. ४. ३७.
 लदाहिं ४. ३७., हेरु. ४. ३७.
 लदानितो हेरु. ४. ३७.
 लद् ४. ३७., हेरु. ४. ३७.
 लपति प. १०. १८.
 लपते पं. १०. १८.
 लवणं शौ. ८. ४४.
 लस्कशे मा. पा. ९. १६.
 मा. प्राप्र. ९. १६.
 लस्कशे मा. ९. ११.
 लहहि अप. ११. ४२.
 लहहुं अप. ११. ४५.
 लहु २. ३.
 लहुअं ७. ल.
 लहुई ३. ३३.
 लहुवी ३. ३३.
 लाभणं २. १.
 लाऊ ७. ल.
 लाङ्गलो ७. ल.
 लांगलो ७. ल.
 लायण पा. २. १.
 लावण्यं शौ. ८. ४४.
 लासं ३. ८.
 लाहअं २. ३.
 लाहलो ७. ल.
 लिच्छुह ३. २२.
 लिम्बो ७. ल.
 लिह अप. ११. १.
 लिहद् २. ३.

- लिहीअदि औ. प्राप्र. ८. ४०
 लीह अप. ११. १.
 लुकां ७. ल.
 लुगो ७. ल., ६. ३९.
 लुणइ ६. २२.
 लुम्पइ (वि.) २. ३.
 लेइ (वि.) ६. ३१.
 लेविणु अप ११. ७३., अप. ११. ७४.
 लेह अप. ११. १.
 लोअणो १. ४१., पा. १. ४१.
 "लोअणो पा. १. ४१.
 लोअणं १. ४१.
 लोओ २. १.
 लोणं ७. ल.
 लोद्धओ १. ७९.
 लोहिआअइ ६. १.
 लोहिआइ ६. १.
 व
 वअणो १. ४१.
 वअणं २. १.; २. ८., १. ४१.,
 वअरं शौ. ८. ४४.
 वअ शौ. ८. ४४.; ४. ४७. शौ. ८. ४०.
 वहअअओ १. ८९.
 वहआलिओ १. ९०.
 वहआलीओ ९. ८९.
 वहएसो १. ८९.
 वहएहो १. ८९.
 वहरं ७. व.
 वहरं १. ९०.
 वहसवणो १. ९०.
 वहसालो १. ८९.
 वहसाहो १. ८९.
 वहसिओ १. ९०.
 वहसंपाअणो १. ९०.
 वहस्साणरो १. ८९.
 वक्कलं ३. ३.
 वक्खाणं ३. ७.
 वग्गा १. २.
 वग्गो ३. ३. (वि.) २. १.
 वक १. ३३.
 वच्छहु अप. ११. ८.
 वच्छहे ११. ८.
 वच्छाओ (वि.) १. ९.
 वच्छा चलन्ति १. ६.
 वच्छेण १. ३४.
 वच्छेणं १. ३४.
 वच्छेसु १. ३४.
 वच्छेसुं १. ३४.
 वच्छुं १. २८.
 वच्छो ३. २२., ७. व.
 वज्जं ३. २३., ७. व.
 वज्जणीयं १. ३.
 वंअणं १. ३२.
 वज्जिअं १. ३७.
 वंजिअं १. ३७.
 वअदि मा. ९. ९.
 वटिशां पै. प्राप्र. १०. ३१.
 वट्टी ३. २१.
 वट्टो ७. व.
 वट्ट ७. व.
 वडभागलो २. १.

वडिसं (वि.) २. ४.
 वड्डयरं ७. व.
 वड्ढी १. ८०.
 वढ अप. ११. ६४.
 वणमि १. २९.
 वणं ४. ३८.
 वणंमि १. २९.
 वणस्सई ७. व.
 वणाणि शौ. ८. ३२.
 वणिदा ७. व.
 वण्ही ३. २८.
 वत्ता ३. २१.
 वत्तिआ (वि.) ३. २१.
 वत्तिओ (वि.) ३. २१.
 वदणं शौ. (वि.) पा. २. १.
 वनप्फई ७. व.
 वन्दामि शौ. ८. ४२.
 वन्दिता (वि.) ३. ३६.
 वन्दित्तु (वि.) ३. ३६.
 वग्गं ७. व.
 वळफो शौ. ८. ४४.
 वग्गह १. ३७.
 वंफह १. ३७.
 वग्गचेरं ७. व.
 वग्गहो ७. व.
 वग्गिओ १. ७३.
 वग्गो १. ३९.
 वग्गचेरं ३. ९.; ७. व.
 वयणा पा. १. ४१.
 वयणां पा. १. ४१.
 वयं शौ. ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.,
 (वि.) १. ४०.

वयंसिअहु अप. ११. २३.
 वयंसो १. ३३.
 वरिअं ७. व.
 वरिस (वि.) ६. २८.
 वलआ १. ६१.
 वलयाणलो पा. २. १.
 वलवासुहं २. ४.
 वलही २. ४.
 वलाआ १. ६१.
 वलाहुं अप. ११. ४५.
 वलिसं (वि.) २. ४.
 वल्लो पा. १. ५७., ७. व.
 वसही ७. व.
 वसहो १. ८०.; ७. व.
 वसुआति पै. १०. १७.
 वसो (वि.) १. ८१.
 वहप्फई ७. व.
 वहस्सई ७. व.
 वहिरो २. ३.
 वहिञ्जउ अप. ११. ६४.
 वहीअदि शौ. प्रास. ८. ४५.
 वहु ४. ३७.
 वहुपु शौ. ८. ४४.
 वहुसुहं १. ८.
 वहुहुत्तं ३. ४३.
 वहुं ४. ३७.
 वहू ४. ३३., ४. ३७.
 वहूअ ४. ३७.
 वहूआ ४. ३७.
 वहूई ४. ३७.
 वहूड ४. ३३.

वह्ण ४. ३७.
 वह्णो ४. ३३., ४. ३७., शौ. ८. ४४.
 वह्ण ४. ३७.
 वह्णं ४. ३७.
 वह्णो ४. ३७.
 वह्णमुह १. ८.
 वह्णसु ४. ३७.
 वह्णसुं ४. ३७.
 वह्णसुंनो ४. ३७.
 वह्णहिं ४. ३७.
 वह्णहिं ४. ३७.
 वह्णहिं ४. ३७.
 वह्णहिंनो ४. ३७.
 वह्णडभडो ७. व.
 वह्णचरिअं ७. व.
 वाअरणं ७. व.
 वाभा १. २०.
 वाभाच्छुलं पा. १. २०.
 वाभा. विहवो पा. १. २०.
 वाडणा २. १.
 वाडम्मि शौ. ८. ४४.
 वाडलो ३. १२., ७. व.
 वाडलो ३. १२.
 वाणारसी ७. व.
 वाप्पो ७. व.
 वारणं ७. व.
 वारं (वि०) ३. ३., ७. व.
 वावडो शौ. ८. २८., ७. व.
 वास हसी १. ९.
 वासा १. ५१.
 वासेण अप. ११. ५२.

वासेसी १. ९.
 वाहइ २. ३.
 वाहरिज्जह ६. २६.
 वाहिओ ३. १२.
 वाहित्तो ३. १२.
 वाहित्तं १. ८१.
 वाहिप्पह ६. २६.
 वाहिरं ७. व.
 वाहि ७. व.
 वाहो २. ३.; ७. व.
 विअ शौ. ८. ३९.; १. १०.
 विअहएलं ७. व.
 विअङ्गी ७. व.
 विअङ्गो ७. व.
 विअणा ७. व.
 विअणो पा. १. ५४.
 विअणं १. ५४,
 विअय वम्म शौ. ८. ६.
 वि अययासो १. १०.
 विअणं २. १.
 विआरिओ ३. ४४.
 विआरुओ ३. ४४.
 विउणो (वि.) ३. ३.
 विउदं २. ६.
 विउलं २. १.
 विउस्सग्गो ७. व.
 विओओ २. १.
 विओहो २. १.
 विक्रासरो १. ५१.
 विक्कओ १. २.
 विक्कवी ३. ३.

विच्छि अप. ११. ६४.
 विच्छुडो ७. व.
 विच्छुओ ७. व.
 विच्छोद्गगरु अप. ११. ४९.
 विच्छोडवि अप. ११. ७३.
 विज्जणं (वि.) २. १.
 विज्जला स्वाप्र. ३. ४५.
 विज्जा ३. २३.
 विज्जू (वि.) १. २०.
 विज्जं ३. २०.
 विञ्चुलो १. ८१.
 विञ्छिओ ७. व.
 विञ्छुओ ७. व.
 विञ्जातो पै. प्राप्र. १०. २१.
 विञ्जो शौ. ८. ३०.
 विञ्जानं पै. १०. २.
 विट्ठाल अप. ११. ६४.
 विट्ठी ७. व.
 विट्ठीप् अप. ११. २.
 विट्ठं ७. व.
 विडवो २. ४.
 विड्ढा ३. ११.
 विड्ढी १. ८१.
 विडत्तच्छुरसं पा. १. २५.
 विडत्तं ६. ३९.
 विडप्पह ६. २६.
 विडविज्जह ६. २६.
 विणि ४. ४८.
 विणु अप ११. ६४.
 विण्ठ ७. व.
 विण्णाणं (वि.) ३. ५., ३२४.

विण्णो शौ. ८. ३०.
 विण्हू १. ६८.; ३. २८.
 वितिण्हो १. ८१.
 वित्ती १. ८१
 वित्त १. ८१.
 विदुरो (वि.) २. १.
 विद्वाओ (वि.) १. ७५.
 विप्पस्स देहि १. ६.
 विम्भलो ७. व.
 विमृओ ३. २९.
 वियले मा. प्राप्र. ९. १६.
 विरुयाहले मा. ९. ७.
 विरसमालक्खिमोर्ण्हि १. १२.
 विरहग्गी १. ६७.
 विलम्बु अप. ११. ४६.
 विलया ७. व.
 विलाशे मा. प्राप्र. ९. १६.
 विलासणीओ अप. ११. २१.
 विलिअं १. ७३. १. ५४.
 विञ्चं १. ६८.
 विरहक्को ६. ३९.
 विवह अप. ११. ५३.
 विसढो ७. व.
 विसमहओ १. ५५.
 विसमओ १. ५५.
 विसमो ७. व. पै. १०. ८.
 विमानो पै. १०. ८.
 विसी १. ८१.
 विसो (वि.) १. ८१.
 विसं (वि.) २. १३.
 विसट्ठुकं ७. व.

विस्लुं मा. ९. ४
 विस्मये मा. ९. ४.
 विहफ्फई ७. व.
 विहफ्फदां शौ. ८. ४४
 विहलो ७. व., ३. ९.
 विहसन्नि ६. १३.
 विहा १. ८१.
 विहि ४. ४८.
 विहिओ ३. १२.
 विहित्तो ३. १२.
 विही १. ४४.
 विहीणो ७. व.
 विहूणो ९. व.
 विहेइ (वि.) ६. ३१.
 विउझा ३. २४.
 विझा पा. ३. ८.
 विहिओ १. ८१.
 वीण अप. ११. १.
 वीरिअं ७. व.
 वीसत्थो ७. व.
 वीलहो ६. ३९.
 वीसभो ७. व.
 वीसा १. ३५. ७. व.
 वीसामो १. ५१.
 वीसमइ १. ५१.
 वीससइ १. ५१.
 वीसासो १. ५१.
 वीसुं १. ३१.; १. ५१., ७. व.
 वुच्चइ (वि.) ६. १५.
 वुच्चदि शौ. प्रास. ८. ४५.
 वुञइ अप. ११. ४८.

वुजेप्पि अप. ११. ४८.
 वुजेप्पिणु अप. ११. ४८.
 वुट्टं ७. व.
 वुट्टी ७. व.
 वुड्ढी ७. व.
 वुड्ढो १. ८३., ७. व.
 वुत्तउं अत्र. ११. ६४.
 वुत्ताओ १. ८३.
 वुन्दारआ ७. व.
 वुंदावणं १. ८३.
 वुंइ १. ८३.
 वुन्दं ७. व.
 वुञ्जअ अप. ११. ६४.
 वुहफ्फइ ७. व.
 वुहस्सई ७. व.
 वेअणा ७. व. शौ. ८. ४४.
 वेआलिओ १. ९०.
 वेइअं ७. व.
 वेच्छ ६. ९.
 वेउअं ३. २३.
 वेडिसो १. ५४.; ७. व., पा. १. ५४.
 वेण अप. ११. १.
 वेणि ४. ४८.
 वेणटं ७. व.
 वेणणं ४. ४८.
 वेण्हू १. ६८.
 वेदसो शौ. ८. ४४.
 वेरुलिअं ७. व.
 वेरं १. ९०.
 वेल् ७. व.
 वेअं १. ६८.

वेङ्गो पा. १. ५७.; ७. व., १. ५७.
 वेविरो ३. ३५.
 वेसिओ १. ९०.
 वेसवणो १. ९०. वेसु ४. ४८.
 वेसु ४. ४८.
 वेसपाअणो १. ९०.
 वेहृव्वं १. ८८,
 वेहितो ४. ४८.
 वैकुंठो (वि.) २. ४.
 वो ह्रू. पा. ४. ४७., शौ. ८. ४४.
 वोक्कन्तं १. ७९.
 वोण्टं ७. व.
 वोगी ७. व.
 वोरं ७. व.
 वोलीणो ६. ३९.
 वोसट्टो ६. ३९.
 वोसिरणं ७. व.
 वंसिओ १. ६३.
 वह्यइ ६. २६.
 वासु० अप. ११. ५२.
 व्व शौ. ८. ४५.
 व्वावडो शौ. (वि.) पा. २. १.

श

शब्दवज्जे मा. ९. ८.
 शस्तवाहे मा. ९. ६.
 शालसे मा. ९. ३.
 शिआलके मा. प्राप्र. ९. १६.
 निआले मा. प्राप्र. ९. १६.
 शुस्क-दालु मा. ९. ४.
 शुस्टु कद मा. ९. ५.
 शुस्तित्ते मा. ९. ६. हेरू. पा. ४. ४६.

स

सअडं ७. स.
 सअहं २. १.
 सअणं २. ८.
 सइ १. ६४., १. १.
 सई २. १.
 सउण (वि.) २. १.
 सउणिहं अप. ११. १२.
 सउत्तले शौ. (वि.) ८. २.
 सउरा १. ९३.
 सउह १. ९३.
 सक्क ६. ३८.
 सक्कअं १. ३५.
 सक्कदि (वि.) शौ. प्रास. ८. ४५.
 सक्कारा १. ३५.
 सक्कुणादि शौ., प्रास. ८. ४५.
 सक्को १. २., ७. स.
 सक्खिणो ७. स.
 सक्ख १. ३१.
 सक्का १. १.
 सक्को १. १., १. ३७.
 सकतो ३. ८.
 संकरो (वि.) २. १.
 संखो १. ३७., (वि.) २. ३.
 संगच्छं ६. ९.
 संगामो (वि.) २. १.
 संगामो पै. प्राप्र. १०. २१.
 सगं ७. स.
 सवो (वि.) २. ३.
 संचादं (वि.) २. १.
 सच्च ३. १९.

- मज्जको (वि.) १. १६.
 मज्जो ३. १.
 मज्जसं ७. स.
 मज्झाओ ३. २४.
 मझो ३. ३०.
 मन्झा १. ३७.
 मन्त्रा प. १०. २.
 मन्डल अ. ११. ६४.
 मन्हा ७. स.
 मन्डिल ७. स.
 मन्हो २. ४.
 मणिलरो ७. स.
 मणिअं स्वाप. ३. ४५.
 मणिअं ७. स.
 मण्हो १. ३७.
 मंलो १. ३७.
 मण्णा ३. ५.
 मण्हं ३. ३.; ३. ३८., ७. स.
 मतनं पै. १०. ६.
 मत्तरह ७. स.
 मत्तरी ७. स.
 मत्तावीसा (वि.) १. २., १. ७.
 मत्तअं १. ३५.
 मत्तगधो शौ. प्रास. ८. ४५.
 मत्तो ७. स.
 महहणं ६. ३१.
 महहाणं ६. ३१.
 महो ३. ३.
 मह्दा १. १७.
 मनानं पै., प्राप्र. १०. २१.
 पै. (वि.) १०. १३.
 मनेहो पै., प्राप्र. १०. २१., पै.
 (वि.) १०. १३.
- मन्तो (वि.) १. ४६.
 मप्पओ ३. १.
 मप्फं ३. २७.
 मधधु ११. ४९.
 मभरी २. ११.
 मभलउ अ. ११. ४९.
 मभिवखू (वि.) १. १६.
 समत्तं ७. स.; (वि.) ३. २५.
 समत्थो ७. स.
 समरो ७. स.
 समाणु अ. ११. ६४.
 समिद्धी १. ५२.; १. ८१.
 समुहो ३. ४.
 समुद्रो ३. ४.
 समुहं १. ३६.
 ०सम्मं पा. १. ४०. (वि.) १. ५०.
 १. ३१.
 सम्महो शौ. ८. ४४.
 मग्हो ३. २९.
 मयहं पा. २. १.
 मयणो (वि.) ३. ३४.
 मरअ १. २३.
 मरओ १. ३८.; पा. १. ३८.; पा.
 १. २३.
 मरदो पा. १. २३.
 मरफसं पै., प्राप्र. १०. २१.
 मरहहं ७. स.
 मरिआ १. २०.
 मरिक्खं शौ. ८. ४४.
 मरिक्खो १. ८७.; १. ५२.
 मरिया (वि.) १. २०.

सरिसमिमं शौ. ८. २१.

सरिसो १. ८७.

सरिसणिमं शौ. ८. २१.

सरेण पा. १. ३९.

सरो १. ३९., ३. २.; पा. ६. २.;
(वि.) ३. २९.

सरोरूहं ७. स.

सर्वे (वि.) ४. ४४.

सलफो पै., प्राप्र. २१.

सलाहा ७. स.

सलिलं पै. १० ७.

सवल्लो २. १२.

सवहुमान (वि.) २. १.

सवहो २. ३., २. ९. २. २.

सव्वओ १. ४६.

सव्वङ्गाउ अप. ११. २०.

सव्वज्जो (वि.) १. ५६., ३. ५.

सव्वज्जो पै. प्राप्र. १०. २१.,

पै. पा. १५६.

सव्वञ्जो पै. १०. २.

सव्वण्णू १. ५६, ३. ५.

सव्वण्णो शौ. पा: १. ५६.,

शौ. ८. ३१

सव्वत्तो ४. ४५.

सव्वत्थ ४. ४५.

सव्वदो ४. ४५.

सव्वम्मि ४. ४५.

सव्वशित्वा शौ. ८. ४१.

सव्वस्स ४. ४५.

सव्वस्सि ४. ४५.

सव्वहि ४. ४५.

सव्वमाणं ४. ४५.

सव्वु अप. ११. ३८.

सव्वे ४. ४५.

सव्वेण ४. ४५.

सव्वेसि ४. ४५.

सव्वेसु ४. ४५.

सव्वेसुं ४. ४५.

सव्वेहितो ४. ४५.

सव्वो ४. ४५.

सव्वं ४. ४५., (वि.) ३. ३.

सव्वगिओ ७. स.

ससा ४. ३१.

ससिमण्डलचन्दिमण् अप. ११. २१.

ससी पै. १०. ८.

सहभारो (वि.) २. १.

सहकारो (वि.) २. १.

सहचरो (वि.) २. १.

सहरो २. ११.

सहलं शौ. ८. ४४.

सहहिं अप. ११. ४१.

सलिलसेअ संभमुग्गादो ४. ड., पा.
१. १५.

सहा २. ३.

सहावो २. ३.

सहिदाणि मा. प्राप्र. ९. १६.

सही २. ३.; ४. ३३.

सहीउ ४. ३३.

सहीओ ४. ३३.

सहु अप. ११. ६४.

सहुउ अप. ११. ७२.

सा ४. ४७., ७. स.

साअरो २. १.

साणो ७. स.

सामभो ७. म.
 सामच्छुं ७. म.
 सामथं ७. स.
 सामला अप. ११. २.
 सामिद्धी १. ५२.
 सारंगं ७. म.
 सारिच्छो १. ५२.
 सालवाहनो ७. स.
 सालाहणो (वि.) १. १३.
 साओ २. २.; २. ९.
 सासाभ्रमि शौ. ८. ४२.
 सासं १. ५१.
 साहणा ४. २२.
 साहणी ४. २८.
 साहु अप. ११. ३८.
 साहु २. ३.
 सि ६. ६.
 सिआ ७. म.
 सिंगारो १. ८१.
 सिंगं ७. स.
 सिंघो १. ३६.; २. २०. ७. म.
 सिट्टी १. ८१., ३. १८.
 सिट्टं १. ८१.
 सिटिलं ७. स.
 सिणिद्धो ३. १.
 सिणिद्धं ७. स.
 सिण्णं ७. स.
 सिथं ३. १.
 सिनातं पै. १०. १३.
 सिदूरं १. ६८.
 सिधवं ७. स.
 सिप्यह ६. २६.

सिप्यी ७. स.
 सिभा २. ११.
 सिमिणो ७. म.
 सिथालो १. ८१.
 सिरहू ६. ३७.
 सिर विअणा ७. म.
 सिरिमंतो (वि.) ३. ४४.
 सिरिसो १. ७३.
 सिरोवेअणा ७. म.
 सिरं १. १६., १. ४०. पा. १. ४०.
 सिलिद्धं ३. ३२.
 सिलोभो ३. ३२.
 सित्रिणो १. ५४., पा. १. ५४., ७. म.
 सिं ४. ४६., ४. ४७.
 सिहदत्तो ७. स.
 सिहराओ ७. म.
 सीअरो ७. म.
 सीआणं ७. स.
 सीउआण ३. ३६.
 सीअरो ७. म.
 सासह ६. ३०.
 सीसो १. ५१.
 सांसं पा. ३. ८.
 सीहरो ७. म.
 सीहो १. ३४.; २. २०., ७. म.
 सुअणस्सु अप. ११. १०.
 सुअदि शौ. प्रास. ८. ४५.
 सुआदि शौ. प्रास. ८. ४५.
 सुहदी २. ६.
 सुउमालो ७. स.
 सुउरिसो (वि.) १. १३.; २. १.
 सुकळं आ. ७. स.

सुकित अप. ११. १.
 सुकिट्टु अप. ११. १.
 सुक्रमालो ७. स.
 सुकुसुमं (वि.) २. १.
 सुकृदु अप. ११. १.
 सुकपक्खो (वि.) ३. ३२.
 सुक्कं ७. स.
 सुगदो (वि.) २. १.
 सुगन्धत्तणं १. ९२.
 सुवि अप. ११. ४९.
 सुज्जं ७. स.
 सुज्जो पै. (वि.) १०. १३.
 सुणाउ ६. १४.
 सुण्डो १. ९२.
 सुण्हा ७. स.
 सुण्ह ७. स.
 सुतर (वि.) २. १.
 सुतार (वि.) पा. २. १.
 सुत्त ३. १.
 सुसुमा पं. (वि.) १०. १३.
 सुन्दरिअं १. ९२.
 सुन्देरं पा. १. ५७., १. ९२., १. ५७.
 सुंदेर ३. ९.
 सुप्पणाहा ४. २९.
 सुप्पणाही ४. २९.
 सुमणाण (वि.) पा. १. ४०.
 सुमणं (वि.) १. ४०.
 सुमरदि शौ. ८. ३७.
 सुमरहि अर. ११. ४६.
 सुमरि अप. ११. ४६.
 सुमिणो आ. पा. १. ५४.

सुख्यो शौ. ८. ८.
 सुख्यो (वि.) ३. ३३.
 सुवह १. ५९.
 सुवभो ७. स.
 सुवण्ण रेह अप. ११. २.
 सुवण्णिओ १. ९२.
 सुवे कअं ३. ३४.
 सुवे जना ३. ३४.
 सुसा ७. स.
 सुसाण ७. स.
 सुहवो ७. स.
 सुहमं आ. ७. स.
 सुहिआ शौ. ८. ५.
 सुहुमं आ. (वि.) ३. ३३.
 सुभअ २. १.
 सुआलो ७. स.
 सुई २. १.
 सुरिओ ७. स.
 सुरिसो (वि.) १. १३.
 सुहयो ७. स.
 सु ४. ४६. ; ४. ४७., शौ. पा. ४. ४६.
 सुख १. ८८.
 सुखा १. ५७. ; पा. १. ५७. ; ३. २३.
 सुण्णं ७. स.
 सुत्तं १. ८८.
 सुदूरं १. ६८.
 सुभालिआ २. ११.
 सुलो १. ८८.
 सुलिफा ७. स.
 सुलिग्गो ७. स.
 सुवा ३. १२.
 सुव्वा ३. १२.

सिंह (वि.) ४. ४४.

स्येसां २. १९.

सोहासिआ २. १९.

सो अप. ११. ४., ४. ४६ ; इ२२. पा.
४. ४६.

सो अ (वि.) २. १.

सोअमखलं १. ७५.

सोडआण (वि.) ६. ३६.

सोपूवा अप. ११. ७२.

सोच्चा ३. २०.

सोच्छिद् ६. ९.

सोच्छिदथा ६. ९.

सोच्छिन्ति ६. ९.

सोच्छिभि ६. ९.

सोच्छिमो ६. ९.

सोच्छिसि ६. ९.

सोच्छिस्सं ६. ९.

सोच्छिहिद् ६. ९.

सोच्छिहिभि ६. ९.

सोच्छिहिमां ६. ९.

सोच्छिहिसि ६. ९.

सोच्छ ६. ९.

सोडारं ७. स.

सोत्त ३. ११.

सोभति पं. १०. ८.

सोभनं पं. १०. ८.

सोमालो ७. स.

सोम्मो ३. २.

सोरिअं ७. स.

सोवद् १. ५९.

सोसविअं ६. १९.

सोसिअं ६. १९.

सोद्द् २. ६.

सोद्दमां १. ९१.

सोद्दण २. ३.

सोद्दिल्लो ३. ४४.

सोदामिणां शौ. (वि.) पा. २. १.

सोअरिअ पा. १. १.

संवारी २. ३०.

संजत्तिओ १. ६३.

संजदो २. ६.

संजमो (वि.) २. १४.

संजा ३. ५.

संजादो २. ६.

सजोओ (वि.) २. १४.

संज्ञा १. ३७., ३. ८.; पा. ३.

संठविअं १. ६१.

संठाविअं १. ६१.

संणा ३. २४.

संददो (वि.) ३. ११.

संपद् अप. ११. ५३.

संपद् (वि.) २. ५.

संपअं (वि.) २. ६.

संपआ १. २०.

संपदि २. ६.

सपथ अप. ११. ५३.

संपथा (वि.) १. २०.

सफासो १. ५१

संमडो ७. स.

संसुहो १. ३६.

संसुहं १. ३६.

संरुधिजद् ६. २६.

संरुब्ध्व ह् द. २६.	हरो ७. ह्.
संवट्टिअं ३. २१.	हलद्वा ४. ३०., २. १८., ७. ह्.
सवत्तओ (वि.) ३. २१.	हलद्दी ७. ह्. ४. ३०.
संवत्तणं (वि.) ३. २१.	हलिभारो ७. ह्.
सवरो (वि.) २. १.	हलिओ १. ६१.
संवुदी २. ६.	हलिही ७. ह्.
सवुदं १. ८३.	हवह् ६. ३१.
संसाराए सुखं अर्द्धं पा. १. ६.	हवहिह् पा. ६. ८.
संसिद्धिओ १. ६३.	हविय शौ. ८. १३.
सहरइ (वि.) १. ३७.	हविहिह् पा. ६. ८.
संहारो २. २०.	हशिद मा. प्राप्र. ९. १६.
स्स शौ. (वि.) ८. ३७.	हशिदि मा. प्राप्र. ९. १६.
ह्	हशिदु मा. प्राप्र. ९. १६.
हभासो (वि.) २. ६.	हस ६. ९.
हउ अप. ४. ५८.	हम्ह ६. १४., ६. २०.
हउ अप. ११. ४०.	हसउ ६. ९., ६. १४.
हके मा. ४. ४८. मा. (वि.) ९. १६,	हसन्नु ६. ९.
मा० प्राप्र. ९. १६.	हसन्तो ६. १२.
हगो मा. ४ ४८., मा. ८. १६. मा.	हसंतो ६. १४.
प्राप्र. ९. १६.	हसमाणा ४. २९.
हजे शौ. ८. २३.	हसमाणो ६. १२.
हडक्के मा. प्राप्र. ९. १६.	हसमाणी ४. २९.
हडडई ७. ह्.	हसमि ६. ५.
हणुमन्तो ७. ह्.	हसमु ६. ९.
हत्थो ३. ६., ३. २५.	हससु ६. ९.
हदो २. ६., ४. ५.	हसह ६. ९.
हम्मह् ६. २४.	हसहि ६. ९.
हरडई ७. ह्.	हसामि ६. ५.
हरिअदो ७. ह्., ४. ५.	हसामो ६. ६., ६. ९.
हरिआला	हसिअह ६. १५.
हरिअर ६. २६.	हसिअव्वं ६. १६.

हसिअं व. १७.
 हसिउं व. १६.
 हसिऊग व. १६.
 हसिऊह व. १५.; व.; व. २६.
 हसितून पै. १०. ११.
 हसिसु व. ६.
 हसिमो व. ६.
 हसिसो व. ३१.
 हसिसमाये व. ८.
 हसिसमं व. ८.
 हसिहामो व. ८.
 हसिहह व. १६.
 हसिहस्था व. ८.
 हसेअणव व. १६.
 हसिहि व. ८.
 हसिहिनि व. ८.
 हसिहिनि व. ८.
 हसेह व. ११.
 हसेउ व. १४.
 हसह व. ११.
 हसेउ व. १२.
 हसेऊग व. १६.
 हसेउज व. १०.
 हसेउजरु व. ९.
 हसेउजहि व. ९.
 हसेउजा व. १०.
 हसेउजे व. ९.
 हसेन्नु व. ९.
 हसेतो व. १४.
 हसेसु व. ६.
 हसेमो व. ६.

हसेहह व. १६.
 हसना मा. ९. ४.
 हसमह व. २६.
 हालओ १. ६१.
 हिअं १. ८. १. ७. ७., शा. (१.)
 पा. २. १.
 हिअं ७. ह., १. ८१.
 हितअकं पै. प्रा. १०. २१.
 हितकं पै. १०. ९.
 हितयं मा. (वि.) १. २. १.
 हिवह व. ३१.
 ही शौ. ४. ४७
 हीणो ७. ह.
 हीमाणह शौ. ८. २४.
 हीरह व. २६.
 हीरो ७. ह.
 हीही शौ. ८. २७.
 हुणह व. २२.
 हुत्त व. १२.
 हुविस्था पा. १. ८.
 हुविहिति पा. व. ८.
 हुविहिसि पा. व. ८.
 हुविहिहि पा. व. ८.
 हुवेयथ पै. १०. १५.
 हुहुरु अण. ११. ६४.
 हुअं व. १२.
 हुणो ७. ह.
 हु कस्तार (वि.) ४. २२.
 हु कुल ४. ४१.
 हु पिअ ४. २२. ; ४. २३.
 हु पिअर ४. २२. ; ४. २३.

हे पिअरा ४. २३.
हे भत्तारा ४. २३.; हेरू. ४. २३.
हे भत्तारा ४. २३., हेरू. ४. २३.
हे भअवं ४. ४२.
हे भवं ४. ४२.
हे लदाओ ४. ३७.
हे लदे ४. ३७.; हेरू. ४. ३७.
हे खि पप. ११. ६४.
हे सब्व ४. ४५.
होइ इह १. १४.
होज पा. ६. ८.
होजइ ६. ११.
होजा पा. ६. ८.
होजाह ४. ११.
होजहिह पा. ६. ८.
होजाहिह पा. ६. ८.
होतु पै. ११. ६.
होत्ता शौ. ८. १३.
होदि शौ. ८. ११., शौ.प्राप्त., ८. ४५.
शौ. ८. १५.
होदूण शौ. ८. १३.
होध शौ. ८. ११.
होसइ पा. ६. ८., अप. १८. ४७.
होस्स पा. ६. ८.
होस्साम ६. ८.
होस्साम पा. ६. ८.
होस्सामि ६. ८., पा. ६. ८.

होस्सामु पा. ६. ८., ६. ८.
होस्सामो ६. ८., पा. ६. ८.
होहाम ६. ८.
होहामि ६. ८. पा. ६. ८.
होहासु ६. ८.
होहामो ६. ८. पा. ६. ८.
होहिह ६. ८. पा. ६. ८., अप. ११. ४७.
होहिथ पा. ६. ८.
होहिथ ६. ८.
होहिस्था पा. ६. ८.
होहिन्ति ६. ८., पा. ६. ८.
होहम्मे ६. ८.
होहिम ६. ८. पा. ६. ८.
होहिमि पा. ६. ८.
होहिसु ६. ८. पा. ६. ८.
होहिमो पा. ६. ८.
होहिरे ६. ८.
होहिमि ६. ८.
होहिस्सा पा. ६. ८.
होहिस् ६. ८.
होहिदि पा. ६. ८.
होहिहिसि पा. ६. ८.
होहिह पा. ६. ८.
होही पा. ६. ८.
ह ४. ४७., हेरू. पा. ४. ४७.
हंगे मा. ९. ३.
ह्यामिअ ६. ३९.

सहायक ग्रन्थ-सूची

- (१) निबद्धमशब्दानुशासन, अष्टम अध्याय (हेमचन्द्रकृत)
- (२) प्राकृतसर्वस्व
- (३) प्राकृत-उकाश
- (४) प्राकृतमञ्जरी
- (५) तन्मारपालचरित (प्राकृतद्वयाश्रय काव्य)
- (६) राघववहो (सेतुबन्ध काव्य)
- (७) प्राकृत व्याकरण (हर्षाकेश भट्टाचार्य विरचित) : संस्कृत एवं
अंग्रेजी
- (८) अभिज्ञानशाकुन्तल (कालिदास विरचित)
- (९) विक्रमोर्वशीय (कालिदास विरचित)
- (१०) सुहाराष्टम (विशाखदत्त विरचित)
- (११) पाणिनीयाष्टक (अष्टाध्यायीसूत्रपाठ)
- (१२) गडबहो

संस्कृत साहित्य का इतिहास

(बृहत् संस्करण)

श्री वाचस्पति गैरोला

इस ग्रन्थ को लिखते समय यह ध्यान रखा गया है कि पाठक परम्परा और पूर्वाग्रह के मोह में न पड़कर प्रत्येक विवादग्रस्त प्रश्न का समाधान स्वयं कर सके। पाठक पर अपने विचार लादने की अपेक्षा उपयुक्त यह समझा गया है कि विभिन्न मतवादों की समीक्षा करके वह स्वयं ही विषय के सही ध्येय को ग्रहण कर सके। भारतीयता या विदेशीपन का पक्षपात त्याग कर किसी भी विद्वान् के स्वस्थ और सही विचारों को उधार लेने में सङ्कोच नहीं किया गया है। पुस्तक की विषय-सामग्री और उसकी रूप-रेखा का गठन भी ऐसे ढङ्ग से किया गया है, जिससे संस्कृत भाषा की आधारभूत भावभूमि का परिचय प्राप्त होने के साथ-साथ सम-सामयिक परिस्थितियों का भी अध्ययन हो सके। आर्यों के आदि देश एवं आर्य-भाषाओं के उद्भव से लेकर उन्नीसवीं सदी तक की सहस्राब्दियों में संस्कृत-साहित्य की जिन विभिन्न विचार-वीथियों का निर्माण हुआ और भारत के प्राचीन राजवंशों के प्रश्रय से संस्कृत भाषा को जो गति मिली, उसका भी समावेश पुस्तक में देखने को मिलेगा।

मूल्य २०-००

संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

(परीक्षोपयोगी संस्करण)

श्री नान्यम्पति गैरोला

संस्कृत-साहित्य के इतिहास का यह संक्षिप्त संस्करण इस उद्देश्य से लिखा गया है कि विभिन्न विश्वविद्यालयों की उच्च कक्षाओं के पाठ्यक्रम में निर्धारित इतिहासविषयक ज्ञान के सर्वधनार्थ विद्यार्थीवर्ग का इससे लाभ हो सके। पाठ्यक्रम की दृष्टि से संस्कृत-साहित्य के इतिहास पर राष्ट्रभाषा हिन्दी में जो अनेक ग्रन्थ पुस्तकें लिखी गई हैं वे या तो सर्वांगीण नहीं हैं अथवा उनमें छात्रों के उपयोगी इतिहास के वैज्ञानिक अध्ययन का क्रमबद्ध रूपरेखा का अभाव है।

यह इतिहास पाठ्यक्रम की दृष्टि से तो लिखा ही गया है; किन्तु संस्कृत के बृहद् वाङ्मय का आमूल ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत करने का भा इसमें उद्योग किया गया है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि संस्कृत के छात्रों का वैज्ञानिक दृष्टि से संस्कृत-साहित्य के इतिहास का अध्ययन कराया जाय, जिससे कि उनकी मेधाशक्ति का स्वतंत्र रूप से विकास हो सके और प्रस्तुत विषय पर उनके भाव-विचारों को नई दिशा में अग्रसर होने का अवकाश मिल सके।

